आदि
श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी
सैंची पहली
प्रकाशक
भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एन्ड कोः

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

Saba

सब तों शुद्ध

आदि

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी

पन्ना १४३०

एहनां दी सुधाई उस पवित्र श्री दमदमा साहिब वाली बीड़ नाल कीती गई है जो गुरगद्दी पर सुभायमान है

प्रकाशक

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह ऐन्ड को०

पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ततकरा रागों का

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरी राग

(महला १)

राग माझ

(महला ९)

--०--

देव गंधारी

---o---

रागु सोरठि

--०--

देव धनासरी

---o----

रागु जैतसरी

---o----

रागु बैराड़ी

(महला ४)

----o----

जपु

॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ १ ॥ सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥ गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै

को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥ साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥ थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७ ॥ सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणीऐ सासत सिम्रिति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप

का नासु ॥९॥ सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥ सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणीऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु॥सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥ मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥ मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १३ ॥ मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १४ ॥ मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥ मंनै परवारै साधारु ॥ मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १५ ॥ पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १६ ॥ असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग

मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन विचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥ असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हराम खोर ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १८ ॥ असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १९ ॥ भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव

जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इकदू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥ पाताला पाताल लख अगासा आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥ २३ ॥ अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु ना जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥ बहुता करमु लिखिआ न जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिसनो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिवलाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि

गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलु विगाडु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥ २६ ॥ सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥ मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २८ ॥ भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइ कार

चलावहि लेखे यावहि भाग ॥ यादेसु तिसै यादेसु ॥ यादि यनीलु यनादि यनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २६ ॥ एका माई जुगति वियाई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ योहु वेखै योना नदरि न यावै बहुता एहु विडाणु ॥ यादेसु तिसै यादेसु ॥ यादि यनीलु यनादि यनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥ यासणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइया सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ यादेसु तिसै यादेसु ॥ यादि यनीलु यनादि यनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥ इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा याखीयहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीया चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला याकास की कीटा याई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥ याखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गियानि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥ ३३ ॥ राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी यगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥ तिसु विचि जीय जुगति के रंग ॥ तिन के नाम यनेक यनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा यापि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई योथै पाइ ॥ नानक गइया जापै जाइ ॥ ३४ ॥ धरम खंड का एहो धरमु ॥ गियान खंड का याखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीयहि रूप रंग के वेस ॥ केतीया करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीया खाणी केतीया बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीया सुरती सेवक केते नानक यंतु न यंतु ॥ ३५ ॥ गियान खंड महि गियानु परचंडु ॥

तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ न जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥ करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महा बल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ताके रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तपताउ ॥ भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल॥३८॥ सलोकु ॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

सो दरु रागु आसा महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चिति गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥

गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे॥सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ॥साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलिकै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होया ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु

करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ ३ ॥ रागु गूजरी महला ४ ॥ हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइग्रा नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिजन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिग्रास ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइग्रा ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही ग्राए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरिजन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिग्रा लिखासि ॥ धनु धंनु सतसंगति जितु हरिरसु पाइग्रा मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु गूजरी महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा ग्राहरि हरि जीउ परिग्रा ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु ग्रागै करि धरिग्रा ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिग्रा ॥ गुर परसादि परमपदु पाइग्रा सूके कासट हरिग्रा ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिग्रा ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिग्रा ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि ग्रावै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिग्रा ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिग्रा ॥ ३ ॥ सभि निधान दसग्रसट सिधान ठाकुर करतल धरिग्रा ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा ग्रंतु न पारावरिग्रा ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु ग्रासा महला ४ सो पुरखु

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि ग्रगमा ग्रगम ग्रपारा ॥ सभि धिग्रावहि सभि धिग्रावहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीग्र तुमारे जी तूं जीग्रा का दातारा ॥ हरि धिग्रावहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि ग्रापे ठाकुरु हरि ग्रापे सेवकु जी किग्रा नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तू

घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ १ ॥ आसा महला ४ ॥ तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तू देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तूं जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरिगुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरिनामि समाइआ ॥ ३ ॥

तूं आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु विनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मनु एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ ४ ॥

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते

वेस ॥ २ ॥ २ ॥ रागु धनासरी महला १ ॥ गगनमै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ ॥ भवखंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोहि ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुरसाखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरिरस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरिजन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरिनामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरिलाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ अउध घटै दिनसु रैणा रे ॥ मर गुर मिलि काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निजघरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इहै ॥ सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १

॥ मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ॥ १ ॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ २ ॥ सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ३ ॥ सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥ हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउणा न थाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ १ ॥ साचा निरंकारु निज थाइ ॥ सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥ पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ नदरी किसै

न ग्रावऊ ना किछु पीग्रा न खाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु ग्राखा नाउ ॥ ३ ॥ नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ मसू तोटि न ग्रावई लेखणि पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु ग्राखा नाउ ॥४॥२॥ सिरीरागु महला १ ॥ लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ लेखै वाट चलाईग्रा लेखै सुणि वेखाउ ॥ लेखै साह लवाईग्रहि पड़े कि पुछण जाउ ॥ १ ॥ बाबा मइग्रा रचना धोहु ॥ ग्रंधै नामु विसारिग्रा ना तिसु एह न ग्रोहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥ जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिग्रो नालि ॥ रोवणवाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ॥ २ ॥ सभु को ग्राखै बहुतु बहुतु घटि न ग्राखै कोइ ॥ कीमति किनै न पाईग्रा कहणि न वडा होइ ॥ साचा साहबु एकु तू होरि जीग्रा केते लोग्र ॥ ३ ॥ नीचा ग्रंदरि नीच जाति नीची हू ग्रति नीचु ॥ नानकु तिन कै संगि साथि वडिग्रा सिउ किग्रा रीस ॥ जिथै नीच समालीग्रनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥ ४ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥ पर निंदा पर मलु मुख सुधी ग्रगनि क्रोधु चंडालु रस कस ग्रापु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥ १ ॥ बाबा बोलीऐ पति होइ ॥ ऊतम से दरि ऊतम कहीग्रहि नीच करम बहि रोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥ २ ॥ जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिग्रा परवाणु ॥ फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन ग्रजाण ॥ जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥ ३ ॥ तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिग्रा समाइ ॥ तिन का कीग्रा सालाहणा ग्रवर सुग्रालिउ काइ ॥ नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ ग्रमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ मती मरणु विसारिग्रा खुसी कीती दिन चारि ॥ सचु मिलिग्रा तिन सोफीग्रा राखण कउ दरवारु ॥१॥ नानक साचे कउ सचु जाणु ॥ जितु सेवीऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सरा गुड़ बाहरा

जिसु विचि सचा नाउ ॥ सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥ २ ॥ नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥ तिसु विणु सभु अपवितु है जेता पहिनणु खाणु ॥ होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥ ४॥५॥ सिरीरागु महलु १ ॥ जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥ १ ॥ बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २ ॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥ अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥ ३ ॥ भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥ सिरीरागु महला १ ॥ सभि रस मिठे मंनीऐ सुणिऐ सालोणे ॥ खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥ छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥ १ ॥ बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥ २ ॥ बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥ वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥ ३ ॥ बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥ जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥ ४ ॥ बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥ १ ॥ बाबा होर मति होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥ २ ॥ जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥ ३ ॥ खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥ नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥ १॥ रहाउ ॥ प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥ बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥ २ ॥ गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरिनाउ ॥ गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ जे तिसु भावै ऊजली सतसरि नावणु जाउ ॥ ३ ॥ पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुणतास ॥ ४ ॥ ९ सिरीरागु महला १ ॥ आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥ साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥ १ ॥ करता सभु को तेरै जोरि ॥ एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥ सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ पिरु

रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥ २ ॥ केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥ ३ ॥ सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥ सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥ नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥ ४ ॥ १० ॥ सिरीरागु महला १ ॥ भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥ मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥ जिसके जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥ २ ॥ जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ संजोगी मिलि एक से विजोगी उठि जाइ ॥ जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥ जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥ नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥ ४ ॥ ११ ॥ सिरीरागु महलु १ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥ लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥ सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥ १ ॥ भाई रे संत जना की रेणु ॥ संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥ गुरमुखि मनु समझाईऐ आतमरामु बीचारि ॥ २ ॥ त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥ किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥ निजघरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥ ३ ॥ बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥ नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥ ४ ॥ १२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥ बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥ १ ॥ मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥

दरि घरि ढोई ना लहै दरगह झूठु खुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥ अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥ आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥ ३ ॥ चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥ चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥ जे धन कंति न भावई त सभि अडंबर कूड़ु ॥४॥ सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥ जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥ नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ॥ भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥ पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥१॥ मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥ हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥ दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि तृसना अगि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥ २ ॥ मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥ धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥ ३ ॥ सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥ सो नरु जंमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥ नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥ अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ॥ बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥ १ ॥ मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥ जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ॥ भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥ २ ॥ साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥ जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥ निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥ ३ ॥ इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥ पंच भूत

सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥ नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥ ४ ॥ १५ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥ इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥ मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥ १ ॥ गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥ आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥ २ ॥ साहि साहि तुझु संमला कदे न विसारेउ ॥ जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अंमृतु पेउ ॥ मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥ ३ ॥ जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥ गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥ घटि घटि जोति निरंतरी बुझै गुरमति सारु ॥ ४ ॥ गुरमुखि जिन्ही जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥ नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥ ५ ॥ १६ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥ १ ॥ मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥ त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥ २ ॥ लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥ हरि जपि जीअरे छूटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥ ३ ॥ तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥ त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥ सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥ ४ ॥ १७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥ १ ॥ जीअरे राम जपत मनु मानु ॥ अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥ मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥ २ ॥ अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥ सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥ खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरिनाम निवासु ॥ ३ ॥ जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥ ४ ॥ मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥ गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥ नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥ ५ ॥ १८ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥ सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥ १ ॥ मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ हरिगुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रामनामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ सभि सुख हरि रस भोगणे संतसभा मिलि गिआनु ॥ निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतिगुरि दीआ नामु ॥ २ ॥ कूकर कूड़ कमाईऐ गुरनिंदा पचै पचानु ॥ भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥ ३ ॥ ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥ हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥ नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥ ४ ॥ १९ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥ गुरि मिलीऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥ १ ॥ मन रे अहिनिसि हरिगुण सारि ॥ जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोति जोती मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥ हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥ २ ॥ काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥ गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥ ३ ॥ चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु

पाइ ॥ अंतरि कमलु प्रगासिआ अंमृतु भरिआ अघाइ ॥ नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ॥ ४ ॥ २० ॥ सिरीरागु महला १ ॥ हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥ मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥ कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥ १ ॥ भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥ सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥ जिउ अगनि मरै जलि पाईऐ तिउ त्रिसना दासनिदासि ॥ जम जंदारु न लगइ इउ भउजलु तरै तरासि ॥ २ ॥ गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥ सचि रते गुरि मेलीऐ सचे सचि समाइ ॥ ३ ॥ मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥ सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥ ४ ॥ २१ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥ अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥ गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु माणकु निरमोलु है रामनामि पति पाइ ॥ मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥ आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥ २ ॥ जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥ ३ ॥ जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥ नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥ ४ ॥ २२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥ १ ॥ भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ हरिजसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना

सुखु होइ ॥ खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥ २ ॥ खोटे पोतै ना पवहि तिन हरिगुर दरसु न होइ ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥ ३ ॥ नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ रामनाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥ ४ ॥ २३ ॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥ १ ॥ रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउहुला ॥ दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥ हंभी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥ २ ॥ की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥ लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥ ३ ॥ नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥ गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥ ४ ॥ २४ ॥ सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥ आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥ १ ॥ रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥ आपे बहुबिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥ ३॥ प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥ कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥ ४ ॥ २५ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥ १ ॥ काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥ पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि ना अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥ जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥ २ ॥ बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥ ३ ॥ २६ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ अमलु करि धरती

बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥ १ ॥ मतु जाण सहि गली पाइआ ॥ माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥ २ ॥ आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥ ३ ॥ तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कितकु संजिआही ॥ ४ ॥ २७ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥ आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥ १ ॥ मरणा मुला मरणा ॥ भी करतारहु डरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥ जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥ २ ॥ सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥ है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥ ३ ॥ पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥ ४ ॥ २८ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ १ ॥ मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥ मै एहा आस एहो आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ परघरु जोही नीच सनाति ॥ कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ २ ॥ फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ खरा सिआणा बहुता भारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ३ ॥ मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ४ ॥ २९ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एका सुरति जेते है जीअ ॥ सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ जेही सुरति तेहा तिन

राहु ॥ लेखा इको आवहु जाहु ॥ १ ॥ काहे जीअ करहि चतुराई ॥ लेवै देवै ढिल न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥ कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ तू ओना का तेरे ओहि ॥२॥ असी बोल विगाड़ विगाड़ह बोल ॥ तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥ जह करणी तह पूरी मति ॥ करणी बाझहु घटे घटि ॥ ३ ॥ प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥ आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ गुर परसादि करे बीचारु ॥ सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥ जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥ १ ॥ न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥ जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥ २ ॥ जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो ॥ आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानो ॥ जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानो ॥ ४ ॥ ३१ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ कीता कहा करे मनि मानु ॥ देवणहारे कै हथि दानु ॥ भावै देइ न देई सोइ ॥ कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥ १ आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ अंधा कचा कचु निकचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के रुख बिरख आराउ ॥ जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥ फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खाइ ॥ २ ॥ कची कंध कचा विचि राजु ॥ मति अलूणी फिका सादु ॥ नानक आणे आवै रासि ॥ विणु नावै नाही साबासि ॥ ३ ॥ ३२ ॥ सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टलपलै ॥ १ ॥ बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पोथी पुराण कमाईऐ ॥ भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥ सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥ २ ॥ इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु तनि लागै बाणीआ ॥ सुखु होवै सेव

कमाणीत्र्या ॥ सभ दुनीत्र्या त्र्यावण जाणीत्र्या ॥ ३ ॥ विचि दुनीत्र्या सेव कमाईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥ ३३ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हउ सतिगुरु सेवी त्र्यापणा इकमनि इकचिति भाइ ॥ सतिगुरु मनकामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ मनचिंदित्र्या वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ नाउ धित्र्याईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे हरिरसु चाखु तिख जाइ ॥ जिनी गुरमुखि चाखित्र्या सहजे रहे समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेवित्र्या तिनी पाइत्र्या नामु निधानु ॥ त्र्यंतरि हरिरसु रवि रहित्र्या चूका मनि त्र्यभिमानु ॥ हिरदै कमलु प्रगासित्र्या लागा सहजि धित्र्यानु ॥ मनु निरमलु हरि रवि रहित्र्या पाइत्र्या दरगहि मानु ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवनि त्र्यापणा ते विरले संसारि ॥ हउमै ममता मारि कै हरि राखित्र्या उरधारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पित्र्यारु ॥ सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु त्र्यखुटु त्र्यपारु ॥ ३ ॥ गुर मिलीऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पित्र्यास ॥ हरि सेती मनु रवि रहित्र्या घर ही माहि उदासु ॥ जिना हरि का सादु त्र्याइत्र्या हउ तिन बलिहारै जासु ॥ नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ मन रे गृह ही माहि उदासु ॥ सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि मनु जीतित्र्या गति मुकति घरै महि पाइ ॥ हरि का नामु धित्र्याईऐ सतिसंगति मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ जे लख इसतरीत्र्या भोग करहि नवखंड राजु कमाहि ॥ बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ ३ ॥ हरि हारु कंठि जिनी पहिरित्र्या गुर चरणी चितु लाइ ॥ तिना पिछै रिधि

सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥ ४ ॥ जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ ३५ ॥ सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुड़हि तिन निजघरि वासा होइ ॥ १ ॥ मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतगुरु सचु प्रभ निरमला सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥ जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥ २ ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥ मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥ ४ ॥ मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोखदुआरु ॥ ५ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निजघरि वासु ॥ गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥ २ ॥ जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ मनु

तनु निरमलु होई ॥ कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ जिसु अंदरि नामु प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥ ३ ॥ इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरिनामु न चेतै लिव लाइ ॥ पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठहरु न पाइ ॥ ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥ जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥ ४ ॥ देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ हरिगुण गावहि हरि नित पड़हि हरिगुण गाइ समाइ ॥ नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी इकमनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ ओइ अंम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥ हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥ सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥ विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥ कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥ ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि भगता हरिधनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ हरिनामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरिनामु अधारु ॥ गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ हरि भगता अतुट भंडारु ॥ १ ॥ भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥ २ ॥ सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न

आवै हारि ॥ ३ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥ नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरिनामि समाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुख सागरु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरिगुण गाइ ॥ १ ॥ भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अंम्रित नामि समाइ ॥ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ २ ॥ मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ॥ बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ धातुरबाजी पलचि रहे न उरवारु न पारु ॥ ३ ॥ गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥ नानक नाम धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४० ॥ स्रीरागु महला ३ ॥ मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगह पति खोइ ॥ हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥ सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ॥ अहिनिसि भगत करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥ वडै भागि सतिसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ॥ २ ॥ सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥ अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ॥ नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरिरसु पीआ अघाए ॥ ३ ॥ जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ नानक सबदि रते हरिनामि रंगाए बिनु भै केही लागि ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥ खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥ १ ॥ मेरे मनि तजि

निंदा हउमै अहंकारु॥ हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु॥ १॥ रहाउ॥ गुरमुखा के मुख उजले गुरसबदी बीचारि॥ हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि॥ घर ही विचि महलु पाइआ गुरसबदी वीचारि॥ २॥ सतिगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले॥ अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जमजाले॥ सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले॥ ३॥ सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ॥ कहणा किछु न जावई जिसु भावै तिसु देइ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ॥ ४॥ ९॥ ४२॥ सिरीरागु महला ३॥ सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ॥ गुरपरसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ॥ इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ॥ १॥ भाई रे गुरमुखि हरिनामु धिआइ॥ नामु निधानु सदा मनि वसै महली पावै थाउ॥ १॥ रहाउ॥ मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ॥ बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञै घरि काउ॥ गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरिनाउ॥ २॥ त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार॥ लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करहि पुकार॥ बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु ना पारु॥ ३॥ माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि॥ बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि॥ नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि॥ ४॥ १० ॥ ४३॥ सिरीरागु महला ३॥ त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ॥ करि किरपा मेलाइअनु हरिनामु वसिआ मनि आइ॥ पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ॥ १॥ भाई रे गुरमति साचि रहाउ॥ साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ॥ १॥ रहाउ॥ जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ॥ आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ॥ लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ॥ २॥ बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ॥ ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ॥ असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ॥ ३॥ जेहा सतिगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ॥ एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ॥ नानक

एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ अंम्रितु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ मनमुख अंधु न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥ १ ॥ मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाइ ॥ जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ ३ ॥ जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥ नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४५ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥ सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ पिर का महलु ना पावई ना दीसै घरु बारु ॥ १ ॥ भाई रे इकमनि नामु धिआइ ॥ संता संगति मिलि रहै जपि रामनामु सुखु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उरधारि ॥ मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥ २ ॥ पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ॥ गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥ ३ ॥ गुर के भाणे विचि अंम्रितु है सहजे पावै कोइ ॥ जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ॥४॥१३॥४६॥ सिरीरागु महला ३॥ जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥ सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ॥ सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ॥ बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥ बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु

गवाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु संपै नालि ॥ अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ सतिगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरिनामा रिदै समालि ॥ ३ ॥ नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ॥ नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ४७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥ १ ॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे जगजीवनु सुख दाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥ हरिप्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥ ३ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥ सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥ दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ ॥ गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥ गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥ सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ॥ चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ॥ आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥ अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥ नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥ कथनी

अदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥ बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥ अंम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥ पीवत हू परवाणु भइआ पूरे सबदि समाइ ॥ २ ॥ आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥ देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥ ३ ॥ जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरिगुण पावै सोइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ५० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ अधिआतम करम जे करे नामु न कबही पाइ ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै हरिनामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥ गुरपरसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥ पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥ २ ॥ गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ सबदि मरै ता उधरै पाए मोखदुआरु ॥ गुरपरसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥ ३ ॥ इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥ नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किरपा करे गुरु पाईऐ हरिनामो देइ द्रिड़ाइ ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥ मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥ हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोखदुआरु ॥ २ ॥ हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जंमै आवै जाइ ॥ मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ गुर सेवा नाउ पाईऐ

सचे रहै समाइ ॥ ३ ॥ सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ५२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥ घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥ सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥ १ ॥ मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥ २ ॥ हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥ माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उरधारि ॥ किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि बीचारि ॥ ३ ॥ सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥ सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥ ४ ॥ सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥ इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥ नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥ ५ ॥ २० ॥ ५३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥ १ ॥ मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥ सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥ २ ॥ जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ

आइआ तिउ जाइ ॥ मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥ ३ ॥ सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥ खेती जंमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ गुर का सबदु अंम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥ बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥ ३ ॥ नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५५ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उरधारि ॥ सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥ १ ॥ मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥ २ ॥ विणु नावै सभ डमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए

मिलाइ ॥ ३ ॥ सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥ पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥ सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५६ ॥ सीरागु महला ३ ॥ बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥ १ ॥ मन रे निजघरि वासा होइ ॥ रामनामु सालाहि तू फिरि आवणजाणु न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥ सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥ सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥ २ ॥ हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥ ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोखदुआरु ॥ नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५७ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥ गुरसबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥ किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥ १ ॥ मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥ सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥ गुरसबदी मनु मोहिआ कहणा कछु न जाइ ॥ जिहवा रती सबदि सचै अंम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ॥ गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिसनो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ॥ इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥ आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ॥ आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥ ३ ॥ सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥ इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥ गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ५८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥ गुरसबदी मनु रंगिआ रसना

प्रेम पिआरि ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥ मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुरसबदि न करे पिआरु ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ निजघरि वसहि अंम्रितु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥ गुरसबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥ २ ॥ आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥ सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥ चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥ जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥ मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥ सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ५९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ आपे कारणु करता करे स्रिसटि देखै आपि उपाइ ॥ सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥ आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥ गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥ २ ॥ गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥ घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ गुरसबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥ साधन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥ ३ ॥ सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥ गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥ नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ६० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥ आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥ जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ॥

तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥ मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि कंतु न पछाणई तिन कउ रैणि विहाइ ॥ गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥ २ ॥ गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥ ३ ॥ से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥ खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ६१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥ १ ॥ मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ हरिवरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥ सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥ २ ॥ पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ मनु तनु अरपी सिरु देई तिनकै लागा पाइ ॥ जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥ ३ ॥ २९ ॥ ६२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥ गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरमराइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ अधिआतमी हरि गुणतासु मनि जपहि

एकु मुरारि ॥ तिनकी सेवा धरमराइ करै धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥ मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥ आतमरामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥ सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥ ३ ॥ सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥ जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥ गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥ मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥ बहुबिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥ पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥ मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ॥ जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुरगिआनि अगिआनु तजाइ ॥ २ ॥ हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥ करणैवाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥ माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उरधारि ॥ ३ ॥ जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निजथाउ ॥ मनि रते जिहवा रती हरिगुण सचे गाउ ॥ नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६४ ॥ सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥ मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥ जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥ जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता हरिनाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥ सतिगुरि हरिप्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ हउ गुरसरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥ २ ॥ मनहठि किनै न

पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥ कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥ ३ ॥ सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ ६५ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥ कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ हउ तिसु विटहु चउखंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ धंनु वडभागी वडभागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥ २ ॥ जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोध चंडाल ॥ ३ ॥ सतिगुरु पुरखु अंम्रितसरु वडभागी नावहि आइ ॥ उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥ जन नानक उतमपदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥ सिरीरागु महला ४ ॥ गुण गावा गुण विरथा गुण बोली मेरी माइ ॥ गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥ मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥ अंतरि पिआस हरिनाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ गुरु नामु द्रिड़ाइ रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ बिनु सतिगुर हरिनामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥ २ ॥ बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥ ३ ॥ सतिगुरु बोहिथु हरिनाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ धंनु धंनु वड भागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

सिरीरागु महला ४ ॥ हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ जिनी मेरा पिआरा रावित्रा तिन पीछै लागि फिराउ ॥ करि मिंनति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥ १ ॥ मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥ २ ॥ सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥ जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ रसु अंम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउकरि मिलिआ प्रभु आइ ॥ ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥ १ ॥ भाई रे मिलि सजण हरिगुण सारि ॥ सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरिरसु खाइ ॥ से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरिरसु खाधा गुरभाइ ॥ २ ॥ इहु हरिरसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरिरसु होइ ॥ आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अंम्रितु चोइ ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ आव घटै नरु ना बूझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ गुडु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥ १ ॥ भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति हरि

लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ अोनी चलणु सदा निहालिअा हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥ २ ॥ गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ हरिनामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ ७० ॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥ १ ॥ मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ हैवर गैवर बहुरंगे कीए रथ अथाक ॥ किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥ २ ॥ लैदा बददुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥ जिसनो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ तिनि प्रभि आपि भुलाइआ न तिसु जाति ना पति ॥ ३ ॥ सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ हरिजन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ जो हरिजन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ७१ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनि बिलासु बहु रंगु घणा द्रसटिभूलि खुसीआ ॥ छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥ १ ॥ भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥ धनपाती वडभूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥ २ ॥ हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ सभु को वसगति करि लइओनु विनु नावै खाकु रलिआ ॥ ३ ॥ कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ गिरंबारी वडसाहबी सभु नानक सुपनु थीआ ॥ ४ ॥ २ ॥

७२ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥ सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुदमु करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥ मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥ २ ॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥ ३ ॥ कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७३ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥ १ ॥ अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥ जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥ २ ॥ पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥ ३ ॥ साध संगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७४ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥ धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ मन मेरे करते नो सालाहि ॥ सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥ कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥ जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥ सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥ २ ॥ सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥

साधू संगु मसकते तूठे पाया देव ॥ सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥ ३ ॥ इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ इकस सिउ मनु मानिया ता होया निहचलु चीतु ॥ सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥ जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ गुर ते महलु परापते जिसु लिखिया होवै मथि ॥ १ ॥ मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥ एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिया मोहु माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खुसीया पातिसाहीया जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥ निमख एक हरिनामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥ जिस कउ पूरबि लिखिया तिनि सतिगुर चरन गहे ॥ २ ॥ सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पियारु ॥ दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ बाह पकड़ि गुरि काढिया सोई उतरिया पारि ॥ ३ ॥ थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७६ ॥ स्रीरागु महला ५ ॥ सोई धियाईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ॥ तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥ १ ॥ मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥ सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥ २ ॥ साध संगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥ सुखदाता भैभंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ॥ ३ ॥ बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥ वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७७ ॥ स्रीरागु महला ५ ॥ नामु धिआइ सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥ साध संगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि

नामु धिआइ ॥ नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥ २ ॥ साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥ ३ ॥ तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७८ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥ इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहम करतारु ॥ १ ॥ मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥ २ ॥ घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥ जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥ इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥ ३ ॥ पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥ जीउ पिंडु सभि तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ७९ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥ जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरिनामु ॥ १ ॥ मन मेरे इको नामु धिआइ ॥ सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥ साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ जनम मरण की मलु कटीऐ गुरदरसनु देखि निहाल ॥ २ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥ सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥ ३ ॥ जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ जिनी मेरा प्रभु धिआइआ

नानक तिन कुरबान ॥ ४ ॥ १० ॥ ८० ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरिसुखु वसिआ मनि आइ ॥ अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ मिलि साधूमुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ गुण गोविंदु नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥ गुरपरसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥ २ ॥ पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥ करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥ ३ ॥ भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥ आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥ पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥ ११ ॥ ८१ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥ १ ॥ मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥ वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥ करि सेवा सुखसागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥ २ ॥ चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥ निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥ ३ ॥ हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥ जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥ नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥ ४ ॥ १२ ॥ ८२ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥ दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सतभाइ ॥ अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥ १ ॥ भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥

माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥ सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥ २ ॥ जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥ इकमनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥ गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥ ३ ॥ जिन कउ पूरवि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥ तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥ देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥ अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८३ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उरधारि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥ मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥ त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ भगती नाम विहूणीआ आवहि वंञहि पूर ॥ ३ ॥ राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥ बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥ नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ८४ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥ हरिनामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ करि संगति नित साध की गुरचरणी चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ न आवै ना जागु ॥ २ ॥ करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥ जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥ ऐथै मिलहि

वडाईत्र्या दरगहि पावहि थाउ ॥ ३ ॥ करे कराए त्र्यापि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ मारि त्र्यापे जीवालदा त्र्यंतरि बाहरि साथि ॥ नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सरणि पए प्रभ त्र्यापणे गुरु होत्र्या किरपालु ॥ सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ॥ त्र्यंदरु लगा रामनामि त्र्यंम्रित नदरि निहालु ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ करे दइत्र्या प्रभु त्र्यापणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद नित गावीत्र्यहि त्र्यवगुण कटणहार ॥ बिनु हरिनाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥ सहजे सिफती रतित्र्या भवजलु उतरे पारि ॥ २ ॥ तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ॥ लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ थान थनंतरि रवि रहित्र्या प्रभु मेरा भरपूरि ॥ ३ ॥ सचु पातिसाही त्र्यमरु सचु सचे सचा थानु ॥ सची कुदरति धारीत्र्यनु सचि सिरजित्र्योनु जहानु ॥ नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८६ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ संत संगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥ १ ॥ मन मेरे रामनामु जपि जापु ॥ मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥ जिसु कारणि तनु धारित्र्या सो प्रभु डिठा नालि ॥ जलि थलि महीत्र्यलि पूरित्र्या प्रभु त्र्यापणी नदरि निहाल ॥ २ ॥ मनु तनु निरमलु होइत्र्या लागी साचु परीति ॥ चरण भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥ ३ ॥ रतन जवेहर माणिका त्र्यंम्रितु हरि का नाउ ॥ सूख सहज त्र्यानंद रस जन नानक हरिगुण गाउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८७ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरिनाउ ॥ चरण कमलु गुरि धनु दीत्र्या मिलित्र्या निथावे थाउ ॥ साची पूंजी सचु संजमो त्र्याठ पहर गुण गाउ ॥ करि किरपा प्रभु भेटित्र्या मरणु न त्र्यावणु जाउ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु सदा इकरंगि ॥ घट घट त्र्यंतरि रवि रहित्र्या सदा सहाई संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखा की मिति कित्र्या गणी जा सिमरी गोविंदु ॥ जिन चाखित्र्या से त्रिपतासित्र्या उह

रसु जाणै जिंदु ॥ संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥ २ ॥ अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥ द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ३ ॥ मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥ दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८८ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥ मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥ बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥ मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥ चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवर न जाइ ॥ २ ॥ तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥ सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ ३ ॥ परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥ सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥ मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥ ४ ॥ १९ ॥ ८९ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥ तोसा बंधहु जीआ का ऐथै ओथै नालि ॥ गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥ करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥ १ ॥ मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥ गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥ गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥ गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराए ॥ २ ॥ कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करणकारण समरथु ॥ से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ गुरि अंम्रित नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु

दुख लथु ॥ ३ ॥ सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंड ॥ जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥ गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥ नामि निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥ ४ ॥ २०॥ ९० ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥ जांदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥ १ ॥ मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दहदिस जाइ ॥ लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥ काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥ त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ३ ॥ अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥ जिसनो रखै सो रहै संम्रिथु पुरखु अपारु ॥ हरिजन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥ ४ ॥ २१ ॥ ९१ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥ गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसारु ॥ मुहलति पुंनी चलणा तुं संमलु घरबारु ॥ १ ॥ हरिगुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥ २ ॥ मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥ ३ ॥ लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ९२ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥ जा साथी उठि चलिआ ता धन खाकू रालि ॥ १ ॥ मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ धंनु सु तेरा थानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥ २ ॥ पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥ गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥ ३ ॥ सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥

नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥ ४ ॥ २३ ॥ १३ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ करणकारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥ तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरन मन महि धिआइ ॥ छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिवलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुरमंत्रु हिरदै होइ ॥ कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥ २ ॥ देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥ ३ ॥ साध संगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ १४ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संचि हरिधनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥ १ ॥ जपि मन नामु एकु अपारु ॥ प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥ पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥ २ ॥ सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥ आपु छोडि सभि होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥ ३ ॥ जो दीसै सो सगल तूं है पसरिआ पासारु ॥ कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥ ४ ॥ २५ ॥ १५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥ दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥ १ ॥ ठाकुरु सरबे समाणा ॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वडपुरखु सुजाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥ तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥ २ ॥ कहन कहावन इहु कीरति करला ॥ कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥ गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥ संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥ ४ ॥ २६ ॥ १६ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥ १ ॥ सुहला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥ सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥ २ ॥ पिता हउ जानउ

नाही तेरी कवन जुगता ॥ बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥ ३ ॥ भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥ गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९७ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंम्रितनामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥ गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥ २ ॥ आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥ सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥ करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥ ३ ॥ सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥ सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥ ४ ॥ २८ ॥ ९८ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ गुरु परमेसरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥ सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥ सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥ बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥ १ ॥ मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥ गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥ गुर ते बाहरि किछु नही गुर कीता लोड़े सु होइ ॥ २ ॥ गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ गुरु दाता हरिनामु देह उधरै सभु संसारु ॥ गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥ गुर की महिमा अगम है किआ कथै कथनहारु ॥ ३ ॥ जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ पूरबि लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥ सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥ हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥ ४ ॥ २९ ॥ ९९ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥ गुर के चरण सरेवणे तीरथि हरि का नाउ ॥ आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥ १ ॥ भाई रे

साची सतिगुर सेव ॥ सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ सचु खाणा सचु पैन्हणा सचे सचा नाउ ॥ २ ॥ सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥ नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ १०० ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥ आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥ आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥ २ ॥ पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥ ३ ॥ पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥ ५ ॥ वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥ ६ ॥ सभ को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ केवड दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥

७॥ १ ॥ महला १ ॥ सभे कंत महेलीया सगलीया करहि सीगारु ॥ गणत गणावणि आईया सूहा वेसु विकारु॥ पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु॥ १ ॥ हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि॥ तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरसबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि॥ दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि॥ लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥ २ ॥ प्रिअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ॥ साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥ ३ ॥ साधन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ॥ पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ॥ नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥ ४ ॥ साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु॥ चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ दीपकु सबदि विगासिआ रामनामु उर हारु ॥ ५ ॥ नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार॥ बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥ ६ ॥ निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ॥ अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलिबलि जाइ॥ जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ॥ ७ ॥ सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥ हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ॥ सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ॥ ८ ॥ २ ॥ सिरीरागु महला १॥ आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु॥ आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु॥ १ ॥ हरि जीउ तूं करता करतारु॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं हरिनामु मिलै आचारु॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥ २ ॥ आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु॥ साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु॥ निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु॥ ३ ॥ असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ॥ आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ॥ गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ॥ ४ ॥

हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥ नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥ ५ ॥ जिन्ही सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥ हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उरधारि ॥ जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥ ६ ॥ साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥ ७ ॥ ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥ कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥ १ ॥ भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥ जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥ २ ॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥ ३ ॥ सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥ ४ ॥ सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥ साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥ नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥ ५ ॥ बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥ गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥ तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥ ६ ॥ तूं है साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥ ७ ॥ हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥ नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥ ८ ॥ ४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा

जूठी होइ ॥ मुखि झूठै झूठु बोलणा किउकरि सूचा होइ ॥ बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥ १ ॥ मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥ पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥ जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥ पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥ तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥ ३ ॥ कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥ ४ ॥ पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि॥ पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ दरि घरि ढोई न लहै छूटी दूजै सादि ॥ ५ ॥ पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि बीचारु ॥ अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥ कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥ ६ ॥ केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु। वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥ बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥ ७ ॥ सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥ हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥ ८ ॥ ५ ॥ सीरागु महला १ ॥ जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥ पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥ १ ॥ मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥ अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥ मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घरबारि ॥ विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ २ ॥ लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहम वीचारि ॥ ३ ॥ संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥ मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥ सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥ ४ ॥ जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो

पलै पाइ ॥ त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥ ५ ॥ साधन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥ महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥ सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥ ६ ॥ भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥ बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥ ७ ॥ पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥ राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥ नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥ ८ ॥ ६ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥ निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥ सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥ १ ॥ भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥ निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥ हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥ २ ॥ गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइ ॥ गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥ ३ ॥ कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥ खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥ आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥ ४ ॥ सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥ सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥ सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥ ५ ॥ बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ॥ मुनिजन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ॥ ६ ॥ चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥ भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥ जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥ ७ ॥ खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥ आपु पछाणै घरि वसै हउमै त्रिसना जाइ ॥ नानक निरमल ऊजले जो राते हरिनाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥ हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥ दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥ १ ॥ भाई रे अवरु नाही

मै थाउ ॥ मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥ २ ॥ गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥ ३ ॥ बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ तब लगु महलु न पाईऐ जबलगु साचु न चीति ॥ सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥ ४ ॥ हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥ ५ ॥ सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उरधारि ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥ ६ ॥ सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ सबदै ही ते पाईऐ हरिनामे लगै पिआरु ॥ बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥ ७ ॥ सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥ ॥ बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥ २ ॥ सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥ ३ ॥ मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥ इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ संतसभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥ ४ ॥ खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ सबद पछाणै रवि रहै ना तिसु

कालु संताइ ॥ साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥ ५ ॥ वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥ पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ ६ ॥ गुरमुखि तोलि तुोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥ आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥ ७ ॥ कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥ ८ ॥ ९ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥ मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ पूछहु ब्रहमे नारदै बेदबिआसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥ सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥ लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥ २ ॥ गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥ सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥ ३ ॥ भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥ सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥ ४ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥ जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥ घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥ ५ ॥ मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥ बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥ ६ ॥ आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥ पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥ बिनु हरिनाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥ नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥ ८ ॥ १० ॥ सिरीरागु महला १ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥ जल महि

जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन ऐसी ॥ हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥ बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥ २ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥ सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥ करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥ ३ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥ आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥ ४ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ ५ ॥ मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥ गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥ ६ ॥ सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥ निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥ ७ ॥ खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥ घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥ ८ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥ ९ ॥ मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥ नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥ १० ॥ ११ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ मनमुखि भूलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥ १ ॥ बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ॥ भूली फिरै दिसंतरी भूली गृहु तजि जाइ ॥ भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥ धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥ साचि सहजि सोभा घणी

हरिगुण नाम अधारि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥ ३ ॥ अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु बीचारु ॥ साधन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥ ५ ॥ गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥ ६ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥ गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥ भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥ नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥ ८ ॥ १२ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥ धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥ मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥ मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥ २ ॥ आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥ ३ ॥ गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥ ४ ॥ तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥ गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥ ६ ॥ आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥ आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥ ७ ॥ सरबे थाई एकु तूं

जिउ भावै तिउ राखु ॥ गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साथु ॥ हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥ ८॥ आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ॥ आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ॥ ९ ॥ १३ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु॥ सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरिनामु अधारु ॥ १ ॥ मन रे साची खसम रजाइ॥ जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥ तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ॥ हरिनामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥ २ ॥ अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥ तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ॥ हरिनामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ ३ ॥ कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु॥ रामनामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु॥ ४ ॥ मन हठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोखदुआर॥ सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु॥ ५ ॥ सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ॥ इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ॥ ६ ॥ साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ॥ अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ॥ पी अंम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ॥ ७॥ घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ॥ विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ॥ नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥ ८ ॥ १४ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर॥ करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि॥ अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥ १ ॥ भाई रे तनु धनु साथि न होइ॥ रामनामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ॥१॥ रहाउ॥ रामनामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु॥ आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे

बखसणहारु ॥ २ ॥ मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥ गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरिरसु भोगु ॥ ३ ॥ चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥ बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥ मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥ ४ ॥ साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥ ५ ॥ बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥ सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरिगुर दरसु न होइ ॥ ६ ॥ जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जबलगि निद्रा होइ ॥ इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥ गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥ ७ ॥ अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥ बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥ नानक गुरमुखि हरिरसि मिलै जीवा हरिगुण गाइ ॥ ८ ॥ १५ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥ ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥ गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥ १ ॥ भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥ पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरिनाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥ २ ॥ दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ किसही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥ ३ ॥ सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥ सभु जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥ ४ ॥ पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥ चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥ खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥ ५ ॥ महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥ चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥ मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥ ६ ॥ हउमै करि

करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥ सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥ ७ ॥ नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ मै हरिनामु न वीसरै हरिनामु रतनु वेसाहु ॥ मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥ ८ ॥ १६ ॥ सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥ १ ॥ दुनीआ कैसि मुकामे करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देवसथानि ॥ २ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनिजन सेख पीर सलार ॥ दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥ ३ ॥ सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥ घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥ ४ ॥ सबदाह माहि वखाणीऐहि विरला त बूझै कोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥ ५ ॥ अलाहु अलखु अगंम कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥ ६ ॥ मुकामु तिसनो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकाम ओही एकु ॥ ७ ॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥ ८ ॥ १७ ॥ महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भाई रे भगति हीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ

नालि न जाई ॥ सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥ ३ ॥ पेईअड़ै जग जीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥ हरिसुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥ ४ ॥ पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥ ५ ॥ आपे नदरि करे भाउ लाए गुरसबदी बीचारि ॥ सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ॥ हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उरधारि ॥ ६ ॥ प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥ ७ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥ ८ ॥ १ ॥ १८ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥ जे सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥ २ ॥ जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥ हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥ ३ ॥ गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥ जे सउ अंम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥ ४ ॥ से जन सचे निरमले जिन सतिगुरु नालि पिआरु ॥ सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥ ५ ॥ मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत्र सोधहु जाइ ॥ मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥ ६ ॥ हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥ ७ ॥ नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ गुरपसादी पाईऐ

करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १९ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ हरिरसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ निजघरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १ ॥ मन रे गुर की कार कमाइ ॥ गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरिनाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥ बिनु गुर महलु न जापई ना अंम्रित फल पाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥ साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥ अंम्रित फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥ ३ ॥ मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥ तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥ कटीअहि तै नित जालीअहि ओन्हा सबदु न नाउ ॥ ४ ॥ हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥ हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥ हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥ ५ ॥ हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥ अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥ ६ ॥ गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥ सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥ ७ ॥ सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥ जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ २० ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥ सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ भाई रे दासनिदासा होइ ॥ गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥ सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥ २ ॥ हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु चुकाइआ

गुरमती सहजि सुभाइ ॥ बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥ ४ ॥ माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥ ५ ॥ माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥ दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥ बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥ भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ ४ ॥ २१ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥ मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ १ ॥ मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥ गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥ घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥ २ ॥ नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥ सुरिनर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥ ३ ॥ दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥ एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥ ४ ॥ खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥ सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥ ५ ॥ पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥ जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ ६ ॥ सत संगति महि नामु हरि उपजै जा

सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥ ७ ॥ सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥ प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥ ८ ॥ ५ ॥ २२ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥ सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥ २ ॥ सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥ सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥ सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरिरसु खाइ ॥ ३ ॥ सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥ सहजे हरिनामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥ से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥ ४ ॥ माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥ मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥ जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ५ ॥ त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥ चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥ ६ ॥ निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥ गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥ भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥ ७ ॥ बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥ सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥ आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥ ८ ॥ सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥ सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ पूरै सबदि सालाहीऐ जिसदा अंतु न पारावारु ॥ ९ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ अनदिनु लाहा हरिनामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ नानक तोटि न आवई

दीए देवणहारि ॥ १० ॥ ६ ॥ २३ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ पूरै सबदि सभ सोझी होई हरिनामै रहै समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥ २ ॥ वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥ आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥ ३ ॥ इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ४ ॥ भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥ अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥ ५ ॥ गुरमुखि अंम्रित बाणी बोलहि सभ आतमरामु पछाणी ॥ एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ ६ ॥ सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥ ७ ॥ आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥ २४ ॥ सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥ सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥ १ ॥ मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ सतिगुरु सेवीऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥ २ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ सभु आतमरामु पछाणिआ गुरमती निजघरि वासु ॥ ३ ॥ सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥ सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ जिनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥ ४ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥ जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमहि वारो

वार ॥ ५ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥ सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥ ६ ॥ लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥ ७ ॥ जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥ तिना निजघरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥ नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥ ८ ॥ १७ ॥ ८ ॥ २५ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥ लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥ १ ॥ साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥ दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥ २ ॥ जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥ ३ ॥ कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥ पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥ ४ ॥ सासत सिंम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥ ५ ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण विसथार ॥ बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ रंग तमासे बहुबिधी चाइ लगि रहिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ॥ ६ ॥ बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥ मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत

॥ ७ ॥ काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥ सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु जम कंकर वसि परिआ ॥ ८ ॥ किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥ जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥ १ ॥ १ ॥ २६ ॥ सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥ जानउ नही भावै कवन बाता ॥ मन खोजि मारगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी गिआनु कमावहि ॥ प्रभु किनही जाता ॥ १ ॥ भगउती रहत जुगता ॥ जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥ २ ॥ मोनी मोनि धारी ॥ सनिआसी ब्रहमचारी ॥ उदासी उदासि राता ॥ ३ ॥ भगति नवै परकारा ॥ पंडितु वेदु पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥ ४ ॥ इकसबदी बहुरूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥ इकि तीरथि नाता ॥ ५ ॥ निरहार वरती आपरसा ॥ इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ इकि मन ही गिआता ॥ ६ ॥ घाटि न किनही कहाइआ ॥ सभ कहते है पाइआ ॥ जिसु मेले सो भगता ॥ ७ ॥ सगल उकति उपावा ॥ तिआगी सरनि पावा ॥ नानक गुरचरणि पराता ॥ ८ ॥ २ ॥ २७ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥

जोगी अंदरि जोगीआ ॥ तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥ तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥ १ ॥ हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु संसारु उपाइआ ॥ सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥ वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥ २ ॥ परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥ सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम गति

पाईऐ ॥ सुरिनर मुनिजन लोचदे सो सतिगुर दीआ बुझाइ जीउ ॥ ४ ॥ सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ ५ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ आपहु तुधु खुआइआ ॥ परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥ ६ ॥ दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥ ७ ॥ सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥ नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥ ८ ॥ हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥ सहीआ से सुहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥ ९ ॥ जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥ नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥ १० ॥ सतिगुरि मिलीऐ फलु पाइआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥ ११ ॥ अंम्रितु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥ १२ ॥ सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥ सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥ १३ ॥ हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥ १४ ॥ तूं सभना माहि समाइआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥ नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥ १५ ॥ आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥ १६ ॥ सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥ १७ ॥ मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ प्रभि आपणा बिरदु समारिआ ॥ कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥ १८ ॥ मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥ १९ ॥ तुधु आपे आपु

उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥ २० ॥ गुर परसादी पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥ २१ ॥ गोपी नै गोआलीआ ॥ तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥ २२ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥ २३ ॥ तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ मै राति दिहै वडिआईआं ॥ अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥ २४ ॥ १ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥ सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥ अंम अबे थावहु मिठड़ा ॥ भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥ १ ॥ तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ मै सत का हलु जोआइआ ॥ नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥ २ ॥ हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिवै निबाहि जीउ ॥ ३ ॥ तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥ हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥ ४ ॥ हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥ पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥ ५ ॥ हउ वारी घुंमा जावदा ॥ इकसाहा तुधु धिआइदा ॥ उजड़ थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ६ ॥ हरि इठै नित धिआइदा ॥ मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥ सभे काजि सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥ ७ ॥ मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ गोसाई सेवी सचड़ा ॥ नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥ ८ ॥ मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥ गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥ सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥ ९ ॥ मै बधी सचु धरमसाल है ॥ गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥ १० ॥ सुणि गला गुर पहि पाइआ ॥ नामु दानु

इसनानु दिड़ाइत्रा ॥ सभु मुकतु होत्रा सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥ ११ ॥ सभु स्रिसटि सेवे दिन राति जीउ ॥ दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ॥ ठोकि वजाइ सभ डिठीत्रा तुसि आपे लइअनु कुडाइ जीउ ॥ १२ ॥ हुणि हुकमु होत्रा मिहरवाणदा ॥ पै कोइ न किसै रञाणदा ॥ सभ सुखाली वुठीत्रा इहु होत्रा हलेमी राजु जीउ ॥ १३ ॥ झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा ॥ बोलाइत्रा बोली खसम दा ॥ बहु माणु कीत्रा तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥ १४ ॥ तेरित्रा भगता भुख सद तेरीत्रा ॥ हरि लोचा पूरन मेरीत्रा ॥ देहु दरसु सुखदातित्रा मै गलि विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥ १५ ॥ तुधु जेवडु अवरु न भालित्रा ॥ तूं दीप लोअ पइआलित्रा ॥ तूं थानि थनंतरि रवि रहित्रा नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥ १६ ॥ हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ मै गुर मिलि उचदुमालड़ा ॥ सभ होई छिंझ इकठीत्रा दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥ १७ ॥ वात वजनि टंमक भेरीत्रा ॥ मल लथे लैदे फेरीत्रा ॥ निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥ १८ ॥ सभ इकठे होइ आइत्रा ॥ घरि जासनि वाट वटाइत्रा ॥ गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥ १९ ॥ तूं वरना चिहना बाहरा ॥ हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥ २० ॥ मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ हउ वाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥ २१ ॥२॥ २९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु पहरे महला १ घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारित्रा मित्रा हुकमि पइत्रा गरभासि ॥ उरध तपु अंतरि करे वणजारित्रा मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ नामरजादु आइत्रा कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइत्रा गरभासि ॥ १ ॥

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥ ४ ॥ १ ॥ सिरीरागु महला १ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥ संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥ रामनाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चीति ॥ रामनामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥ जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥ अंति कालि

पछुतासी ग्रंधुले जा जमि पकड़ि चलाइग्रा ॥ सभु किछु ग्रपुना करि करि राखिग्रा खिन महि भइग्रा पराइग्रा ॥ बुधि विसरजी गई सिग्राणप करि ग्रवगण पछुताइ ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिग्रा मित्रा बिरधि भइग्रा तनु खीणु ॥ ग्रखी ग्रंधु न दीसई वणजारिग्रा मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥ ग्रखी ग्रंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥ गुण ग्रंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख ग्रावणजाणा ॥ खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै ग्राइ चलै किग्रा माणु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥ ४ ॥ ग्रोड़कु ग्राइग्रा तिन साहिग्रा वणजारिग्रा मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥ इक रती गुण न समाणिग्रा वणजारिग्रा मित्रा ग्रवगण खड़सनि बंनि ॥ गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जंमणु मरणा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥ पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥ कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥ ५ ॥ २ ॥ सिरीरागु महला ४ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिग्रा मित्रा हरि पाइग्रा उदर मंझारि ॥ हरि धिग्रावै हरि उचरै वणजारिग्रा मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥ हरि हरि नामु जपे ग्राराधे विचि ग्रगनी हरि जपि जीविग्रा ॥ बाहरि जनमु भइग्रा मुखि लागा सरसे पिता मात थीविग्रा ॥ जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिग्रा मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥ मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिग्रा मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥ लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥ जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥ कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिग्रावै मनि लिव लाइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिग्रा मित्रा मनु लगा ग्रालि जंजालि ॥ धनु चितवै धनु संचवै वणजारिग्रा मित्रा हरिनामा हरि न समालि ॥ हरिनामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै ग्रंति सखाई ॥ इहु धनु संपै

माइत्रा भूठी ग्रंति छोडि चलिश्रा पछुताई ॥ जिसनो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिश्रा मित्रा हरि चलण वेला ग्रादी ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिश्रा मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ हरि सेवहु खिनु खिनु दिल मूलि न करिहु जितु ग्रसथिरु जुगु जुगु होवहु ॥ हरि सेती सद माणहु रलीश्रा जनम मरण दुख खोवहु ॥ गुर सतिगुर सुग्रामी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिउ रैणि भगता दी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ सिरीरागु महला ५ ॥ पहिलै पहर रैणि कै वणजारिश्रा मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥ दसी मासी मानसु कीश्रा वणजारिश्रा मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥ मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइश्रा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइश्रा ॥ करम सुकरम कराए ग्रापे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिश्रा मित्रा भरि जुग्रानी लहरी देइ ॥ बुरा भला न पछाणई वणजारिश्रा मित्रा मनु मता ग्रहंमेइ ॥ बुरा भला न पछाणै प्राणी ग्रागै पंथु करारा ॥ पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविश्रा सिरि ठाढे जम जंदारा ॥ धरमराइ जब पकरसि बवरे तब किश्रा जबाबु करेइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिश्रा मित्रा बिखु संचै ग्रंधु ग्रगिग्रानु ॥ पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिश्रा वणजारिश्रा मित्रा ग्रंतरि लहरि लोभानु ॥ ग्रंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न ग्रावै ॥ साध संगति सिउ संगु न कीश्रा बहु जोनी दुखु पावै ॥ सिरजणहारु विसारिश्रा सुग्रामी इक निमख न लगो धिग्रानु ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे ग्रंधु ग्रगिग्रानु ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिश्रा मित्रा दिनु नेड़ै ग्राइश्रा सोइ ॥ गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिश्रा मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥ गुरमुखि नामु समालि पराणी ग्रंते होइ सखाई ॥ इहु मोहु माइश्रा तेरै संगि न चालै

झूठी प्रीति लगाई ॥ सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥ ४ ॥ लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥ इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥ कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥ ५ ॥ १ ॥ ४ ॥

सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मुंध इआणी पेईअड़ै किउकरि हरि दरसनु पिखै ॥ हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ॥ साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥ सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाइ ॥ लेखा धरमराइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥ मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥ १ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ बलिआ गुरगिआनु अंधेरा विनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ २ ॥ हरि सति सते मेरे बाबुला हरिजन मिलि जंञ सुहंदी ॥ पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥ साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥ सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥ हरि सति सति मेरे बाबोला हरिजन मिलि जंञ सोहंदी ॥ ३ ॥ हरिप्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो

॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइश्रा ॥ खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइश्रा ॥ होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ ४ ॥ हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥ जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिश्राइश्रा ॥ हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइश्रा ॥ नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥ हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ ५ ॥ १ ॥

सिरीरागु महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मन पिश्रारिश्रा जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥ मन पिश्रारिश्रा जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ संगि सहाई हरिनामु धिश्राई बिरथा कोइ न जाए ॥ मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥ जलि थलि पूरि रहिश्रा बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥ १ ॥ मन पिश्रारिश्रा जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥ मन पिश्रारिश्रा जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥ चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न विश्रापै ॥ गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥ आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥ २ ॥ मन पिश्रारिश्रा जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ मन पिश्रारिश्रा जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥ हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइश्रा ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइश्रा ॥ चित्र गुपत का कागदु फारिश्रा जमदूता कछू न चली ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥ ३ ॥ मन पिश्रारिश्रा जीउ

मित्रा करि संता संगि निवासो ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरिनामु जपत परगासो ॥ सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥ पुरबे कमाए स्री रंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥ अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥ ४ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ हरि पी आघाने अंम्रितबाने स्रब सुखा मन वुठे ॥ स्री धर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥ लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥ नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ ५ ॥ १ ॥ २ ॥

सिरीराग के छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ डखणा ॥ हठ सझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥ छंतु ॥ चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥ दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥ दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥ नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साध संगि मिलि गावए ॥ नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥ १ ॥ डखणा ॥ सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥ खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥ १ ॥ छंतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥ सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥ किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥ मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥ २ ॥ डखणा ॥ धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥ लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥ १ ॥ छंतु ॥ सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥

मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंमृतु पीवते जीउ ॥ अंम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥ भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ सरब सो सूख आनंद घन पिआरे हरिरतनु मन अंतरि सीवते ॥ इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥ ३ ॥ डखणा ॥ जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ॥ आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥ १ ॥ छंतु ॥ प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ॥ मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥ करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥ ४ ॥ डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ जिना भाग मथाहि से नानक हरिरंगु माणदो ॥ १ ॥ छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥ जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥ ब्रहम बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी॥ करु गहि लीने हरिजसो दीने जोनि न धावै नह मरी ॥ सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

सिरीरागु महला ४ वणजारा

१ ओं सतिनामु गुर प्रसादि ॥ ॥ हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥ हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥ सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥ १ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ हरि गुरसरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना

विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ॥ पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥ वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥ जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ॥ २ ॥ मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि मिलिआ हरिप्रभ नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जबलगु जोबनि सासु है तबलगु नामु धिआइ ॥ चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाए॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ॥ जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥ धुरि मसतकि हरिप्रभ लिखिआ जन नानक नामु धिआइ॥ ३ ॥ मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ गुरसबदी पारि लघाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ॥ गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते॥ जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥ ४ ॥ मनि हरि हरि जपनु करे ॥ हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे॥ १ ॥ रहाउ॥ घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥ गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ मै धर नामु अधारु है हरिनामै ते गति मति ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु है हरिनामे ही जति पति ॥ जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥ ५ ॥ हरि धिआवहु हरिप्रभु सति ॥ गुर बचनी हरिप्रभु जाणिआ सभ हरिप्रभु ते उतपति ॥ १ ॥ रहाउ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥ सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि॥ धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि॥ गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि॥ जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि॥ ६ ॥ हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरिनामु जिना रहरासि॥ १ ॥ रहाउ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥ सलोक म० ३ ॥ रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ होरु बिरहा सभ धातु है जबलगु साहिब प्रीति न होइ ॥ इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥ नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥ १ ॥ सलोक म० १ ॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥ १ ॥ म० १ ॥ सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ॥ दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥ तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥ तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥ २ ॥ सलोक म० २ ॥ फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ सभना जीआ इका छाउ ॥ आपहु जे को भला कहाए ॥ नानक तापरु जापै जा पति लेखै पाइ ॥ १ ॥ म० २ ॥ जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥ ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥ दसचारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अंम्रितु पीवे ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥ ३ ॥ सलोक म० १

॥ कुदरति करि कै वसिया सोइ ॥ वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ कुदरति है कीमति नही पाइ ॥ जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥ सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ जिहि धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरसभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दसअसट पुराणा ॥ हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥ सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारगपाणा ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥ ४ ॥ सलोक म० ३ ॥ कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥ कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥ जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥ जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥ ५ ॥ सलोक म० ३ ॥ कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥ लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥ नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥ ६ ॥ सलोक म० ३ ॥ हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि ॥ दूजै भाइ

दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥ १ ॥ म० १ ॥ गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुरसबदी वेखि निहालु ॥ ७ ॥ सलोक म० ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ जे धन खसमै चलै रजाई ॥ दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ नानक करमी इह मति पाई ॥ गुर परसादी सचि समाई ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ॥ इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥ बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ॥ इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ॥ इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥ ८ ॥ सलोक म० ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ हरिनामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुख दाता नामु वसै मनि आइ ॥ सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥ नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥ १ ॥

म० ३ ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ गुरमती आपु पछाणिआ रामनाम परगासु ॥ सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै धिगु जीवासु ॥ गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥ सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥ जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि पेखहु को निरजासि ॥ सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥ ६ ॥ सलोक म० ३ ॥ पंडितु पड़ि पड़ि ऊचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥ अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारो वार ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥ आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुरसबदी वीचारु ॥ नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरिनामु धिआइ ॥ गुरसबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥ मनहठि किनै ना पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥ नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥ १० ॥ सलोक म० ३ ॥ नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥ सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिओ ॥ मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥ सभो वरतै हुकमु किया करहि विचारिआ ॥ आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥ नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ रामनामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥

गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू ओस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥ ११ ॥ सलोक म० ३ ॥ आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥ आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥ खिनु पलु हरिनामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥ सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥ मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥ मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥ लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥ गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥ मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ अंम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥ विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥ गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥ नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥ जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ हरि अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुरबचनी सहजे चाखी ॥ तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि

आखी ॥ १२ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥ दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥ आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥ जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ॥ नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥ १३ ॥ सलोक म० ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ लख चउरासीह फेर पइआ मरि जंमै होइ खुआरु ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ॥ सचि रते गुरसबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥ नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सो भगउती जो भगवंतै जाणै ॥ गुर परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ जीवतु मरै हरिनामु वखाणै ॥ ऐसा भगउती उतमु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ २ ॥ म० ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥ बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥ सत संगति सिउ बादु रचाए ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ हरिनामु न चेतै बहु करम कमाए ॥ पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ नानक बिनु सतिगुरु सेवे मोखु न पाए ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़िन सवाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥ जिन

कउ होया क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥ १४ ॥ सलोक म० २ ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो ऐसा हरिनामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥ सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥ सो ऐसा हरिनामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना सभ भुख गवाए ॥ सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी आए ॥ नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥ १५ ॥ सलोक म० ३ ॥ वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥ पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥ लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरिनामु विसारि ॥ भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥ सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उरधारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥ हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ॥ सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ॥ सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥ जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥ १६ ॥ सलोक म० ३ ॥ मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥ नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै

भाइ पिआरि ॥ सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढीहूं तूं डाढिआ ॥ हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥ हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥ १७ ॥ सलोक म० ३ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नानक हरिनामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिवतार ॥ माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ गुर परसादी जिनि बूझिआ तिनि पाइआ मोखदुआरु ॥ मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥ गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥ सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥ १८ ॥ सलोक म० ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ ॥ ॥ माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥ हरि भगता नो देइ

पिश्रारु करि ग्रंगु निसतारिग्रनु ॥ १९ ॥ सलोक म० १ ॥ कुबुधि डूमणी कुदइग्रा कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ कारी कढी किग्रा थीऐ जां चारे बैठीग्रा नालि ॥ सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥ नानक ग्रगै ऊतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥ १ ॥ म० १ ॥ किग्रा हंसु किग्रा बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि ग्राखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ संता संगि निधानु ग्रंम्रितु चाखीऐ ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ नानक हरिगुण गाइ ग्रलखु प्रभु लाखीऐ ॥ २० ॥ सलोक म० ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ ग्रधारु ॥ नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिग्राइग्रा हरि निरंकारु ॥ ग्रोना के मुख सद उजले ग्रोना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥ ग्रठारह सिधी पिछै लगीग्रा फिरनि निजघरि वसै निजथाइ ॥ ग्रनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिग्रा धुरि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरिप्रभ खसम का हरि कै दरि ग्राइग्रा ॥ हरि ग्रंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइग्रा ॥ हरि पुछिग्रा ढाढी सदि कै कितु ग्ररथि तूं ग्राइग्रा ॥ नित देवहु दानु दइग्राल प्रभ हरिनामु धिग्राइग्रा ॥ हरि दातै हरिनामु जपाइग्रा नानकु पैनाइग्रा ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु कबीर जीउ का ॥

एकु सुग्रानु कै घरि गावणा ॥ जननी जानत सुतु बडा होतु है इतनाकु न जानै जि दिन दिन ग्रवध घटतु है ॥ मोर मोर करि ग्रधिक

लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥ १ ॥ ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इनि बिधि भवसागरु तरणा ॥ २ ॥ जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ गुरप्रसादि अंतरि लिव लागै ॥ ३ ॥ इतु संगति नाही मरणा ॥ हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ सिरीरागु त्रिलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥ १ ॥ दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥ २ ॥ बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥ ३ ॥ आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥ तह करदल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ ४ ॥ जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ॥ ऐजी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥ ५ ॥ २ ॥ स्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरिनर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥ १ ॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥ २ ॥ एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥ ३ ॥ ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥ ४ ॥ ३ ॥

सिरीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥
पहरिआ कै घरि गावणा ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सुनागा ॥ ते दिनु संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ गरभ छोडि मृत मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥ १ ॥ फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ चेति रामु नाही जमपुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ रसु मिसु मेधु अंमृतु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति रामनामु न अराधिआ ॥ उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥ ॥ २ ॥ तरुण तेजु परत्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥ सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥ अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥ ३ ॥ पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥ ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ अवगति बाणि छोडि मृत मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥ ४ ॥ निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥ बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥ ५ ॥ सिरीरागु ॥ तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ १ ॥ जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥ २ ॥ सरीरु अराधै मोकउ बीचारु देहू ॥ रविदास समदल समझावै कोऊ ॥ ३ ॥

रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ वडभागी हरिनामु धिआइआ ॥ गुरि पूरै हरिनाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥ १ ॥ मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ माझ महला ४ ॥ मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥ १ ॥ हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥ २ ॥ मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥ ३ ॥ मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ मेरे मनि तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥

माझ महला ४ ॥ हरिगुण पड़ीऐ हरिगुण गुणीऐ ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ मिलि सतसंगति हरिगुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥ १ ॥ आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥ २ ॥ मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ मै अउखधु मंत्रु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक दीन सतिगुर सरणाई ॥ हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जलु बिनु मरीऐ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ माझ महला ४ ॥ हरिजन संत मिलहु मेरे भाई ॥ मेरा हरिप्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥ १ ॥ मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ हरि हरि अंम्रितु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अंम्रितु पीजै जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संगति पावहि ॥ भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ ३ ॥ मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ माझ महला ४ ॥ हरि गुर गिआनु हरिरसु हरि पाइआ ॥ मनु हरि रंगि राता हरिरसु पीआइआ ॥ हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरिरसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥ १ ॥ आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ मेरा प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संत मिलाइआ ॥ गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥ भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥ ३ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ माझ महला ४ ॥ हउ गुण गोविंद हरिनामु धिआई ॥ मिलि संगति मनि नामु वसाई॥हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरिरसु कीचै जीउ॥

१ ॥ धनु धनु हरिजन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ जाइ पुछा जन हरि की वाता ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरिजन हरिरसु पीचै जीउ ॥ २ ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइया ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइया ॥ अंमृत रसु सचु अंमृतु बोली गुरि पूरै अंमृतु लीचै जीउ ॥ ३ ॥ हरि सतसंगति सतपुरखु मिलाईऐ ॥ मिलि सतिसंगति हरिनामु धियाईऐ ॥ नानक हरि कथा सुणी मुखि बोलीं गुरमति हरिनामि परीचै जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ माझ महला ४ ॥ आवहु भैणे तुसी मिलहु पियारीआ ॥ जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥ १ ॥ जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥ २ ॥ एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ सभ इका जोति वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥ ३ ॥ जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥ उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सत चउपदे महले चउथे के ॥

माझ महला ५ चउपदे घरु १

॥ मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर

दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ १ ॥ ८ ॥ रागु माझ महला ५ ॥ सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥ १ ॥ तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ १ ॥ जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥ २ ॥ सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूं है वुठा ॥ सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ ३ ॥ तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥ माझ महला ५ ॥ अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ सबदि अनंद करे सद केला ॥ सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥ १ ॥ फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥ जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥ २ ॥ आपे राजनु आपे लोगा ॥ आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥ ३ ॥ जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥ माझ महला ५ ॥ जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥ १ ॥ सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥ २ ॥ अचारवंति साई परधाने ॥ सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥ ३ ॥ महिमा तिसकी कहणु न जाए ॥ जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ थिरु सोहागु वरु अगमु अगोचरु

जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥ माझ महला ५ ॥
खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु
सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥ १ ॥ खट
सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली
करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥ २ ॥ अनिक
बरख कीए जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै
सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा
मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु अबिनासी
बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥
माझ महला ५ ॥ पारब्रहम अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख
अभेवा ॥ दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती
जीउ ॥ १ ॥ गुरमुखि मधुसुदनु निसतारे ॥ गुरमुखि संगी क्रिसन
मुरारे ॥ दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥
२ ॥ निरहारी केसव निरवैरा ॥ कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥
गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥ ३ ॥ अमोघ
दरसन बेअंत अपारा ॥ वड समरथु सदा दातारा ॥ गुरमुखि नामु
जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥
माझ महला ५ ॥ कहिआ करणा दिता लैणा ॥ गरीबा अनाथा तेरा
माणा ॥ सभ किछु तूं है तूं है मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि
जाई जीउ ॥ १ ॥ भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ भाणै हरिगुण गुरमुखि
गावाहा ॥ भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥ २ ॥
ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ अगम
अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥ ३ ॥ खाकु
संतन की देहु पिआरे ॥ आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ दरसनु पेखत
मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥ माझ महला
५ ॥ दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥
सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ
॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥

चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥ २ ॥ बारिक वांगी हउ सभ किछु मंगा ॥ दे दे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥ माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥ ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥ १ ॥ दुख भंजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ अकाल मूरति अजूनी संभौ मन सिमरत ठंडा थीवां जीउ ॥ २ ॥ सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अंम्रितु पीवां जीउ ॥ ३ ॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ एह सुमति गुरू ते पाई ॥ नानक की धर तूं है ठाकुर हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥ माझ महला ५ ॥ धंनु सुवेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धंनु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥ १ ॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥ ३ ॥ अंम्रितरसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥ ४ ॥ १० ॥ ॥ १७ ॥ माझ महला ५ ॥ सगल संतन पहि वसतु इक मांगउ ॥ करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥ १ ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥ २ ॥ दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥ ३ ॥ रेनु

संतन की मेरै मुखि लागी ॥ दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥ माझ महला ५ ॥ विसरु नाही एवड दाते ॥ करि किरपा भगतन संगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥ १ ॥ माटी अंधी सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥ २ ॥ जिसदा दिता सभु किछु लैणा ॥ छतीह अंम्रित भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥ ३ ॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥ १ ॥ अंम्रितु नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥ २ ॥ तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ अपुने संत तुधु खरे पिआरे तूं संतन के प्राना जीउ ॥ ३ ॥ उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरिरस नानक त्रिपति अघाना जीउ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥ माझ महला ५ ॥ तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे ॥ तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥ १ ॥ जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ त्रिखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥ २ ॥ जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥ ३ ॥ संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥ साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥ ४ ॥ १४ ॥ २१ ॥ माझ महला ५ ॥ अंमृत नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ अवरि साद चखि सगले देखे मन

हरिरसु सभ ते मीठा जीउ ॥ १ ॥ जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥ अमरु होवै जो नामरसु पावै ॥ नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥ २ ॥ जिनि हरिरसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥ जिनि हरिसादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥ ३ ॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २२ ॥ माझ महला ५ ॥ निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥ २ ॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर अंमृत नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २३ ॥ माझ महला ५ ॥ प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआइऐ सगल अवरदा जीउ ॥ १ ॥ नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥ २ ॥ जिसका अंगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर संसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥ ३ ॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ २४ ॥ माझ महला ५ ॥ ओति पोति सेवक संगि राता ॥ प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥ १ ॥ काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥ २ ॥ तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥ ठाकुर के

सेवक हरिरंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥ ३ ॥ ग्रपुनै ठाकुरि जो पहिराइग्रा ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइया ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ २५ ॥ माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुरपरसादी जिनी ग्रंतरि पाइग्रा सो ग्रंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥ १ ॥ झिमि झिमि वरसै ग्रंम्रित धारा ॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ ग्रनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥ २ ॥ जनम जनम का विछुड़िग्रा मिलिग्रा ॥ साध क्रिपा ते सूका हरिग्रा ॥ सुमति पाए नामु धिग्राए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥ ३ ॥ जलतरंगु जिउ जलहि समाइग्रा ॥ तिउ जोती संगि जोति मिलाइग्रा ॥ कहु नानक भ्रम काटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥ ४ ॥ १९ ॥ २६ ॥ माझ महला ५ ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिग्रा ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिग्रा ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु ग्राराधे जीउ ॥ १ ॥ तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ नैन निहाली तिसु पुरख दइग्रालै ॥ मनु देवा तिसु ग्रपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥ २ ॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे ग्रलिपत निरबाणे ॥ साध कै संगि उनि भउजलु तरिग्रा सगल दूत उनि साधे जीउ ॥ ३ ॥ तिन की सरणि परिग्रा मनु मेरा ॥ माणु ताणु तजि मोहु ग्रंधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ ग्रगम ग्रगाधे जीउ ॥ ४ ॥ २० ॥ २७ ॥ माझ महला ५ ॥ तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ तूं सूखमु होग्रा ग्रसथूली ॥ तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु ग्रवरु न भालीऐ जीउ ॥ १ ॥ तूं सूतु मणीए भी तूं है ॥ तूं गंठी मेरु सिरि तूं है ॥ ग्रादि मधि ग्रंति प्रभु सोई ग्रवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥ २ ॥ तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूं निरबाणु रसीग्रा रंगि राता ॥ ग्रपणे करतब ग्रापे जाणहि ग्रापे तुधु समालीऐ जीउ ॥ ३ ॥ तूं ठाकुरु सेवकु फुनि ग्रापे ॥ तूं गुपतु परगटु प्रभ ग्रापे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥ ४ ॥ २१

॥ २८ ॥ माझ महला ५ ॥ सफलु सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ धंनु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥ १ ॥ से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥ २ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ साधसंगि खिन महि उधारे ॥ किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २९ ॥ माझ महला ५ ॥ अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परमगति मेरी ॥ जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥ १ ॥ सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरिनामु वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥ २ ॥ दइआ धारी तिनि सिरजन हारे ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइआला सगले तृपति अघाए जीउ ॥ ३ ॥ वणु तृणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥ करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३० ॥ माझ महला ५ ॥ तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥ १ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ सभि किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥ नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ हरिगुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३१ ॥ माझ महला ५ ॥ जीअ प्रान प्रभ मनहि अधारा ॥ भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥ गुणनिधानु अंम्रितु हरिनामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥ १ ॥ मनसा धारि जो घरि ते आवै ॥ साधसंगि जनम मरणु

मिटावै ॥ ग्रास मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइग्रा जीउ ॥ २ ॥ ग्रगम ग्रगोचर किछु मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिग्रावहि गिग्रानी ॥ खुदी मिटी चुका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइग्रा जीउ ॥ ३ ॥ ग्रनद मंगल कलिग्राण निधाना ॥ सूख सहज हरिनामु वखाना ॥ होइ क्रिपालु सुग्रामी ग्रपना नाउ नानक घर महि ग्राइग्रा जीउ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३२ ॥ माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूं प्रीतमु ठाकुरु ग्रति भारी ॥ तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ग्रोट गोपाला जीउ ॥ १ ॥ गुण गावत मनु हरिग्रा होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइग्राला जीउ ॥ २ ॥ प्रभु ग्रपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ तुमरी क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइग्रा प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सति सति सति प्रभु सोई ॥ सदा सदा सद ग्रापे होई ॥ चलित तुमारे प्रगट पिग्रारे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३३ ॥ माझ महला ५ ॥ हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल सांति सहज सुखु पाइग्रा ठाढि पाई प्रभि ग्रापे जीउ ॥ १ ॥ सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइग्रा ॥ करि किरपा प्रभि सगल रजाइग्रा ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीग्र जंत सभि ध्रापे जीउ ॥ २ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुरपरसादि तिसु सदा धिग्राई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥ ३ ॥ सासि सासि नानकु सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन ग्रास करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३४ ॥ माझ महला ५ ॥ ग्राउ साजन संत मीत पिग्रारे ॥ मिलि गावह गुण ग्रगम ग्रपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिग्राईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥ १ ॥ जनम जनम के किलविख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुग्रामी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥ २ ॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिग्राईऐ ॥ जिनि सेविग्रा सो पार गिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥ ३ ॥ ग्राइ पइग्रा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥

करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक ग्रंमृतु पीए जीउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३५ ॥ माझ महला ५ ॥ भए कृपाल गोबिंद गुसाई ॥ मेघु वरसै सभनी थाई ॥ दीन दइग्राल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥ १ ॥ ग्रपुने जीग्र जंत प्रतिपारे ॥ जिउ बारिक माता संसारे ॥ दुख भंजन सुख सागर सुग्रामी देत सगल ग्राहारे जीउ ॥ २ ॥ जलि थलि पूरि रहिग्रा मिहरवाना ॥ सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥ रैणि दिनसु तिसु सदा धिग्राई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥ ३ ॥ राखि लीए सगले प्रभि ग्रापे ॥ उतरि गए सभ सोग संतापे ॥ नामु जपत मनु तनु हरीग्रावलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३६ ॥ माझ महला ५ ॥ जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिग्रारे ॥ से ग्रसथल सोइन चउबारे ॥ जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥ १ ॥ हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥ हरि ग्रंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥ २ ॥ संता सेती रंगु न लाए ॥ साकत संगि विकरम कमाए ॥ दुलभ देह खोई ग्रगिग्रानी जड़ ग्रपणी ग्रापि उपाड़ी जीउ ॥ ३ ॥ तेरी सरणि मेरे दीन दइग्राला ॥ सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम ग्रसाड़ी जीउ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ३७ ॥ माझ महला ५ ॥ चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ कलि कलेस सभ दूरि पइग्राणे ॥ सांति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥ १ ॥ लागी प्रीति न तूटै मूले॥ हरि ग्रंतरि बाहरि रहिग्रा भरपूरे॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ ग्रंमृतु वरखै ग्रनहद बाणी ॥ मन तन ग्रंतरि सांति समाणी ॥ तृपति ग्रघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीग्रा दिलासा जीउ ॥ ३ ॥ जिस का सा तिस ते फलु पाइग्रा ॥ करि किरपा प्रभ संगि मिलाइग्रा ॥ ग्रावण जाण रहे वडभागी नानक पूरन ग्रासा जीउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ३८ ॥ माझ महला ५ ॥ मीहु पइग्रा परमेसरि पाइग्रा ॥ जीग्र जंत सभि सुखी वसाइग्रा ॥ गइग्रा कलेसु भइग्रा सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥ १ ॥ जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवारे ॥ सुणी

बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥ २ ॥ सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ गुर परसादी नदरि निहारा ॥ जल थल महीअल सभि तृपतासे साधू चरन पखाली जीउ ॥ ३ ॥ मन की इछ पुजावणहारा ॥ सदा सदा जाई बलिहारा ॥ नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ३९ ॥ माझ महला ५ ॥ मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ जीउ पिंड सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥ १ ॥ सदा सदा तूं है सुखदाई ॥ निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥३॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ॥ आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४० ॥ माझ महला ५ ॥ पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ जलि थलि महीअलि दहदिसि वरसाइआ ॥ सांति भई बुझी सभ तृसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥ १ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥ २ ॥ जा की सरणि पइआ गति पाइऐ ॥ सासि सासि हरिनामु धिआईऐ ॥ तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥ ३ ॥ तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४१ ॥ माझ महला ५ ॥ सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥ १ ॥ अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥ २ ॥ प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ सहजि संतोखि सदा तृपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥ ३ ॥ हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥ ४ ॥ ३५ ॥

४२ ॥ माझ महला ५ ॥ कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ गुर के चरण वसे मन माही ॥ अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥ १ ॥ मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपै ॥ बुधि सिआणप किछु न जापै ॥ आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥ ३ ॥ चरण कमल जन का आधारो ॥ आठ पहर रामनामु वापारो ॥ सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४३ ॥ माझ महला ५ ॥ सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥ सो रिदा सुहेला जितु हरिगुण गाईऐ ॥ सा धरति सुहावी जितु वसहि हरिजन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥ १ ॥ सचु वडाई कीम न पाई ॥ कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥ २ ॥ सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥ गुर परसादी हरिगुण गाईऐ ॥ रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु नीसाणो जीउ ॥ ३ ॥ सचे अंतु न जाणै कोई ॥ थानि थनंतरि सचा सोई ॥ नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४४ ॥ माझ महला ५ ॥ रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ जपि अंम्रित नामु संत संगि मेला ॥ घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥ १ ॥ सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ अंतरि बाहरि हरिप्रभ साथे ॥ भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरे देखा सभनी जाई जीउ ॥ २ ॥ प्रभ समरथु वड ऊच अपारा ॥ नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४५ ॥ माझ महला ५ ॥ ऐथै तूं है आगै आपे ॥ जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥ २ ॥ नामु

अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥ ३ ॥ द्रसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥ इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ४६ ॥ माझ महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥ १ ॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ रामनामु साध संगि बीचारा ॥ साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥ ३ ॥ पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ साध संगि मिले सारंगपाणी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥ ४ ॥ ४० ॥ ४७ ॥ माझ महला ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ करि किरपा भगतीं प्रगटाइआ ॥ संत संगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥ १ ॥ जा कै ग्रिहि नव निधि हरि भाई ॥ तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥ २ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही जग जीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥ ३ ॥ अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ आपणा नाउ आपि जपाई ॥ गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ४८ ॥ माझ महला ५ ॥ सोई करणा जि आपि कराए ॥ जिथै रखै सा भली जाए ॥ सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥ १ ॥ सभ परोई इकतु धागै ॥ जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥ २ ॥ तेरी महिमा तूं है जाणहि ॥ अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥ ३ ॥ तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥ ४ ॥ ४२

॥ ४१ ॥ मांझ महला ५ ॥ झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥ १ ॥ प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥ २ ॥ चरण कमल भगतां मनि वुठे ॥ विणु परमेसर सगले मुठे ॥ संतजनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५० ॥

रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ सची दरगह महलि बुलाए ॥ सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥ हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ हुकमु पछाणै सु हरिगुण वखाणै ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बधा चोटा खाए ॥ बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥ ४ ॥ साकत कूड़े सचु न भावै ॥ दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ झूठि विछुंनी रोवै धाही ॥ अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ सचे ठाकुर साचो भावै ॥ नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ माझ महला ३ घरु १ ॥ करमु होवै सतिगुरू

मिलाए ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरिगुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥ २ ॥ इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुरपरसादी मंनि वसाई ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥ ४ ॥ पाप पुंन की सार न जाणी ॥ दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥ ६ ॥ हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥ गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥ ७ ॥ जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बुझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सुणै तै आपे वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥ २ ॥ जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ पेइअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ कंति विसारी अवगुणि मुती ॥ अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै सुख दाता जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ लख

चउरासीह जीअ उपाए ॥ जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥ किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥ ६ ॥ लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥७॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥ माझ महला ३ ॥ इको आपि फिरै परछंना ॥ गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिंना ॥ तृसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥ इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ जो रंगि राते करम बिधाते ॥ गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ जिसनो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ जमपुरि बधा दुख सहाही ॥ अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥ ४ ॥ इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥ ५ ॥ हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥ ६ ॥ अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥ ७ ॥ जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ हरिगुण गावहि सचु वखाणे ॥ नानक नामि रते बैरागी निजघरि ताड़ी लावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४ ॥ माझ महला ३ ॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥ सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥

दूजै लागी महलु न पाए॥ अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ देही जाति न आगै जाए॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए॥ सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ भै भाइ सीगारु बणाए॥ गुर परसादी महलु घरु पाए॥ अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥ ४ ॥ सभना पिरु वसै सदा नाले॥ गुरपरसादी को नदरि निहाले ॥ मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ माइआ मोहि इहु जगु सुता॥ नामु विसारि अंति विगुता॥ जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥ ६ ॥ अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए॥ गुर परसादि मुकति गति पाए॥ भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए धंधै लाए ॥ लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ५ ॥ माझ महला ३ ॥ अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ गुर कै सबदि परखि परखाइआ॥ जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ॥ इसु काइआ अंदर बहुतु पसारा॥ नामु निरंजनु अति अगम अपारा॥ गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरु सचु द्रिड़ाए॥ गुरपरसादी सचि चितु लाए॥ सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ॥ ३ ॥ वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा॥ किलविख अवगण काटणहारा॥ प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति द्रिड़ावणिआ ॥ ४ ॥ तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै॥ सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ॥ ५ ॥ हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही॥ हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही॥ आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ॥ ६ ॥ मै होरु न कोई तुधै जेहा॥ तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ॥ ७ ॥ तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ तुधु आपे सिरजी आपे गोई॥

तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥ ८ ॥ ५ ॥ ६ ॥ माझ महला ३ ॥ सभ घट आपे भोगणहारा ॥ अलखु वरतै अगम अपारा ॥ गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरसबदु मंनि वसावणिआ ॥ सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दूत मुहहि संसारा ॥ मनमुख अंधे सुधि ना सारा ॥ गुरमुखि होवै सु आपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥ इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ एकम एकै आपु उपाइआ ॥ दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥ चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ सभु है सचा जे सचे भावै ॥ जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥ ५ ॥ सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ ॥ माझ महला ३ ॥ अंम्रित बाणी गुर की मीठी ॥ गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ सतिगुरु है अंम्रितसरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥ गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥ तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥ २ ॥ एको वेखा अवरु न बीआ ॥ गुरपरसादी अंम्रितु पीआ ॥ गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥ ३ ॥ रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥ जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ गुर का

सबदु मंनि वसाए ॥ अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥ ५ ॥ भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरिगुण सहजे गावणिआ ॥ ६ ॥ सिम्रिति सासत बेद वखाणै ॥ भरमे भूला ततु न जाणै ॥ बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे किसु आखै कोई ॥ आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ८ ॥ माझ महला ३ ॥ आपे रंगे सहजि सुभाए ॥ गुर कै सबदि हरिरंगु चड़ाए ॥ मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ सचु करणी सबदु है सारु ॥ पूरै गुरि पाईऐ मोखदुआरु ॥ अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥ ४ ॥ रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै॥हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥ ३ ॥ सचा सचो सचि पतीजै ॥ गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ बैसि सुथानि हरिगुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥ ७॥ जिस नो नदरि करे सो पाए॥ गुरपरसादी हउमै जाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ९ ॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुर सेविऐ वडी वडिआई ॥ हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अंम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लाहवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ हरि सत संगति आपे मेलै गुरसबदी हरिगुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ

॥ सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ २ ॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुरसबदी सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ दूजा भरमु गुरसबदि जलाए ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाए मोखदुआरु ॥ अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥ ७ ॥ सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

माझ महला ३ ॥ आपु वंञाए ता सभ किछु पाए ॥ गुरसबदी सची लिव लाए ॥ सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरिगुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥ २ ॥ भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ अनरसु चूकै हरिरसु मंनि वसाए ॥ सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ फिरि ओइ किथहु पाइनि मोखदुआरा ॥ मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥ ४ ॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउनिधि नामु मंनि वसावणिआ ॥ ५ ॥ सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ सत संगति बहि हरिगुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल

नादु वजावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥ ८ ॥ १० ॥ ११ ॥ माझ महला ३ ॥ तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ गुर सेवा ते हरिनामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥ २ ॥ इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥ ४ ॥ बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥ ५ ॥ मुकते सेवे मुकता होवै ॥ हउमै ममता सबदे खोवै ॥ अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ६ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ गुरसबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥ माझ महला ३ ॥ ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥

सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ ॥ ३ ॥ किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ गुर का सबदु रखै उरधारे ॥ सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ ४ ॥ अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥ ५ ॥ आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥ हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १३ ॥ माझ महला ३ ॥ उतपति परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ गुरते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ सो निगुरा जो मरि मरि जंमै निगुरे आवण जावणिआ ॥ २ ॥ तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥ सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ॥ सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ मनमुख भूले लोक सबाए ॥ बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि सचु वणंजहि गुरसबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सबदि बुलाए ॥ महली महलि सहज सुखु पाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥ ८ ॥ १३ ॥ १४ ॥ माझ महला ३ ॥ सतिगुर साची

सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु ग्रंति होइ सखाई ॥ हरि ग्रगमु ग्रगोचरु ग्रनाथु ग्रजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिग्रा ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी ग्रापु निवारणिग्रा ॥ ग्रापु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखिग्रा सु करमु कमाइग्रा ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइग्रा ॥ बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिग्रा ॥ २ ॥ गुरमुखि ग्रलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै तकीऐ नामि ग्रधारे ॥ गुरमुखि जोरु करे किग्रा तिस नो ग्रापे खपि दुखु पावणिग्रा ॥ ३ ॥ मनमुखि ग्रंधे सुधि न काई ॥ ग्रातमघाती है जगत कसाई ॥ निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिग्रा ॥ ४ ॥ इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिग्रा ॥ ५ ॥ मनमुखु रोगी है संसारा ॥ सुखदाता विसरिग्रा ग्रगम ग्रपारा ॥ दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिग्रा ॥ ६ ॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ ग्रापि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा ग्रंदरि पाए तेहा वरतै ग्रापे बाहरि पावणिग्रा ॥ ७ ॥ तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ नानक नामु वसै घट ग्रंतरि जिसु देवै सो पावणिग्रा ॥ ८ ॥ १४ ॥ १५ ॥ माझ महला ३ ॥ ग्रंम्रित नामु मंनि वसाए ॥ हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ ॥ ग्रंम्रित बाणी सदा सलाहे ग्रंम्रितु ग्रंम्रितु पावणिग्रा ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी ग्रंम्रित बाणी मंनि वसावणिग्रा ॥ ग्रंमृत बाणी मंनि वसाए ग्रंमृतु नामु धिग्रावणिग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रंम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ ग्रंमृतु वेखै परखै सदा नैणी ॥ ग्रंम्रित कथा कहै सदा दिनु राती ग्रवरा ग्राखि सुणावणिग्रा ॥ २ ॥ ग्रंम्रित रंगि रता लिव लाए ॥ ग्रंम्रितु गुरपरसादी पाए ॥ ग्रंमृतु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि ग्रंमृतु पीग्रावणिग्रा ॥ ३ ॥ सो किछु करै जु चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै ग्रंम्रित बाणी हुकमे ग्रंमृतु पीग्रावणिग्रा ॥ ४ ॥ ग्रजब कंम करते हरि केरे ॥ इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥ ग्रंमृत बाणी सिउ चितु लाए ग्रंमृत सबदि वजावणिग्रा

॥ ५ ॥ खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ तुधु आपे परखे लोकसबाए ॥ खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥ ६ ॥ किउकरि वेखा किउ सालाही ॥ गुर परसादी सबदि सलाही ॥ तेरे भाणे विचि अंम्रितु वसै तूं भाणै अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ७ ॥ अंम्रित सबदु अंम्रित हरि बाणी ॥ सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ नानक अंम्रित नामु सदा सुखदाता पी अंम्रतु सभ भुख लहि जावणिआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ १६॥ माझ महला ३ ॥ अंम्रतु वरसै सहजि सुभाए ॥ गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥ अंम्रतु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अंम्रतु पीआवणिआ ॥ रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरिगुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरपरसादी सहजु को पाए ॥ दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ नदरि करे ता हरिगुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥ २ ॥ सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ अंम्रति भरे तेरे भंडारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ अंम्रत नामि अंतरु मनु मोहै ॥ अंम्रति मनु तनु बाणी रता अंम्रतु सहजि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥ नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥ ६ ॥ अंम्रतु पीवै जिसनो आपि पीआए ॥ गुरपरसादी सहजि लिव लाए ॥ पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥ ७ ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ १७ ॥ माझ महला ३ ॥ से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥ सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखा सचु सभनी थाई ॥ गुरपरसादी मंनि वसाई ॥ तनु

सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥ २ ॥ मनसा मारि सचि समाणी ॥ इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निजघरि वासा पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥ ४ ॥ जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ हरिनामु समालहि से वडभागी ॥ सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि थाके सांति न आई ॥ तृसना जाले सुधि न काई ॥ बिखु विहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी एको जाणा ॥ दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥ ८ ॥ १७ ॥ १८ ॥ माझ महला ३ ॥ वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणेरे ॥ तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बुझ बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी रामनामु मंनि वसावणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ एका जोति जाणै जेकोई ॥ सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥ २ ॥ तिसना अगनि जलै संसारा ॥ लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥ फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥ सचु सालाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सचु सालाही सदा हजूरे ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ गुरपरसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥ सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ सचु सालाही अवरु न कोई ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु

होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥ ८ ॥ १८ ॥ १९ ॥ माझ महला ३ ॥ निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥ मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥ २ ॥ निरमल अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥३॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥४॥ निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥ ६ ॥ मनु मैला है दूजै भाइ ॥ मैला चउका मैलै थाइ ॥ मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥ से निरमल जो हरि साचे भाए॥नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥ ८ ॥ १९ ॥ २० ॥ माझ महला ३ ॥ गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गोविंद गुण गावणिआ ॥ गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥ गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिंद गुण गावणिआ ॥ २ ॥ मनूआ नाचै भगति दड़ाए ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥ ३ ॥ ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ माइआ

मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥ बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥ ५ ॥ बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ ना को सुणे न मंनि वसाए ॥ माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एह भगतिहरि भावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ होरतु भगति न पाए कोई ॥ नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ ८ ॥ २० ॥ २१ ॥ माझ महला ३ ॥ सचा सेवी सचु सालाही ॥ सचै नाइ दुखु कबही नाही ॥ सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥ २ ॥ सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥ हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ इकसु सिउ लिव लागी सदही हरिनामु मंनि वसावणिआ ॥ ४ ॥ भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥ नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥ तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ २२ ॥ माझ महला ३ ॥ तेरे भगत सोहहि साचै दरवारे ॥ गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥

हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ साचा साची नाई ॥ गुरपरसादी किसै मिलाई ॥ गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥ २ ॥ तुझते बाहरि कछु न होइ ॥ तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ कामणि गुणवंती हरि पाए ॥ भै भाइ सीगारु बणाए ॥ सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥ ४ ॥ सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥ ५ ॥ लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ से जन सचे पावहि मोखदुआरु ॥ सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ गुरपरसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २२ ॥ २३ ॥ माझ महला ३ ॥ आतमराम परगासु गुर ते होवै ॥ हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरिगुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता कारणु कराए ॥ जितु भावै तितु कारै लाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥ २ ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ गुरपरसादी हरि मंनि वसाए ॥ सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥ ३ ॥ बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥ देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर परसादी परम पदु पाए ॥ सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥ दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु

बोलि विखु खावणिआ ॥ ६ ॥ इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥ ७ ॥ आपि कराए करता सोई ॥ होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २३ ॥ २४ ॥ माझ महला ३ ॥ इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ ॥ अंम्रित नामु महारसु मीठा गुरमती अंमृतु पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मारि बजर कपाट खुल्हाइआ ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥ २ ॥ गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥ मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥ ५ ॥ नउ दरि ठाके धावतु रहाए ॥ दसवै निजघरि वासा पाए ॥ ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ ६ ॥ बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुल्है नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ गुरपरसादी मिलि सोझी पाई ॥ नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २४ ॥ २५ ॥ माझ महला ३ ॥ गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥

गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए ॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥ आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥ ६ ॥ बाझु गुरू है अंध अंधारा ॥ जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि आपे करे कराए ॥ गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २५ ॥ २६ ॥ माझ महला ३ ॥ एका जोति जोति है सरीरा ॥ सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥ २ ॥ आपे करता करे कराए ॥ आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥ सबदे उपजै अंम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥ ३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥ ४ ॥ आपे माइआ आपे छाइआ ॥ आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ तुझ ते बाहरि कछु न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥ ६ ॥ आपे मारे आपि जीवाए ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि आपे

वेखि विखालणिआ ॥ ८ ॥ २६ ॥ २७ ॥ माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी जग जीवनु मंनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ २ ॥ काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि पापु पुंनु दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै स्रिसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥ ५ ॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ ६ ॥ अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥ ७ ॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २७ ॥ २८ ॥ माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराए ॥ गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरिगुण महि आपि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुरसबदी मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ आपे गुरुदाता करमि बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ अंम्रित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरिरसु पावणिआ ॥ २ ॥ इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि इहु गुफा विचारे ॥ नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ हरिगुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम

सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ नावहु भूले देइ सजाए ॥ घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ दूजै मुठी रोवै धाही खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नाही पावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सदि बुलाए ॥ आपणा नाउ मंनि वसाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ २८ ॥ २९ ॥ माझ महला ३ ॥ ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु तृपतावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ गुरमुखि पड़हि हरिनामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥ उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥ त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ दुबिधा लागै दहदिसि धावै ॥ बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥ ४ ॥ हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥ ६ ॥ पिरु परदेसि सिंगारु बणाए ॥ मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ९ ॥ २९ ॥ ३० ॥ माझ महला ३ ॥ मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ दूजै भाइ महा

दुखु पावहि ॥ बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ अगिआन मती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥ २ ॥ अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ गुरमती मनि सचो भावै ॥ सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥ ३ ॥ जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥ ५ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ मूलहु भूले गुर सबदु न पछाणहि ॥ मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥ ६ ॥ वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ माझ महला ३ ॥ निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ आपि तरै सगले कुल तारै हरिनामु मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरिरसु चखि सादु पावणिआ ॥ हरिरसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ २ ॥ हउमै करै निहकरमी ना होवै ॥ गुर परसादी हउमै खोवै ॥ अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥ ३ ॥ हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥ हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु

लाई ॥ इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ जीवतु मरै गुरसबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ६ ॥ रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ गुरपरसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए तै आपे वेखै ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ माझ महला ३ ॥ माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ गुरपरसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देवी देवा मूलु है माइआ ॥ सिंम्रिति सासत जिंनि उपाइआ ॥ कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ हलतु पलतु दोवै गावाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ गुर परसादी वेखै नाले ॥ पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सत संगति हरिगुण गावणिआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु न सेवे सो काहे आइआ ॥ ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३३ ॥ माझ महला ४ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु किरपालु

प्रभु सोई ॥ तुधु बिन दूजा अवरु न कोई ॥ गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥ २ ॥ तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ भगती भरे तेरे भंडारा ॥ गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥ ३ ॥ अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ अपणी कृपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ रसना गुणवंती गुण गावै ॥ नामु सलाहे सचे भावै ॥ गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुख करम करे अहंकारी ॥ जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ७ ॥ आपे करता दे वडिआई ॥ जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ नानक नामु मिलै भउभंजनु गुरसबदी सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३४ ॥ माझ महला ५ घरु १ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ नामु रतन लै गुफा रखिआ ॥ अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥ २ ॥ आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ धरती सेवक पाइक चरना ॥ खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ पूरे गुर कै सबदि सिञापै॥ जिन पीआ सेई तृपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥ ४ ॥ तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ अनद बिनोद करे सद केला ॥ सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥ ५ ॥ पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥ साध जना का मंत्रु कमाए ॥ आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥ ७ ॥ तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसा

वणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३५ ॥ माझ महला ५ ॥ कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥ १ ॥ किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥ २ ॥ कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥ ३ ॥ कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ कउणु सुचाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥ ४ ॥ गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ धंनु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥ ५ ॥ हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥ ७ ॥ गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥ ८ ॥ सगली बणत बणाई आपे ॥ आपे करे कराए थापे ॥ इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥ ९ ॥ २ ॥ ३६ ॥ माझ महला ५ ॥ प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥ थानि थनंतरि तूं है तूं है इको इकु वरतावणिआ ॥ २ ॥ सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ भगती भाइ भरे भंडारा ॥ दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥ ३ ॥ अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ गुण गावहि

पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥ ४ ॥ ऐथै ओथै तूं है रखवाला ॥ मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ तू मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥ ६ ॥ जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥ तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ तूं साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥ ७ ॥ तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३७ ॥ माझ महला ५ घरु २ ॥ नित नित दयु समालीऐ ॥ मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ संता संगति पाईऐ ॥ जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥ १ ॥ जो सिमरंदे सांईऐ ॥ नरकि न सेई पाईऐ ॥ तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥ २ ॥ सेई सुंदर सोहणे ॥ साध संगि जिन बैहणे ॥ हरिधनु जिनी संजिआ सेई गंभीर अपार जीउ ॥ ३ ॥ हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥ मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥ ४ ॥ जो हरि कीता आपणा ॥ तिनहि गुसाई जापणा ॥ सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥ ५ ॥ मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥ ६ ॥ करता मंनि वसाइआ ॥ जनमै का फलु पाइआ ॥ मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥ ७ ॥ अटल पदारथु पाइआ ॥ भै भंजन की सरणाइआ ॥ लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ माझ महला ५ घरु ३ ॥ हरि जपि जपे मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि

गुर देउ मिटि गए मै दूरे ॥ १ ॥ सरनि आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥ २ ॥ चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥ ३ ॥ घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥ ५ ॥ सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥ ६ ॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥ ७ ॥ नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ ३१ ॥ १ ॥ ३२ ॥ १ ॥ ५ ॥ ३१ ॥

बारह माहा माझ महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥ १ ॥ चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥ २ ॥ वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम

चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥ हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥ ४ ॥ आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥ जग जीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥ ५ ॥ सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंगु कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन रामनामु उरि हारु ॥ ६ ॥ भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखणवाला हेतु ॥ ७ ॥ असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ

हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिनकै लागा पाइ ॥ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से तृपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंत मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥ ८ ॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि विओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ६ ॥ मंघिरि माहि सुहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन् की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥ पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनार बिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सुहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥ माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै

लोभु सुग्रानु ॥ सचै मारगि चलदिग्रा उसतति करे जहानु ॥ ग्रठसठि तीरथ सगल पुंन जीग्र दइग्रा परवानु ॥ जिस नो देवै दइग्रा करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिग्रा प्रभु ग्रापणा नानक तिन कुरबानु ॥ साधि सुचे से कांढीग्रहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ १२ ॥ फलगुणि ग्रनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे ग्राइ ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीग्रा मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइग्रा हरि राइ ॥ मिलि सहीग्रा मंगलु गावही गीत गोविंद ग्रलाइ ॥ हरि जेहा ग्रवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिग्रोनु निहचल दितीग्रनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिग्रनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक ग्रनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिसनो तिलु न तमाइ ॥ १३ ॥ जिनि जिनि नामु धिग्राइग्रा तिन के काज सरे ॥ हरिगुरु पूरा ग्राराधिग्रा दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईग्रा बिखिग्रा नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन ग्रंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥ १४ ॥ १ ॥

माझ महला ५ दिन रैणि

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ सेवी सतिगुरु ग्रापणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ ग्रापु तिग्रागि सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ जनम जनम का विछुड़िग्रा हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीग्र हरि ते विछूड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ ग्राप कमाणै विछुड़ीदोसु न काहू देण॥करि किरपा प्रभि राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेनंतीग्रा हरि सुरजनु देखा नैण ॥ १ ॥ जीग्र की बिरथा सो सुणे हरि संम्रिथ पुरखु ग्रपारु ॥ मरणि जीवणि ग्राराधणा सभना का ग्रधारु ॥ ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु

परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ दीनानाथ दैआल देव पतित उधारण हारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥ २ ॥ संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ गुरसबदी अराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥ ३ ॥ सरब कला प्रभ पूरणो मंञु निमाणी थाउ ॥ हरि ओट गही मन अंतरै जपि जपि जीवां नाउ ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

वार माझ की तथा सलोक महला १

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी

१ ओं सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ सलोकु मं० १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ दूजै माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥ पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ छिवै कामु न पूछै जाति ॥ सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै धउले उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गए सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ हंसु दसाए राह ॥ आइआ

गइग्रा मुइग्रा नाउ ॥ पिछै पतलि सदिहु काव ॥ नानक मनमुखि ग्रंधु पिग्रारु ॥ बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ २ ॥ म० १ ॥ दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा ग्रावै ॥ सतरि का मतिहीणु ग्रसीहां का विउहारु न पावै ॥ नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै ग्रपबलु ॥ ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तूं करता पुरखु ग्रगंमु है ग्रापि सृसटि उपाती ॥ रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥ इकि ग्रावहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिग्रा रंगि हरिरंगि राती ॥ सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ तूं ग्रापे ग्रापि सुजाणु है वड पुरखु वडाती जो मनि चिति तुधु धिग्राइदे मेरे सचिग्रा बलि बलि हउ तिन जाती ॥ १ ॥ सलोक म० १ ॥ जीउ पाइ तनु साजिग्रा रखिग्रा बणत बणाइ ॥ ग्रखी देखै जिहवा बोलै कंनी सुरति समाइ ॥ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ जिनि रचि रचिग्रा तिसहि न जाणै ग्रंधा ग्रंधु कमाइ ॥ जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥ १ ॥ म० २ ॥ देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ सुरति मति चतुराई ता की किग्रा करि ग्राखि वखाणीऐ ॥ ग्रंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ तूं ग्रापे खेल करहि सभि करते किग्रा दूजा ग्राखि वखाणीऐ ॥ जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिग्राणीऐ ॥ नानक गुरमुखि नदरी ग्राइग्रा हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु ग्रापे जगतु उपाइ कै तुधु ग्रापे धंधै लाइग्रा ॥ मोह ठगउली पाइ कै तुधु ग्रापहु जगतु खुग्राइग्रा ॥ तिसना ग्रंदरि ग्रगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइग्रा ॥ सहसा इहु संसारु है मरि जंमै ग्राइग्रा जाइग्रा ॥ बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइग्रा

॥ गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥ सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ २ ॥ सलोकु म० २ ॥ अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥ पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥ १ ॥ म० २ ॥ दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु म० १ ॥ सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥ म० १ ॥ वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥ २ ॥ पवड़ी ॥ काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ करता करे सु होगु न

चलै चलाइश्रा ॥ ४ ॥ सलोकु म० १ ॥ कुड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥ अवरी नो समझावणि जाइ ॥ मुठा आपि मुहाए साथै ॥ नानक ऐसा आगू जापै ॥ १ ॥ महला ४ ॥ जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥ जे अगै तीरथ होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ ओहु आपि छुटा कुटंब सिउ दे हरि हरि नामु सभ सृसटि छडाए ॥ जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥ जम कालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥ गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनिदासा ॥ सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥ ५ ॥ सलोकु म० १ ॥ जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥ जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥ १ ॥ म० १ ॥ जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥ आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥ नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥ अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ जिसदा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥ ६ ॥ सलोकु म० १ ॥ मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ करणी काबा सचु पीरु कलमा

करम निवाज ॥ तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥ १ ॥ म० १ ॥ इकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥ २ ॥ म० ॥ १ ॥ पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥ ७ ॥ सलोकु म० १ ॥ मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकलमाना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥ तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥ १ ॥ महला ४ ॥ परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरिनामि समावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥ हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ तंबू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥ नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥ ८ ॥ सलोकु म० १ ॥ नदीआ होवहि धेणवा सुंम होवहि दुधु घीउ ॥ सगली धरती सकर

होवै खुसी करे नित जीउ ॥ परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ भी तूं है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ १ ॥ म० १ ॥ भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ भी तूं है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ २ ॥ म० १ ॥ जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ भी तूं है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ३ ॥ म० १ ॥ अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ भी तू है सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ सिझै दरि दीवानि आपु गवाइऐ ॥ ६ ॥ म० १ सलोकु ॥ सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ राजि रंगु मालि रंगु ॥ रंगि रता नचै नंगु ॥ नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ जा मनि नाही सचा सोइ ॥ किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ हुकमु मंने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ इकि होए असवार इकना साखती ॥ इकनी बधे भार इकना ताखती ॥ १० ॥ सलोकु म० १ ॥ जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥ १ ॥ म० १ ॥ वेखु

जि मिठा कटिश्रा कटि कुटि बधा पाइ ॥ खुंडा श्रंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ भी सो फोगु समालीऐ दिचै श्रगि जालाइ ॥ नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका श्राइ ॥ २ ॥ पवड़ी ॥ इकना मरणु न चिति श्रास घणेरिश्रा ॥ मरि मरि जंमहि नित किसै न केरिश्रा ॥ श्रापनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिश्रा ॥ जम राजै नित नित मनमुख हेरिश्रा ॥ मनमुख लूण हाराम किश्रा न जाणिश्रा ॥ बधे करनि सलाम खसम न भाणिश्रा ॥ सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ करसनि तखति सलामु लिखिश्रा पावसी ॥ ११ ॥ म० १ सलोकु ॥ मछी तारू किश्रा करे पंखी किश्रा श्राकासु ॥ पथर पाला किश्रा करे खुसरे किश्रा घर वासु ॥ कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ बोला जे समझाईऐ पड़ीश्रहि सिंम्रति पाठ ॥ श्रंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥ १ ॥ म० १ ॥ कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ श्रगनी गंढु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुतीं गंढु पवै संसारि ॥ राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ भुखिश्रा गंढु पवै जा खाइ ॥ काल्हा गंढु नदीश्रा मीह झोल ॥ गंढु परीती मिठे बोल ॥ बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ मुइश्रा गंढु नेकी सतु होइ ॥ एतु गंढि वरतै संसारु ॥ मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ नानकु श्राखै एहु बीचारु ॥ सिफती गंढु पवै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ श्रापे कुदरति साजि कै श्रापे करे बीचारु ॥ इक खोटे इकि खरे श्रापे परखणहारु ॥ खरे खजानै पईश्रहि खोटे सटीश्रहि बाहरवारि ॥ खोटे सची दरगह सुटीश्रहि किसु श्रागै करहि पुकार ॥ सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ सतिगुरु खोटिश्रहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ सची दरगह मंनीश्रनि गुर कै प्रेम पिश्रारि ॥ गणत तिना दी को किश्रा करे जो श्रापि बखसे करतारि ॥ १२ ॥ सलोकु म० १ ॥ हम जेर जिमी दुनीश्रा पीरा मसाइका राइश्रा ॥ मे रवदि बादिसाहा श्रफजू खुदाइश्रा ॥ एक तूही एक तुही ॥ १ ॥ म० १ ॥ न देव दानवा नरा ॥ न सिध साधिका धरा ॥ श्रसति

एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ २ ॥ म० १ ॥ न दादे दिहंद आदमी ॥ न सपत जेर जिमी ॥ असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ३ ॥ म० १ ॥ न सूर ससि मंडलो ॥ न सपत दीप नह जलो ॥ अंन पउण थिरु न कुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ४ ॥ म० १ ॥ न रिजकु दसत आ कसे ॥ हमारा एकु आस वसे ॥ असति एकु दिगर कुई ॥ एक तुई एकु तुई ॥ ५ ॥ म० १ ॥ परंदए न गिराह जर ॥ दरखत आब आस कर ॥ दिहंद सुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ६ ॥ म० १ ॥ नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ मेटि न साकै कोइ ॥ कला धरै हिरै सुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥ १३ ॥ सलोकु म० १ ॥ सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ १ ॥ म० १ ॥ इकि मासहारी इकि तृणु खाहि ॥ इकना छतीह अंमृत पाहि ॥ इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ इकि निरंकारी नाम आधारि ॥ जीवै दाता मरै न कोइ ॥ नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥ दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥ १४ ॥ सलोकु म० १ ॥ तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि

॥ जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंडी नादु वजावहि ॥ जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ जा तूं वडा सभि वडिआंईआ चंगै चंगा होई ॥ जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ सचे दै दरि जाइ सचु चवांईऐ ॥ सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥ १५ ॥ सलोकु म० १ ॥ कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ हउ भालि विकुंनी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥ विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ जिसनो नदरि करे तिसु देवै ॥ नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ भगति करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ दासनिदास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥ १६ ॥ सलोकु म० १ ॥ सबाही सालाह जिनी धिआइआ इकमनि ॥ सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥ दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥

तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीग्रा ॥ खाधा होइ सुग्राह भी खाणे सिउ दोसती ॥ चउथै ग्राई ऊंध ग्रखी मीटि पवारि गइग्रा ॥ भी उठि रचिग्रोनु वादु सै वरिग्रा की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे ग्रठी भउ होइ ॥ नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥ १ ॥ म० २ ॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइग्रा ॥ ग्रठी वे परवाह रहनि इकतै रंगि ॥ दरसनि रूपि ग्रथाह विरले पाईग्रहि ॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जाका बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा तूं ता किग्रा होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ कोइ न ग्राखै घटि हउमै जाईऐ ॥ लईग्रनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥ १७ ॥ सलोकु म० २ ॥ ग्रठी पहरी ग्रठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ करमवंती सालाहिग्रा नानक करि गुरु पीरु ॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिग्रा उपजै चाउ ॥ तिना दरीग्रावा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ ग्रोथै ग्रंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥ कंचन काइग्रा कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िग्रा पासि ॥ ग्रोथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ ग्रोथै खोटे सटीग्रहि खरे कीचहि साबासि ॥ बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥ १ ॥ म० २ ॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिनसु राति दुइ दाई दाइग्रा खेलै सगल जगतु ॥ चंगिग्राईग्रा बुरिग्राईग्रा वाचे धरमु हदूरि ॥ करमी ग्रापो ग्रापणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिग्राइग्रा गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा भोजणु भाउ सतिगुरि दसिग्रा ॥ सचे ही पतीग्राइ सचि विगसिग्रा ॥ सचै कोटि गिरांइ निजघरि वसिग्रा ॥ सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिग्रा ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुग्राईऐ ॥ सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ

॥ सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥ १८ ॥ सलोकु म० १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवडु दाती दे दे करे रजाई ॥ नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥ १ ॥ म० २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥ अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ तन महि तृसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥ १९ ॥ सलोक म० १ ॥ नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १ ॥ म० १ ॥ सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथि गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥ झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ मुहतु न चसा विलंमु भरीऐ पाईऐ ॥ गुरपरसादी बुझि सचि समाईऐ ॥ २० ॥ सलोकु म० १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥ मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥ नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥ १ ॥ म० १ ॥ मति पंखेरू

तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ॥ खाधा होइ सुआह भी खाणो सिउ दोसती॥ चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ॥ भी उठि रचिओनु वादु सै वरिआ की पिड़ बधी॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ॥ नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ॥ १॥ म० २॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ॥ अठी वे परवाह रहनि इकतै रंगि॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जाका बोलु॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु॥ २॥ पउड़ी॥ जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ॥ मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ॥ एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ॥ जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ॥ कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ॥ लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ॥ सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ॥ १७॥ सलोकु म० २॥ अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु॥ करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ॥ ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ॥ कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि॥ ओथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि॥ ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि॥ बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि॥ १॥ म० २॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु॥ दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि॥ २॥ पउड़ी॥ सचा भोजणु भाउ सतिगुरि दसिआ॥ सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ॥ सचै कोटि गिरांइ निजघरि वसिआ॥ सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ॥ सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ

॥ सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥ १८ ॥ सलोकु म० १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवडु दाती दे दे करे रजाई ॥ नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥ १ ॥ म० २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥ अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ तन महि तृसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥ १९ ॥ सलोक म० १ ॥ नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १ ॥ म० १ ॥ सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथि गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥ झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ मुहतु न चसा विलंमु भरीऐ पाईऐ ॥ गुरपरसादी बुझि सचि समाईऐ ॥ २० ॥ सलोकु म० १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥ मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥ नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥ १ ॥ म० १ ॥ मति पंखेरू

किरतु साथि कब उतम कब नीच॥ कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति॥ नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति॥ २॥ पउड़ी॥ केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा॥ वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा॥ पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा॥ खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा॥ सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा॥ मंने नाउ बिसंख दरगह पावणा॥ खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा॥ नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा॥ २१॥ सलोकु महला २॥ मंत्री होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ॥ आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ॥ हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ॥ गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ॥ दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ॥ नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ॥ १॥ महला २॥ नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु॥ रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु॥ वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु॥ मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु॥ लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु॥ सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु॥ अगै ओहु अगंमु है वाहेदड़ु जाणु॥ २॥ पउड़ी॥ नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारिआ॥ करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ॥ महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ॥ सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ॥ सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ॥ सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ॥ बिनु नावै ध्रगु वासु फिटु सु जीविआ॥ सबदि सवारीआसु अंम्रितु पीविआ॥ २२॥ सलोकु म० १॥ मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख॥ राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे कि सुक॥ नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ॥ १॥ महला २॥ निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते॥ सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि॥ २॥ पउड़ी॥ खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ॥ सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ॥ खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ॥ दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ॥ सचा सतिगुरु

सेवनि सचा मारगु दसिग्रा ॥ सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिग्रा ॥ ढाढी कथे ग्रकथु सबदि सवारिग्रा ॥ नानक गुण गहि रसि हरि जीउ मिले पिग्रारिग्रा ॥ २३ ॥ सलोकु म० १ ॥ खतिग्रहु जंमे खते कर नित खतिग्रा विचि पाहि ॥ धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ नानक बखसे बखसीग्रहि नाहि ता पाही पाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीग्रहि सुख ॥ सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चारे कुंडा देखि ग्रंदरु भालिग्रा ॥ सचै पुरखि ग्रलखि सिरजि निहालिग्रा ॥ उझड़ि भुले राह गुरि देखालिग्रा ॥ सतिगुर सचे वाहु सचु समालिग्रा ॥ पाइग्रा रतनु घराहु दीवा बालिग्रा ॥ सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिग्रा ॥ निडरिग्रा डरु लगि गरबि सि गालिग्रा ॥ नावहु भुला जगु फिरै बेतालिग्रा ॥ २४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ भै विचि जंमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ नानक भै विचि जे मरै सहिला ग्राइग्रा सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीग्रा खुसी कमाइ ॥ नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु त सरधा पूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु न कबहूं झूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु ता दुखु न जाणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु ता नव निधि पाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइग्रालु त सचि समाईऐ ॥ २५ ॥ सलोकु म० १ ॥ सिरु खोहाइ पीग्रहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीग्रनि हथ सुग्राही ॥ माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ ग्रोना पिंडु न पतलि किरिग्रा न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ ग्रठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण ग्रंनु न खाही ॥ सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ लकी कासे हथी फुंमण ग्रगो पिछी जाही ॥ न ग्रोइ जोगी ना ग्रोइ जंगम ना ग्रोइ

काजी मुंला ॥ दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ जीत्र्या मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपंने मेरु कीत्र्या माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ मुइत्र्या जीवदित्र्या गति होवै जां सिरि पाईऐ पाणी ॥ नानक सिर खुथै सैतानी एना गल न भाणी ॥ वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीत्र्या जुगति समाणी ॥ वुठै अंनु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ वुठै घाहु चरहि निति सुरही साधन दही विलोवै ॥ तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥ गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडित्र्याई ॥ नानक जे सिर खुथे नावनि नाही ता सति चटे सिरि छाई ॥ १ ॥ म० २ ॥ अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चंद अनेरा कि करे पउण पाणी कित्र्या जाति ॥ धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥ नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणित्र्या ॥ तूं सचा दीवाणु होरि आवण जाणित्र्या ॥ सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहित्र्या ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहित्र्या ॥ मंनिऐ गित्र्यानु धित्र्यानु तुधै ते पाइत्र्या ॥ करमि पवै नीसानु न चलै चलाइत्र्या ॥ तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइत्र्या ॥ नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइत्र्या ॥ २६ ॥ सलोकु म० २ ॥ दीखित्र्या आखि बुझाइत्र्या सिफती सचि समेउ ॥ तिन कउ कित्र्या उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥ १ ॥ म० १ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥ कहि कहि कथना माइत्र्या लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥ अखर नानक अखित्र्यो आपि ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै लाइत्र्या ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइत्र्या ॥ ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइत्र्या ॥ सची सिफति सालाह कपड़ा पाइत्र्या ॥ सचा अंम्रित नामु भोजनु आइत्र्या ॥ गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइत्र्या ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइत्र्या ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाइत्र्या ॥ २७ ॥ सुधु

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ मनमति हउली बोले बोलु ॥ सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ नदरी करमी गुर बीचारु ॥ १ ॥ भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥ भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ अंधा सचा अंधी सट ॥ २ ॥ बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥ ३ ॥ १ ॥ गउड़ी महला १ ॥ डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥ २ ॥ हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नैसानु ॥ भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार ॥ ३ ॥ जिसका कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी महला १ ॥ माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥

१ ॥ कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करणी कामणि करि मन लए ॥ २ ॥ साहा संजोगु वीग्राहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥ ३ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला १ ॥ पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥ १ ॥ कथता बकता सुनता सोई ॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ मूई सूरति बादु अहंकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥ २ ॥ जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥ रतन पदारथ घट ही माही ॥ पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥ ३ ॥ हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥ ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ कहु नानक गुरि बहमु दिखाइआ ॥ मरता जाता नदरि न आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला १ दखणी ॥ सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥ १ ॥ नामु मिलै चलै मै नालि ॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेती वणजु नावै की ओट ॥ पापु पुंनु बीज की पोट ॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥ २ ॥ साचे गुर की साची सीख ॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ सबदि रते मीठे रस ईख ॥ ३ ॥ हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला १ ॥ जातो जाइ कहा ते आवै ॥ कह उपजै कह जाइ समावै ॥ किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥ किउ अबिनासी सहजि समावै ॥ १ ॥ नामु रिदै अंम्रितु मुखि नामु ॥ नरहर नामु नरहर निहकामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे आवै सहजे जाइ ॥ मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥ सबदु बीचारि छुटै हरिनाइ ॥ २ ॥ तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ दहदिसि धावहि करमि

लिखियासु ॥ ३ ॥ नामु संजोगी गोइलि थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥ ४ ॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ नानक तिन कै लागउ पाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥ गउड़ी ॥ महला १ ॥ कामु क्रोधु माइग्रा महि चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥ १ ॥ वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रगनि पाणी बोलै भड़ वाउ ॥ जिहवा इंद्री एकु सुग्राउ ॥ दिसटि बिकारी नाही भउ भाउ ॥ ग्रापु तारे ता पाए नाउ ॥ २ ॥ सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ परपंचि बिग्रापि रहिग्रा मनु दोइ ॥ थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥ ३ ॥ बोहिथि चड़उ जा ग्रावै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धंनु गुर दुग्रारु ॥ नानक दरि घरि एकंकारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ उलटिग्रो कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ ग्रंम्रित धार गगनि दस दुग्रारि ॥ त्रिभवणु बेधिग्रा ग्रापि मुरारि ॥ १ ॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिऐ ग्रंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरणि मनु मानिग्रा ॥ ग्रापि मूग्रा मनु मन ते जानिग्रा ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिग्रा ॥ २ ॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ ग्रधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नाराइण ग्रंतरजामि ॥ ३ ॥ ग्रान मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला १ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ मरण रहण रसु ग्रंतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगनपुरु पाए ॥ १ ॥ मरणु लिखाइ ग्राए नही रहणा ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरिप्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु ग्रागै ॥ २ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जमका भउ मूचा ॥ ३ ॥ गुरि मिलिऐ मिलि ग्रंकि समाइग्रा ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइग्रा ॥ नानक हउमै मारि मिलाइग्रा ॥ ४ ॥ ९ ॥ गउड़ी महला १ ॥ किरतु पइग्रा नह

मेटै कोइ॥ किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ अवरु न करणै वाला दूआ ॥ १ ॥ ना जाणा करम केवड तेरी दाति॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥ १ ॥ रहाउ॥ तू एवडु दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ कीआ गरबु न आवै रासि॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि॥ २ ॥ तूं मारि जीवालहि बखसि मिलाइ॥ जिउ भावी तिउ नामु जपाइ॥ तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥ ३ ॥ तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ नानक रहणा भगति सरणाई ॥ ॥ ४ ॥ १० ॥ गउड़ी महला १ ॥ जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ अनभै विसरे नामि समाइआ ॥ १ ॥ किआ डरीऐ डरु डरहि समाना॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नर रामु रिदै हरि रासि॥ सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥ २ ॥ जाहि सवारै साझ बिआल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥ ३ ॥ अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ गउड़ी महला १ ॥ जनमि मरै त्रै गुण हितकारु॥ चारे बेद कथहि आकारु॥ तीनि अवसथा कहहि वखिआनु॥ तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु॥ १ ॥ राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा॥ १ ॥ रहाउ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोई सिंम्रिति सासत पंडित मुखि सोई ॥ बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥ मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥ २ ॥ जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई॥ गुरमुखि भगति परापति होई॥ हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ गुरमति पाए परमानंदु ॥ ३ ॥ जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ॥ आसा माहि निरासु बुझाइआ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता॥ नानक हरि चरणी मनु राता ॥ ४ ॥ १२ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अंम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥ १ ॥ सुणि सुणि सिख हमारी ॥ सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी

॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥ २ ॥ तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥ करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अंमृतु नामु तुमारा ॥ ४ ॥ दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥ ५ ॥ सुणि मूरख मंन अजाणा ॥ होगु तिसै का भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥ ६ ॥ १ ॥ १३ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ १ ॥ स्रीराम नामा उचरु मना ॥ आगै जमदलु बिखमु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसारि मड़ोली राखै दुआरा भीतरि बैठी साधना ॥ अंम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥ २ ॥ ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा साधन पकड़ी एक जना ॥ जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥ ३ ॥ कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥ ४ ॥ २ ॥ १४ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥ पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥ १ ॥ जोग जुगति इव पावसिता ॥ एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥ २ ॥ करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता

॥ एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥ ३ ॥ जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥ १ ॥ मन एको साहिबु भाई रे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥ २ ॥ मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥ ३ ॥ सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥ गउड़ी चेती महला १ ॥ कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥ १ ॥ मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥ २ ॥ हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥ ३ ॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥ ४ ॥ जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥ ५ ॥ जीअड़ा अगनि बराबर तपै भीतरि वगै काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥ ६ ॥ ५ ॥ १७ ॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ १ ॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥ २ ॥

आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ करमा उपरि निभड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥ ३ ॥ नानक करणा जिनि किआ सोई सार करेइ ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥ गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥ १ ॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥ २ ॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥ ३ ॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ १९ ॥

गउड़ी पूरबी दीपकी महला १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥ २० ॥

रागु गउड़ी महला ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी गुआरेरी ॥ गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलावै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच रंगि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलीऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु

भारा कीमति नही पाइ॥ सबदि सालाहे ग्रंतु न पारावारु॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥ २ ॥ गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥ मनि निरमलि वसै सचु सोइ॥ साचि वसिऐ साची सभ कार॥ ऊतम करणी सबद बीचार॥ ३ ॥ गुर ते साची सेवा होइ॥ गुरमुखि नामु पछाणै कोइ॥ जीवै दाता देवणहारु ॥ नानक हरिनामे लगै पिग्रारु ॥ ४ ॥ १ ॥ २१ ॥ गउड़ी गुग्रारेरी महला ३॥ गुर ते गिग्रानु पाए जनु कोइ॥ गुर ते बूझै सीझै सोइ॥ गुर ते सहजु साचु बीचारु॥ गुर ते पाए मुकति दुग्रारु॥ १ ॥ पूरै भागि मिलै गुरु ग्राइ॥ साचै सहजि साचि समाइ॥ १ ॥ रहाउ॥ गुरि मिलीऐ तृसना ग्रगनि बुझाए॥ गुर ते सांति वसै मनि ग्राए॥ गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ गुर ते सबदि मिलावा होइ॥ २ ॥ बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई॥ बिनु नावै बहुता दुखु पाई॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिग्राई॥ दरसनि सचै सची पति होई॥ ३ ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोई॥ किरपा करे सबदि मिलावा होई॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा॥ नानक साचे साचि समावा॥ ४ ॥ २ ॥ २२ ॥ गउड़ी गुग्रारेरी महला ३॥ सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ॥ सचि निवासु करे सचु सोइ॥ सची बाणी जुग चारे जापै॥ सभु किछु साचा ग्रापे ग्रापै॥ १ ॥ करमु होवै सतसंगि मिलाए ॥ हरिगुण गावै बैसि सु थाए॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलउ इह जिहवा दूजै भाइ॥ हरिरसु न चाखै फीका ग्रालाइ॥ बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ॥ बिनु नावै दुखीग्रा चलिग्रा रोइ ॥ २ ॥ रसना हरिरसु चाखिग्रा सहजि सुभाइ॥ गुर किरपा ते सचि समाइ॥ साचे राती गुरसबदु वीचार॥ ग्रंमृत पीवै निरमल धार ॥ ३ ॥ नामि समावै जो भाडा होइ॥ ऊंधै भांडै टिकै न कोइ॥ गुर सबदी मनि नामि निवासु॥ नानक सचु भांडा जिसु सबद पिग्रास ॥ ४ ॥ ३ ॥ २३ ॥ गउड़ी गुग्रारेरी महला ३॥ इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ॥ हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥ गावणि गावहि जिन नाम पिग्रारु ॥ साची बाणी सबद बीचारु ॥ १ ॥ गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥ मनु तनु राता नामि सुहावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि गावहि इकि भगति करेहि ॥

नामु न पावहि बिनु असनेह ॥ सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि ॥ २ ॥ भगति करहि मूरख आपु जणावहि ॥ नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ नचिऐ टपिऐ भगति न होइ ॥ सबदि मरै भगति पाए जनु सोइ ॥ ३ ॥ भगति वछलु भगति कराए सोइ ॥ सची भगति विचहु आपु खोइ ॥ मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥ नानक बखसे नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ४ ॥ २४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥ मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिसनो बखसे दे वडिआई ॥ गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजे विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे ही जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ५ ॥ २५ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥ १ ॥ हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ जग जीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥ हउमै मारि गुरसबदि पछाता ॥ कृपा करे प्रभ करम बिधाता ॥ २ ॥ से जन सचे जो गुरसबदि मिलाए ॥ धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥ ३ ॥ राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥ अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ आपे साहिबु आपि वजीर ॥ नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ६ ॥ २६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥ १ ॥ हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ तूं विसरहि तदि ही

मरि जाउ १ ॥ रहाउ ॥ तिन तूं विसरहि जि दुधु आपि भुलाए ॥ तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥ २ ॥ जिन इकमनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ जिन इकमनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥ गुरमती हरिनामि समाए ॥ ३ ॥ जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥ १ ॥ जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरिगुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥ २ ॥ गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ गुरमुखि अंतरि हरिनामु वसाए ॥ गुरमुखि भगति हरिनामि समाए ॥ ३ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ४ ॥ ८ ॥ २८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ भिंन भिंन वेखै हरिप्रभु रंगा ॥ १ ॥ एकु अचरजु एको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे सुतिआ देइ जगाई २ ॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥ ३ ॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥ नानक नामि रते हरिनामि समाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ २६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥ गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥ १ ॥ सहजे जागै सवै न कोइ ॥ पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥ २ ॥ इसु जुग महि रामनामि निसतारा ॥ बिरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥ ३ ॥

इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥ ४ ॥ १० ॥ ३० ॥ गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ सचै महलि सचि नामि समाहु ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमे आवै भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥ २ ॥ आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामु जपे नाउ नउनिधि पाए ॥ ४ ॥ ११ ॥ ३१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ से धनवंत हरिनामु कमाइ ॥ पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ हरिगुण गावै मति ऊतम होइ ॥ सहजे सहजि समावै सोइ ॥ २ ॥ दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ पुति कुटंबि गृहि मोहिआ माइ ॥ मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ नानक नामि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ३२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर सेवा जुग चारे होई ॥ पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥ १ ॥ ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ गुरमुखि सेवा अंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सेवहि से महा पुरख संसारे ॥ आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ हरि का नामु रखहि उरधारे ॥ नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ हउमै मारि कमलु परगासा ॥ अनहदु वाजै निजघरि वासा ॥ नामि रते घर माहि उदासा ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ अनदिनु जपहि हरि

सारंगपाणी ॥ नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ३३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ हिरदै नामु नित हरिरस भोग ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥ २ ॥ करम कांड बहु करहि अचार ॥ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥ ३ ॥ बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥ जन नानक छूटै गुर परगास ॥ ४ ॥ १४ ॥ ३४ ॥ महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ जैसी धरती ऊपर मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥ १ ॥ बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ करम कमाही ॥ नाना रूप सदा हहि तेरे तुझही माहि समाही ॥ २ ॥ इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ जा का कारजु सोई परुजाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥ ३ ॥ तेरा सबदु तूं है हहि आपे भरमु कहा ही ॥ नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ३५ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह भरमदे मन हठि आवै जाइ ॥ गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ हरिनामु वसिआ मनि आइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरिनामे सुखि समाइ ॥ ३ ॥ मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ जन नानक करमी पाईअनि हरिनामा भगति भंडार ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ३६ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ पेवकड़ै गुण संमलै साहुरै वासु पाइआ ॥ गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥ १ ॥ ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ

॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरिनामु धिआईऐ ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अंम्रितु पाईऐ ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ-सहजे सुखि समाईऐ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥ २ ॥ मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥ ३ ॥ मैरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ मेरा पिता माता हरिनामु है हरि बंधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ३७ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरिनामु पिआरा ॥ १ ॥ हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरिरसु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ हरिगुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरिरसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सतपुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥ २ ॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥ ३ ॥ सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरिप्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥ १ ॥ ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू

तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ मै मूरख हरि आस तुमारी ॥ २ ॥ खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ सूद वैसु पर किरति कमावै ॥ मै मूरख हरिनामु छडावै ॥ ३ ॥ सभ तेरी सृसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥ १ ॥ गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥ हरिरसु रसना रामगुन गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन धिआवहि हरि हरिनामा ॥ तिन दासनिदास करहु हम रामा ॥ जन की सेवा ऊतम कामा ॥ २ ॥ जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ जन पग रेणु वडभागी पावै ॥ ३ ॥ संत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥ जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ ते जन नानक नामि समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४० ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥ सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥ १ ॥ ते हरिजन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ हरिजन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥ २ ॥ सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा॥ हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥३॥ नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥ गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥ १ ॥ हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥ २ ॥ बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ हिरदै बिगसै देखै माइ ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥ ३ ॥ होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ जन नानक

प्रीति तृपति गुरु साचा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ जितु मिलि हरिनामु धिआइआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥ १ ॥ गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥ अनदिनु नगरी हरिगुण गाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥ ३ ॥ गुर सेवा आपि हरि भावै ॥ क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥ १ ॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥ २ ॥ हरि आपे सारिंग अंम्रितधारा ॥ हरि अंम्रितु आपि पीआवणहारा ॥ हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ हरि आपे नानक पावै पारा ॥ ४ ॥६॥४४॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हमलेहि ॥ हरिनामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥ १ ॥ हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ २ ॥ होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४५ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरिजन प्रीति हरि राखदा

दे आपि हथासा ॥ १ ॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जनकी उपमा तुझहि वडईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरिगुण गावै ॥ हरिजनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥ २ ॥ जो किछु कीआ सु हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥ ३ ॥ लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरिनामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ ४६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरिजनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥ १ ॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरिजनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥ २ ॥ बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरिजनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥ ३ ॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनिदास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ ४७ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कंम हरि लाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥ नित हरिगुण गावह हरिनामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ धंनु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई

॥ ३ ॥ जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ जिसु हरि आपि कृपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥ जन नानक हरि रसि तृपतिआ फिरि भूख न लागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४८ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥ १ ॥ मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरिनामु छडावै ॥ २ ॥ तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ तूं गुरु पिता तूं है गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥ ३ ॥ जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलीऐ चूके सभि सोग संतापे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ ४६ ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ हरिप्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥ १ ॥ मेरे राम इह नीच करम हरि मेरे ॥ गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ हम पापी संगि गुर उबरे पुंनु सतिगुर केरा ॥ २ ॥ सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ अंनु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ जिनि दीए सु चीति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥३॥ सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि

गुलम गुलामी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ ५० ॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ तिउं सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥ १ ॥ मेरे राम हम बारिक हरिप्रभ के है इआणे ॥ धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिन हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ ओह राखै चीतु पीछै विचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥ २ ॥ जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥ ३ ॥ भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ ऐसा हरिनामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥१३॥५१॥ गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुरु धूरा ॥ २ ॥ हरि भगति द्रिड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्रिड़ीऐ ॥ ३ ॥ जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ नानक तिसु गुरि मिलि उधरै हरिगुण गावाही ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ ५२ ॥ महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥ १ ॥ अपुने हरिप्रभ की हउ गोली ॥ जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई

हरि निकटि वसै हरि कोली ॥ २ ॥ हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥ ३ ॥ हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ जनु नानकु अनदिनु हरिगुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ५३ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरखु बिधाते ॥ जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥ १ ॥ राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ सतसंगति मिलि रामु रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥ २ ॥ जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोखसरि नाते ॥ दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो रामनाम रंगि राते ॥ ३ ॥ राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ५४ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेतीराचे ॥ सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥ १ ॥ राम मेरा मनु तनु वेधि लीओ हरि साचे ॥ जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥ २ ॥ तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मोकउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥ ३ ॥ आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ताचे ॥ मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ५५ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥ १ ॥ हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने रस अनरस हम देखे

सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अंमृत रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥ २ ॥ जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ तिन के करम हीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५६ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभि सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥ १ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभ स्रब सुखदाता जितु सेविऐ निजघरि वसीऐ ॥ गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥ २ ॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥ हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अंमृतु हरि रसु चखीऐ ॥ ३ ॥ मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥ ४ ॥ मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १९ ॥ ५७ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥ १ ॥ राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर क्रिपालि क्रिपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥ २ ॥ गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥ ३ ॥ जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ ५८ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इहु मनूआ खिनु न टिकै

बहु रंगी दह दहदिसि चलि चलि हाढे ॥ गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर लाले कांढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ परउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि पराढे ॥ २ ॥ जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥ ३ ॥ हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥ ४ ॥ ७ ॥ २१ ॥ ५९ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जम कालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरिजन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरिनामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ८ ॥ २२ ॥ ६० ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥ १ ॥ राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥ २ ॥ मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥ ३ ॥ हरिप्रभु आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २३ ॥ ६१ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥ १ ॥ राम

गुरमति हरि लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईग्रा रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे॥ हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुरबचनी भागे ॥ २ ॥ ग्रंधिग्रारै दीपक ग्रानि जलाए गुर गिग्रानि गुरू लिव लागे ॥ ग्रगिग्रानु ग्रंधेरा बिनसि बिनासिग्रो घरि वसतु लही मन जागे ॥ ३ ॥ साकत बधिक माइग्रा धारी तिन जम जोहनि लागे ॥ उन सतिगुर ग्रागै सीसु न बेचिग्रा ग्रोइ ग्रावहि जाहि ग्रभागे ॥ ४ ॥ हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिग्रो सतिगुर ग्रागे ॥ ५ ॥ १० ॥ २४ ॥ ६२ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हम ग्रहंकारी ग्रहंकार ग्रगिग्रान मति गुरि मिलीऐ ग्रापु गवाइग्रा ॥ हउमै रोगु गइग्रा सुखु पाइग्रा धनु धंनु गुरू हरि राइग्रा ॥ १ ॥ राम गुर कै बचनि हरि पाइग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीग्ररै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइग्रा ॥ मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर ग्रागै जिनि विछुड़िग्रा हरि गलि लाइग्रा ॥ २ ॥ मेरै ग्रंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइग्रा ॥ सहज ग्रनंदु भइग्रा मनि मोरै गुर ग्रागै ग्रापु वेचाइग्रा ॥ ३ ॥ हम ग्रपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइग्रा ॥ ग्रब नानक सरणागति ग्राए हरि राखहु लाज हरि भाइग्रा ॥ ४ ॥ ११ ॥ २५ ॥ ६३ ॥ गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ गुरमति बाजै सबदु ग्रनाहदु गुरमति मनूग्रा गावै ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइग्रा धनु धंनु गुरू लिवलावै ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥ २ ॥ हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरिगुण गावै ॥ मन रसकि रसकि हरि रसि ग्राघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥ ३ ॥ कोई करै उपाव ग्रनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिड़ावै ॥ ४ ॥ १२ ॥ २६ ॥ ६४ ॥ रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ गुरमुखि जिंदू जपि नामु करंमा ॥ मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ संतोखु पिता करि

गुरु पुरखु अजनमा ॥ वडभागी मिलु रामा ॥ १ ॥ गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु हरि रंगि भिंना ॥ २ ॥ आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ करि सेवा संता अंम्रितु मुखि पाहा जीउ ॥ मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥ ३ ॥ सावणि वरसु अंम्रिति जगु छाइआ जीउ ॥ मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ हरि अंम्रितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ जन नानक प्रेमि रतंना ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥ ६५ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ हरि तुठै ढलि ढलि मिलीआ जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ मनु देवां संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥ २ ॥ वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥ ३ ॥ हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ ६६ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविंदा गुरु पूरा अलखु लखाहीं जीउ ॥ हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥ १ ॥ नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु बहुतु

वैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ॥ संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविंदा मेरा हरिप्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥ २ ॥ मै मेलहु संत मेरा हरिप्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ॥ हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥ ३॥ वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का मेरे गोविंदा हरि पूंजी राखि हमारी जीउ॥ सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ॥ हरिनामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥ ६७ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरिप्रभु मेरा चोजी जीउ॥ हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ॥ हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ॥ हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥ १ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ॥ इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ भगता नामु अधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ॥ २॥ हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ॥ आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ॥ हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ॥ हरि आतमरामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥ ३ ॥ हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ॥ हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुरसबदी हरिप्रभ गाजै जीउ ॥ आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥

वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६८ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मै हरिनामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ मेरा हरिप्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ हरिप्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥ १ ॥ गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥ २ ॥ किउ हरिप्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ गुरसबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ वडभागी जपि नाउ जीउ ॥ ३ ॥ मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१ ॥ ६९ ॥ गउड़ी माझ महला ४ ॥ मेरा विरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ मन अंदरि अंमृतु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥ २ ॥ हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ हरिनामे नामि समाई जीउ ॥ ३ ॥ मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ गुर सरधा पूरि अंमृतु मुखि पाई जीउ ॥ हरि होहु दइआलु हरिनामु धिआई जीउ ॥ जन नानक हरिरसु पाई जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ १८ ॥ ३२ ॥ ७० ॥

महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसलु न गृहि मेरी सभ माइआ ॥ ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ झूठे लालचि जनमु

गवाइआ ॥ १ ॥ हसती घोड़े देखि विगासा ॥ लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥ २ ॥ राजु कमावै दहदिस सारी ॥ माणै रंग भोग बहु नारी ॥ जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥ ३ ॥ एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥ जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥ ४ ॥ इनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥ १ ॥ जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥ तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि वरतै एकु अनंता ॥ ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥ ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥ २ ॥ मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥ बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ जैसा बीजहि तैसा खासा ॥ ३ ॥ देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥ सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥ जन नानक की हरि पूरन आसा ॥ ४ ॥ २ ॥ ७१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥ १ ॥ मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ कई जनम साख करि उपाइआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥ ३ ॥ साध संगि भइओ जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ जीवत मरहि दरगह परवानु ॥३॥ जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥ कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ पूरन होइ तुमारा कामु ॥ फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अंतरि उर धारि ॥ सीघर कारजु लेहु सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूं दरगह पावहि

मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥ २ ॥ सरब जीअ हहि जाकै हाथि ॥ कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥ ३ ॥ सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥ १ ॥ जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का बचनु अटल अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥ २ ॥ गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अंम्रितु रवै ॥ ३ ॥ गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥ नानक सतिगुर सदा दइआल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥ १ ॥ रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥ गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥ २ ॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥ ३ ॥ जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अंम्रितु बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार ॥ १ ॥ जपि मनि मेरे राम राम रंगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि

राखु ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि लाज ॥ २ ॥ किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ सरब सुखा सुख साचा एहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ रामनाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धंनु वडभागी ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइआ साध संगु ॥ पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि कीरतनु मनु सीतल भए ॥ जनम जनम के किलविख गए ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥ २ ॥ प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बंधन काटि कीए अपने दास ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥ ३ ॥ एको मनि एको सभ ठाइ ॥ पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७७ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ अगले मुए सि पाछै परे ॥ जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥ जिह धंधे महि ओइ लपटाए ॥ उन ते दुगुण दिड़ी उन माए ॥ १ ॥ ओह बेला कछु चीति न आवै ॥ बिनसि जाइ ताहू लपटावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसा बंधी मूरख देह ॥ काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥ सिर ऊपरि ठाढो धरमराइ ॥ मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥ २ ॥ हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥ हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥ हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥ करणैहारु न बुझै बिगाना ॥ ३ ॥ अपुनी गति मिति आपे जानै ॥ किआ को कहै कि आखि वखानै ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ अपना भला सभ काहू मंगना ॥ ४ ॥ सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥ अंतु नाही किछु पारावारु ॥ दास अपने कउ दीजै दानु ॥ कबहू न विसरै नानक नामु ॥ ५ ॥ ९ ॥ ७८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ अनिक जतन नही होत छुटारा ॥ बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ हरि की सेवा निरमल हेत ॥ प्रभ की दरगह

सोभा सेत ॥ १ ॥ मन मेरे गहु हरिनाम का ओला ॥ तुझै न लागै ताता झोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ बोहिथु भै सागर माहि ॥ अंधकार दीपक दीपाहि ॥ अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ २ ॥ उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥ पूरन होवै सगली आस ॥ डोलै नाही तुमरा चीतु ॥ अंम्रित नामु जपि गुरमुखि मीत ॥ ३ ॥ नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥ हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥ ४ ॥ १० ॥ ७९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥ पुत्र कलत्र उरझिओ जानि मेरी ॥ ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥ १ ॥ बिनु हरिभजन देखउ बिललाते ॥ ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु माइआ संगि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ ओइ खसमै कै गृहि उन दूख सहाम ॥ जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥ नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥ २ ॥ जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥ खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥ उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥ तिस कै पालै कछू न पड़ै ॥ ३ ॥ जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ जिनि माइआ दीनी तिनि लाई तृसना ॥ आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥ नानक प्रभ आगै अरदासि ॥४॥११॥८०॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बहु रंग माइआ बहुबिधि पेखी ॥ कलम कागद सिआनप लेखी ॥ महर मलूक होइ देखिआ खान ॥ ता ते नाही मनु तृपतान ॥ १ ॥ सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ तृसना बूझै मनु तृपतावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असु पवन हसति असवारी ॥ चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥ नट नाटिक आखारे गाइआ ॥ ता महि मनि संतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥ सगल मेवे सुंदर बगीचे ॥ आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥ मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥ ३ ॥ करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥ सरब सूख इहु आनंदु लहिआ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ ४ ॥ जाकै हरि धनु सोई सुहेला ॥ प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥ ८१ ॥ गउड़ी गुआरेरी

महला ५ ॥ प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ होनु ना पाईऐ राम के दासा ॥ १ ॥ कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो भलाई सो बुरा जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥ जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु वलेवा साकत संसार ॥ २ ॥ जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ अंम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥ साध संग कै नाही नेरि ॥ लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥ ३ ॥ एकै जालि फहाए पंखी ॥ रसि रसि भोग करहि बहुरंगी ॥ कहु नानक जिसु भए कृपाल ॥ गुरि पूरै ताके काटे जाल ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभु किरपा ते बंधन छुटै ॥ तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥ १ ॥ तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ हम ते कछू न होवै देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥ २ ॥ जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥ जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥ ३ ॥ मनु तनु निरमलु होइ हरिरंगि ॥ सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥ नामि तेरै रहै मनु राता ॥ इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥ ४ ॥ १४ ॥ ८३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ आन रसा जेते तै चाखे ॥ निमख न तृसना तेरी लाथे ॥ हरिरस का तूं चाखहि सादु ॥ चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥ १ ॥ अंम्रितु रसना पीउ पिआरी ॥ इह रस राती होइ तृपतारी ॥१॥ रहाउ ॥ हे जिहवे तूं रामगुण गाउ ॥ निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ साध संगति वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ आठ पहर जिहवे आराधि ॥ पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ हरिगुण गावत रसन अमोली ॥ ३ ॥ वनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ आन न रस कस लवै न लाई ॥ कहु नानक गुर भए है सहाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ मनु मंदरु तनु साजी बारी ॥

इस ही मधे बसतु अपार ॥ इसही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥ १ ॥ नाम रतन को को बिउहारी ॥ अंम्रित भोजनु करे आहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥ २ ॥ महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवनु सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥ ३ ॥ खोजत खोजत निजघरु पाइआ ॥ अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ करि किरपा जब मेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८५ ॥ गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ तृपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥ १ ॥ हरि संगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की सरनी परे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल आतम आधार ॥ एकु निहारहि आगिआकार ॥ एको बनजु एको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥ २ ॥ हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ ३ ॥ संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि संतन की नानक दीजै ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूं मेरा सखा तूं ही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तू मेरी पति तूं है मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥ १ ॥ तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥ २ ॥ तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ सतिगुर ते दृड़िआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥ १८ ॥ ८७ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बिआपत हरख सोग बिसथार ॥

बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥ १ ॥ माइआ बिआपत बहु परकारी संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिआपत अहंबुधि का माता ॥ बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥ २ ॥ बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ बिआपत सेज महल सीगार ॥ पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥ ३ ॥ बिआपत करम करै हउ फासा ॥ बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ सभ किछु बिआपत बिनु हरिरंग रात ॥ ४ ॥ संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥ ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ ता कै निकटि न आवै माई ॥ ५ ॥ १९ ॥ ८८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ नैनहु नीद परदसटि विकार ॥ स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥ रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥ १ ॥ इसु गृह महि कोई जागतु रहै ॥ साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सहेली अपनै रस माती ॥ गृह अपुने की खबरि न जाती ॥ मुसनहार पंच बटवारे ॥ सूने नगरि परे ठगहारे ॥ २ ॥ उन ते राखै बापु न माई ॥ उन ते राखै मीतु न भाई ॥ दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥ साध संगि ओइ दुसट वसि होते ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ संतन धूरि सरब निधान ॥ साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥ ४ ॥ सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २० ॥ ८९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि हैं सगल जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥ १ ॥ कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे देइ निबाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥ जा की सोभा घटि घटि बनी ॥ २ ॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ जिसु सिमरत

होत सूक हरे ॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ ३ ॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥ ४ ॥ २१ ॥ १० ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अंम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥ १ ॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरिनाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥ २ ॥ संत कृपा ते मिटे मोह भरम ॥ साधरेण मजन सभि धरम ॥ साध कृपाल दइआल गोविंदु ॥ साधा महि इह हमरी जिंदु ॥ ३ ॥ किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ साधसंगि नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ११ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥ केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ तजि अभिमान भए निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥ १ ॥ अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज सूख आनंद निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण जाण रखे करि करम ॥ २ ॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ संत प्रसादि भइओ परगासु ॥ पूरि रहे एकै गुणतासु ॥ ३ ॥ कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ कहु नानक जा कउ होहु कृपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥ ४ ॥ २३ ॥ १२ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥ १ ॥ सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरू ते पावै ॥ आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥ २ ॥ जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥

जन की टेक एक गोपाल ॥ एका लिव एको मनि भाउ ॥ सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर अपारा ॥ ४ ॥ २४ ॥ ९३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ जाकै करमि परापति होइ ॥ दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ अंम्रित नामु रिदै हरि जापै ॥ १ ॥ पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥ गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण करावनहार दइआल ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥ २ ॥ जा की सेवा सरब निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई ॥ ४ ॥ २५ ॥ ९४ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥ १ ॥ बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥ २ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभनामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥ कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥ ३ ॥ बे मुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९५ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ अंम्रित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ पूरे गुर की सुमति पराणी ॥ १ ॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥ बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥ २ ॥ मंत्रु तंत्रु अउखधु पुनहचारु ॥

हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥ दुतरु तरे साध कै संगि ॥ ३ ॥ सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ नानक बिरथा कोइ न हेइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९६ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥ रसना रमहु रामगुण नीत ॥ सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ सिमरत राम नाही जम मार ॥ धरम राइ के दूत न जोहै ॥ माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥ २ ॥ उधरहि आपि तरै संसारु ॥ रामनाम जपि एकंकारु ॥ आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ रामनाम हिरदै परवेस ॥ ३ ॥ जा कै माथै एहु निधानु ॥ सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ९७ ॥

राग गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ चउपदे दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जो पराइओ सोई अपना ॥ जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥ १ ॥ कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥ जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ सति होवनु मनि लगै न राती ॥ २ ॥ बावै मारगु टेढा चलना ॥ सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥ ३ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥ ४ ॥ २९ ॥ ९८ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥ १ ॥ जलै न पाईऐ राम सनेही ॥ किरति संजोगि सती उठि होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखा देखी मन हठि जलि जाईऐ ॥ प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥ २ ॥ सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ धनु सती दरगह परवानिआ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ९९ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ हरिगुण गावह सहजि सुभाइ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ १ ॥ रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भरे भंडार अखूट अतोल ॥ २ ॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ १०० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥ १ ॥ सतिगुर अपने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ सदा अनंदु जा हरिगुण गामु ॥ २ ॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरमंत्रु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १०१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जाका मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥ १ ॥ जाकी प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ ॥ २ ॥ जा का कहिआ दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥ ३ ॥ जा का सभु किछु ता का होइ ॥ नानक ताकउ सदा सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ १०२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥ १ ॥ सहज अनंद हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि हरि राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥ २ ॥ जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ ता कै कछू नाही डरु जमा ॥ ३ ॥ जाकै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥ ४ ॥ ३४ ॥ १०३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥ १ ॥ सहज कथा के अंम्रित कुंटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता की धुनि मोहे गोपाला ॥ २ ॥ तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥ पारब्रहम के संगी संता ॥ ३ ॥ हरख अनंत सोग नही बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ॥ १०४ ॥ गउड़ी म० ५ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग

काइआ ले साधउ ॥ १ ॥ कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥ २ ॥ कवनु तपु जितु तपीआ होइ ॥ कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥ ३ ॥ गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥ ४ ॥ तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३६ ॥ १०५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ आपन तनु नही जाको गरबा ॥ राज मिलख नही आपन दरबा ॥ १ ॥ आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुत बनिता आपन नही भाई ॥ इसट मीत आप बापु न माई ॥ २ ॥ सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ हैवर गैवर आपन नही काम ॥ ३ ॥ कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ १०६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ आतम चीनि परम रंग मानी ॥१॥रहाउ ॥ चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ अहंबुधि तिनि सगल तिआगी ॥२॥ गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥ ३ ॥ गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ १०७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ जाकै ऊणा कछहू नाहि ॥ १ ॥ हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ २ ॥ तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ आदि जुगादि जा का भरवासा ॥ ३ ॥ जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १०८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मीतु करै सोई हम माना ॥ मीत के करतब कुसल समाना ॥ १ ॥ एका टेक मेरै मनि चीत ॥ जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीतु हमारा वेपरवाहा ॥ गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥ २ ॥ मीतु हमारा अंतरजामी ॥ समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी

॥ ३ ॥ हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥ ४ ॥ ४० ॥ १०९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥ ता कउ कछु नाही कालंगा ॥ १ ॥ माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ ता कउ कछु नाही संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ ता कउ सहसा नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ ता कै निकटि न आवै पीर ॥ ३ ॥ कहु नानक मैं सो गुरु पाइआ ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ११० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दुलभ देह पाई वडभागी ॥ नामु न जपहि ते आतमघाती ॥ १ ॥ मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ नाम बिहून जीवन कउन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ कवन अरथ मिरतक सीगार ॥ २ ॥ जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ १११ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ का की माई का को बाप ॥ नाम धारीक झूठे सभि साक ॥ १ ॥ काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका माटी एका जोति ॥ एको पवनु कहा कउनु रोति ॥ २ ॥ मेरा मेरा करि बिललाही ॥ मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ११२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥ १ ॥ कउन वडा माइआ वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ छोडि चलै त्रिसना नही बुझै ॥ २ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥३॥४४॥ ११३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥ १ ॥ पूरी रही जा पूरै राखी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥ २ ॥ हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥ ३ ॥ करणहारु सद वसै हदूरा ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ११४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत की

धूरि मिटे अघ कोट ॥ संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥ १ ॥ संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ संत कृपा ते जपीऐ नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ द्रसटि आवै सभु एकंकारु ॥ २ ॥ संत सुप्रसंन आए वसि पंचा ॥ अंम्रितु नामु रिदै लै संचा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा का पूरा करम ॥ तिसु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ॥ ४६ ॥ ११५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरिगुण जपत कमलु परगासै ॥ हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥ १ ॥ सा मति पूरी जितु हरिगुण गावै ॥ वडै भागि साधू संगु पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि पाईऐ निधि नामा ॥ साधसंगि पूरन सभि कामा ॥ २ ॥ हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक सो जनु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ४ ॥ ४७ ॥ ११६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ विसरी तिसै पराई ताता ॥ १ ॥ बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ करन करावन करता सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ २ ॥ जा कै हरि धनु सो सचु साहु ॥ गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥ ३ ॥ जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक परमपदु पाइआ ॥ ४ ॥ ४८ ॥ ११७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ नामो धनु नामो बिउहारु ॥ १ ॥ नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु भगत कै सुख असथानु ॥ नामु रतु सो भगतु परवानु ॥ २ ॥ हरि का नामु जनक उधारै ॥ सासि सासि जनु नामु समारै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ नाम संगि ता का मनु लागु ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ११८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ संत प्रसादि हरिनामु धिआइआ ॥ तब ते धावतु मनु तृपताइआ ॥ १ ॥ सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥ स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल अराधि भगवंता ॥ हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥ २ ॥ सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥ ३ ॥ दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ करणहारु नानक मनि बसिआ ॥ ४ ॥ ५० ॥ ११९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥

चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥ १ ॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥ २ ॥ सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥ ३ ॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक निसतारि ॥ ४ ॥ ५१ ॥ १२० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु उचारै ॥ १ ॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥ २ ॥ हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥ ३ ॥ मनि तनि मुखि हरिनामु दइआल ॥ नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥ ४ ॥ ५२ ॥ १२१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक टिकाई ॥ १ ॥ दुख बिनसे सुख हरिगुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु दीओ गुरि मंत्रु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥ २ ॥ अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥ करि किरपा काटे जम काल ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १२२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ मनमुख कउ लागो संतापु ॥ १ ॥ गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥ २ ॥ गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥ ३ ॥ गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरे पूरी परी ॥ ४ ॥ ५४ ॥ १२३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥ १ ॥ मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ आवत जात जोनी दुख खीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक बसत सुंदर पहिराइआ ॥ जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥ २ ॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥ निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥ ३ ॥ कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥४॥

५५ ॥ १२४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥ १ ॥ भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ साध संगि हरि के गुण गाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥ २ ॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु गुरि बलिहारी ॥ जिसु भेटत गति भई हमारी ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ साध संगि ता की सरनी परहु ॥ मनु तनु अपना आगै धरहु ॥ १ ॥ अंम्रित नामु पीवहु मेरे भाई ॥ सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥ २ ॥ सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ सो धंनु संचहु जो चालै नाले ॥ ३ ॥ तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ कहु नानक ता की चरणी लागु ॥ ४ ॥ ५७ ॥ १२६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥ १ ॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥ २ ॥ दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥ ३ ॥ इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ नानक ते जन सुफल फले ॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥ १ ॥ प्रभि किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के बिछुरे मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥ २ ॥ सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥ ३ ॥ दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ कहु नानक जो हरिगुन गावै ॥ ४ ॥ ५९ ॥ १२८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ भले दिनस भले संजोग ॥ जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥ १ ॥ ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ जितु रसना उचरै हरि हरी ॥ २ ॥ सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥ चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥ ३ ॥ कहु नानक भला मेरा करम ॥ जितु

भेटे साधू के चरन ॥४॥६०॥१२६॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥१॥ बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥ मारै राखै एको सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण रिदै उरिधारि ॥ अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥२॥ गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ ईहा ऊहा पावहि मानु ॥३॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥ मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥४॥ ६१॥१३०॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥ नामु रतनु वसै मनि आइ ॥१॥ जपि मन मेरे गोविंद की बाणी॥ साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ इकसु बिनु नाहीं दूजा कोइ ॥ जा की द्रसटि सदा सुखु होइ ॥२॥ साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥ रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥६२॥१३१॥ गउड़ी महला ५ ॥ भै महि रचिओ सभु संसारा॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा॥१॥ भउ न विआपै तेरी सरणा॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥१॥ रहाउ॥ सोग हरख महि आवण जाणा ॥ तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥२॥ अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ॥३॥ राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥ कहु नानक किआ जंत विचारा ॥४॥६३॥१३२॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुमरी कृपा ते जपीऐ नाउ ॥ तुमरी कृपा ते दरगह थाउ ॥१॥ तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइ ॥ तुमरी कृपा ते सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ॥ तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै॥ तुमरी कृपा ते भ्रमु भउ भागै ॥२॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ नानक नामु मिलै सचु रासि ॥४॥६४॥ १३३॥ गउड़ी महला ५॥ कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ नाम बिहून सूने से मुखा ॥१॥ हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥ १ ॥ रहाउ॥ नामु बिना नाही मुखि भागु॥ भरत बिहून कहा सोहागु॥२॥ नामु बिसारि लगै अन सुआइ॥ ता की आस न पूजै काइ॥३॥ करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ नानक नामु जपै

दिन राति ॥ ४ ॥ ६५ ॥ १३४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तूं समरथु तूं है मेरा सुआमी ॥ सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन जन ओट ॥ तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥ २ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥ ३ ॥ करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ नानक सिमरै नामु निधानु ॥ ४ ॥ ६६ ॥ १३५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ जा की रामनामि लिव लागी ॥ १ ॥ जा कै हरि वसिआ मनि माही ॥ ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब निधान राखे जन मांहि ॥ ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥ २ ॥ जन की महिमा कथी न जाइ ॥ पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥ ४ ॥ ६७ ॥ १३६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भजु मन मेरे एको नाम ॥ जीअ तेरे कै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ गुर पूरे का निरमल मंता ॥ २ ॥ छोड उपाव एक टेक राखु ॥ महा पदारथु अंम्रित रसु चाखु ॥ ३ ॥ बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ नानक जा कउ नदरि करे ॥ ४ ॥ ६८ ॥ १३७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥१॥ गोबिंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह होई परवानु ॥ सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥ २ ॥ हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ साधसंगि भै भरम मिटाइआ ॥ ३ ॥ जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ नानक दास हरि की सरणाइ ॥ ४ ॥ ६९ ॥ १३८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल हिरदै उरधारी ॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥ २ ॥ सफल जनमु होवै परवाणु ॥ गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ ३ ॥ संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ नानक गुर भेटत हरि सिउ

लिवलागी ॥ ४ ॥ ७० ॥ १३९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ राम की दरगह बाधा चोरु ॥ १ ॥ रामु रमै सोई रामाणा ॥ जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बिखुमुखि अंमृतु सुणावै ॥ जमपुरि बाधा चोटा खावै ॥ २ ॥ अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥ ३ ॥ अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥ ४ ॥ ७१ ॥ १४० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ १ ॥ हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ ताका रंगु न उतरै जाइ ॥ २ ॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ आन रंग फीके सभ माइआ ॥ ३ ॥ गुरि रंगे से भए निहाल ॥ कहु नानक गुर भए है दइआल ॥ ४ ॥ ७२ ॥ १४१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ सूख सहज आनंद निवासे ॥ १ ॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥ २ ॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ चरन कमल की दीनी ओट ॥ ३ ॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥ ४ ॥ ७३ ॥ १४२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥ १ ॥ हरि धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥ से जन लागे गुर की पाई ॥ २ ॥ सूख सहज सांति आनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ ३ ॥ नाम रासि साध संगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥ ४ ॥ ७४ ॥ १४३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥ १ ॥ उचरहु राम नामु लख बारी ॥ अंम्रित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ साध कै संगि किलविख सभ धोए ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानक दीजै

साध रवाला ॥ ४ ॥ ७५ ॥ १४४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जिस का दीत्र्या पैनै खाइ ॥ तिसु सिउ त्र्यालसु किउ बनै माइ ॥ १ ॥ खसमु बिसारि त्र्यान कंमि लागहि ॥ कउडी बदले रतनु तित्र्यागहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभू तित्र्यागि लागत त्र्यन लोभा ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥ २ ॥ त्र्यंमृत रसु खावहि खान पान ॥ जिनि दीए तिसहि न जानहि सुत्र्यान ॥ ३ ॥ कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ त्र्यंतरजामी ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १४५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन माहि धित्र्यानु ॥ सगल तीरथ मजन इसनानु ॥ १ ॥ हरि बिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनमु की मलु लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बांछत सगले फलु पाई ॥ २ ॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ३ ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ १४६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥ तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥ १ ॥ तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत की ऐसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल बिपरीति ॥ २ ॥ जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारित्र्या ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारित्र्या ॥ ३ ॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु कृपा सुख सागर ॥ ४ ॥ पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ बंधन काटि तरै हरिनाइ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७८ ॥ १४७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ त्र्यपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ सगल मनोरथि मुकति पदु दीतु ॥ १ ॥ ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्र्यपुनै सुत्र्याइ रिदै लै धारित्र्या ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारित्र्या ॥ २ ॥ रसना गीधी बोलत राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ त्र्यनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥ ४ ॥ ७९ ॥ १४८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥ १ ॥ पीवत राम रसु त्र्यंमृत गुण जासु ॥ जपि हरि चरण मिटी खुधितासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कलित्र्याण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदै

वसहि भगवान ॥ २ ॥ अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ करणैहारु रिदे महि धारु ॥ ३ ॥ तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ॥ कहु नानक अटल इहु धरमु ॥ ४ ॥ ८० ॥ १४९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥ १ ॥ राम रमण तरण भै सागर ॥ सरणि सूर फारे जम कागर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मंत्रु दीओ हरिनाम ॥ इह आसर पूरन भए काम ॥ २ ॥ जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥ ३ ॥ मान मोह खोए गुरि भरम ॥ पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥ ४ ॥ ८१ ॥ १५० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ दुखि लागै रामनामु चितारी ॥ १ ॥ तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ आन सुखा नही आवहि चीति ॥ ३ ॥ सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८२ ॥ १५१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ आठ पहर संगी बटवारे ॥ करि किरपा प्रभ लए निवारे ॥ १ ॥ ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा तपति सागर संसार ॥ प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥ २ ॥ अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥ ३ ॥ उकति सिआनप इसते कछु नाहि ॥ करि किरपा नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ८३ ॥ १५२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ थाती पाई हरि को नाम ॥ बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥ १ ॥ वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण हिरदै उरिधारि ॥ भवसागरु चड़ि उतरहि पारि ॥ २ ॥ साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥ ३ ॥ प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ नानक दरगह पाईऐ मानु ॥ ४ ॥ ८४ ॥ १५३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥ १ ॥ ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण

कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइग्रा नासु ॥ २ ॥ ग्रासा माणु ताणु धनु एक ॥ साचे साह की मन महि टेक ॥ ३ ॥ महा गरीब जन साध ग्रनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥ ४ ॥ ८५ ॥ १५४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥ १ ॥ साधसंगि कीरतनु फलु पाइग्रा ॥ जम का मारगु द्रसटि न ग्राइग्रा ॥ २ ॥ मन बच क्रम गोविंद ग्रधारु ॥ ता ते छुटिग्रो बिखु संसारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि कीनो ग्रपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १५५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥ १ ॥ भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिग्रो हरिनाम ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥ २ ॥ जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥ ३ ॥ मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥ नामु सुग्रामी का नानक टेक ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १५६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि राखिग्रो रिदै समालि ॥ घरि ग्राए गोविंदु लै नालि ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु राता राम कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिग्रा ॥ जनम जनम के किलविख सभि हिरिग्रा ॥ २ ॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे गुर का निरमल मंतु ॥ ३ ॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥ गउड़ी महला ५ ॥ धंनु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥ कुसल खेम प्रभि ग्रापि बसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि ग्रनंद जह हरिगुन गाही ॥ १ ॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥ २ ॥ सो वडभागी निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥ ३ ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुग्रामी ॥ नानक कउ मिलिग्रा ग्रंतरजामी ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १५८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो प्राणी गोविंदु धिग्रावै ॥ पड़िग्रा ग्रणपड़िग्रा परम गति पावै ॥ १ ॥ साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूपवंतु सो चतुरु

सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥ २ ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक जाके पूरन भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ १० ॥ १५९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ का पुरखु पुचारै नारी ॥ १ ॥ बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥ २ ॥ गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥ ३ ॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥ ४ ॥ ११ ॥ १६० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सा मति निरमल कहीअति धीर ॥ राम रसाइणु पीवत बीर ॥ १ ॥ हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रंगि निरमल परतापु ॥ २ ॥ साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच एहो उपकार ॥ ३ ॥ प्रेम भगति राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध रवाल ॥ ४ ॥ १२ ॥ १६१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ मेलि लए पूरन वडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥ १ ॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥ २ ॥ लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥ ३ ॥ बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥ नानक के प्रभ प्रान अधार ॥ ४ ॥ १३ ॥ १६२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइनि जो जन गीधे ॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार ॥ १ ॥ अंध कूप ते काढे आपि ॥ गुण गोविंद अचरज परताप ॥ २ ॥ वणि तृणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥ ब्रहम पसारु जीअ संगि दइआल ॥ ३ ॥ कहु नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥ ४ ॥ १४ ॥ १६३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नितप्रति नावणु रामसरि कीजै ॥ झोलि महा रसु हरि अंमृतु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल उदकु गोविंद का नाम ॥ मजनु करत पूरन

सभि काम ॥ १ ॥ संत संगि तह गोसटि होइ ॥ कोटि जनम के किलविख खोइ ॥ २ ॥ सिमरहि साध करहि आनंदु ॥ मनि तनि रविआ परमानंदु ॥ ३ ॥ जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ नानक दास तिसहि कुरबान ॥ ४ ॥ १५ ॥ १६४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सो किछु करि जितु मैल न लागै ॥ हरि कीरतन महि एहु मनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सिमरि न दूजा भाउ ॥ संत संगि जपि केवल नाउ ॥ १ ॥ करम धरम नेम ब्रत पूजा ॥ पारब्रहम बिनु जानु न दूजा ॥ २ ॥ ता की पूरन होई घाल ॥ जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥ ३ ॥ सो बैसनो है अपर अपारु ॥ कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥ ४ ॥ १६ ॥ १६५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ मुइआ उन ते को वरसांने ॥ १ ॥ सिमरि गोविंदु मनि तनि धुरि लिखिआ ॥ काहू काज न आवत बिखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥ ता की तृसना कबहूं न जाई ॥ २ ॥ दारन दुख दुतर संसारु ॥ रामनाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥ ३ ॥ साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥ रामनाम नानक आराधि ॥ ४ ॥ १७ ॥ १६६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥ १ ॥ पूरा निआउ करे करतारु ॥ अपुने दास कउ राखनहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥ २ ॥ तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ आगै पाछै मंदी सोइ ॥ ३ ॥ अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥ सरणि नानक हरिनामु धिआइ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १६७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥ पापी कउ लागा संतापु ॥ १ ॥ जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥ तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साची दरगह बोलै कूड़ु ॥ सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥ २ ॥ रोग बिआपे करदे पाप ॥ अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥ ३ ॥ अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥ दरबु गइआ सभु जीअ कै साथे ॥ ४ ॥ नानक सरनि परे दरबारि ॥ राखी पैज मेरै करतारि ॥ ५ ॥ १९ ॥ १६८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ग्रहंबुधि मन पूरि थिधाई ॥ साध धूरि करि सुध मंजाई ॥ १ ॥ ग्रनिक जला जे धोवै देही ॥ मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटिग्रो सदा क्रिपाल ॥ हरि सिमरि सिमरि काटिग्रा भउ काल ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति हरिनाउ ॥ प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥ ४ ॥ १०० ॥ १६९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीवन पदवी हरि के दास ॥ जिन मिलिग्रा ग्रातम परगासु ॥ १ ॥ हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ सुखु पावहि हरि दुग्रार परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्राठ पहर धिग्राईऐ गोपालु ॥ नानक दरसनु देखि निहालु ॥ २ ॥ १०१ ॥ १७० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सांति भई गुर गोबिदि पाई ॥ ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रामनामु नित रसन बखान ॥ बिनसे रोग भए कलिग्रान ॥ १ ॥ पारब्रहम गुण ग्रगम बीचार ॥ साधू संगमि है निसतार ॥ २ ॥ निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ गई बिग्राधि उबरे जन मीत ॥ ३ ॥ मन बच क्रम प्रभु ग्रपना धिग्राई ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ ४ ॥ १०२ ॥ १७१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ नेत्र प्रगासु कीग्रा गुरदेव ॥ भरम गए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सीतला ते रखिग्रा बिहारी ॥ पारब्रहम प्रभ किरपाधारी ॥ १ ॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसंगि हरि ग्रंमृतु पीवै ॥ २ ॥ १०३ ॥ ॥ १७२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ धनु ग्रोहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ धनु ग्रोइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥ १ ॥ नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥ रसना रामनाम जसु कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥ नानक जिनि जपिग्रा निरबाणु ॥ २ ॥ १०४ ॥ १७३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तूं है मसलति तूं है नालि ॥ तूं है राखहि सारि समालि ॥ १ ॥ ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ दास की पैज रखै मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रागै ग्रापि इहु थानु वसि जा कै ॥ ग्राठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥ २ ॥ पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ जा कउ ग्रापि करहि फुरमानु ॥ ३ ॥ ग्रापे दाता ग्रापि प्रतिपालि ॥ नित नित नानक रामनामु समालि ॥ ४ ॥ १०५ ॥ १७४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुरु पूरा भइग्रा क्रिपालु ॥ हिरदै वसिग्रा सदा गुपालु ॥ १ ॥

रामु रखत सद ही सुखु पाइआ ॥ मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥ २ ॥ १०६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ धोती खोलि विछाए हेठि ॥ गरधप वांगू लाहे पेटि ॥ १ ॥ बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥ मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा तिलक करत इसनांना ॥ छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥ २ ॥ बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥ जीआं कुहत न संगै पराणी ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ हिरदा सुधु ब्रहमु बीचारै ॥ ४ ॥ १०७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ थिरु घरि बैसहु हरिजन पिआरे ॥ सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥ १ ॥ बादिसाह साह सभि वसि करि दीने ॥ अंम्रितनाम महा रस पीने ॥ २ ॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥ ३ ॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥ ४ ॥ १०८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ हरि संगि राते सुफल फला ॥ १ ॥ सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ हरि संगि राते पूरन आस ॥ २ ॥ हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥ ३ ॥ हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥ ४ ॥ १०९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ उदमु करत सीतल मन भए ॥ मारगि चलत सगल दुख गए ॥ नामु जपत मनि भए अनंद ॥ रसि गाए गुन परमानंद ॥ १ ॥ खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥

गोबिंद की टहल सफल इह कांइआ ॥ संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ जन की कीनी आपि सहाइ ॥ सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥ आपु गइआ ता आपहि भए ॥ क्रिपा निधान की सरनी पए ॥ ३ ॥ जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥ असथिर भए बसे सुख आसन ॥ गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥ ४ ॥ ११० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ कोटि मजन कीनो इसनान ॥ लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥ १ ॥ सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ हरि हरि नाम रसन आराधे ॥ २ ॥ सिंम्रिति सासत बेद बखाने ॥ जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥ ३ ॥ अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ नामु जपतु नामु रिदे बीचारे ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ १११ ॥ गउड़ी म० ५ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥ १ ॥ गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥ तिसै अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥ ता ते सिधि भए सगल कांम ॥ २ ॥ दरसन देखि सीतल मन भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ कहु नानक कहा भै भाई ॥ अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥ ४ ॥ ११२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥ १ ॥ प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥ करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ भै बिनसे आतम सुख सारा ॥ २ ॥ करि किरपा अपने जन राखे ॥ जनम जनम के किलबिख लाथे ॥ ३ ॥ कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ नानक दास सदा सरनाई ॥ ४ ॥ ११३ ॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे   १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राम को बलु पूरन भाई ॥ ता ते ब्रिथा न बिआपै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जो जो चितवै दासु हरि माई ॥ सो सो करता आपि कराई ॥ १ ॥ निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ नानक हरिगुण निरभउ गाई ॥ २ ॥ ११४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ भुजबल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥ १ ॥ दीना नाथ अनाथ करुणामै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥ २ ॥ २ ॥ ११५ ॥

रागु गउड़ी बैरागणि महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै वासु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुझ बिनु घरी न जीवना ध्रिगु रहणा संसारि ॥ जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥ १ ॥ हसत अलंबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥ २ ॥ किआ सुख तेरे संमला कवन बिधी बीचारि ॥ सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥ ३ ॥ सगल पदारथ असट सिधि नाम महारस माहि ॥ सुप्रसंन भए केसवा से जन हरिगुण गाहि ॥ ४ ॥ मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥ साध संगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥

गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि म० ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ है कोई राम पिआरो गावै ॥ सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ बिरले काहू एक लिव लागी ॥ जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥ १ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ जोगी जती सिध हरि आहै ॥ जिसहि परापति सो हरिगुण गाहै ॥ २ ॥ ता की सरणि जिनि बिसरत नाही ॥ वडभागी हरि संत मिलाही ॥ जनम मरण तिह मूले नाही ॥ ३ ॥ करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ नानकु मांगतु नामु अधारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ११७ ॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥ १ ॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥ २ ॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसनि कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल कृपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ११८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥ २ ॥ २ ॥ ११९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥ मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भ्रम की कूई तृसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥ १ ॥ करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंड सभु तुमरी रासि ॥ २ ॥ ३ ॥ १२० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवा करउ दास दासन की अनिक भांति तिसु करउ निहोरा ॥ तुला धार तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥ १ ॥ संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु कृतारथु सफलु सवेरा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२१ ॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ कोई ऐसा संतु सहज सुख

दाता मोहि मारगु देइ बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥ १ ॥ एका संगति इकतु गृहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥ एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥ २ ॥ जिस का गृहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥ अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥ ३ ॥ जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साध संगति लिव लाई ॥ पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥ सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ऐसो परचउ पाइओ ॥ करि क्रिपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ ॥ कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥ १ ॥ लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे तां सदा सहज सुखु पाइओ ॥ होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥ २ ॥ खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुरि परदा खोलि दिखाइओ ॥ नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरि बैठै जाइओ ॥ ३ ॥ एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥ ४ ॥ २ ॥ १२३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अउध घटै दिनसु रैना रे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनंती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रहमगिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआए हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निजघरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानकु दासु इही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ राखु पिता प्रभ मेरे ॥ मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥ १ ॥

रहाउ ॥ पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥ १ ॥ करि करि हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही ॥ एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥ २ ॥ करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥ संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥ ३ ॥ जीति लए ओइ महाबिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ कहु नानक मन भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ ओहु अबिनासी राइआ ॥ निरभउ संगु तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ एक महलि तूं होहि अफारो एक महलि निमानो ॥ एक महलि तूं आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥ १ ॥ एक महलि तूं पंडितु बकता एक महलि खलु होता ॥ एक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछू न लेता ॥ २ ॥ काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥ जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥ ३ ॥ अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इहु करै बिचारा ॥ ४ ॥ जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥ कहु नानक अपरंपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥ ५ ॥ ५ ॥ १२६ ॥ गउड़ी३ महला ५ ॥ छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ उरझि रहिओ रे बावर गावर जिओ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥ नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥ १ ॥ पेखि पेखि रे कसुंभ की लीला राचि माचि तिन हूं लउ हसूआ ॥ छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥ २ ॥ करत करत इवही बिरधानो हारिओ उकते तनु खीनसूआ ॥ जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥ ३ ॥ जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥ मारगु प्रभ को संति बताइओ दृड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥४॥६॥१२७॥ गउड़ी४ महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतर

की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥ १ ॥ बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधानु सुखदाते ॥ अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥ २ ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥ ३ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पइआल मिरत भूअमंडल सरब समानो एकै ओही ॥ सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥ १ ॥ पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥ गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥ २ ॥ ८ ॥ १२९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलहु पिआरे जीआ ॥ प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥ १ ॥ सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किनही कीता ॥ तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥ २ ॥ बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥ राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥ ३ ॥ जिसनो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥ ४ ॥ ९ ॥ १३० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हउ ता कै बलिहारी ॥ जा कै केवल नामु अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते ॥ सूख सहज आनंद तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥ १ ॥ जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥ उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥ २ ॥ ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥ भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥ ३ ॥ राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ नामु निधानु सद नवतनु

निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिया ॥ ४ ॥ १० ॥ १३१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥ मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ खंड पृथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥ दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी दृड़िओ एकु निरंकारा ॥ १ ॥ पंच चेले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥ दस बैरागनि आगिआ कारी तब निरमल जोगी थीए ॥ २ ॥ भरमु जराइ चराई बिभूता पंथु एकु करि पेखिआ ॥ सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥ ३ ॥ जह भउ नाही तहा आसनु बाधिओ सिंगी अनहत बानी ॥ ततु बीचारु डंडा करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥ ४ ॥ ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥ सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥ ५ ॥ ११ ॥ १३२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले मीता ॥ हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥ भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्वासा ॥ १ ॥ तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥ पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रंगा ॥ २ ॥ नाम खजाना भगती पाइआ मन तन तृपति अघाए ॥ नानक हरि जीउ ताकउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन सभ किछु तुमही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ तुमरी गति मिति तुमही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥ १ ॥ अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन संगि जोरी ॥ प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे दृसटि ओह चंद चकोरी ॥ २ ॥ राम संत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥ ३ ॥ तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ नानक कउ प्रभ कीजै किरपा

उन संतन कै संगि संगोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ १३४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तुम हरि सेती राते संतहु ॥ निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा मरमु तुमाही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥ १ ॥ तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ करि किरपा जिसु राखहु संगे तेते पारि पराते ॥ २ ॥ ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ ऐसा निधानु देहु मो कउ हरिजन चलै हमारै साथे ॥ ३ ॥ निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरिनामु मेरा मनु जापे ॥ संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल धापे ॥ ४ ॥ १४ ॥ १३५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सहजि समाइओ देव ॥ मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटि जेवरी कीओ दासरो संतन टहलाइओ ॥ एक नाम को थीओ पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥ १ ॥ भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥ अंमृतु नामु पीओ मनु तृपतिआ अनभै ठहराइओ ॥ २ ॥ मानि आगिआ सरब सुख पाए दूखह ठाउ गवाइओ ॥ जउ सुप्रसंन भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥ ३ ॥ ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥ कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरिनाइओ ॥ ४ ॥ १५ ॥ १३६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥ जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति तिआगहु हरिजन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥ जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥ १ ॥ कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥ २ ॥ सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥ ३ ॥ जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ नानकु दासु ता की सरणाई जा ते बृथा न कोई रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ १३७ ॥

राग गउड़ी, पूरबी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ ॥हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे॥ ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे॥ सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे॥ १ ॥ गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे॥ चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥ २ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥ ३ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे॥ करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे॥ ४ ॥ १ ॥ १३८ ॥

राग गउड़ी चेती, महला ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ ॥सुखु नाही रे हरि भगति बिना॥ जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥ १ ॥ रहाउ॥ सुत संपति बनिता बिनोद॥ छोडि गए बहु लोग भोग॥ १ ॥ हैवर गैवर राज रंग॥ तिआगि चलिओ है मूड़ नंग॥ २ ॥ चोआ चंदन देह फूलिआ॥ सो तनु धर संगि रूलिआ ॥ ३ ॥ मोहि मोहिआ जानै दूरि है॥ कहु नानक सदा हदूरि है॥४॥१॥१३९॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन धर तरबे हरिनामनो॥ सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पारगरामनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कालख अंधिआरीआ ॥ गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥ १ ॥ बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ उबरे जपि जपि हरिगुनी ॥ २ ॥ मतवारो माइआ सोइआ ॥ गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥ ३ ॥ कहु नानक एकु धिआइआ॥ घटि घटि नदरी आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १४० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ दीबानु हमारो तुही एक ॥ सेवा थारी गुरहि टेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति नही पाइआ॥ गुरि चाकर लै लाइआ॥ १ ॥ मारे पंच बिखादीआ ॥ गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥ २ ॥ बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ सूख सहज आनंद बिस्राम ॥ ३ ॥ प्रभ के चाकर से भले॥ नानक

तिन मुख ऊजले ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४१ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जीअरे ओल्हा नाम का ॥ अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर जतनि नही पाईऐ ॥ वडै भागि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ लाख हिकमती जानीऐ ॥ आगै तिलु नही मानीऐ ॥ २ ॥ अहंबुधि करम कमावने ॥ गृह बालू नीरि बहावने ॥ ३ ॥ प्रभु क्रिपालु किरपा करै ॥ नामु नानक साधू संगि मिलै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४२ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ वारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन तुही एक ॥ जीअ जंत की तुही टेक ॥ १ ॥ राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥ तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥ २ ॥ ईहा ऊहा तुम रखे ॥ गुर किरपा ते को लखे ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥ नानक तकीआ तुही ताणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ संत संगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुराण सिम्रिति भने ॥ सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥ १ ॥ सगल असथान भै भीत चीन ॥ राम सेवक भै रहत कीन ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥ ३ ॥ बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥ हरि साध सरणि नानक गही ॥ ४ ॥ ६ ॥ १४४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मन रामनाम गुन गाईऐ ॥ नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगि हरि मनि वसै ॥ दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥ १ ॥ संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥ २ ॥ जा कउ गुरु हरिमंत्रु दे ॥ सो उबरिआ माइआ अगनि ते ॥ ३ ॥ नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥ मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ रसना जपीऐ एकु नाम ॥ ईहा सुखु आनंदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटीऐ तेरा अहं रोगु ॥ तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥ १ ॥ हरिरसु जिनि जनि चाखिआ ॥ ता की तृसना लाथीआ ॥ २ ॥ हरि बिस्राम निधि पाइआ ॥ सो बहुरि न कतही धाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ नानक ता का भउ गइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४६ ॥

गउड़ी₂ महला ५ ॥ जा कउ बिसरै रामनाम ताहू कउ पीर ॥ साध संगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥ ताकै करतल नव निधि सिधि ॥ १ ॥ जो जानहि हरिप्रभ धनी ॥ किछु नाही ता कै कमी ॥ २ ॥ करणैहारु पछानिआ ॥ सरब सूख रंग माणिआ ॥ ३ ॥ हरि धनु जा कै गृहि वसै ॥ कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गरबु बडो मूलु इतनो ॥ रहनु नही गहु कितनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥ १ ॥ हरन भरन संपूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥ नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥ २ ॥ १० ॥ १४८ ॥ गउड़ी₃ महला ५ ॥ मोहि दासरो ठाकुर को ॥ धानु प्रभ का खाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ खिन महि साजि सवारणहारा ॥ १ ॥ कामु करी जे ठाकुर भावा ॥ गीत चरित प्रभु के गुन गावा ॥ २ ॥ सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥ तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ एक टेक एको आधारा ॥ जन नानक हरि की लागा कारा ॥ ४ ॥ ११ ॥ १४९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥ इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥ १ ॥ भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ कहु नानक किरपा भई साध संगति निधि मोरै ॥ २ ॥ १२ ॥ १५० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ चिंतामणि करुणामए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआला पारब्रहम ॥ जा कै सिमरणि सुख भए ॥ १ ॥ अकालपुरख अगाधि बोध ॥ सुनत जसो कोटि अघ खए ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ मइआ धारि ॥ नानक हरि हरि नाम लए ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५१ ॥ गउड़ी पूरबी₄ महला ५ ॥ मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ गृह मंदर संपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥ १ ॥ तनु मेरा संपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ देवनहारा बिसरिओ

ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥ २ ॥ पहिरै बागा करि इसनाना चोत्रा चंदन लाए ॥ निरभउ निरंकार नही चीनिया जिउ हसती नावाए ॥ ३ ॥ जउ होइ कृपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ मुकतु भइत्रा बंधन गुरि खोले जन नानक हरिगुण गाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ १५२ ॥ गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥ रतन जनमु सफलु गुरि कीत्रा दरसन कउ बलिहरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥ जउ होइ दैत्रालु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईऐ ॥ १ ॥ मेरे मन नामि लए जम बंध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईऐ ॥ सेवि सुत्रामी सतिगुरु दाता मन बंछत फल त्राईऐ ॥ २ ॥ नामु इसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥ करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥ ३ ॥ गुरि किरपालि कृपा प्रभि धारी बिनसे सरब अंदेसा ॥ नानक सुखु पाइत्रा हरि कीरतनि मिटित्रो सगल कलेसा ॥ ४ ॥ १५ ॥ १५३ ॥

राग गउड़ी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तृसना बिरले ही की बुझी हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ परै परै ही कउ लुझी हे ॥ १ ॥ सुंदर नारी अनिक परकारी परगृह बिकारी ॥ बुरा भला नही सुझी हे ॥ २ ॥ अनिक बंधन माइत्रा भरमतु भरमाइत्रा गुण निधि नही गाइत्रा ॥ मन बिखै ही महि लुझी हे ॥ ३ ॥ जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साध संगि माइत्रा तरै ॥ नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥ ४ ॥ १ ॥ १५४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सभहू को रसु हरि हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू जोग काहू भोग काहू गित्रान काहू धित्रान ॥ काहू हो डंड धरि हो ॥ १ ॥ काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ काहू हो गउनु करि हो ॥ २ ॥ काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ नानका भगति प्रित्र हो ॥ ३ ॥ २ ॥ १५५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुन कीरति निधि मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं ही रस तूं ही जस तूं ही रूप तू ही रंग ॥ आस ओट प्रभ तोरी ॥१॥ तू ही मान तूं ही धान तू ही पति तू ही प्रान ॥ गुरि तूटी लै

जोरी ॥ २ ॥ तू ही गृहि तू ही बनि तू ही गाउ तू ही सुनि ॥ है नानक नेर नेरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १५६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मातो हरि रंगि मातो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओही पीओ ओही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥ उआहू सिउ मनु रातो ॥ १ ॥ ओही भाठी ओही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ मनि ओहो सुखु जातो ॥ २ ॥ सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥ नानक गुर सबदि परातो ॥ ३ ॥ ४ ॥ १५७ ॥

राग़ु गौड़ी मालवा महला ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरिनामु लेहु मीता लेहु ॥ आगै बिखम पंथु भैआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥ करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम कालु ॥ १ ॥ होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥ नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ॥ २ ॥ सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥ ३ ॥ जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥ ४ ॥ १ ॥ १५८ ॥

रागु गउड़ी माला, महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ पाइओ बाल बुधि सुखु रे ॥ हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ जउ क्रिपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥ १ ॥ जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे ॥ जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ॥ २ ॥ जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥ ३ ॥ जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ पोटि डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ॥ ४ ॥ १ ॥ १५९ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥ तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥ सरब सूख आनंद मंगल रसमानि गोबिंदै आगिओ

॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥ संपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥ १ ॥ बास बासरी एकै सुआमी उदिआन द्रसटागिओ ॥ निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥ २ ॥ जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ साध संगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ॥ ३ ॥ जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥ नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६० ॥ गउड़ी माला॰ महला ५ ॥ पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥ तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाथी भूख तृसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी ॥ १ ॥ तृपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥ २ ॥ अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥ लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥ ३ ॥ कहिओ न जाई एहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६१ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ उबरत राजा राम की सरणी ॥ सरब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र सिंम्रिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥ १ ॥ तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥ २ ॥ अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल बृथे बिनु नामा ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ साध संगति जनम मरणु निवारै नानकु जन की धूरा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६२ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ करता होइ जनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ दहदिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन करम करि बाधा ॥ १ ॥ मन तन धन

भूमि का ठाकुरु हउ इसका इहु मेरा ॥ भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥ २ ॥ तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥ जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥ ३ ॥ अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६३ ॥ गउड़ी माला महला ५ ॥ हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ जप तप संजम करम कमाणे इहि ओरै मूसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥ १ ॥ तीरथि नाइ अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोग नही पतीआवै ॥ २ ॥ चतुर बेद मुखबचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥ बूझै नाही एकु सुधाखरु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥ ३ ॥ नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पारगरामी ॥ गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६४ ॥ गउड़ी माला ५ ॥ माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥ १ ॥ करहु क्रिपा सरब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥ नानक की बेनंती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥ २ ॥ ७ ॥ १६५ ॥

रागु गउड़ी माझ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥ कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥ भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥ पूरन सभनी जाई जीउ ॥ १ ॥ किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥ तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥ २ ॥ पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥ होइ बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥ गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥ हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल

सुग्रामी मेरे जीउ॥ पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ॥ गुर मन की ग्रास पूराई जीउ॥ ४॥ जिनि नाउ पाइग्रा सो धनवंता जीउ॥ जिनि प्रभु धिग्राइग्रा सु सोभावंता जीउ॥ जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ॥ जन नानक सहजि समाई जीउ॥ ५॥ १॥ १६६॥ गउड़ी महला ५ माझ॥ ग्राउ हमारै राम पिग्रारे जीउ॥ रैणि दिनसु सासि सासि चितारे जीउ॥ संत देउ सदेसा पै चरणारे जीउ॥ तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ॥ १॥ संगि तुमारै मै करे ग्रनंदा जीउ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि सुख परमानंदा जीउ॥ सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ॥ पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ॥ २॥ चरण पखारि करी नित सेवा जीउ॥ पूजा ग्ररचा बंदन देवा जीउ॥ दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ॥ बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ॥ ३॥ इछ पुंनी मेरी मनु तनु हरिग्रा जीउ॥ दरसन पेखत सभ दुख परहरिग्रा जीउ॥ हरि हरि नामु जपे जपि तरिग्रा जीउ॥ इहु ग्रजरु नानक सुख सहीऐ जीउ॥ ४॥ २॥ १६७॥ गउड़ी माझ महला ५॥ सुणि सुणि साजन मन मित पिग्रारे जीउ॥ मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ॥ विसरु नाही प्रभ प्राण ग्रधारे जीउ॥ सदा तेरी सरणाई जीउ॥ १॥ जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ॥ गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ॥ सभ किछु प्रभ का प्रभ कीग्रा जाई जीउ॥ प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ॥ २॥ एहु निधानु जपै वडभागी जीउ॥ नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ॥ गुरु पूरा पाइग्रा सभु दुखु मिटाइग्रा जीउ॥ ग्राठ पहर गुण गाइग्रा जीउ॥ ३॥ रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ॥ तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ॥ हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ॥ जन नानक सद बलिहारा जीउ॥ ४॥ ३॥ १६८॥

राग़ु गउड़ी माझ२ महला ५

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि॥ ॥ तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु॥ जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु॥ १॥ रहाउ॥ सभे गला जातीग्रा सुणि कै चुप कीग्रा॥ कद ही सुरति न लधीग्रा माइग्रा

मोहड़िया ॥ १ ॥ देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥ २ ॥ इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥ ३ ॥ भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥ ४ ॥ १ ॥ १६९ ॥
गउड़ी महला ५ मांझ ॥ दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरिगुण गाउ ॥ १ ॥ सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ ओटि तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥ २ ॥ भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥ ३ ॥ गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥ २ ॥ १७० ॥
गउड़ी माझ महला ५ ॥ हरि राम राम राम रामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवित्रु ॥ हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मित्रु ॥ १ ॥ सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥ २ ॥ जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥ ३ ॥ जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७१ ॥ गउड़ी माझ महला ५ ॥ मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥ सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥ विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥ १ ॥ अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥ २ ॥ साजनु बंधु सुमित्रु सो हरिनामु हिरदै देइ ॥ अउगण सभि मिटाइकै परउपकारु करेइ ॥ ३ ॥ मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुध नो मंगै दानु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी महला ६ ॥ साधो मन का मानु तिआगउ ॥ काम क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥ जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहू गुरमुखि जाना ॥ २ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ६ ॥ साधो रचना राम बनाई ॥ इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥ १ ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥ गउड़ी महला ६ ॥ प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥ अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥ म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इह जग देखि तासि उठि धावै ॥ १ ॥ भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥ जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ६ ॥ साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥ चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥ रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥ १ ॥ जोगी जतन करत सभ हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥ २ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला ६ ॥ साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥ मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥ गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥ तजि अभिमानु मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥ नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ २ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला ६ ॥

काऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥ बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरिगुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥ १ ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥ २ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ साधो राम सरनि बिसरामा ॥ बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥ १ ॥ सुरग नरक अंमृत बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥ उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥ २ ॥ दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानहु गिआनी ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥ ३ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥ अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर गृह नारी ॥ इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥ १ ॥ रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥ निमख न लीन भइओ चरनन सिउ बिरथा अउध सिरानी ॥ २ ॥ कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥ ३ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला ९ ॥ नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥ पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥ १ ॥ मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥ नानक कहत गाइ करुनामै भवसागर कै पारि उतरु रे ॥ २ ॥ ९ ॥ २५१ ॥

रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥ पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥ गुर की मति जीइ आई कारि ॥ १ ॥ इन बिधि राम रमत

मनु मानिआ ॥ गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ ॥ निरमल बाणी भरमु चुकाइआ
॥ लाल भए सूहा रंगु माइआ ॥ नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥ २ ॥
उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥ सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ
॥ रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥ भाइ बसे जम का भउ
भागिआ ॥ ३ ॥ साद रहे बादं अहंकारा ॥ चितु हरि सिउ राता हुकमि
अपारा ॥ जाति रहे पति के आचारा ॥ द्रसटि भई सुखु आतम धारा
॥ ४ ॥ तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥ किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥
किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥ किसु उपदेसि रहा लिव लाइ
॥ ५ ॥ गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥ भगति करी राचउ हरिनाइ ॥
सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ हुकमि संजोगी निजघरि जाउ
॥ ६ ॥ गरब गतं सुख आतम धिआना ॥ जोति भई जोती माहि
समाना ॥ लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥ करता करणा करता जाना
॥ ७ ॥ नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥ नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥
कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥ नानक गुरमति सहजि समाना ॥ ८ ॥
१ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥ राज दुआरै सोभ सु मानै ॥ १ ॥
चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥ बिनु मारे किउ कीमति पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
घर महि अंम्रितु तसकरु लेई ॥ नंनाकारु न कोइ करेई ॥ राखै आपि
वडिआई देई ॥ २ ॥ नील अनील अगनि इक ठाई ॥ जलि निवरी
गुरि बूझ बुझाई ॥ मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥ ३ ॥ जैसा घरि
बाहरि सो तैसा ॥ बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ सागरि डूगरि
निरभउ ऐसा ॥ ४ ॥ मूए कउ कहु मारे कउनु ॥ निडरे कउ कैसा डरु
कवनु ॥ सबदि पछानै तीने भउन ॥ ५ ॥ जिनि कहिआ तिनि कहनु
वखानिआ ॥ जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥ देखि बीचारि
मेरा मनु मानिआ ॥ ६ ॥ कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥ तही निरंजनु
रहिआ समाई ॥ निजघरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥ ७ ॥ उसतति
करहि केते मुनि प्रीति ॥ तनि मनि सूचै साचु सुचीति ॥ नानक हरि

भजु नीता नीति ॥ ८ ॥ २ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥ मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥ १ ॥ निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ आपु निवारि बीचारे सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥ मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ मनु मानै हरि एकंकारु ॥ २ ॥ मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥ हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥ ३ ॥ गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ जूऐ खेलणु काची सारी ॥ ४ ॥ संपउ संची भए विकार ॥ हरख सोक उभे दरवारि ॥ सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता मेलि मिलाए ॥ गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥ मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥ ७ ॥ मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥ साचे सूचे मैलु न भावै ॥ नानक गुरमुखि हरिगुण गावै ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥ मनमति झूठी सचा सोइ ॥ सगल बिगूते भावै दोइ ॥ सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥ सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥ गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥ २ ॥ सुखु मांगत दुखु आगल होइ ॥ सगल विकारी हारु परोइ ॥ एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ करि करि करता देखै सोइ ॥ ३ ॥ त्रिसना अगनि सबदि बुझाए ॥ दूजा भरमु सहजि सुभाए ॥ गुरमती नामु रिदै वसाए ॥ साची बाणी हरिगुण गाए ॥ ४ ॥ तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ नाम बिना नाही निज ठाउ ॥ प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥ नदरि करे ता बूझै नाउ ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सरब जंजाला ॥ मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥ सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ अंम्रित नामु सदा सुखु नाला ॥ ६ ॥ गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥ निजघरि वासै साचि समाए ॥ जंमणु मरणा ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते इह मति पाए

॥ ७ ॥ कथनी कथउ न आवै ओरु ॥ गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥ ८ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला १ ॥ दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥ १ ॥ दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥ २ ॥ धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥ नारी पुरख सबाई लोइ ॥ ३ ॥ रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ सरब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥ ४ ॥ करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ सतिगुरि मो कउ एकु बुझाइआ ॥ ५ ॥ एकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥ दूजा मारि सबदि पछाता ॥ ६ ॥ एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ एकसु ते सभ ओपति होई ॥ ७ ॥ राह दोवै खसमु एको जाणु ॥ गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥ ८ ॥ सगल रूप वरन मन माही ॥ कहु नानक एको सालाही ॥ ९ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला १ ॥ अधिआतम करम करे ता साचा ॥ मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥ पंच मारि साचु उरिधारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ २ ॥ रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै ॥ करणी कीरति करम समानै ॥ ३ ॥ एक सबद इक भिखिआ मागै ॥ गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥ ४ ॥ भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥ कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥ ५ ॥ आपे मेले भरमु चुकाए ॥ गुर परसादि परम पदु पाए ॥ ६ ॥ गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥ हउमै मारे करणी सारु ॥ ७ ॥ जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ कहु नानक अपरंपर मानु ॥ ८ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला १ ॥ खिमा गही व्रतु सील संतोखं ॥ रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥ १ ॥ जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ सो जोगी मेरै मनि भावै ॥ २ ॥ कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥ जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥ आपि तरै पितरी निसतारे ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥

जैसा सेवै तैसो होइ ॥ ४ ॥ नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥ पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥ ५ ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ साचै सबदि दरि नीसाणै ॥ ६ ॥ सबदि मरै तिसु निजघरि वासा ॥ आवै न जावै चूकै आसा ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥ ७ ॥ जो दीसै सो आस निरासा ॥ काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥ नानक बिरले मिलहि उदासा ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥ दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥ १ ॥ दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र संतोखे एक लिव तारा ॥ जिहवा सूची हरिरस सारा ॥ २ ॥ सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ मनु तृपतासिआ अलख अभेवा ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तहसाचा ॥ बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥ ४ ॥ गुरु समझावै सोझी होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ ५ ॥ करि किरपा राखहु रखवाले ॥ बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥ ६ ॥ गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥ ७ ॥ संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥ आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥ ८ ॥ साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥ प्रणवति नानक हम ता के दास ॥ ९ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला १ ॥ ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि राजा माइआ अहंकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥ २ ॥ हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥ बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥ आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥ ३ ॥ दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ ४ ॥ भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥ लूटी लंका सीस समेति ॥ गरबि गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥ ५ ॥ सहस बाहु मधुकीट महिखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥ ६ ॥ जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ दैत संघारि संत निसतारे ॥ ७ ॥ आपे

सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ दूजै भाइ दैत संघारे ॥ गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥ ८ ॥ बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ रामु न जानिया करता सोई ॥ जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥ ६ ॥ जनमेजै गुर सबदु न जानिया ॥ किउ सुखु पावै भरमि भुलानिया ॥ इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिया ॥ १० ॥ कंसु केसु चांडूरु न कोई ॥ रामु न चीनिया अपनी पति खोई ॥ बिनु जगदीस न राखै कोई ॥ ११ ॥ बिनु गुर गरबु न मेटिया जाइ ॥ गुरमति धरमु धीरजु हरिनाइ ॥ नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥ १२ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला १ ॥ चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ पाट पटंबर पहिरि हढावउ ॥ बिनु हरिनामु कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कानी कुंडल मोतीअन की माला ॥ लाल निहाली फूल गुलाला ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥२॥ नैन सलोनी सुंदर नारी ॥ खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥ ३ ॥ दर घर महला सेज सुखाली ॥ अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥ बिनु हरिनाम सु देह दुखाली ॥ ४ ॥ हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ लसकर नेब खवासी पाजे ॥ बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥ ५ ॥ सिधु कहावत रिधि सिधि बुलावउ ॥ ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥ ६ ॥ खानु मलूकु कहावउ राजा ॥ अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥ ७ ॥ हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥ गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥ ८ ॥ १० ॥ गउड़ी महला १ ॥ सेवा एक न जानसि अवरे ॥ परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥ भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥ १ ॥ ऐसा राम भगतु जनु होई ॥ हरिगुण गाइ मिलै मलु धोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊंधो कवलु सगल संसारै ॥ दुरमति अगनि जगत परजारै ॥ सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥ २ ॥ भृंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥ मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ तृसना राचि ततु नही बीना ॥ ३ ॥ कामु चितै कामणि हितकारी ॥ क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ पति मति खोवहि नामु विसारी ॥ ४ ॥ परघरि

चीतु मनमुखि डोलाइ ॥ गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥ गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥ ५ ॥ जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ बिनु पिर तृपति न कबहूं होई ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पोथी सिम्रति पाठा ॥ बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥ बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥ ७ ॥ जिउ चातृक जल प्रेम पिआसा ॥ जिउ मीना जल माहि उलासा ॥ नानक हरि रसु पी तृपतासा ॥ ८ ॥ ११ ॥ गउड़ी महला १ ॥ हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ वेस करै बहु भसम लगावै ॥ नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥ १ ॥ तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोआ चंदन अगर कपूरि ॥ माइआ मगनु परम पदु दूरि ॥ नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥ २ ॥ नेजे वाजे तखति सलामु ॥ अधकी तृसना विआपै कामु ॥ बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥ ३ ॥ वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ दूजै भाइ अगिआनु दुहेला ॥ ४ ॥ बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥ बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥ ५ ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥ ६ ॥ वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ गुर सबदी मथि अंमृतु पीउ ॥ नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥ ७ ॥ नाम विना किउ जीवा माइ ॥ अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥ नानक नामि रते पति पाइ ॥ ८ ॥ १२ ॥ गउड़ी महला १ ॥ हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥ गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥ १ ॥ हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥ हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥ २ ॥ हउमै निवरै गुर सबदु बीचारै ॥ चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥ ३ ॥ अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥ राजनु जाणि परम गति पावहि ॥ ४ ॥ सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥ ५ ॥ हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥ ६ ॥ जेती है तेती किहु नाही ॥ गुरमुखि

गिआन भेटि गुण गाही ॥ ७ ॥ हउमै बंधनि बंधि भवावै ॥ नानक राम भगति सुखु पावै ॥ ८ ॥ १३ ॥ गउड़ी महला १ ॥ प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥ ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥ आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥ हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥ ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥ २ ॥ सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥ मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥ ३ ॥ चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥ मै धनु दीजै हरि अंम्रित नामु ॥ ४ ॥ रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥ अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥ ५ ॥ निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥ जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥ ६ ॥ काजी सेख भेख फकीरा ॥ वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥ ७ ॥ कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥ कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥ ८ ॥ हिरदै साचु वसै हरिनाइ ॥ कालु न जोहि सकै गुण गाइ ॥ नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥ ९ ॥ १४ ॥ गउड़ी महला १ ॥ बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ रहहि अतीत सचे सरणाई ॥ १ ॥ सच घरि बैसै कालु न जोहै मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ निजघरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥ हरि रसि माते इहु सुखु कहीऐ ॥ २ ॥ गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ पीवै अंम्रितु ततु विरोलै ॥ ३ ॥ सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥ मनु तनु अरपिओ अंतरगति कीनी ॥ गति मिति पाई आतमु चीनी ॥ ४ ॥ भोजनु नामु निरंजन सारु ॥ परम हंसु सचु जोति अपार ॥ जह देखउ तह एकंकारु ॥ ५ ॥ रहै निरालमु एका सचु करणी ॥ परम पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ मन ते मनु मानिआ चूकी अहं भ्रमणी ॥ ६ ॥ इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥

हरि जसि संत भगत निसतारिआ ॥ प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥ ७ ॥ साच महलि गुरि अलखु लखाइआ ॥ निहचल महलु नही छाइआ माइआ ॥ साचि संतोखे भरमु चुकाइआ ॥ ८ ॥ जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ तिन की संगति गुरमुखि होई ॥ नानक साचि नामि मलु खोई ॥ ९ ॥ १५ ॥ गउड़ी महला १ ॥ रामि नामि चितु रापै जा का ॥ उपजंपि दरसनु कीजै ता का ॥ १ ॥ राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥ २ ॥ जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ से प्रभि राखे किरपा धारि ॥ ३ ॥ जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥ तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥ ४ ॥ सरब जीआ महि एको रवै ॥ मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥ ५ ॥ सो बूझै जो सतिगुरु पाए ॥ हउमै मारे गुरसबदे पाए ॥ ६ ॥ अरध उरध की संधि किउ जानै ॥ गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥ ७ ॥ हम पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥ प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥ ८ ॥ १६ ॥ सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥

गउड़ी बैरागणि महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥ अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥ १ ॥ इत उत राखहु दीन दइआला ॥ तउ सरणागति नदरि निहाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ तूं दाता भुगता तूं है तूं प्राण अधारा ॥ २ ॥ किरतु पइआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥ ३ ॥ जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥ गुरसेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥ ४ ॥ निजघरि महलु अपार को अपरंपरु सोई ॥ बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥ ५ ॥ किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥ डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥ ६ ॥ गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥ अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥ ७ ॥ नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥

नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥ ८ ॥ १ ॥ १७ ॥ गउड़ी महला १ ॥ गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥ घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥ १ ॥ बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥ २ ॥ खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥ ३ ॥ सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥ ४ ॥ आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥ ५ ॥ मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥ रात की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥ ६ ॥ चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥ ७ ॥ इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू हमारा ॥ नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥ ८ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ गुर किरपा ते बुझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥ ९ ॥ २ ॥ १८ ॥

राग गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मनका सूतकु दूजा भाउ ॥ भरमे भूले आवउ जाउ ॥ १ ॥ मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥ जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ मरि मरि जंमै वारो वार ॥ २ ॥ सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥ सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥ ३ ॥ सूतकि करम न पूजा होइ ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥ मरै न जनमै कालु न खाइ ॥ ५ ॥ सासत सिम्रति सोधि देखहु कोइ ॥ विणु नावै को मुकति न होइ ॥ ६ ॥ जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥ कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥ ७ ॥ साचा मरै न आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ हरि जीउ राखहु हिरदै उरधारा ॥ गुरमुखि सोचा साच दुआरा ॥ १ ॥ पंडित हरि पड़ तजहु विकारा ॥ गुरमुखि

भउजलु उतरहु पारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥ गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥ गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ गुरमुखि करम धरम सचि होई ॥ गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई ॥ ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥ ३ ॥ आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥ ४ ॥ मनमुखि डंफु बहुतु चतुराई ॥ जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ आवै जावै ठउर न काई ॥ ५ ॥ मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥ बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥ गुरु दाता जुग चारे होई ॥ ७ ॥ गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥ साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥ नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥ ८ ॥ २ ॥ गउड़ी म० ३ ॥ इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ ऐथै अगै हरिनामु सखाई ॥ १ ॥ राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ गुर परसादी मैलु उतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥ २ ॥ हउमै मैला इहु संसारा ॥ नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥ बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥ गुर कै सबदि पंच संघारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ४ ॥ माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ मनमुख अंध रहे लपटाई ॥ गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥ ५ ॥ बहुते भेख करै भेखधारी ॥ अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥ आपु न चीनै बाजी हारी ॥ ६ ॥ कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥ ७ ॥ नामि रते सदा बैरागी ॥ गृही अंतरि साचि लिवलागी ॥ नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥ तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ त्रै गुण भरमे नाही निजघरि वासा ॥ १ ॥ हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥ अनदिनु भगति हरि नामु दृड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला ॥ पड़ि

वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला ॥ २ ॥ मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥ हरिनामु बिसारिआ बहु करम द्रिड़ाए ॥ भवजलि डूबे दूजै भाए ॥ ३ ॥ माइआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥ बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥ जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥ ४ ॥ गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥ हउमै दूजा सबदि जलावै ॥ नामे राते हरिगुण गावै ॥ ५ ॥ माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ चरणी लागै ता महलु पावै ॥ सद ही निरमलु सहजि समावै ॥ ६ ॥ हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥ सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥ ७ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥ नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥ अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥ ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥ १ ॥ गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥ मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥ २ ॥ सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥ मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥ हरिगुण गावहि सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ॥ मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ॥ जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए ॥ ४ ॥ जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ हउमै मारि सचि लिव लाई ॥ सदा रहै हरिनामि लिव लाई ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥ मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥ इन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥ ६ ॥ सतिगुरू सेवे सो फलु पाए ॥ हिरदै नामु विचहु आपु गवाए ॥ अनहद बाणी सबदु वजाए ॥ ७ ॥ सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ नानक रामनामि वडिआई ॥ ८ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥ बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ॥ मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

त्रै गुण कालै की सिरि कारा ॥ नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ मरि जंमहि फिरि वारो वारा ॥ २ ॥ अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ ३ ॥ माइग्रा करि मूलु जंत्र भरमाए ॥ हरि जीउ विसरिग्रा दूजै भाए ॥ जिसु नदरि करे सो परम गति पाए ॥ ४ ॥ अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए ॥ साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ गिग्रानी बूझहि सहजि सुभाए ॥ ५ ॥ गुरमुखि साचि रहिग्रा लिवलाए ॥ हउमै माइग्रा सबदि जलाए ॥ मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥ ६ ॥ सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥७॥ आपे करता सृसटि सिरजि जिनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥ ८ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ अंम्रितु नामु रसना नित गावै ॥ जिसनो क्रिपा करे सो हरिरसु पावै ॥ १ ॥ अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै सूखु भइग्रा परगासु ॥ गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ दासनिदास नित होवहि दासु ॥ गृह कुटंब महि सदा उदासु ॥ २ ॥ जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ परम पदारथु पावै सोई ॥ त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥ ३ ॥ मोह कुटंब सिउ प्रीति न होइ ॥ जा हिरदै वसिग्रा सचु सोइ ॥ गुरमुखि मनु बेधिग्रा असथिरु होइ ॥ हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥ ४ ॥ तूं करता मै अवरु न कोइ ॥ तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥ किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥ नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥ ५ ॥ गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ सहजे सचु मिलिग्रा परसादी ॥ सतिगुरु पाइग्रा पूरै वडभागी ॥ ६ ॥ हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥ जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ जब हिरदै रविग्रा चरण निवासु ॥ ७ ॥ जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥ हिरदै साचा नामु वसाए ॥ नानक सहजे साचि समाए ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ मन ही मनु सवारिग्रा भै सहजि

सुभाइ ॥ सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥ निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥ १ ॥ सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥ गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ मेरा प्रभु निरमला सभतै रहिआ समाइ ॥ गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥ २ ॥ हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ मेरा हरिप्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ हरि किरपा ते रामगुण गाए ॥ ३ ॥ धृगु बहु जीवणु जितु हरिनामि न लगै पिआरु ॥ धृगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥ ४ ॥ धृगु धृगु गृहु कुटंबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ सोई हमारा मीतु जो हरिगुण गावै सोइ ॥ हरिनाम बिना मै अवरु न कोइ ॥ ५ ॥ सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ हरिनामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ सदा अनंदु हरिनामि लिव लाई ॥ ६ ॥ गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥ हउमै तृसना सभ अगनि बुझाई ॥ बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥ ७ ॥ हरि आपे कृपा करे नामु देवै ॥ गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥ ८ ॥ ८ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुखि बुरे दिसंनि ॥ अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि ॥ १ ॥ हरि हरि राखहु कृपा धारि ॥ सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि ॥ आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥ २ ॥ जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ ओहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥ ३ ॥ नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे न टिकंनि ॥ धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥ ५ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ मोहि ठगउली पाइ ॥ जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु गवाइ ॥ सबदि रते से

निरमल चलहि सतिगुर भाइ ॥ ७ ॥ हरिप्रभ दाता एकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥ जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥

राग गउड़ी पूरबी महला ४ करहले

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥ १ ॥ मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाए ॥ २ ॥ मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ उपाइ किते न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥ ५ ॥ मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडू लोभु तजाइ ॥ पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥ ६ ॥ मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥ हरि अंम्रित सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥ ७ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥ इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥ ८ ॥ मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥ ९ ॥ मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥ १० ॥ १ ॥ गउड़ी महला ४ ॥ मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ बन फिरि थके बनवासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥ १ ॥ मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारिआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥ २ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ सतसंगति सतिगुरु भालि ॥ सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥ ३ ॥ मन करहला

वडभागीग्रा हरि एक नदरि निहालि ॥ ग्रापि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे पिग्रारिग्रा विचि देही जोति समालि ॥ गुरि नउ निधि नामु विखालिग्रा हरि दाति करी दइग्रालि ॥ ५ ॥ मन करहला तूं चंचला चतुराई छिकरालि ॥ हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे ग्रंतकालि ॥६॥ मन करहला वडभागीग्रा तूं गिग्रानु रतनु समालि ॥ गुर गिग्रानु खड़गु हथि धारिग्रा जमु मारिग्रड़ा जमकालि ॥ ७ ॥ ग्रंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥ गुरु पुरखु पूरा भेटिग्रा हरि सजणु लधड़ा नालि ॥ ८ ॥ रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥ हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥ ९ ॥ हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु ग्रकालि ॥ वडभागी गुरमुखि पाइग्रा जन नानक नामु समालि ॥ १० ॥ २ ॥

रागु गउड़ी गुग्रारेरी महला ५ ग्रसटपदीग्रा

१ ग्रों सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥ जब इहु हूग्रा सगल की रीना ॥ ता ते रमईग्रा घटि घटि चीना ॥ १ ॥ सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ सतिगुर ग्रपुनै मोहि दानु दीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥ तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥ मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ ता ते इसु संगि नही बैराई ॥ २ ॥ जब इनि ग्रपुनी ग्रपनी धारी ॥ तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ जब इनि करणैहारु पछाता ॥ तब इस नो नाही किछु ताता ॥ ३ ॥ जब इनि ग्रपुना बाधिग्रा मोहा ॥ ग्रावै जाइ सदा जमि जोहा ॥ जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ भेदु नाही है पारब्रहमा ॥ ४ ॥ जब इनि किछु करि माने भेदा ॥ तब ते दूख डंड ग्रर खेदा ॥ जब इनि एको एकी बूझिग्रा ॥ तब ते इस नो सभु किछु सूझिग्रा ॥ ५ ॥ जब इहु धावै माइग्रा ग्ररथी ॥ नह तृपतावै नह तिस लाथी ॥ जब इस ते इहु होइग्रो जउला ॥ पीछै लागि चली उठि कउला ॥ ६ ॥ करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिग्रो ॥ मन मंदर महि दीपकु जलिग्रो ॥ जीत हार की सोझी करी ॥ तउ इसु

घर की कीमति परी ॥ ७ ॥ करन करावन सभु किछु एकै ॥ आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥ सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥ ८ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥ १ ॥ ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥ रहाउ ॥ जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ जासु जपत इह हउमै भागै ॥ २ ॥ जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ जासु जपत रिदै अंम्रितु संचा ॥ जासु जपत इह त्रिसना बुझै ॥ जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥ ३ ॥ जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ जासु जपत हरि होवहि साध ॥ जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ जासु जपत मलु सगली खोवै ॥ ४ ॥ जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥ ५ ॥ जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥ ६ ॥ जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ जासु जपत इह निरमल सोइ ॥ जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥ ७ ॥ गुरि सुभ द्रिसटि सभ ऊपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ ८ ॥ २ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ दस इंद्री करि राखै वासि ॥ ता कै आतमै होइ परगासु ॥ १ ॥ ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ ॥ जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजनु दुसटु जा कै एक समानै ॥ जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ जेता सुनणा तेता नामु ॥ जेता पेखनु तेता धिआनु ॥ २ ॥ सहजे जागणु सहजे सोइ ॥ सहजे होता जाइ सु होइ ॥ सहजि बैराग सहजे ही हसना ॥ सहजे चूप सहजे ही जपना ॥ ३ ॥ सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥ सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥ सहजे होआ साधू संगु ॥ सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु ॥ ४ ॥ सहजे

गृह महि सहजि उदासी ॥ सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ जा कै सहजि मनि भइत्र्या ग्रनंदु ॥ ता कउ भेटित्र्या परमानंदु ॥ ५ ॥ सहजे ग्रंमृतु पीग्रो नामु ॥ सहजे कीनो जीग्र को दानु ॥ सहज कथा महि ग्रातमु रसित्र्या ॥ ता कै संगि ग्रबिनासी वसित्र्या ॥ ६ ॥ सहजे ग्रासणु ग्रसथिरु भाइत्र्या ॥ सहजे ग्रनहत सबदु वजाइत्र्या ॥ सहजे रुणझुणकारु सुहाइत्र्या ॥ ता कै घरि पारब्रहमु समाइत्र्या ॥ ७ ॥ सहजे जा कउ परित्र्यो करमा ॥ सहजे गुरु भेटित्र्यो सचु धरमा ॥ जा कै सहजु भइत्र्या सो जाणै ॥ नानक दास ता कै कुरबाणै ॥ ८ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ प्रथमे गरभ वास ते टरित्र्या ॥ पुत्र कलत्र कुटंब संगि जुरित्र्या ॥ भोजनु ग्रनिक प्रकार बहु कपरे ॥ सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥ १ ॥ कवनु ग्रसथानु जो कबहु न टरै ॥ कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥ ब्रहमपुरी निहचलु नही रहणा ॥ सिवपुरी का होइगा काला ॥ त्रै गुण माइत्र्या बिनसि बिताला ॥ २ ॥ गिरि तर धरणि गगन ग्ररु तारे ॥ रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ दिनसु रैणि बरत ग्ररु भेदा ॥ सासत सिंमृति बिनसहिगे बेदा ॥ ३ ॥ तीरथ देव देहुरा पोथी ॥ माला तिलकु सोच पाक होती ॥ धोती डंडउति परसादन भोगा ॥ गवनु करैगो सगलो लोगा ॥ ४ ॥ जाति वरन तुरक ग्ररु हिंदू ॥ पसु पंखी ग्रनिक जोनि जिंदू ॥ सगल पासारु दीसै पासारा ॥ बिनसि जाइगो सगल ग्राकारा ॥ ५ ॥ सहज सिफति भगति ततु गिग्राना ॥ सदा ग्रनंदु निहचलु सचु थाना ॥ तहा संगति साध गुण रसै ॥ ग्रनभउ नगरु तहा सद वसै ॥ ६ ॥ तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥ ग्रावणु जावणु मिरतु न होता ॥ तह सदा ग्रनंद ग्रनहद ग्राखारे ॥ भगत वसहि कीरतन ग्राधारे ॥ ७ ॥ पारब्रहम का ग्रंतु न पारु ॥ कउणु करै ता का वीचारु ॥ कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ निहचल थानु साध संगि तरै ॥ ८ ॥ ४ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ जो इसु मारे सोई सूरा ॥ जो इसु मारे सोई पूरा ॥ जो इसु मारे तिसहि वडिग्राई ॥ जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥ १ ॥ ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥ जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ जो इसु मारे तिस की त्रिसना बुझै ॥ जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥ २ ॥ जो इसु मारे सो धनवंता ॥ जो इसु मारे सो पतिवंता ॥ जो इसु मारे सोई जती ॥ जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥ ३ ॥ जो इसु मारे तिस का आइआ गनी ॥ जो इसु मारे सु निहचल धनी ॥ जो इसु मारे सो वडभागा ॥ जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥ ४ ॥ जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥ जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥ ५ ॥ इसु मारी बिनु थाइ न परै ॥ कोटि करम जाप तप करै ॥ इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥ इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥ ६ ॥ इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥ ७ ॥ जा कउ भए क्रिपाल क्रिपा निधि ॥ तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥ कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु ॥ हरि सिउ जुरै न विआपै काड़ा ॥ हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥ १ ॥ रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥ काजि तुहारै नाही होरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडे वडे दुनीआदार ॥ काहू काजि नाही गावार ॥ हरि का दासु नीच कुलु सुणहि तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥ २ ॥ कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ कोटि पुंन सुणि हरि की बाणी ॥ कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥ ३ ॥ मनि अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ ॥ बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥ हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥ मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥ ४ ॥ जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥ जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥ ५ ॥ जा के चाकर कउ नही डान ॥ जा के चाकर कउ नही बान ॥ जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥ ६ ॥ जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ एकहि आपि अनेकहि भाति ॥ जा की द्रिसटि होइ सदा निहाल ॥ मन मेरे करि ता की घाल ॥ ७ ॥ ना को चतुरु नाही को मूड़ा

॥ ना को हीणु नाही को सूरा ॥ जितु को लाइआतित ही लागा॥सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥ ८ ॥ ६ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी॥तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥१॥ एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरनु ध्रिगु करम करास॥ काग बतन बिसटा महि वास ॥ २ ॥ बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥ ३ ॥ बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ बोलहि कूक साकत मुख कारा ॥ ४ ॥ बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ साकत थान भरिसट फिराही ॥ ५ ॥ बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥ ६ ॥ बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥ ७ ॥ जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतिसंगि मिलाइआ ॥ कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ गुर कै बचन मोहि परमगति पाई गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥ १ ॥ गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥ गुरपरसादि मुहि मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै बचनि सुणि रसनि वखाणी ॥ गुर किरपा ते अंम्रित मेरी बाणी ॥ २ ॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥ ३ ॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥ ४ ॥ गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥ गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥ ५ ॥ गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ गुर कै बचनि पाइआ नाउ निधि ॥ ६ ॥ जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ ७ ॥ गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥ नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥ ८ ॥ ८ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥ ३ ॥ तिसु गुर कै ग्रिहि ढोवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥ ४ ॥ तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥

जिसु प्रसादि वैरी सभ मीत ॥ ५ ॥ जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥ ६ ॥ आपे लाइओ अपना पिआरु ॥ सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥ ७ ॥ कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥ ८ ॥ ९ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥ जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥ १ ॥ नाम बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥ २ ॥ नामु बिसारि करे रस भोग ॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥ ३ ॥ नाम तिआगि करे अन काज ॥ बिनसि जाइ झूठे सभि पाज ॥ ४ ॥ नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥ कोटि करम करतो नरकि जावै ॥ ५ ॥ हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥ चोर की निआई जमपुरि बाधा ॥ ६ ॥ लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥ नाम बिना झूठे पासारा ॥ ७ ॥ हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥ करि किरपा नानक जिसु देइ ॥ ८ ॥ १० ॥ गउड़ी महला ५ ॥ आदि मधि जो अंति निबाहै ॥ सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥ १ ॥ हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥ दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसत नाही छोडि न जाइ ॥ जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥ २ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥ भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥ ३ ॥ जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥ प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥ ४ ॥ माइआ सिलक काटी गोपालि ॥ करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥५॥ सिमरि सिमरि काटे सभि रोग॥ चरण धिआन सरब सुख भोग ॥ ६ ॥ पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥ ७॥ कहु नानक हरि हरि पदु चीन् ॥ सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥ ८ ॥ ११ ॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥ सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥ १ ॥ हउ वारीआ हरि वारीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भै हारीआ ॥ मै तकी ओट संताह

लेहु उबारीग्रा ॥ २ ॥ मोहन लाल ग्रनूप सरब साधारीग्रा ॥ गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीग्रा ॥ ३ ॥ मै कीए मित्र ग्रनेक इकसु बलिहारीग्रा॥सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीग्रा ॥ ४ ॥ चहु दिसि जपीऐ नाउ सूखि सवारीग्रा ॥ मै ग्राही ग्रोड़ि तुहारि नानक बलिहारीग्रा ॥ ५ ॥ गुरि काढिग्रो भुजा पसारि मोह कूपारीग्रा ॥ मै जीतिग्रो जनमु ग्रपारु बहुरि न हारिग्रा ॥ ६ ॥ मै पाइग्रो सरब निधानु ग्रकथु कथारीग्रा ॥ हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीग्रा ॥ ७ ॥ जन नानक लधा रतनु ग्रमोलु ग्रपारीग्रा॥ गुर सेवा भवजलु तरीऐ कहउ पुकारीग्रा ॥ ८ ॥ १२ ॥

गउड़ी महला ५

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नाराइण हरि रंग रंगो ॥ जपि जिहवा हरि एक मंगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि हउमै गुर गिग्रान भजो ॥ मिलि संगति धुरि करम लिखिग्रो ॥ १ ॥ जो दीसै सो संगि न गइग्रो ॥ साकतु मूड़ु लगे पचि मुइग्रो ॥ २ ॥ मोहन नामु सदा रवि रहिग्रो ॥ कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिग्रो ॥ ३ ॥ हरि संतन करि नमो नमो ॥ नउनिधि पावहि ग्रतुलु सुखो ॥ ४ ॥ नैन ग्रलोवउ साध जनो ॥ हिरदै गावहु नाम निधो ॥ ५ ॥ काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ जनम मरन दुहु ते रहिग्रो ॥ ६ ॥ दूख ग्रंधेरा घर ते मिटिग्रो ॥ गुरि गिग्रानु दृड़ाइग्रो दीप बलिग्रो ॥ ७ ॥ जिनि सेविग्रो सो पारि परिग्रो ॥ जन नानक गुरमुखि जगतु तरिग्रो ॥ ८ ॥ १ ॥ १३ ॥ महला ५ गउड़ी ॥ हरि हरि गुरु गुरु करत भरम गए ॥ मेरै मनि सभि सुख पाइग्रो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलतो जलतो तउ किग्रा गुर चंदनु सीतलाइग्रो ॥ १ ॥ ग्रगिग्रान ग्रंधेरा मिटि गइग्रा गुर गिग्रानु दीपाइग्रो ॥ २ ॥ पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइग्रो ॥ ३ ॥ न हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा ग्रापाइग्रो ॥ ४ ॥ भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइग्रो ॥ ५ ॥ ग्रनाथह नाथ क्रिपाल दीन संम्रिथ संत ग्रोटाइग्रो ॥ ६ ॥ निरगुनीग्रारे की बेनती देहु दरसु हरि राइग्रो ॥ ७ ॥ नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुग्रारै ग्राइग्रो ॥ ८ ॥ २ ॥ १४ ॥

गउड़ी महला ५ ॥ रंगि संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥ १ ॥ हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥ २ ॥ जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥ ३ ॥ जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥ ४ ॥ भाई मीत बंधप सखे पाछे तिन हू कउ संपानी ॥ ५ ॥ जितु लागी मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥ ६ ॥ अहंबुधि सुचि करम करि इह बंधन बंधानी ॥ ७ ॥ दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥ ८ ॥ ३ ॥ १५ ॥ ४४ ॥ जुमला

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥ मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥ सीगार मिठ रसि भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ नानक साधन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥ १ ॥ मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ किउ सुखु पावैगी बिनु उरधारे ॥ नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥ बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ नानक नामु न छोडै साधन नामि सहजि समाणीआ ॥ २ ॥ मिलु सखी सुहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ साच कीमति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ ॥ नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥ ३ ॥ मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥ गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ साजन रहंसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥ कर जोड़ि साधन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिनीआ ॥ नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥ ४ ॥ १ ॥ गउड़ी छंत महला १

॥ सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥ किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥ धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥ नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ ॥ बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥ १ ॥ पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥ रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥ सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंम्रित बाणी ॥ नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥ २ ॥ माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ हरि प्रीति पिआरे सबदि बीचारे तिस ही का सो होवै ॥ पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥ ३ ॥ तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥ नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥ जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥ हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए ॥ १ ॥ धन रैणि सुहेलड़ीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥ सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥ सुणि सखी सहेली जीअ की मेली गुर कै सबदि समाओ ॥ हरिगुण सारी ता

कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥ २ ॥ धन एकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥ दूजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ बिनु सबदु पिआरे कउनु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥ कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥ गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाए ॥ नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाए ॥ ३ ॥ ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥ बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥ गुरु भरमु चुकाए इउ मिलीऐ माए ता सा धन सुखु पाए ॥ गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥ कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥ ४ ॥ १ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥ कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥ सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ॥ गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥ नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥ १ ॥ सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥ अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥ सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरै ॥ अपुने गुर मिलि रहीऐ अंम्रितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥ २ ॥ कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥ झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥ गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ॥ नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥ ३ ॥ मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥ मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ॥ पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥ गुर आगै करउ बिनंती

जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥ आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए॥ नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए॥ मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥ दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए॥ इहु सरीरु कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए॥ गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए॥ १ ॥ कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरिधारे ॥ अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे॥ अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥ अंम्रितु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे॥ नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥ २ ॥ आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे॥ कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे॥ सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे॥ जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥ मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ ३ ॥ मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा॥ अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई॥ प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सदा अनंदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ नानक सहजे हरि वरु पाइआ साधन नउनिधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ३ ॥ माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ॥ रामनामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ॥ सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ॥ गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ॥ खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ नानक रामनामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥ १ ॥ इसतरी पुरख कामि विआपे

जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥ मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥ डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥ जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारै ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥ २ ॥ राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥ द्रिड़ु भगति सची जीउ रामु नामु वापारा ॥ राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥ सेवा सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥ हम मतिहीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए ॥ नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरिगुण गाए ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥ आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ॥ आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥ नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे कराए ॥ ४ ॥ ४ ॥

गउड़ी महला ३ ॥ गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥ मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए ॥ घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥ गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥ नामो बीजे नामो जंमै नामो मंनि वसाए ॥ नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥ १ ॥ हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए ॥ रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥ सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए ॥ नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥ नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥ नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए ॥ २ ॥ एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥ दूजै किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥ बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥ चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥ माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥ नानक माइआ का

दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥ ३ ॥ मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदि मनि न वसाए ॥ माइआ का भ्रमु अंधा पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥ हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाए ॥ जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥ नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाए ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु गउड़ी छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मेरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ पुरखो बिधाता एकु स्रीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ करि करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥ नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥ १ ॥ इक बिनउ करउ जीउ सुणि कंति पिआरे ॥ मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥ गुणवंत नाह दइआलु बाला सरब गुण भरपूरए ॥ पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥ २ ॥ हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥ अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइआ ॥ खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइआ ॥ दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा ॥ बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥ ३ ॥ मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥ घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥ सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥ ४ ॥ १ ॥

गउड़ी॰ महला ५ ॥ मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धरमसाला ॥ धरमसाल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥ १ ॥ मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥ मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥ २ ॥ मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥ ३ ॥ मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ मोहन पुत्र मीत भाई कुटंब सभि तारे ॥ तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥ जिनी तुध नो धंनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥ बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी॰ महला ५ ॥ सलोकु ॥ पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ नानक रामु नामु जपि पावको तिन किलविख दाहनहार ॥ १ ॥ छंत ॥ जपि मना तूं राम नराइणु गोविंदा हरि माधो ॥ धिआइ मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥ दुख हरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥ जमपंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥ कलि मलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥ १ ॥ सिमरि मना दामोदरु दुख हरु भै भंजन हरि राइआ ॥ स्री रंगो दइआल मनोहर भगति वछलु बिरदाइआ ॥ भगति वछल

पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनिजन गुण अनिक भगती गाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइआ ॥ २ ॥ चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब कला जिनि धारी ॥ करुणामै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥ सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥ रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥ ३ ॥ गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभि ते ऊच दइआला ॥ बिसंभरु देवन कउ एकै सरब करै प्रतिपाला ॥ प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥ कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥ सुप्रंसन देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥ बिनवंत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउड़ी महला ५ ॥ सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंतै ॥ मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥ सखी वसि आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवंतै ॥ नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥ १ ॥ सुणि सखीए इह भली बिनंती एहु मतांतु पकाईऐ ॥ सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविंदहि गाईऐ ॥ कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥ २ ॥ सखी इछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥ चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥ खोजि लहउ हरि संत जना संगु संम्रथ पुरख मिलाए ॥ नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माए ॥ ३ ॥ सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥ सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥ भ्रमु खोइओ सांति सहजि सुआमी परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥ वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरिनामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परसपरा ॥ गुरदेव तीरथ अंम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ सलोकु ॥ आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥ नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ओअं साध सतिगुर नमसकारं ॥ आदि मधि अंति निरंकारं ॥ आपहि सुंन आपहि सुख आसन ॥ आपहि सुनत आप ही जासन ॥ आपनि आपु आपहि उपाइओ ॥ आपहि बाप आप ही माइओ ॥ आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ लखी न जाई नानक लीला ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ओअं गुरमुखि कीओ अकारा ॥ एकहि सूति परोवनहारा ॥ भिंन भिंन त्रैगुण बिसथारं ॥ निरगुन ते सरगुन द्रिसटारं ॥ सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥ जनम मरन मन मोहु वधाइओ ॥ दुहू भाति ते आपि निरारा ॥ नानक अंतु न पारावारा ॥ २ ॥ सलोकु ॥ सेई साह भगवंत से सचु संपै हरि रासि ॥ नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ ससा सति सति सति सोऊ ॥ सति पुरख ते भिंन न कोऊ ॥ सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥ सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायं ॥ संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ सो साधू इह पहुचनहारा ॥ नानक ता कै सद बलिहारा ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ धनु धनु कहा पुकारते

माइआ मोह सभ कूर ॥ नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥ अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥ धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥ जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥ जा कै हीऐ दीओ प्रभ नाम ॥ नानक साध पूरन भगवान ॥ ४ ॥ सलोक ॥ अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मन हठि मिलिअउ न कोइ ॥ कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥ अनिक जुगति सासत्र करि भातउ ॥ ङिआनी सोइ जा कै द्रिड़ सोऊ ॥ कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ ङिआनी रहत आगिआ द्रिड़ु जा कै ॥ उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ ङिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ नानक जा कउ किरपा धारी ॥ ५ ॥ सलोकु ॥ आवन आए स्रिसटि महि बिनु बूझै पसु ढोर ॥ नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥ जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥ सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ उरझि परे जो छोडि छडाना ॥ देवनहारु मनहि बिसराना ॥ धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥६॥ सलोकु ॥ आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिंन न कोइ ॥ आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ आपन मोह घटे घटि दीने ॥ ए साजन कछु कहहु उपाइआ ॥ जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥ नानक ता कै निकटि न माए ॥७॥ सलोकु ॥ किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ एकहि आपि करावनहारा ॥ आपहि पाप पुंन बिसथारा ॥ इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥ सो सो पाइओ जु आपि दिवाइओ ॥ उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥ जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ एकहि ते सगला बिसथारा ॥ नानक आपि सवारनहारा ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥ नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥

१ ॥ पउड़ी ॥ रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ हउ हउ करते करम रत ताको भारु अफार ॥ प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ भ्रम के मोह नह बुझहि सो प्रभु सद हू संग ॥ लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥ ६ ॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥ जो राते रंग एक कै नानका गूड़ा रंगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥ हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ उआ महली पावहि तू बासा ॥ जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥ हरि संपै नानक घरि ता कै ॥ १० ॥ सलोकु ॥ लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला लपटि बिखै रस राते ॥ अहंबुधि माइआ मद माते ॥ इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥ कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥ ११ ॥ सलोकु ॥ लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह ॥ दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला ता कै लवै न कोऊ ॥ एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ होवनहारु होत सद आइआ ॥ उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ कीट हसति महि पूर समाने ॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥ १२ ॥ सलोकु ॥ आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥ नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ आइ बसहि साधू कै संगे ॥ अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥ आवत सो जनु नामहि राता ॥ जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥ दूख दरद

त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥१॥पउड़ी ॥ यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ यया जाइ परहु संत सरना ॥ जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥ यया जनमि न आवै सोऊ ॥ एक नाम ले मनहि परोऊ ॥ यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ अन दिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥ इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥ का को मात पिता सुत धीआ ॥ गृह बनिता कछु संगि न लीआ ॥ ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥ पति सेती अपुनै घरि जाही ॥ साध संगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥१५॥ सलोकु ॥ अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि डिआनी धनवंत ॥ मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥१॥पउड़ी॥ ङंङा खटु सासत्र होइ ङिआता ॥ पूरकु कुंभक रेचक करमाता ॥ ङिआन धिआन तीरथ इसनानी ॥ सोमपाक अपरस उदिआनी ॥ राम नाम संगि मनि नही हेता ॥ जो कछु कीनो सोऊ अनेता॥उआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥ नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥१६॥ सलोकु ॥ कुंट चारि दहदिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥ सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ कका कारन करता सोऊ ॥ लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥ नही होत कछु दोऊ बारा ॥ करनैहारु न भूलनहारा ॥ काहू पंथु दिखारै आपै ॥ काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥ आपन खेलु आप ही कीनो ॥ जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥ १७ ॥ सलोकु ॥ खात खरचत बिलछत रहै टूटि न जाहि भंडार ॥ हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ खखा खूना कछु नही तिसु संम्रथ कै पाहि ॥ जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥ खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥ खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥ सदीव गनीव सुहावने राम नाम गृहि माल ॥ खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥नानक जो प्रभभाणिआ पूरी तिना परी ॥ १८ ॥

सलोकु ॥ गनि मिनि देखहु मनै माहि सर पर चलनो लोग ॥ आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ गगा गोविद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥ कहा बिसासा देह का बिलम न करिहु मीत ॥ नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥ ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥ गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥ छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥ गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥ नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥ १९ ॥ सलोकु ॥ घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥ नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥ घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥ घोलि महारसु अंम्रितु तिह पीआ ॥ नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥ २० ॥ सलोकु ॥ ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥ जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥ अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ ङिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥ ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥ काची गागरि सर पर फूटै ॥ सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥ २१ ॥ सलोकु ॥ चिति चितवउ चरणार बिंद ऊध कवल बिगसांत ॥ प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ चचा चरन कमल गुर लागा ॥ धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ चारि कुंट दहदिसि भ्रमि आइओ ॥ भई क्रिपा तब दरसनु पाइओ ॥ चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ साध संगि मनु निरमल हूआ ॥ चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥ नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥ २२ ॥ सलोकु ॥ छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥ ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ छछा छोहरे दास तुमारे ॥ दास दासन के पानीहारे ॥ छछा छारु होत तेरे

संता ॥ अपनी कृपा करहु भगवंता ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ संतन की मन टेक टिकाई ॥ छारु की पुतरी परमगति पाई ॥ नानक जा कउ संत सहाई ॥ २३ ॥ सलोकु जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ अहंबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ जजा जानै कउ कछु हूआ ॥ बाधिओ जीउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥ आगे ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ जउ जानै मै कथनी करता ॥ बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥ साधसंगि जिह हउमै मारी ॥ नानक ता कउ मिले मुरारी ॥ २४ ॥ सलोकु ॥ झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥ कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥ झूरत झूरत साकत मूआ ॥ जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥ झरहि कसंमल पाप तेरे मनूआ ॥ अंमृत कथा संत संगि सुनूआ ॥ झरहि काम क्रोध द्रसटाई ॥ नानक जा कउ कृपा गुसाई ॥ २५ ॥ सलोकु ॥ जतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥ जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ ञंञा ञाणहु दृड़ु सही बिनसि जात एह हेत ॥ गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ ञो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥ ञाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥ ञाणत सोई संतु सुइ भ्रमते कीचत भिंन ॥ अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसंन ॥ ञा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ नानक तिह उसतति करउ ञाहू कीओ संजोग ॥ २६ ॥ सलोकु ॥ टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ टहल करहु तउ एक की जा ते बृथा न कोइ ॥ मनि तनि मुखि हीए बसै जो चाहहु सो होइ ॥ टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध कृपाल ॥ साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥ टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥ बारि बारि जात संत सदके ॥ नानक पाप बिनासे कदि के ॥ २७ ॥ सलोकु ॥

ठाकि न होती तिनहु दरिजिह होवहु सुप्रंसन ॥ जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ जो सगल तिआगि एकहि लपटाही॥ ठहकि ठहकि माइआ संगि मूए ॥ उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥ ठांढि परी संतह संगि बसिआ ॥ अंम्रित नामु तहा जीअ रसिआ ॥ ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥ नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥ २८ ॥ सलोकु ॥ डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ डडा डेरा इहु नही जह डेरा तह जानु ॥ ॥ उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ इआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥ जा का तसू नही संगि चालै ॥ उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ जा कउ द्रसटि पूरन भगवानै ॥ डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥ नानक ते जन नह डोलाइआ ॥ २९ ॥ सलोकु ॥ ढाहन लागे धरम राइ किनहि न घालिओ बंध ॥ नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥ संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥ ढेरी ढाहहु साध संगि अहंबुधि बिकराल ॥ सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइ ॥ मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥ ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥ दुख के फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥ ३० ॥ सलोकु ॥ जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइ ॥ हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभाढू होइ ॥ मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥ मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ णा को जाणै आपणो एकहि टेक अधार ॥ रैणि दिनसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ रेण सगल इआ मनु करै एऊ करम कमाइ ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥ ३१ ॥ सलोकु ॥ तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥ फल पावहि मन बाछते

तपति तुहारी जाइ ॥ त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥
गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥ ताहू संगि न धनु चलै
गृह जोबन नह राज ॥ संत संगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ ताता
कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ प्रतिपालै नानक हमहि आपहि
माई बापु ॥३२॥ सलोकु ॥ थाके बहु बिधि घालते तृपति न तृसना लाथ ॥
संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ थथा
थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ अनिक बंच बल छल करहु माइआ
एक उपाव ॥ थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ मन कै कामि
न आवई अंते अउसर बार ॥ थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख
लेहु ॥ प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ कारन करन
करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि
नानक जंत अनाथ ॥ ३३ ॥ सलोकु ॥ दासह एकु निहारिआ सभु कछु
देवनहार ॥ सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥
ददा दाताएकु है सभ कउ देवनहार॥दें दे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार
॥ दैनहारु सद जीवनहारा ॥ मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ दोसु नही
काहू कउ मीता ॥ माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ दरद निवारहि जा के
आपे ॥ नानक तेते गुरमुखि धूापे ॥ ३४ ॥ सलोकु ॥ धर जीअरे इक
टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईऐ कारजु
आवै रासि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ धधा धावत तउ मिटै संत संगि होइ बासु
॥ धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ धनु साचा
तेऊ सच साहा ॥ हरि हरि पुंजी नाम बिसाहा ॥ धीरजु जसु
सोभा तिह बनिआ ॥ हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ गुरमुखि
जिह घटि रहे समाई ॥ नानक तिह जन मिली वडाई ॥ ३५ ॥ सलोकु ॥
नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ गुरि पूरै
उपदेसिआ नरकु नाहि साध संगि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ नंना नरकि
परहि ते नाही ॥ जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ नामु निधानु
गुरमुखि जो जपते ॥ बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥
नंनाकारु न होता ता कहु ॥ नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥ निधि निधान

हरि ग्रंम्रित पूरे ॥ तह बाजे नानक ग्रनहद तूरे ॥ ३६ ॥ सलोकु ॥ पति राखी गुरि पारब्रहम तजि परपंच मोह बिकार ॥ नानक सोऊ ग्राराधीऐ ग्रंतु न पारावारु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ पपा परमिति पारु न पाइग्रा ॥ पतित पावन ग्रगम हरि राइग्रा ॥ होत पुनीत कोट ग्रपराधू ॥ ग्रंम्रित नामु जपहि मिलि साधू ॥ परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥ जा कउ राखहु ग्रापि गुसाई ॥ पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ नानक दूसर ग्रवरु न कोऊ ॥ ३७ ॥ सलोकु ॥ फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥ नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ फफा फिरत फिरत तू ग्राइग्रा ॥ द्रुलभ देह कलिजुग महि पाइग्रा ॥ फिरि इग्रा ग्रउसरु चरै न हाथा ॥ नामु जपहु तउ कटीग्रहि फासा ॥ फिरि फिरि ग्रावन जानु न होई ॥ एकहि एक जपहु जपु सोई ॥ करहु क्रिपा प्रभ करनैहारे ॥ मेलि लेहु नानक बेचारे ॥ ३८ ॥ सलोकु ॥ बिनउ सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइग्राल गुपाल ॥ सुख संपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥ बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ बीरा ग्रापन बुरा मिटावै ॥ ताहू बुरा निकटि नही ग्रावै ॥ बाधिग्रो ग्रापन हउ हउ बंधा ॥ दोसु देत ग्रागह कउ ग्रंधा ॥ बात चीत सभ रही सिग्रानप ॥ जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥ ३९ ॥ सलोकु ॥ भै भंजन ग्रघ दूख नास मनहि ग्रराधि हरे ॥ संत संग जिह रिद बसिग्रो नानक ते न भ्रमे ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ भभा भरमु मिटावहु ग्रपना ॥ इग्रा संसारु सगल है सुपना ॥ भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥ भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥ दुतर महा बिखम इह माए ॥ गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइग्रा ॥ नानक तेह परम सुख पाइग्रा ॥ ४० ॥ सलोकु ॥ माइग्रा डोलै बहु बिधी मनु लपटिग्रो तिह संग ॥ मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ममा मागनहार इग्राना ॥ देनहार दे रहिग्रो सुजाना ॥ जो दीनो सो एकहि बार ॥ मन मूरख कह करहि पुकार ॥ जउ मागहि तउ मागहि बीग्रा ॥ जा ते कुसल न काहू थीग्रा ॥ मागनि माग त एकहि माग ॥ नानक

जा ते परहि पराग ॥ ४१ ॥ सलोक ॥ मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत ॥ जिह जानिश्रो प्रभु श्रापुना नानक ते भगवंत ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ममा जाहू मरमु पछाना ॥ भेटत साध संग पतीश्राना ॥ दुख सुख उश्रा कै समत बीचारा ॥ नरक सुरग रहत श्रउतारा ॥ ताहू संग ताहू निरलेपा ॥ पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ उश्रा रस महि उश्राहू सुखु पाइश्रा ॥ नानक लिपत नही तिह माइश्रा ॥ ४२ ॥ सलोकु ॥ यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥ १ ॥ पवड़ी ॥ यया जतन करत बहु बिधीश्रा ॥ एक नामु बिनु कह लउ सिधीश्रा ॥ याहू जतन करि होत छुटारा ॥ उश्राहू जतन साध संगारा ॥ या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ उश्राहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥ याहू तरन तारन समराथा ॥ राखि लेहु निरगुन नर नाथा ॥ मन बच क्रम जिह श्रापि जनाई ॥ नानक तिह मति प्रगटी श्राई ॥ ४३ ॥ सलोकु ॥ रोसु न काहू संग करहु श्रापन श्रापु बीचारि ॥ होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ रारा रेन होत सभ जाकी ॥ तजि श्रभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥ जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥ रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥ गुर पूरे कै सबदि श्रपारा ॥ राते रंग नाम रस माते ॥ नानक हरि गुर कीनी दाते ॥ ४४ ॥ सलोकु ॥ लालच झूठ बिखै बिश्राधि इश्रा देही महि बास ॥ हरि हरि श्रंमृतु गुरमुखि पीश्रा नानक सूखि निवास ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लला लावउ श्रउखध जाहू ॥ दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ नाम श्रउखधु जिह रिदै हितावै ॥ ताहि रोगु सुपनै नही श्रावै ॥ हरि श्रउखधु सभ घट है भाई ॥ गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ गुरि पूरै संजमु करि दीश्रा ॥ नानक तउ फिरि दूख न थीश्रा ॥ ४५ ॥ सलोकु ॥ वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥ श्रंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ घट घट श्रंतरि ब्रहम समाहू ॥ वासुदेव जल थल महि रविश्रा ॥ गुर प्रसादि विरले ही गविश्रा ॥ वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥

वरन चिहन सगलह ते रहता ॥ नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥ ४६ ॥ सलोकु ॥ हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥ ड़ड़कि मूए जिउ त्रिखावंत नानक किरति कमान ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥ करम धरम ततु नाम अराधू ॥ रूड़ो जेह बसिओ रिद माही ॥ उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥ जेह हीऐ अहंबुधि बिकारा ॥ ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ निमख माहि नानक समझाई ॥ ४७ ॥ सलोकु ॥ साधू की मन ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ससा सरनि परे अब हारे ॥ सासत्र सिम्रिति बेद पुकारे ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥ सासि सासि हम भूलनहारे ॥ तुम समरथ अगनत अपारे ॥ सरनि परे की राखु दइआला ॥ नानक तुमरे बाल गुपाला ॥४८॥ सलोकु ॥ खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग॥नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ खखा खरा सराहउ ताहू ॥ जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ खरा निमाना होत परानी ॥ अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ भावै खसम त उआ सुखु देता ॥ पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥ असंख खते खिन बखसनहारा ॥ नानक साहिब सदा दइआरा ॥ ४९ ॥ सलोकु ॥ सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥ उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लए समाइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ ससा सिआनप छाडु इआना ॥ हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ सहस भाति करहि चतुराई ॥ संगि तुहारै एक न जाई ॥ सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥ रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ साध सेवा लावै जिह आपै ॥ नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥ ५० ॥ सलोकु ॥ हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥ नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनंतरि सोइ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥ हउ छुटकै होइ अनंदु तिह हउ नाही तह आपि ॥ हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥ हित करि नामु द्रिड़ै दइआला ॥ संतह

संगि होत किरपाला ॥ ओरै कछु न किनहू कीआ ॥ नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥ ५१ ॥ सलोकु ॥ लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥ बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥ जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥ लाहा माइआ कारने दहदिसि ढूढन जाइ ॥ देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥ लालच झूठ बिकार मोह इआ संपै मन माहि ॥ लंपट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइ ॥ तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥ नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥ ५२ ॥ सलोकु ॥ खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥ भवजल ते काढहु प्रभु नानक तेरी टेक ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥ खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥ खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अंम्रितु नाम ॥ खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥ खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवंत ॥ खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवंत ॥ आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ ५३ ॥ सलोकु ॥ आए प्रभ सरनागती किरपा निधि दइआल ॥ एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे ॥ अखर करि करि बेद बीचारे ॥ अखर सासत्र सिम्रिति पुराना ॥ अखर नाद कथन वख्याना ॥ अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥ अखर करम किरति सुच धरमा ॥ द्रिसटिमान अखर है जेता ॥ नानक पारब्रहम निरलेपा ॥ ५४ ॥ सलोकु हथि कलंम अगंम मसतकि लिखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघनास ॥ हे पूरन हे सरब मै दुखभंजन गुणतास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥ हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ हे अपरंपर हरि हरे हहि भी होवन हार ॥ हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥ हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही

कोइ नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥ ५५ ॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परसपरा ॥ गुरदेव तीरथु अंमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ एहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥

गउड़ी सुखमनी म० ५ ॥ सलोकु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिम्रिति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ कांखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥ १ ॥ सुखमनी सुख अंमृत प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि ॥ २ ॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि

सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥ ३ ॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अंमृत नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥ ४ ॥ प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखु वासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥ ५ ॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥ ६ ॥ प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइआ ॥ ७ ॥ हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ दीन दरद दुख भंजना

घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि तुमारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनह चरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥ १ ॥ सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधुन परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै अनिक माइआ रंगि तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरिनामु संगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति गाईऐ ॥ २ ॥ छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ नानक पाईऐ साध कै संगि ॥ ३ ॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नाम ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ जहां पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंमृतु बरखै ॥ ४ ॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रंगि रते रंग एकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥ ५ ॥ हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ तृपति भुगति ॥ हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन सोभा

पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोगु जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥ हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन हरि रस राते ॥ सुंन समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥ पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥ संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिम्रती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिम्रति वखिआन ॥ जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुंन दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥ नउखंड प्रिथमी फिरै चिर जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग संजम अति साधन ॥ निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैल न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥ ३ ॥ बहुतु सिआणप जम का

भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि तृसना ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥ ५ ॥ सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साध संगि जा का मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीन्हा ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल सृसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥ नानक पाप पुंन नही लेपा ॥ ६ ॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥ ७ ॥ सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥ साध संगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अंमृत बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरिनामु ॥ ८ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥ १ ॥ असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि

साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ १ ॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥ २ ॥ आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥ रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥ ४ ॥ करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥ ५ ॥ सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसन पद गावै गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत परभवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणामै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥ संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ दृड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ

बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ ७ ॥ तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ ८ ॥ ४ ॥ सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ नानक कहु न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वुठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥ १ ॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ अगिआनी मनि रोस करेइ ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइआलु ॥ २ ॥ अनिक भाति माइआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥ ३ ॥ मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥ मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती असु बसत्रा ॥ मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ मिथिआ हसत परदरब कउ हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत

पर त्रिअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद ॥ मिथिआ चरन परबिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन परलोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥ ५ ॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ६ ॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहर भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥ ७ ॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसाद गुरदेव ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परमगति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥ १ ॥ जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह प्रसादि

तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥ २ ॥ जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ताकै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥ ३ ॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो एकु अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥ ४ ॥ जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥ ५ ॥ जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥ ६ ॥ जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभि की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥ ७ ॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु

हरिगुन गाउ ।। प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ।। प्रभु दइआ ते कमल बिगासु ।। प्रभ सु प्रसंन बसै मनि सोइ ।। प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ।। सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ।। आपहु कछू न किनहु लइआ ।। जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ।। नानक इन कै कछू न हाथ ।। ८ ।। ६ ।। सलोकु ।। अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ।। जो जो कहै सु मुकता होइ ।। सुनि मीता नानकु बिनवंता ।। साध जना की अचरज कथा ।। १ ।। असटपदी ।। साध कै संगि मुख ऊजल होत ।। साध संगि मलु सगली खोत ।। साध कै संगि मिटै अभिमानु ।। साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ।। साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ।। साध संगि सभु होत निबेरा ।। साध कै संगि पाए नाम रतनु ।। साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ।। साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ।। नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ।। १ ।। साध कै संगि अगोचरु मिलै ।। साध कै संगि सदा परफुलै ।। साध कै संगि आवहि बसि पंचा ।। साध संगि अंम्रित रसु भुंचा ।। साध संगि होइ सभ की रेन ।। साध कै संगि मनोहर बैन ।। साध कै संगि न कतहूं धावै ।। साध संगि असथिति मनु पावै ।। साध कै संगि माइआ ते भिंन ।। साध संगि नानक प्रभ सुप्रसंन ।।२।। साध संगि दुसमन सभि मीत ।। साधू कै संगि महा पुनीत ।। साध संगि किस सिउ नही बैरु ।। साध कै संगि न बीगा पैरु ।। साध कै संगि नाही को मंदा ।। साध संगि जाने परमानंदा ।। साध कै संगि नाही हउ तापु ।। साध कै संगि तजै सभु आपु।।आपे जानै साध बडाई ।।नानक साध प्रभू बनिआई ।।३।। साधकै संगि न कबहू धावै ।। साध कै संगि सदा सुखु पावै।। साध संगि बसतु अगोचर लहै।। साध कै संगि अजरु सहै।। साधकै संगि बसै थानि ऊचै ।।साधू कै संगि महलि पहूचै ।। साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम।। साध कै संगि केवल पारब्रहम ।। साध कै संगि पाए नाम निधान।। नानक साधू कै कुरबान ।। ४ ।। साध कै संगि सभ कुल उधारै।। साध संगि साजन मीत कुटंब निसतारै ।।साधू कै संगि सो धनु पावै ।। जिसु धन ते सभु को वरसावै ।। साध संगि धरम राइ करे सेवा ।। साध कै संगि सोभा सुरदेवा ।। साधू कै संगि पाप पलाइन ।। साध संगि अंम्रित गुन गाइन।। साध कै संगि स्रब थान गंमि ।। नानक साध कै संगि

सफल जनंम ॥ ५ ॥ साध कै संगि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै संगि कलूखत हरै ॥ साध कै संगि नरक परहरै ॥ साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साध संगि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै संगि न बिरथा जावै पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥ ६ ॥ साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥ साध संगि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥ साध संगि सरपर निसतरै ॥ साध कै संगि लगै प्रभ मीठा ॥ साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥ साध संगि भए आगिआकारी ॥ साध संगि गति भई हमारी ॥ साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥ नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नाही अंत ॥ साध की सोभा सदा बेअंत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ सलोकु ॥ मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक इह लछण ब्रहमगिआनी होइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ ब्रहमगिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहमगिअनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूर सरब कउ सोख ॥ ब्रहमगिआनी कै द्रसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहमगिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहमगिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥ ब्रहमगिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहमगिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहमगिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहमगिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहमगिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपने है सब ते नीचा ॥ ब्रहमगिआनी से जन भए ॥ नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥ २ ॥ ब्रहमगिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहमगिआनी चीना ॥ ब्रहमगिआनी की सभ ऊपर मइआ ॥ ब्रहमगिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ ब्रहमगिआनी सदा समदरसी ॥

ब्रहमगिम्रानी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥ ब्रहमगिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहमगिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहमगिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहमगिआनी का ब्रहम धिआनु ॥ ३ ॥ ब्रहमगिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहमगिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहमगिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहमगिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रहमगिआनी ले धावतु बंधा ॥ ब्रहमगिआनी कै होइ सु भला ॥ ब्रहमगिआनी सुफल फला ॥ ब्रहमगिआनी संगि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहमगिआनी जपै सगल संसारु ॥ ४ ॥ ब्रहमगिआनी कै एकै रंग ॥ ब्रहमगिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ ब्रहमगिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रहमगिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रहमगिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रहमगिआनी अहंबुधि तिआगत ॥ ब्रहमगिआनी कै मनि परमानंद ॥ ब्रहमगिआनी कै घरि सदा अनंद ॥ ब्रहमगिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥ ५ ॥ ब्रहमगिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहमगिआनी एक संगि हेता ॥ ब्रहमगिआनी कै होइ अचिंत ॥ ब्रहमगिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहमगिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहमगिआनी का बड परताप ॥ ब्रहमगिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥ ब्रहमगिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहमगिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहमगिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहमगिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहमगिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रहमगिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहमगिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहमगिआनी की गति ब्रहमगिआनी जानै ॥ ब्रहमगिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक ब्रहमगिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥ ब्रहमगिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥ ब्रहमगिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहमगिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहमगिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहमगिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहमगिआनी का सभ ऊपरि हाथु

॥ ब्रहमगिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रहमगिआनी आपि निरंकारु॥ ब्रहमगिआनी की सोभा ब्रहमगिआनी बनी ॥ नानक ब्रहमगिआनी सरब का धनी ॥ ८ ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ उरिधारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥ १ ॥ असटपदी ॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संत संगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ गुरप्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥ १ ॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सु प्रसंन ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतनि संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परमगति पावै ॥ २ ॥ भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साध संगि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती कउ पावै ॥ ३ ॥ सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूलु ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥ ४ ॥ बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साध संगि पावै जनु कोइ ॥ करि किरपा अंतरि उरधारै ॥ ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥ ५ ॥

जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति राम दासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥ दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल संगि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक राम दासु ॥ ६ ॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥ ७ ॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ पारब्रहम करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥ ८ ॥ ९ ॥

सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ १ ॥ असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥ १ ॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि परदरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि परदूखना करहि ॥ कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥ २ ॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि

समीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥ ॥ ३ ॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुंद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥ कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवंत ॥ कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥ ५ ॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥ नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥ ६ ॥ कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥ ८ ॥ १० ॥ सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि

उथापन हारा ॥ अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरिगुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥ कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दहदिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥ ५ ॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥ कबहू होइ पंडित करे बख्यानु ॥ कबहू मोनि धारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक

जोनि भरमै भरमीग्रा ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा ग्रवरु न कोइ ॥ ७ ॥ कबहू साध संगति इहु पावै ॥ उसु ग्रसथान ते बहुरि न ग्रावै ॥ ग्रंतरि होइ गिग्रान परगासु ॥ उसु ग्रसथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ जिउ जल महि जलु ग्राइ खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥ ८ ॥ ११ ॥ सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीग्रा ग्रापु निवारि तले ॥ बडे बडे ग्रहंकारीग्रा नानक गरबि गले ॥ १ ॥ ग्रसटपदी ॥ जिस कै ग्रंतरि राज ग्रभिमानु ॥ सो नरक पाती होवत सुग्रानु ॥ जो जानै मै जोबनवंतु ॥ सो होवत बिसटा का जंतु ॥ ग्रापस कउ करमवंत कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु ग्रंधा ग्रगिग्रानु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु ग्रागै सुखु पावै ॥ १ ॥ धनवंता होइ करि गरबावै ॥ तृण समानि कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे ग्रास ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते ग्राप जानै बलवंतु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ किसै न बदै ग्रापि ग्रहंकारी ॥ धरमराइ तिसु करे खुग्रारी ॥ गुरप्रसादि जा का मिटै ग्रभिमानु ॥ सो जनु नानक दरगह परवानु ॥ २ ॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ ग्रनिक तपसिग्रा करे ग्रहंकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि ग्रवतार ॥ ग्रनिक जतन करि ग्रातम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ ग्रापस कउ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकटि न ग्रावै ॥ सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥ ३ ॥ जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ तब लगु धरमराइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुरप्रसादि नानक हउ छूटै ॥ ४ ॥ सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ तृपति

न ग्रावै माइग्रा पाछै पावै ॥ ग्रनिक भोग बिखिग्रा के करै ॥ नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥ बडभागी किसै परापति होइ ॥ करन करावन ग्रापे ग्रापि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥ करन करावन करनैहारु ॥ इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी द्रसटि करे तैसा होइ ॥ ग्रापे ग्रापि ग्रापि प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु ग्रपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ ग्रापहि एक ग्रापहि ग्रनेक ॥ मरै न बिनसै ग्रावै न जाइ ॥ नानक सद ही रहिग्रा समाइ ॥ ६ ॥ ग्रापि उपदेसै समझै ग्रापि ॥ ग्रापे रचिग्रा सभ कै साथि ॥ ग्रापि कीनो ग्रापन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का ग्रोहु करनैहारु ॥ उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥ थान थनंतरि एकै सोइ ॥ ग्रपुने चलित ग्रापि करणैहार ॥ कउतक करै रंग ग्रापार ॥ मन महि ग्रापि मन ग्रपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइ ॥ ७ ॥ सति सति सति प्रभु सुग्रामी ॥ गुर परसादि किनै वखिग्रानी ॥ सचु सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ ग्रति सुंदर ग्रपार ग्रनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥ सलोकु ॥ संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि ग्रवतार ॥ १ ॥ ग्रसटपदी ॥ संत कै दूखनि ग्रारजा घटै ॥ संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ नानक संत संगि निंदकु भी तरै ॥ १ ॥ संत कै दूखन ते मुखु भवै ॥ संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥ संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥ संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नीचु नचाइ ॥ संत दोखी का थाउ को नाहि ॥

नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥ २ ॥ संत का निंदकु महा अतताई ॥ संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ नानक संत भावै ता उस का बी होइ मोखु ॥ ३ ॥ संत का दोखी सदा अपवितु ॥ संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥ संत का दोखी अधबीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी ऊझड़ि पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लए उबारि ॥ ५ ॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥ संत का दोखी बिगड़ रूप होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥ सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिसका कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु

कहै बीचारु ॥ जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ उसतति मन महि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ साध संगि बिनसै सभ संगु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥ २ ॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥ साध संगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥ ४ ॥ जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुरप्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै॥आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥

आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥ ६ ॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्राम ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥ ७ ॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥ ८ ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥ १ ॥ असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गुोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरिनाम ॥ १ ॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥ जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ गुरदरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥ ३ ॥

मन मूरख काहे बिललाईऐ॥ पुरब लिखे का लिखिग्रा पाईऐ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु॥ ग्रवर तिग्रागि तू तिसहि चितारु॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु॥ भूला काहे फिरहि ग्रजान॥ कउनु बसतु ग्राई तेरै संग॥ लपटि रहिग्रो रसि लोभी पतंग॥ राम नाम जपि हिरदे माहि॥ नानक पति सेती घरि जाहि॥ ४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू ग्राइग्रा॥ राम नामु संतन घरि पाइग्रा॥ तजि ग्रभिमानु लेहु मन मोलि॥ राम नामु हिरदे महि तोलि॥ लादि खेप संतह संगि चालु॥ ग्रवर तिग्रागि बिखिग्रा जंजाल॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ॥ इहु वापारु विरला वापारै॥ नानक ता कै सद बलिहारै॥ ५॥ चरन साध के धोइ धोइ पीउ॥ ग्ररपि साध कउ ग्रपना जीउ॥ साध की धूरि करहु इसनानु॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ॥ साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ॥ ग्रनिक बिघन ते साधू राखै॥ हरिगुन गाइ ग्रंमृत रसु चाखै॥ ग्रोट गही संतह दरि ग्राइग्रा॥ सरब सूख नानक तिह पाइग्रा॥ ६॥ मिरतक कउ जीवालन हार॥ सूखे कउ देवत ग्रधार॥ सरब निधान जा की दृसटी माहि॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि॥ सभु किछु तिस का ग्रोहु करनै जोगु॥ तिसु बिनु दूसर होग्रा न होगु॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीग्रा॥ नानक सो जनु निरमलु थीग्रा॥ ७॥ जा कै मन गुर की परतीति॥ तिसु जन ग्रावै हरि प्रभु चीति॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ॥ जाकै हिरदै एको होइ॥ सचु करणी सचु ता की रहत॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत॥ साची दृसटि साचा ग्राकारु॥ सचु वरतै साचा पासारु॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता॥ नानक सो जनु सचि समाता॥ ८॥ १५॥ सलोकु॥ रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन॥ १॥ ग्रसटपदी॥ ग्रबिनासी प्रभु मन महि राखु॥ मानुख की तू प्रीति तिग्रागु॥ तिस ते परै नाही किछु कोइ॥ सरब निरंतरि एको सोइ॥ ग्रापे बीना ग्रापे दाना॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना॥ पारब्रहम

परमेसुर गोविंद ॥ क्रिपा निधान दइग्राल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु ग्रनराउ ॥ १ ॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइग्रा सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ ग्रनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीग्रहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥ धिग्राइ धिग्राइ भगतह सुखु पाइग्रा ॥ नानक तिसु पुरख का किनै ग्रंतु न पाइग्रा ॥ २ ॥ जाकी लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे ग्रवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई ग्रपुनै सूति ॥ सुमति गिग्रानु धिग्रानु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिग्रावहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि ग्रावै जाए ॥ ऊच नीच तिस के ग्रसथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥ ३ ॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु ग्रबिनासी एकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिग्रो पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ ग्रपनी कीमति ग्रापे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥ ४ ॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिग्रान धिग्रान ॥ नाम के धारे ग्रागास पाताल ॥ नाम के धारे सगल ग्राकार ॥ नाम के धारे पुरीग्रा सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु ग्रापनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥ रूपु सति जा का सति ग्रसथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥ सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइ ॥ नामु जपत ता की गति होइ ॥ ग्रापि सति कीग्रा सभु सति ॥ ग्रापे जानै ग्रपनी मिति गति ॥

जिस की सृसटि सु करणैहारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥ ७ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै संगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि एक लिव लागी ॥ गुन गोबिदु कीरतनु जनु गावै ॥ गुरप्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥ सलोकु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति सति प्रभु सोइ ॥ १ ॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिन न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥ २ ॥ ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥ ३ ॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक सो सेवकु दहदिसि प्रगटाइआ ॥ ४ ॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु

न कादत आपि ॥ ताकउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥ ५ ॥ बारंबार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी अंमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ नाम रसि जो जन तृपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥ बोलहु जसु जिहवा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ ७ ॥ मन मेरे तिन की ओटि लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥ ८ ॥ १७ ॥ सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरिगुन गाउ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख कै बंधन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥ गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी

क्रपा जिसु आपि करेइ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ॥ २॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ॥ सरब निधान जीअ का दाता॥ आठ पहर पारब्रहम रंगि राता॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु॥ एकहि आपि नही कछु भरमु॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऐ॥ नानक ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ॥ ३॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत॥ परसत चरन गति निरमल रीति॥ भेटत संगि राम गुन रवे॥ पारब्रहम की दरगह गवे॥ सुनि करि बचन करन आघाने॥ मनि संतोखु आतम पतीआने॥ पूरा गुरु अख्यउ जा का मंत्र॥ अंमृत द्रसटि पेखै होइ संत॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥ ४॥ जिहबा एक उसतति अनेक॥ सति पुरख पूरन बिबेक॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी॥ निराहार निरवैर सुखदाई॥ ता की कीमति किनै न पाई॥ अनिक भगत बंदन नित करहि॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने॥ ५॥ इहु हरि रसु पावै जनु कोइ॥ अंमृतु पीवै अमरु सो होइ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास॥ जा कै मनि प्रगटे गुन तास॥ आठ पहर हरि का नामु लेइ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ॥ मोह माइआ कै संगि न लेपु॥ मन महि राखै हरि हरि एकु॥ अंधकार दीपक परगासे॥ नानक भरम मोह दुख ते नासे॥ ६॥ तपति माहि ठाढि वरताई॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे॥ साधू के पूरन उपदेसे॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे॥ जिस का सा तिनि किरपा धारी॥ साध संगि जपि नामु मुरारी॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन॥ ७॥ निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही॥ कला धारि जिनि सगली मोही॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए॥ अपुनी कीमति आपे पाए॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ॥ सरब निरंतरि एको सोइ॥ ओति पोति रविआ रूप रंग॥ भए प्रगास साध कै

संग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ॥ ८ ॥ १८ ॥ सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरिधारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ दृड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ १ ॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू संगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब निधान महि हरिनामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥ २ ॥ मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आतम परगास ॥ तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥ ३ ॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवागवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ मनि बंछत नानक फल पाइ ॥ ४ ॥ संगि न चालसि तेरै धना ॥ तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥ ५ ॥ गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुमारो चीत ॥ चरन

कमल राखहु मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥ ६ ॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साध संगि पावहि सचु धना ॥ हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥ ७ ॥ एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अनंत ॥ मनि तनि जापि एक भगवंत ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि पराछत गए ॥ मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ ८ ॥ १९ ॥

सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥ प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ वडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ २ ॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ सेवक कीनो सदा निहालु ॥ बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ इछ पुंनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ नानक भगती नामि समाइ ॥ ३ ॥ सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि

कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥ ४ ॥ साजन संत करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरिनामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सुख निधि नामु ॥ बुडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल दूख का होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुन तासु ॥ ५ ॥ उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥ भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ बिरला कोऊ पावै संगु ॥ एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ ता की उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥ प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥ ७ ॥ सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ साध संगि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥ ८ ॥ २० ॥ सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥ १ ॥ असटपदी ॥ जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुंन तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुंन समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह

कहा किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छूटे कउन बंधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥ ३ ॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥ ४ ॥ जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउ ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥ ५ ॥ जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननै हारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥ ६ ॥ जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण

महि कीनो बिसथारु॥ पापु पुंनु तह भई कहावत॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माइआ जंजाल॥ हउमै मोह भरम भै भार॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि॥ जह पसरै पासारु संत परतापि॥ दुहू पाख का आपहि धनी॥ उन की सोभा उनहु बनी॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ ८ ॥ २१ ॥ सलोकु ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार॥ १॥ असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए॥ तुम ते भिंन नही किछु होइ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता॥ नानक सगल स्रिसटि का जेता॥ १ ॥ जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ॥ दीन दइआल अनाथ को नाथु॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ॥ सभ सिरि एकु निरंजन राइ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि॥॥ अंतरि बाहरि जानहु साथि॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ २॥ पूरन पूरि रहे दइआल॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अंतरजामी रहिओ बिआपि॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइ॥ मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ॥ ३ ॥ जनु लागा हरि एकै नाइ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई॥ इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि वसिआ निरंकारु॥ बंधन तोरि भए निरवैर॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर॥ इह लोक सुखीए

परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥ ४ ॥ साध संगि मिलि करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ अंम्रितबचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥ ५ ॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अंतरि उरिधारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥ ७ ॥ मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ साध संगि नानक हरि धिआइआ ॥ ८ ॥ २२ ॥ सलोकु ॥ गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥ १ ॥ असटपदी ॥ संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥ सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब

लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दहदिसे समाहि ॥ तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ २ ॥ बेद पुरान सिंम्रत महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाइऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरमु का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥ संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सतिबचन साधू सभि कहत ॥ जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥ ४ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकंकारु ॥ अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ कवनि निकटि कवन कहीए दूरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥ अंतर गति जिसु आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥ ५ ॥ सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु करणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥ ६ ॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥ ७ ॥ जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥ जिसु प्रसादि

सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥ ८ ॥ २३ ॥ सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥ असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साध संगि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन भरि लेहु भंडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १ ॥ खेम कुसल सहज आनंद ॥ साध संगि भजु परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइण एक ॥ एक रूप जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ सिमरि सिमरि नामु बारंबार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥ २ ॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आप तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥ सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ अंम्रित नामु साध संगि लैन ॥ सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इछा ता की पूरन होइ ॥ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥ नानक जिसहि परापति होइ ॥ ५ ॥ खेम सांति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

बिदिग्रो तपु जोगु प्रभ धिग्रानु ॥ गिग्रानु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एकं द्दसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥ ६ ॥ इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिम्रति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मतांत केवल हरिनाम ॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि ग्रप्राध साध संगि मिटै ॥ संता क्रपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करमि प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते ग्राए ॥ ७ ॥ जिसु मनि बसै सुनै लाए प्रीति ॥ तिसु जन ग्रावै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा ग्रंमृत ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ ॥ ८ ॥ २४ ॥

थिती गउड़ी महला ५ ॥ सलोकु ॥

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जलि थलि महीग्रलि पूरिग्रा सुग्रामी सिरजनहारु ॥ ग्रनिक भांति होइ पसरिग्रा नानक एकंकारु ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिग्राइ ॥ गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरिराइ ॥ ता की ग्रास कलिग्राण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमिग्रो तिसु बिनु ग्रवरु न कोइ ॥ बेद पुरान सिम्रति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥ दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु ग्रवरु न जाइ ॥ जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥ १ ॥ गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥ मिलि भजीऐ साध संगि मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ करउ बंदना ग्रनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥ भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीग्रा भाउ मिटाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दुतीग्रा दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि

सगल कलेस ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै हरिदरगह पतिवंत ॥ राम नाम धनु संचवैसाच साह भगवंत ॥ ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥ नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति ॥ २ ॥ सलोकु ॥ तिनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ नानक संत निरमल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ त्रितीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥ हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥ जिनि कीए तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥ आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ मोह भरम बूडत घणो महा नरक महि वास ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ चारि पदारथ असट सिधि भजु नानक हरिनामु ॥४॥ पउड़ी ॥ चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥ सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस ॥ भउ बिनसै अंमृतु रसै रंगि रते निरंकार ॥ दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥ मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥ ४ ॥ सलोकु ॥ पंच बिकार मन महि बसे राचे माइआ संगि ॥ साध संगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिओ परपंचु ॥ कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिओ बल बंचु ॥ नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥ सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ संसारु ॥ जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥ रचनहारु नह सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥ भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥ नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥ ५ ॥ सलोकु ॥ खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥ भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥ ६ ॥ पउड़ी ॥

खसटमि खट सासत्र कहहि सिंमृति कथहि अनेक ॥ ऊतमु ऊचो पारब्रहमु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥ नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥ मोह मान भ्रमु बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥ चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै साध संगि लिव लाइ ॥ खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥ ६ ॥ सलोकु ॥ संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥ नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ संत संगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥ सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥ ७ ॥ सलोकु ॥ आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥ जम कंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥ ८ ॥ पउड़ी ॥ असटमी असट सिधि नव निधि ॥ सगल पदारथ पूरन बुधि ॥ कवल प्रगास सदा आनंद ॥ निरमल रीति निरोधर मंत ॥ सगल धरम पवित्र इसनानु ॥ सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥ हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥ जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥ ८ ॥ सलोकु ॥ नाराइणु नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥ नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥ ९ ॥ पउड़ी ॥ नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥ हरिनामु न जपहि करत बिपरीति ॥ पर त्रिअ रमहि बकहि साध निंद ॥ करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ हिरहि परदरबु उदर कै ताई ॥ अगनि न निवरै त्रिसना न बुझाई ॥ हरि सेवा बिनु एह फलु लागे ॥ नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥ ९ ॥ सलोकु ॥ दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥ मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥ १० ॥ पउड़ी ॥ दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ नैनी पेखत साध

दइग्राल ॥ रसना गुन गावै बेग्रंत ॥ मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥ हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥ नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥ १० ॥ सलोकु ॥ एको एकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥ गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभ बिसमादु ॥ ११ ॥ पउड़ी ॥ एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ मनि संतोखु सरब जीग्र दइग्रा ॥ इन बिधि बरतु संपूरन भइग्रा ॥ धावत मनु राखै इक ठाइ ॥ मनु तनु सुधु जपत हरिनाइ ॥ सभ महि पूरि रहे पारब्रहम ॥ नानक हरि कीरतनु करि ग्रटल एहु धरम ॥ ११ ॥ सलोकु ॥ दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल ॥ नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥ १२ ॥ पउड़ी ॥ दुग्रादसी दानु नामु इसनानु ॥ हरि की भगति करहु तजि मानु ॥ हरि ग्रंमृत पान करहु साध संगि ॥ मन तृपतासै कीरतन प्रभ रंगि ॥ कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥ पंच भूग्रातमा हरि नाम रसि पोखै ॥ गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ ॥ नानक राम रमत फिरि जोनि न ग्राईऐ ॥ १२ ॥ सलोकु ॥ तीनि गुणा महि बिग्रापिग्रा पूरन होत न काम ॥ पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥ १३ ॥ पउड़ी ॥ त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ ग्रावत जात नरक ग्रवतार ॥ हरि हरि भजनु न मन महि ग्राइग्रो ॥ सुख सागर प्रभु निमख न गाइग्रो ॥ हरख सोग का देह करि बाधिग्रो ॥ दीरघ रोगु माइग्रा ग्रासाधिग्रो ॥ दिनहि बिकार करत स्रमु पाइग्रो ॥ नैनी नीद सुपन बरड़ाइग्रो ॥ हरि बिसरत होवत एह हाल ॥ सरनि नानक प्रभ पुरख दइग्राल ॥ १३ ॥ सलोकु ॥ चारि कुंट चउदह भवन सगल बिग्रापत राम ॥ नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥ १४ ॥ पउड़ी ॥ चउदहि चारि कुंट प्रभ ग्राप ॥ सगल भवन पूरन परताप ॥ दसे दिसा रविग्रा प्रभु एकु ॥ धरनि ग्रकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ जल थल बन परबत पाताल ॥ परमेस्वर तह बसहि दइग्राल ॥ सूखम ग्रसथूल सगल भगवान ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ ग्रातमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥ संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥ १५ ॥

पउड़ी ॥ अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥ मनु तनु सीतलु सांति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ सरनि गही पारब्रहम् की मिटिआ आवागवन ॥ आपि तरिआ कुटंब सिउ गुण गोविंद प्रभ रवन ॥ हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥ गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥ १५ ॥ सलोकु ॥ पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥ १६ ॥ पउड़ी ॥ पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥ जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥ पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥ १६ ॥ सलोकु ॥ दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥ मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरिगुन गाइ ॥ १७ ॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ को उपदेसै को द्रिड़ै तिस का होइ उधारु ॥ किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥ हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥ १७ ॥

गउड़ी की वार महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥ सतिगुर विचि अंमृतु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ हउमै मैलु बिखु उतरै हरि

अंमृतु हरि उरधारि ॥ सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ तुधु नो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥ तेरी सिफति सुआलिओ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥ १ ॥ सलोक म० ४ ॥ विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥ तुधु जेवडु दाता तू है निरंजना तू है सचु मेरै मनि भाइआ ॥ सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥ २ ॥ सलोक म० ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥ १ ॥ म० ४ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता पुरखु अगंमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥ तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तू है पड़ीऐ ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥ तू सचा सभस दा खसमु है सभदू तू चड़ीऐ ॥ तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥ ३ ॥ सलोक म० ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु पिरंम का अठे पहर लगंनि ॥ जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥ नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ तू करहि सु सचे भला है गुरसबदि बुझाही ॥ तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ तू साहिबु अगमु दइआलु है

सभ तुधु धिआही ॥ सभि जीअ तेरे तूं सभस दा तू सभ छडाही ॥ ४ ॥ सलोक म० ४ ॥ सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥ गुरि तुठै सजणु मेलिओ जन नानक सुखि सवंनि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥ सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥ निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥ सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥ नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥ जिस नो सतिगुर मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥ ५ ॥ सलोक म० ४ ॥ हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ धनु धंनु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ जन नानक तिन कउ वारिआ जित जपिआ सिरजणहारु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ तिन के मुखि दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥ ६ ॥ सलोक म० ४ ॥ सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥ गुरसिखी अंम्रितु बीजिआ तिन अंम्रित फलु हरि पाए ॥ ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥ इकन्हा

अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥ जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आए ॥ ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥ नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाए ॥ १ ॥ म० ४ ॥ इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥ कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥ बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकारु न विचहु जाइ ॥ अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइ ॥ कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलंमा पाजु लहि जाइ ॥ जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ जिह लोहा पारसि भेटीऐ मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥ जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥ गुण की साझ तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥ अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥ ७ ॥ सलोक म० ४ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही तृपतावै ॥ हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥ जो चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ फेरि ओह वेला ओसु हथि ना आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ नरकि घोरि मुहि कालै खड़िआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥ फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥ १ ॥ म० ४ ॥ पूरे गुर का हुकमु न मंनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥ ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गलि पाइआ ॥ ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥ ओहु घरि घरि हंढै जिउ रंन दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥ गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर

पासि बहि जाइआ ॥ जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचा सभदू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥ सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥ सोई सतिगुरु पुरखु है जिन्हि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिड़ु फिड़ु मुह फिके ॥ ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥ ८ ॥ सलोकु म० ४ ॥ हरिप्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥ गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥ सभु को बीजै आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइआ ॥ गुरसिखी हरि अंम्रितु बीजिआ हरि अंम्रित नामु फलु अंम्रितु पाइआ ॥ जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइआ ॥ किरसाणी जंमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥ तिन का काड़ा अंदेसा सभु आहिओनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥ जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है तिन देवहि भला ॥ जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥ सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥ से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥ सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥ ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥ ६ ॥ सलोक म० ४ ॥ सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जनु होइ सु सेवा घाले ॥ जिन्ह अंदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि

कढे जजमाले ॥ सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥ जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ जन नानक इनका गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढे ठगवाले ॥ १ ॥ म० ४ ॥ जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ जां करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि साबासि ॥ साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥ कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥ जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥ तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई तू है सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥ मोहु कुटंबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥ जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मूए अजाणा ॥ १० ॥ सलोक म० ४ ॥ अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै ॥ अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ जे क्रिपा करे मेरा हरि प्रभु करता तां सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥ ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरिगुण गावै ॥ १ ॥ म० ४ ॥ गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरिनामु धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रितसरि नावै ॥ उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवै ॥ जो सासि गिरासि

धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥ जो मनि चिति इकु अराधिदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥ तुधु नो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥ जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जंमे कोड़े ॥ ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ मनि खोटे दयि विछोड़े ॥ ११ ॥ सलोक म० ४ ॥ मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइआ ॥ पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूहपड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥ पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥ तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ कै उठि घरि आइआ ॥ अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजीं फिरि आणि घरि पाइआ ॥ हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥ धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥ एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाए ॥ जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥ नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहूं कटिआ तिसु

डाल सुकंदे ॥ १२ ॥ सलोक म० ४ ॥ अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ तुसि दिति पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥ सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है तां झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥ निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥ जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥ जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ तिन उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइआ ॥ जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू है सचा सचु तू सभदू उपरि तू दीबाणु ॥ जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ ओन्हा अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥ १३ ॥ सलोक म० ४ ॥ धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥ सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥ गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥ गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उरधारे ॥ सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ जनु नानकु मागै

धूड़ि तिन जा गुरसिख मित पिआरे ॥ १ ॥ म० ४ ॥ जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ डरीऐ तां जे किछु आपदू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥ आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथहि निरारे ॥ सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ तू सचा साहिबु अलखु है गुरसबदि लखारे ॥ १४ ॥ सलोकु म० ४ ॥ जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥ ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गइआ ॥ नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओस दा काला भइआ ॥ करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥ भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥ १ ॥ म० ४ ॥ होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भुसे खाही ॥ जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ

नाही ॥ जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥ हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥ जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥ नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥ २ ॥ म० ४ ॥ जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥ तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥ गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है अंदरि हट नाले ॥ गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥ विणु काइआ जि होरथै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥ से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले॥१५॥ सलोक म० ४ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकड़ि ओहु ढोइआ ॥ कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥ ओहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु तिसु तिदु किछु गुझा न होइआ ॥ जैसा बीजे सो लुणै जेहा पूरबि किनै बोइआ ॥ जिसु क्रिपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥ जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ तां इकु रविआ इको ओति पोति ॥ इकु देखिआ इकु मंनिआ इको

सुणिआ स्रवण सरोति ॥ जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥ १६ ॥ सलोक म० ४ ॥ सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥ हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥ हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन् कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥ ओइ आपि तरे सभ कुटंब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सा धरती भई हरिआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ॥ धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥ हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ जा डिठा पूरा सतिगुरू तां अंदरहु मनु साधारिआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥ गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥ १७ ॥ सलोक म० ४ ॥ करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥ सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ जिन रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥ जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥ १ ॥ म० ४ ॥ गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥ हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥ गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ सालाही सचु

सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥ सचु सचा रसु जिनी चाखिआ से तृपति रहे आघाई ॥ इहु हरिरसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥ गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥ १८ ॥ सलोक म० ४ ॥ जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥ हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥ जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥ करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥ ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥ १६ ॥ सलोक महला ३ ॥ गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥ रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ कूड़ु ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलंमा पलेटि धरेहु ॥ कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥ नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सत संगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥ ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि पर उपकारिआ ॥ हरि नामु द्रिड़ावहि हरिनामु सुणावहि हरिनामे जगु ॥ निसतारिआ ॥ गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नवखंड जगति नमसकारिआ ॥ तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ

॥ कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जांम मारिया ॥ तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिया ॥ सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिया ॥ जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिया ॥ २ ॥ महला ३ ॥ हउमै जगतु भुलाइया दुरमति बिखिया बिकार ॥ सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥ नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरि भिजै ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥ धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अंमृतु पिजै ॥ सचु सचा जिन मनि भावदा से मन सची दरगह लिजै ॥ धनु धंनु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचि करिजै ॥ २० ॥ सलोक म० ४ ॥ साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥ गुर सिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे ॥ ओना दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूड़ु लहनि भेडारे ॥ जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥ हरि साकत सेती संगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥ जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुरु पुरखु अगंमु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सतिगुरू नो अपड़ि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥ सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ जो मंदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ एह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥ जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥ २१ ॥ सलोकु म० ४ ॥

किया सवणा किया जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान॥ करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु॥ तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि॥ नानक ते मुख उजले जि नित उठि संमालेनि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु॥ भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥ धंनु धंनु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥ वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥ जन नानक जिन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी आराधिआ ॥ जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ॥ सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥ सचु सचा सभदू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥ २२ ॥ सलोक म० ४ ॥ मनमुखु प्राणी मुगधु है नाम हीण भरमाइ ॥ बिनु गुर मनूआ न टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ॥ हरि प्रभु आपि दइआल होहि तां सतिगुरु मिलिआ आइ॥ जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ॥ १ ॥ म० ४ ॥ गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ॥ सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ॥ जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ॥ नानक नावै की मनि भूख है मनु तृपतै हरि रसु खाइ ॥ २॥ पउड़ी॥ सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ॥ सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ॥ सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ॥ २३॥ सलोक म० ४॥ मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि॥ विसटु गुरू मै पाइआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि॥ १ ॥ म० ३॥ माइआधारी अति अंना बोला॥ सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥ गुरमुखि जापै सबदि लिवै लाइ॥ हरि नामु सुणि मंने हरि नामि समाइ॥ जो तिसु भावै सु करे कराइआ॥

नानक वजदा जंतु वजाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अंदरि वरतै ॥ तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि गणतै ॥ सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥ सतिगुर नो मिले सु हरि मिले नाही किसै परतै ॥ २४ ॥ सलोकु म० ४ ॥ इहु मनूआ दृड़ु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥ किउ सासि गिरासि विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥ मरण जीवण की चिंता गई इहु जीअड़ा हरि प्रभ वसि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू जन नानक नामु बखसि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु अहंकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥ सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै ॥ सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥ आपणी क्रिपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने ॥ जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसंमल भंने ॥ उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कंने ॥ जिन सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वंने ॥ इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिंने ॥ २५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥ हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥ ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥ सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुखि विहाइ ॥ सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ॥ नानक दरसनु जिना वेखालिओनु तिना दरगह लए छडाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥ अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥ कूड़ु कुसतु ओहु पाप कमावै ॥ किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥ अंना बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥ मनमुखु अंधा आवै जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे थाइ न पाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥ ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥ ओइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥ विचि सचे कूड़ु न गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥ कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे

सतिगुर पासि ॥ २६ ॥ सलोक म० ५ ॥ रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइनि हथु ॥ तिंनै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥ २ ॥ पउड़ी ५ ॥ लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥ तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥ संन्ही देनि विखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥ करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥ अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥ २७ ॥ सलोक म० ५ ॥ सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥ राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइ ॥ २ ॥ पउड़ी ५ ॥ नाराइणि लइआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥ करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥ निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥ नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥ २८ ॥ सलोक म० ५ ॥ नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥ आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥२॥ पउड़ी ५ ॥ तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥ सभि अंदेसे मिट गए जम का भउ छुटु ॥ काम क्रोध बुरिआईआं संगि साधू तुटु ॥ विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥ नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥२९॥ सलोक म० ४ ॥ तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥ अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ पंच लोक सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ भाई एह तपा न होवी बगुला है बहि साध जना विचारिआ ॥ सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतति विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ महा पुरखां की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥ बाहरि बहै पंचा विचि तपा

सदाए ॥ अंदरि वहै तपा पाप कमाए ॥ हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करिवेखालिआ ॥ धरम राइ जम कंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खाड़ि पाइअहु जिथै महा महां हतिआरिआ ॥ फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥ हरि कै दरि वरतिआ सु नानक आखि सुणाइआ ॥ सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि भगतां हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥ हरि कीरतनु भगत नित गांवदे हरिनामु सुखदाई ॥ हरि भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥ हरि भगतां नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ निंदकां पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देह सजाई ॥ जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥ अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी म० ५ ॥ भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥ गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥ आइ लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥ जेहे करम कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥ जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥ ३० ॥ सलोक म० ४ ॥ मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ जिना अंदरि दूजा भाउ है तिना गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ ओहु आवै जाइ भवाईऐ ॥ सुपनै सुखु न कोइ ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥ नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइ ॥ जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुरसबदी सुखु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी म० ५ ॥ नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ परगट पाहारै जापदे सभि सुणंदे ॥ सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ ओइ लोचनि

ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ ओइ वेचारे किआ करहि जां भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥ ३१ ॥ सलोक म० ५ ॥ गुर नानक हरिनामु द्रिड़ाइआ भंनण घड़ण समरथु ॥ प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ नानकु मांगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते ॥ चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥ घति गलावां चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ काई आस न पुंनीआ नित परमलु हिरते ॥ कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ सभे धिरां निखुटीअसु हिरि लईअसु धरते ॥ विझण कलह न देवदा तां लइआ करते ॥ जो जो करते अहंमेउ झड़ि धरती पड़ते ॥ ३२ ॥ सलोक म० ३ ॥ गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥ हरिगुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ पवितु पावनु परम बीचारी ॥ जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ अंतरि हरिनामु बासना समाणी ॥ हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ सतिगुरु आखै सो कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥ विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखां पासहु कंमु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥ गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ ब्रहमु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥ जि विणु सतिगुर के मनु मंने कंमु कराए सो जंतु महा दुखु पावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवड तूं वड वडे ॥ जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ जिसनो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ तूं सचा साहिबु सचु तू सभु

जीउ पिंडु चंमु तेरा हडे ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥ ३३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

गउड़ी की वार महला ५

राइ क़मालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ५ ॥ हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥ जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ संत संगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ गृहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ हरिनाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥ तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ साध संगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥ १ ॥ सलोक म० ५ ॥ चेताई तां चेति साहिबु सचा सो धणी ॥ नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥ नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अंम्रतु चखे ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥ करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥ २ ॥ सलोक म० ५ ॥ नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चीति ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥ १ ॥ म० ५ ॥ नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ कुमित्रा सेई कांढीअहि इक विख न चलहि साथि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरापदु पाई ॥ तुधु जेवडु तू है पारब्रहम नानक सरणाई ॥ ३ ॥ सलोक म० ५॥ डिठड़ो हभ ठाइ ऊण न काईजाइ॥ नानक लधा तिन सुआउ

जिना सतिगुरु भेटिआ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिम्रति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ जो जनु भेटै साध संगि सो हरि रंगु माणी ॥ सचु नामु करता पुरखु एह रतना खाणी ॥ मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥ ४ ॥ सलोक म० ५ ॥ अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदिआ ॥ नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥ ओइ सेवनि सम्रथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥ पतित उधारण पारब्रहम संत बेदु कहंदा ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥ नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावंदा ॥ ५ ॥ सलोक म० ५ ॥ चिड़ी चुहकी पुह फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥ अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥ १ ॥ म० ५ ॥ घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥ तिसै परापति भाइ रहु जिसु देइ बिधाता ॥ मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥ साध संगि गुण गाइआ सभि दोखह खाता ॥ नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥ ६ ॥ सलोक म० ५ ॥ खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥ बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥ वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥ मीत सखा सुति बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥ तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥ ७ ॥ सलोक म० ५ ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामां मनि मंतु ॥ धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥१॥ म० ५ ॥ अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़ै सूलि ॥ दोजकि

पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥ ऐथै रहहु सुहेलिया अगै नालि चलै ॥ घरु बंधहु सच धरम का गडि थंमु अहलै ॥ ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥ नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥ ८ ॥ सलोक म० ५ ॥ जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥ देवणहारु दातारु मै चित चितारिआ ॥ निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥ नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ओथै अंमृतु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ जिसनो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥ १ ॥ सलोक म० ५ ॥ सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइ नासु ॥ नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥ नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥ साधा सरणी जो पवै सो छुटै बधा ॥ गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पड़ि बुझि समधा ॥ नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥ १० ॥ सलोक म० ५ ॥ कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइ ॥ नानक नाइ विसरिऐ सुखु किनेहा होइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥ नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥ जम कंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥ भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥ हरि गुण गुंफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥ नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रहम नरहरीऐ ॥ ११ ॥ सलोक म० ५ ॥ नानक आए से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥ गाल्ही अलपलालीआ कंमि न आवहि मित ॥ १ ॥ म० ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद

॥ नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुरप्रसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥ फिरि फिरि जूनि भवाईअनि् जम मारगि मुते ॥ कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥ नानक नाइ विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥ १२ ॥ सलोक म० ५ ॥ उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥ नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥ जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ सादु आइआ तिन हरिजनां चखि साधी डिठा ॥ पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ इकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥ हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥ १३ ॥ सलोक महला ५ ॥ जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥ गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ नीहि जि विधा मंनु पछाणू विरलो थिओ ॥ जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥२॥ पउड़ी ॥ सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु॥ किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥ हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुरमंतु ॥ माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥ धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥ १४ ॥ सलोक म० ५ ॥ वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥ तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ मंगणा त सचु इकु जिसु तुसि देवै आपि ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ नानक साहिब दाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥ दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ पारब्रहमु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥ कंठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥ १५ ॥ सलोक म० ५ ॥ पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा सहजि सुभाइ ॥ अंनु धंनु बहुतु उपजिआ पृथमी रजी तिपति अघाइ ॥ सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥ परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥ १ ॥ म० ५

॥ जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥ दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ॥ डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु॥ तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु॥ रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ॥ रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥ नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही॥ २॥ पउड़ी॥ जंमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे॥ जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे॥ साधसंगु जिन पाइआ सेई वडभागे॥ नाइ विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे॥ नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे॥ १६ ॥ सलोकु म० ५ ॥ धरणि सुवंनी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा॥ सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा॥ १ ॥ म० ५ ॥ फिरदी फिरदी दह दिसा जल परबत बनराइ ॥ जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ॥ २ ॥ पउड़ी॥ जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ॥ नेड़ै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ॥ होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ॥ दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥ पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ॥ १२॥ सलोक दोहा म० ५ ॥ एकु जि साजनु मैं कीआ सरब कला समरथु ॥ जीउ हमारा खंनीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु॥ १॥ म० ५॥ जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि॥ हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि॥ २॥ पउड़ी॥ सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै॥ जपि जपि जीवहि संतजन पापा मलु धोवै॥ चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै॥ गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै॥ प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥ १८॥ सलोक डखणा म० ५॥ भोरी भरमु वञाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥ जिथहु वंञै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥ १॥ म० ५ ॥ चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी॥ हंसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥ २॥ पउड़ी॥ रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ हरि जसु लिखहि लाइ भावनी से हसत पविता॥ अठसठि तीरथ मजना सभि पुंन तिनि किता॥ संसार सागर ते उधरे बिखिआ गड़ु जिता॥ नानक

लड़ि लाइ उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥ १६ ॥ सलोकु म० ५ ॥ धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ नानक सेई तंन फुटंनि जिना सांई विसरै ॥ १ ॥ म० ५ ॥ परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥ निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥ नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥ अगम अगोचरु साहिबो जीआं का परणा ॥ हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥ जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥२०॥ सलोक म० ५ ॥ तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥ नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ प्रीति लगी हरि नाम सिउ ए हसती घोड़े ॥ राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ नानक मनि तनि चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु कीचे

रागु गउड़ी भगतां की बाणी

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥ राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥ सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥ १ जिह पावक सुरि नर है जारे ॥ राम उदकि जन जलत उबारे ॥ २ ॥ भवसागर सुख सागर माही ॥ पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥ ३ ॥ कहि कबीर भजु सारिंग पानी ॥ राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥ ४ ॥ १ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ माधउ जल की पिआस न जाइ ॥ जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥ १ ॥ तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥ जमु मंजारु कहा करै मोर ॥ २ ॥ तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥ मंद भागी तेरो दरसनु नाहि ॥ ३ ॥

तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥ कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥ ४ ॥ २ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जब हम एको एकु करि जानिआ ॥ तब लोगह कांहे दुखु मानिआ ॥ १ ॥ हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ हमरै खोजि परहु मति कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मंदे मंदे मन माही ॥ साझ पाति काहू सिउ नाही ॥ २ ॥ एति अपति ता की नही लाज ॥ तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥ ३ ॥ कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥ ४ ॥ ३ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥ बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥ १ ॥ किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ जब नही चीनसि आतम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूड मुंडाए जो सिधि पाई ॥ मुकती भेड न गईआ काई ॥ २ ॥ बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥ खुसरै किउ न परमगति पाई ॥ ३ ॥ कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ संधिआ प्रात इस्नानु कराही ॥ जिउ भए दादुर पानी माही ॥ १ ॥ जउ पै राम राम रति नाही ॥ ते सभि धरम राइ कै जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ रति बहु रूप रचाही ॥ तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥ ३ ॥ कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥ सरब सु छोडि महारसु पीजै ॥ ४ ॥ ५ ॥ कबीर जी गउड़ी ॥ किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥ रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥ २ ॥ करम करत बधे अहंमेव ॥ मिलि पाथर की करही सेव ॥ ३ ॥ कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥ ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥ १ ॥ कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥ बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जौ तूं ब्राहमणु ब्राहमणी जाइआ ॥ तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥ २ ॥ तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥ हम कत लोहू तुम कत दुध ॥ ३ ॥ कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥ सो ब्राहमणु कहीअतु

है हमारै ॥ ४ ॥ ७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥ १ ॥ जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥ उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ प्रान गए कहु का की माइआ ॥ २ ॥ जस जंती महि जीउ समाना ॥ मूए मरमु को का कर जाना ॥ ३ ॥ हंसा सरवरु कालु सरीर ॥ राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥ ४ ॥ ८ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जोति की जाति जाति की जोती ॥ तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥ १ ॥ कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥ भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ चार अचार रहे उरझाइ ॥ २ ॥ पाप पुंन दुइ एक समान ॥ निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥ ३ ॥ कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥ ४ ॥ ६ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन परमिति परमनु जाना ॥ बातन ही बैकुंठ समाना ॥ १ ॥ ना जाना बैकुंठ कहाही ॥ जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहन कहावन नह पतीअई है ॥ तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥ २ ॥ जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥ तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥ ३ ॥ कहु कबीर इह कहीऐ काहि ॥ साध संगति बैकुंठै आहि ॥ ४ ॥ १० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ उपजै निपजै निपजि समाई ॥ नैनह देखत इहु जगु जाई ॥ १ ॥ लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ अंत की बार नही कछु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन करि काइआ पाली ॥ मरती बार अगनि संगि जाली ॥ २ ॥ चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥ ३ ॥ कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ अवर ॥ मूए किआ सोगु करीजै ॥ तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥ १ ॥ मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआ देही परमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानंदा ॥ २ ॥ कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥ टूटी लाजु भरै मतिहारी ॥ ३ ॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ असथावर जंगम कीट पतंगा ॥

अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥ १ ॥ ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥ जब हम राम गरभ होइ आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥ कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥ २ ॥ साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ राम रसाइनु रसना पीवहि ॥ ३ ॥ कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ हारि परे अब पूरा दीजै ॥ ४ ॥ १३ ॥ गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥ ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥ दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ नित उठि हासै हीगै मरै ॥ १ ॥ माता भैसा अंमुहा जाइ ॥ कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥ २ ॥ कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ लेले कउ चूघै नित भेड ॥ ३ ॥ राम रमत मति परगटी आई ॥ कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ गउड़ी कबीर जी पंचपदे॰ ॥ जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ पूरब जनम हउ तप का हीना ॥ १ ॥ अब कहु राम कवन गति मोरी ॥ तजीले बनारस मति भई थोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥ मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥ २ ॥ बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ मरनु भइआ मगहर की बासी ॥ ३ ॥ कासी मगहर सम बीचारी ॥ ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥ ४ ॥ कहु गुर गजि सिव सभु को जानै ॥ मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥ ५ ॥ १५ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥ १ ॥ इसु तन धन की कवन बडाई ॥ धरनि परै उरवारि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥ २ ॥ हाथि त डोर मुखि खाइओ तंबोर ॥ मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥ ३ ॥ गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ रामै राम रमत सुखु पावै ॥ ४ ॥ किरपा करि कै नामु द्रिड़ाई ॥ हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥ ५ ॥ कहत कबीर चेति रे अंधा ॥ सति रामु झूठा सभु धंधा ॥ ६ ॥ १६ ॥ गउड़ी कबीर जी तिपदे चार तुके॰ ॥ जम ते उलटि भए है राम ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥ बैरी उलटि भए है मीता ॥ साकत उलटि सुजन भए चीता ॥ १ ॥ अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥ सांति भई जब गोबिदु जानिआ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ तन महि होती कोटि उपाधि ॥ उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ आपु पछानै आपै आप ॥ रोगु न बिआपै तीनौ ताप ॥ २ ॥ अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥ ३ ॥ १७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥ सबदि अतीति अनाहदि राता ॥ जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ मन रे पवन द्रिड़ सुखमन नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥ सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥ ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥ २ ॥ उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥ लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥ ३ ॥ ॥ अपु तेज बाइ पृथमी आकासा ॥ ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ गउड़ी कबीर जी तिपदे[१५] ॥ कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥ १ ॥ अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥ सहज सभाइ मेरा मनु मानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥ राम भगति बैठे घरि आइआ ॥ २ ॥ कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥ केवल राम भगत निज भागी ॥ ३ ॥ १९ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥ सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥ १ ॥ अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥ २ ॥ कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥ ३ ॥ २० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥ १ ॥ लागी होइ सु जानै पीर ॥ राम भगति अनीआले तीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक भाइ देखउ सभ नारी ॥ किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥ ॥ २ ॥ कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ सभ परहरि ता कउ

मिलै सुहागु ॥ ३ ॥ २१ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥ १ ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहू का कवनु निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि लोक जा कै हहि भार ॥ सो काहे न करै प्रतिपार ॥ २ ॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥ ३ ॥ २२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥ पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥ १ ॥ प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ जब लग रसु तब लग नही नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥ सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥ २ ॥ तनु मनु धनु ग्रिहु सउपि सरीरु ॥ सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥ ३ ॥ २३ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ बिखिआ लै डूबी परवारु ॥ १ ॥ रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥ हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥ २ ॥ चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥ सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥ ३ ॥ २४ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ बिधवा कस न भई महतारी ॥ १ ॥ जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ जनमत कस न मुओ अपराधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥ बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥ २ ॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥ ३ ॥ २५ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥ सो भाई मेरै मनि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥ तिन की पग पंकज हम धूरि ॥ २ ॥ जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥ ३ ॥ २६ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥ संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥ १ ॥ उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥ पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ आनंदि माते अनदिनु जाई ॥ २ ॥ चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥ कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥ ३ ॥ २७ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥

मन का सुभाउ मनहि बिग्रापी ॥ मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥ १ ॥ कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन ग्रंतरि बोलै सभु कोई ॥ मन मारे बिनु भगति न होई ॥ २ ॥ कहु कबीर जो जानै भेउ ॥ मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥ ३ ॥ २८ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ ग्रोइ जु दीसहि ग्रंबरि तारे ॥ किनि ग्रोइ चीते चीतनहारे ॥ १ ॥ कहु रे पंडित ग्रंबरु का सिउ लागा ॥ बूझै बूझनहारु सभागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरज चंदु करहि उजीग्रारा ॥ सभ महि पसरिग्रा ब्रहम पसारा ॥ २ ॥ कहु कबीर जानैगा सोइ ॥ हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥ ३ ॥ २९ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ बेद की पुत्री सिम्रिति भाई ॥ सांकल जेवरी लैहै ग्राई ॥ १ ॥ ग्रापन नगरु ग्राप ते बाधिग्रा ॥ मोह कै फाधि काल सरु सांधिग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥ २ ॥ हम देखत जिनि सभु जगु लूटिग्रा ॥ कहु कबीर मै राम कहि छूटिग्रा ॥ ३ ॥ ३० ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥ सगल तजीनु गगन दवरावउ ॥ १ ॥ ग्रपनै बीचारि ग्रसवारी कीजै ॥ सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥ हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥ २ ॥ कहत कबीर भले ग्रसवारा ॥ बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥ ३ ॥ ३१ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मुखि पांचउ ग्रंम्रित खाए ॥ तिह मुख देखत लूकट लाए ॥ १ ॥ इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥ ग्रगनि दहै ग्ररु गरभ बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइग्रा बिगूती बहु बिधि भाती ॥ को जारे को गडि ले माटी ॥ २ ॥ कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥ ३ ॥ ३२ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ ग्रापे पावकु ग्रापे पवना ॥ जारै खसमु त राखै कवना ॥ १ ॥ राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ राम नाम चितु रहिग्रा समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का को जरै काहि होइ हानि ॥ नट वट खेलै सारिगपानि ॥ २ ॥ कहु कबीर ग्रखर दुइ भाखि ॥ होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥ ३ ॥ ३३ ॥ गउड़ी कबीर जी दुपदे॰ ॥ ना मै जोग धिग्रान चितु लाइग्रा ॥ बिनु बैराग न छूटसि माइग्रा ॥ १ ॥ कैसे जीवनु होइ

हमारा ॥ जब न होइ राम नाम अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर खोजउ असमान ॥ राम समान न देखउ आन ॥ २ ॥ ३४ ॥ गउड़ी कबीर जी ॥ जिहि सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥ १ ॥ इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ राम नामु काहे न द्रिड़ीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ इही हवाल होहिगे तेरे ॥ २ ॥ ३५ ॥ गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥ सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥ १ ॥ बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ कैसे होई है राजा राम निवासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥ सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥ २ ॥ सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥ ३ ॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ तन छूटे मनु कहा समाई ॥ ४ ॥ गुर परसादी जै देउ नामां ॥ भगति कै प्रेमि इनही है जानां ॥ ५ ॥ इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥ ६ ॥ इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥ ७ ॥ इस मन का कोई जानै भेउ ॥ इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥ ८ ॥ जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥ ९ ॥ १ ॥ ३६ ॥ गउड़ी गुआरेरी ॥ अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध भए लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ १ ॥ जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥ २ ॥ ३७ ॥ गउड़ी भी सोरठि भी ॥ रे जीअ निलज लाज तोहि नाही ॥ हरि तजि कत काहू के जांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ सो जनु पर घर जात न सोही ॥ १ ॥ सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ सदा संगि नाही हरि दूरि ॥ २ ॥ कवला चरन सरन है जा के ॥ कहु जन का नाही घर ता के ॥ ३ ॥ सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो संम्रथु निज पति है

दाता ॥ ४ ॥ कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ जा के हिरदै अवरु न होई ॥ ५ ॥ ३८ ॥ कउन को पुतु पिता को का को ॥ कउनु मरै को देइ संतापो ॥ १ ॥ हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥ २ ॥ कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥ ३ ॥ ३९ ॥ अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परमगति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगति दीओ रलाइ ॥ पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥ अंमृत नामु जपउ जपु रसना ॥ अमोल दासु करि लीनो अपना ॥ १ ॥ सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ काढि लीन सागर संसार ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥ २ ॥ माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥ मनि संतोखु नामु आधारु ॥ जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ जत पेखउ तत अंतरजामी ॥ ३ ॥ अपनी भगति आप ही द्रड़ाई ॥ पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ जिसु कृपा करे तिसु पूरन साज ॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥ ४ ॥ ४० ॥ जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति होई ॥ जनमे सूतकु मुएं फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥ १ ॥ कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥ ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥ २ ॥ फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥ कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥ ३ ॥ ४१ ॥ गउड़ी ॥ झगरा एकु निबेरहु राम ॥ जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥ १ ॥ ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥ बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥ २ ॥ कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥ ३ ॥ ४२ ॥ रागु गउड़ी चेती ॥ देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुचिते की दुइ थुनि गिरानी मोह बलेंडा टूटा ॥ तिसना छानि परी

घर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा ॥ १ ॥ आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥ कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥ २ ॥ ४३ ॥

गउड़ी चेती

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ बातन ही असमानु गिरावहि ॥ १ ॥ ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥ जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥ २ ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ आपु गए अउरन हू घालहि ॥ ३ ॥ छाडि चरचा आन न जानहि ॥ ब्रहमा हू को कहिओ न मानहि ॥ ४ ॥ आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥ ५ ॥ अवरन हसत आप हहि कांने ॥ तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥ ६ ॥ १ ॥ ४४ ॥

रागु गउड़ी बैरागणि कबीर जी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥ पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥ १ ॥ मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥ कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥ ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥ २ ॥ सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंतकाल कउ भारी ॥ राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥ ३ ॥ देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥ कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥ ४ ॥ १ ॥ ४५ ॥ गउड़ी ॥ जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥ मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥ गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अंम्रितु पीओईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा २ ॥

तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिया भाई ॥ दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥ ३ ॥ उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥ कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४६ ॥ गउड़ी बैरागणि तिपदे₃ ॥ उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुंनि अनरागी ॥ आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥ १ ॥ मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥ २ ॥ तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ कहु कबीर जिनि दीआ पलीतातिनि तैसी झल देखी ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४७ ॥ गउड़ी ॥ तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुंन समाधि दोऊ तह नाही ॥ १ ॥ सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥ २ ॥ अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४८ ॥ गउड़ी₂ ॥ पापु पुंनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥ तृसना गुणि भरी घट भीतरि इन बिधि टांड बिसाहिओ ॥ १ ॥ ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ सगल संसार कीओ बनजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥ पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥ २ ॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनिआई ॥ घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥ ३ ॥ ५ ॥ ४७ ॥ गउड़ी₃ पंचपदा ॥ पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥ अंधा लोकु न जाणई मूरखु एआणा ॥ १ ॥ कहु डडीआ बाधै धन खड़ी ॥ पाहू घरि आए मुकलाऊ आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥ लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥

२ ॥ साहिबु होइ दइम्रालु क्रिपा करे ग्रपुना कारजु सवारे ॥ ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥ ३ ॥ किरत की बांधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥ एस नो किग्रा ग्राखीऐ किग्रा करे विचारी ॥ ४ ॥ भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥ गउड़ी॥ जोगी कहहि जोगु भल मीठा ग्रवरु न दूजा भाई ॥ रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥ १ ॥ हरि बिनु भरमि भुलाने ग्रंधा ॥ जा पहि जाउ ग्रापु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥ पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥ २ ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ ॥ सतिगुरु मिलै ग्रंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥ ३ ॥ तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु द्रिड़ु करि रहीऐ ॥ कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइग्रा पूछे ते किग्रा कहीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५१ ॥

रागु गउड़ी पूरबी१ कबीर जी ॥

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जह कछु ग्रहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥ इड़ा पिंगला सुखमन बंदे ए ग्रवगन कत जाही ॥ १ ॥ तागा तूटा गगनु बिनसि गइग्रा तेरा बोलतु कहा समाई ॥ एह संसा मो कउ ग्रनदिनु बिग्रापै मो कउ को न कहै समझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह बरभंड पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥ जोड़णहारो सदा ग्रतीता इह कहीऐ किसु माही ॥ २ ॥ जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी ॥ का को ठाकुर का को सेवकु को काहू कै जासी ॥ ३ ॥ कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती ॥ उग्रा का मरमु ग्रोही परुजानै ग्रोहु तउ सदा ग्रबिनासी ॥४॥ १ ॥ ५२ ॥ गउड़ी ॥ सुरति सिंम्रिति दुइ कंनी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥ सुंन गुफा महि ग्रासणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥ १ ॥ मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥ मरत न सोग बिग्रोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूग्रा सभु जगु भसमाधारी ॥ ताड़ी लागी त्रिपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥ २ ॥ मनु

पवनु दुइ तूंबा करीहै जुग जुग सारद साजी ॥ थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥ ३ ॥ सुनि मन मगन भए है पूरे माइआ डोलन लागी ॥ कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥ गउड़ी ॥ गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥ १ ॥ गई बुनावन माहो ॥ घर छोडिऐ जाइ जुलाहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गजी न मिनीऐ तोलि न तुलीऐ पाचनु सेर अढाई ॥ जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥ २ ॥ दिनकी बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥ छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥ ३ ॥ छोछी नली तंतु नही निकसै न तर रही उरझाई ॥ छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥ गउड़ी ॥ एक जोति एका मिली किंबा होइ महोइ ॥ जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥ १ ॥ सावल सुंदर रामईआ मेरा मनु लागा तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥ दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥ २ ॥ लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥ जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥ ३ ॥ कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ कहु कबीर संसा नही अंति परमगति पाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ ५५ ॥ गउड़ी ॥ जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥ करम धरम करते बहु संजम अहंबुधि मनु जारिओ रे ॥ १ ॥ सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओ रे ॥ हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तृसना तृखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥ उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥ २ ॥ सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिउ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥ करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥ ३ ॥ धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओ रे ॥ कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ गउड़ी ॥ कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ काम

सुश्राइ गज बसि परे मन बउरा रे श्रंकसु सहिश्रो सीस ॥ १ ॥ बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिश्रो न राम जहाजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरकट मुसटी श्रनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ छूटन को सहसा परिश्रा मन बउरा रे नाचिश्रो घर घर बारि ॥ २ ॥ जिउ नलनी सूश्रटा गहिश्रो मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥ जैसा रंगु कसुंभ का मन बउरा रे तिउ पसरिश्रो पासारु ॥ ३ ॥ नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ५७ ॥ गउड़ी ॥ श्रगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न श्रावै ॥ राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कतही न जावै ॥ १ ॥ हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणी धरु इहै सार धनु कहीऐ ॥ जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥ मनि मुकंदु जिहवा नाराइनु परै न जम की फासी ॥ २ ॥ निज धनु गिश्रानु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥ जलत श्रंभ थंभि मनु धावत भरम बंधन भउ भागा ॥ ३ ॥ कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥ तुम घरि लाख कोटि श्रस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ५८ ॥ गउड़ी ॥ जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिश्रागु दइश्रो ॥ जो जो करम कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिश्रो ॥ १ ॥ भगति बिनु बिरथे जनमु गइश्रो ॥ साध संगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिश्रो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ उदिश्रान कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइश्रो ॥ तैसे भ्रमत श्रनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइश्रो ॥ २ ॥ इश्रा धन जोबन श्ररु सुत दारा पेखन कउ जु दइश्रो ॥ तिन ही माहि श्रटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइश्रो ॥ श्रउध श्रनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाट ठइश्रो ॥ कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर श्रोट लइश्रो ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ ५९ ॥ गउड़ी ॥ पानी मैला माटी गोरी ॥ इस माटी की पुतरी जोरी ॥ १ ॥ मै नाही कछु श्राहि न मोरा ॥ तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस

माटी महि पवनु समाइस्रा ॥ झूठा परपंचु जोरि चलाइस्रा ॥ २ ॥ किनहू लाख पांच की जोरी ॥ अंत की बार गगरीआ फोरी ॥ ३ ॥ कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ६० ॥ गउड़ी ॥ राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥ ध्रु प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ १ ॥ दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥ इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥ २ ॥ गुर परसादि ऐसी बुधि समानी चूकि गई फिरि आवन जानी ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ उरवारि पारि सभ एको दानी ॥ ४ ॥ २ ॥ १० ॥ ६१ ॥ गउड़ी १ ॥ जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥ लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥ १ ॥ जीअरा हरि के गुना गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ तउ जठर अगनि महि रहता ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ ॥ अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ आवत दीसै जात न जानी ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥ ६२ ॥ गउड़ी पूरबी ॥ सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥ १ ॥ रमईआ गुन गाईऐ ॥ जा ते पाईऐ परम निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआइसनानु ॥ जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥ २ ॥ संपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ जिउ संपै तिउ बिपति है बिधने रचिआ सो होइ ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ ६३ ॥ गउड़ी ॥ रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥ बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥ १ ॥ राम रसु पीआ रे ॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥ जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥ २ ॥ जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥ ३ ॥ २ ॥ १३ ॥ ६४ ॥ रागु गउड़ी ॥ पंथु निहारै कामनी लोचन भरी

ले उसासा ॥ उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥ १ ॥
उडहु न कागा कारे ॥ बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
॥ कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ एकु आधारु
नाम नाराइन रसना रामु रवीजै ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ ६५ ॥ रागु गउड़ी
११ ॥ आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बनारसि गाऊं रे ॥
उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे
॥ १ ॥ तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर सो मिलै जो बडभागो ॥ १ ॥
रहाउ ॥ बिंद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥ जा का
ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥ ६६ ॥
गउड़ी पूरबी १२ ॥ बिपल बसत्र केते पे पहिरे किआ बन मधे बासा ॥
कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥ १ ॥
जीअ रे जाहिगा मै जानां ॥ अबिगत समझु इआना ॥ जत जत देखउ
बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनी धिआनी
बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥ कहि कबीर इक रामनाम बिनु इआ
जगु माइआ अंधा ॥ २ ॥ १ ॥ १६ ॥ ६७ ॥ गउड़ी १२ ॥ मन रे
छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥ सूरु कि सनमुख
रन ते डरपै सती कि सांचै भांडे ॥ १ ॥ डगमग छाडि रे मन बउरा ॥
अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि संधउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ कहि कबीर
राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥ २ ॥ २ ॥ १७ ॥ ६८ ॥
गउड़ी १३ ॥ फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥ तुही
दरीया तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥ १ ॥ बंदे बंदगी इकतीआर ॥
साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरा आधारु मेरा
जिउ फूलु जई है नारि ॥ कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै
मारि ॥ २ ॥ १८ ॥ ६९ ॥ गउड़ी५ ॥ लख चउरासीह जीअ जोनि
महि भ्रमत नंदु बहु थाको रे ॥ भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो
बपुरा को रे ॥ १ ॥ तुम जु कहत हउ नंद को नंदनु नंद सु नंदनु
का को रे ॥ धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नंदु कहा थो रे

॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥ कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥ २ ॥ १९ ॥ ७० ॥ गउड़ी ॥ निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥ १ ॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदक लोरै ॥ २ ॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥ ३ ॥ २० ॥ ७१ ॥ राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥ १ ॥ जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ७२ ॥ गउड़ी ॥ खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥ १ ॥ अब मन जागत रहु रे भाई ॥ गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच पहरूआ दर महि रहते तिन्ह का नही पतीआरा ॥ चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥ २ ॥ नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥ कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥ ३ ॥ २२ ॥ ७३ ॥ गउड़ी ॥ माई मोहि अवरु न जानिओ आनानां ॥ सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥ हिरदे प्रगासु गिआन गुर गंमित गगन मंडल महि धिआनानां ॥ बिखै रोग भै बंधन भागे मन निजघरि सुखु जानाना ॥ १ ॥ एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥ चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥ २ ॥ जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥ तिह बडभाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥ ३ ॥ काटि सकति सिव सहजु

प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥ कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानां ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ ऐ अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥ १ ॥ जहा बोल तह अछर आवा ॥ जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ बोल अबोल मधि है सोई ॥ जस ओहु है तस लखै न कोई ॥ २ ॥ अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥ ३ ॥ अलह लहंता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥ उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥ ४ ॥ तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू बेद पुरान ॥ मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥ ५ ॥ ओअंकार आदि मै जाना ॥ लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ ओअंकार लखै जउ कोई ॥ सोई लखि मेटणा न होई ॥ ६ ॥ कका किरणि कमल महि पावा ॥ ससि बिगास संपट नही आवा ॥ अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ अकह कहा कहि का समझावा ॥ ७ ॥ खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥ खोड़े छाडि न दहदिस धावा ॥ खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥ ८ ॥ गगा गुर के बचन पछाना ॥ दूजी बात न धरई काना ॥ रहै बिहंगम कतहि न जाई ॥ अगह गहै गहि गगन रहाई ॥ ९ ॥ घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥ १० ॥ ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥ नाही देखि न भाजीऐ परम सिआनप एह ॥ ११ ॥ चचा रचित चित्र है भारी ॥ तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥ १२ ॥ छछा इहै छत्रपति पासा ॥ छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥ १३ ॥ जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ असजरि परजरि जरि जब रहै ॥ तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥ १४ ॥ झझा उरझि

सुरझि नही जाना ॥ रहिओ झझकि नाही परवाना ॥ कत झखि झखि अउरन समझावा ॥ झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥ १५ ॥ ञंञा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥ जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइअउ ताहि ॥ १६ ॥ टटा बिकट घाट घट माही ॥ खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ रहै लपटि घट परचउ पावा ॥ १७ ॥ ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥ नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥ १८ ॥ डडा डर उपजे डरु जाई ॥ ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ जउ डर डरै त फिरि डरु लागै ॥ निडरु हूआ डरु उर होइ भागै ॥ १९ ॥ ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥ ढूढत ही ढहि गए पराना ॥ चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥ जिह गड़ु गड़िओ सु गड़ महि पावा ॥ २० ॥ णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ ना निवै ना फुनि संचरै ॥ धंनि जनमु ताही को गणै ॥ मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥ २१ ॥ तता अतर तरिओ नह जाई ॥ तन त्रिभवण महि रहिओ समाई ॥ जउ त्रिभवण तन माहि समावा ॥ तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥ २२ ॥ थथा अथाह थाह नही पावा ॥ ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥ थोड़ै थलि थानक आरंभै ॥ बिनु ही थाभह मंदिरु थंभै ॥ २३ ॥ ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥ तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥ २४ ॥ धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥ २५ ॥ नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥ निरखत नैन रहे रतवाई ॥ निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥ तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥ २६ ॥ पपा अपर पारु नही पावा ॥ परम जोति सिउ परचउ लावा ॥ पांचउ इंद्री निग्रह करई ॥ पापु पुंनु दोऊ निरवरई ॥ २७ ॥ फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ ता फल फंक लखै जउ कोई ॥ दूणि न परई फंक बिचारै ॥ ता फल फंक सभै तन फारै ॥ २८ ॥ बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥ बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥ बंदउ होइ बंदगी गहै ॥

बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥ २९ ॥ भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ जो बाहरि जो भीतरि जानिआ ॥ भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥ ३० ॥ ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥ मरमी होइ सु मन कउ जानै ॥ मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥ ३१ ॥ ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥ मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥ ३२ ॥ इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ इहु मनु पंच तत को जीउ ॥ इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥ ३३ ॥ यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ गाउ ॥ रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥ ३४ ॥ रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥ इह रस छाडे उह रसु आवा ॥ उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥ ३५ ॥ लला ऐसे लिव मनु लावै ॥ अनत न जाइ परम सचु पावै ॥ अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥ ३६ ॥ ववा बारबार बिसन सम्हारि ॥ बिसन संम्हारि न आवै हारि ॥ बलि बलि जे बिसन तना जसु गावै ॥ विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥ ३७ ॥ वावा वाही जानीऐ वा जाने इहु होइ ॥ इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥ ३८ ॥ ससा सो नीका करि सोधहु ॥ घट परचा की बात निरोधहु ॥ घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ पूरि रहिआ तह त्रिभवण राउ ॥ ३९ ॥ खखा खोजि परै जउ कोई ॥ जो खोजै सो बहुरि न होई ॥ खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥ ४० ॥ ससा सो सह सेज सवारै ॥ सोई सही संदेह निवारै ॥ अलप सुख छाडि परम सुख पावा ॥ तब इह त्रीअ ओहु कंतु कहावा ॥ ४१ ॥ हाहा होत होइ नही जाना ॥ जब ही होइ तबहि मनु माना ॥ है तउ सही लखै जउ कोई ॥ तब ओही उहु एहु न होई ॥ ४२ ॥ लिउ लिउ करत फिरै सभु लोगु ॥ ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ लखिमीबर सिउ जउ लिउ लावै ॥ सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥ ४३ ॥ खखा खिरत खपत गए केते ॥ खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥ अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ जह का बिछुरा तह थिरु लहै ॥ ४४ ॥

बावन अखर जोरे आनि ॥ सकिआ न अखरु एकु पछानि ॥ सत का सबदु कबीरा कहै ॥ पंडित होइ सु अनभै रहै ॥ पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥ जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ कहि कबीर जानैगा सोई ॥ ४५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥ सलोकु ॥ पंद्रह थितीं सात वार ॥ कहि कबीर उरवार न पार ॥ साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ १ ॥ थितीं ॥ अंमावस महि आस निवारहु ॥ अंतरजामी रामु सम्हारहु ॥ जीवत पावहु मोख दुआर ॥ अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥ १ ॥ चरन कमल गोबिद रंगु लागा ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतनि महि अनदिनु जागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ घट महि खेलै अघट अपार ॥ काल कलपना कदे न खाइ ॥ आदि पुरख महि रहै समाइ ॥ २ ॥ दुतीआ दुहकरि जानै अंग ॥ माइआ ब्रहम रमै सभ संग ॥ ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥ अकुल निरंजन एकै भाइ ॥ ३ ॥ तृतीआ तीने सम करि लिआवै ॥ आनद मूल परम पदु पावै ॥ साध संगति उपजै बिस्वास ॥ बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥ ४ ॥ चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ जल थल माहे आपहि आप ॥ आपै जपहु आपना जाप ॥ ५ ॥ पांचै पंच तत बिसथार ॥ कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥ जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥ ६ ॥ छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइ ॥ बिनु परचै नही थिरारहाइ ॥ दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ करम धरम की सूल न सहहु ॥ ७ ॥ सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ आतम रामु लेहु परवाणि ॥ छूटै संसा मिटि जाहि दुख ॥ सुंन सरोवरि पावहु सुख ॥ ८ ॥ असटमी असट धातु की काइआ ॥ ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥ गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ उलटा रहै अभंग अछेद ॥ ९ ॥ नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ बहती मनसा राखहु बांधि ॥ लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥ जुगु जुगु जीवहु अमर

फल खाहु ॥ १० ॥ दसमी दहदिस होइ अनंद ॥ छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ जोति सरूपी तत अनूप ॥ अमल न मलन छाह नही धूप ॥ ११ ॥ एकादसी एक दिस धावै ॥ तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ सीतल निरमल भइआ सरीरा ॥ दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥ १२ ॥ बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥ देखिआ तिहूं लोक का पीउ ॥ अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥ १३ ॥ तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ अरध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥ नीच ऊच नही मान अमान ॥ बिआपिक राम सगल सामान ॥ १४ ॥ चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ सत संतोख का धरहु धिआन ॥ कथनी कथीऐ ब्रहम गिआन ॥ १५ ॥ पूनिउ पूरा चंद अकास ॥ पसरहि कला सहज परगास ॥ आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ सुख सागर महि रमहि कबीर ॥ १६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥

वार वार हरि के गुन गावउ ॥ गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदित करै भगति आरंभ ॥ काइआ मंदर मनसा थंभ ॥ अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥ तउ अनहद वेणु सहज महि बाइ ॥ १ ॥ सोमवारि ससि अंमृतु झरै ॥ चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥ २ ॥ मंगलवारे ले माहीति ॥ पंच चोर की जाणै रीति ॥ घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥ नातरु खरा रिसै है राइ ॥ ३ ॥ बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥ हिरदै कमल महि हरि का वास ॥ गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ उरध पंक लै साधू करै ॥ ४ ॥ बृहसपति बिखिआ देइ बहाइ ॥ तीनि देव एक संगि लाइ ॥ तीनि नदी तह त्रिकुटी माहि ॥ अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥ ५ ॥ सुक्रितु सहारै सु इह ब्रति चड़ै ॥ अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥ सुरखी पांचउ राखै सबै ॥ तउ दूजी द्रसटि न पैसै कबै ॥ ६ ॥ थावर थिरु करि राखै सोइ ॥ जोति दी वटी घट महि जोइ ॥ बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥ तब हूआ सगल करम का नासु

॥ ७ ॥ जब लगु घट महि दूजी आन ॥ तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ रमत राम सिउ लागो रंगु ॥ कहि कबीर तब निरमल अंग ॥ ८ ॥

राग गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारी ले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥ १ ॥ दासी सुत जन बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥ जपहीन तपहीन कुलहीन क्रमहीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥ २ ॥ १ ॥

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥ १ ॥ राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी हरहू बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥ २ ॥ कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥ ३ ॥ १ ॥ बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ १ ॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥ २ ॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥ कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥ ३ ॥ २ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥ १ ॥ को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ

जाइ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ बनजारो राम को सहज करउ व्यापारु ॥ मै राम नाम धनु लादिया बिखु लादी संसारि ॥ २ ॥ उरवार पार के दानीत्र्या लिखि लेहु त्र्याल पतालु ॥ मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥ ३ ॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥ ४ ॥ १ ॥

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कूपु भरित्र्यो जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ ऐसे मेरा मनु बिखित्र्या बिमोहित्र्या कछु त्र्यारा पारु न सूझ ॥ १ ॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु कृपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥ २ ॥ जोगीसर पावहि नही तुत्र्य गुण कथनु त्र्यपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥ ३ ॥ १ ॥

गउड़ी बैरागणि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सतजुगि सतु तेता जगी दुत्र्यापरि पूजाचार ॥ तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम त्र्यधार ॥ १ ॥ पारु कैसे पाइबो रे मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ जा ते त्र्यावागवनु बिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥ कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥ २ ॥ करम त्र्यकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥ संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै त्र्यभिमानु ॥ ३ ॥ बाहरू उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥ ४ ॥ रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥ ५ ॥ परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥ उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ ६ ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥ सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥ ७ ॥ त्र्यनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥ ८ ॥ १ ॥

रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥ सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावन्हि तुध नो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरम दुआरे ॥ गावन्हि तुध नो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावन्हि तुध नो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावन्हि तुध नो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावन्हि तुध नो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुध नो साध बीचारे ॥ गावन्हि तुध नो जती सती संतोखी गावनि तुध नो वीर करारे ॥ गावनि तुध नो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ गावनि तुध नो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावन्हि तुध नो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीरथ नाले ॥ गावन्हि तुध नो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुध नो खाणी चारे ॥ गावन्हि तुध नो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुध नो गावन्हि जो तुध भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुध नो गावनि से मैं चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ हैभी होसी जाइ नजासी रचना जिनि रचाई॥रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई

॥ जा तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥ १ ॥ आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ २ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥ सुणि

वडा आखै सभ कोई ॥ केवडु वडा डीठा होई ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ करणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोई न जाणै तेरा कीता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ बेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥४॥१॥ आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥ १ ॥ जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइ ॥ आपि उलामे चिति धरेइ ॥ जा तूं करणहारु करतारु ॥ किआ मुहताजी किआ संसारु ॥ २ ॥ आपि उपाए आपे देइ ॥ आपे दुरमति मनहि करेइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥ ३ ॥ साचु पिआरा आपि करेइ ॥ अवरी कउ साचु न देइ ॥ जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट ॥ दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ जती सती कह राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू पासहु फिरि चेला

खाइ ॥ तामि परीति वसै वरि आइ ॥ जे सउ वहिआ जीवणु खाणु ॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥ २ ॥ दरसनि देखीऐ दइआ न होइ ॥ लए दिते विणु रहै न कोइ ॥ राजा निआउ करे हथि होइ ॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ ३ ॥ माणस मूरति नानकु नामु ॥ करणी कुता दरि फुरमानु ॥ गुरपरसादि जाणै मिहमानु ॥ ता किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥ १ ॥ साहिबु मेरा एको है ॥ एको है भाई एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥२॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥४॥५॥ आसा महला १ ॥ वाजा मति पखवाजु भाउ ॥ होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥ एहा भगति एहो तप ताउ ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ १ ॥ पूरे ताल जाणै सालाह ॥ होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥ पैरी वाजा सदा निहाल ॥ रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ २ ॥ भउ फेरी होवै मन चीति ॥ बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ ३ ॥ सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ नानक आखणु वेरा वेर ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥ १ ॥ किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥ तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ ॥ किसु तूं पुरखु जोरू कउणु कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ २ ॥ नालि कुटंबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण सृसटि गइआ ॥ आगै अंतु न पाइओ ताका कंसु छेदि किआ

वडा भइग्रा ॥ ३ ॥ रतन उपाइ धरे खीरु मथिग्रा होरि भखलाए जि ग्रसी कीग्रा ॥ कहै नानकु छपै किउ छपिग्रा एकी एकी वंडि दीग्रा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ग्रासा महला १ ॥ करम करतूति बेलि बिसथारी रामनामु फलु हूग्रा ॥ तिसु रूपु न रेख ग्रनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीग्रा ॥ १ ॥ करे वखिग्राणु जाणै जे कोई ॥ ग्रंमृतु पीवै सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह पीग्रा से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइग्रा के लाहे ॥ २ ॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिग्रा सगल भवन तेरी माइग्रा ॥ रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइग्रा ॥ ३ ॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि ग्रपारा ॥ सबदि ग्रनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥४॥८॥ ग्रासा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरि भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाणा पीणा हसणा बादि ॥ जब लगु रिदै न ग्रावहि यादि ॥ १ ॥ तउ परवाह केही किया कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ किग्रा मुहु लै कीचै ग्ररदासि ॥ पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥ २ ॥ जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ तुधु ग्रापे भावै तिवै चलावै ॥ ३ ॥ राग रतन परीग्रा परवार ॥ तिसु विचि उपजै ग्रंमृतु सार ॥ नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु बीचारु ॥ ४ ॥ ६ ॥ ग्रासा महला १ ॥ करि किरपा ग्रपनै घरि ग्राइग्रा ॥ ता मिलि सखीग्रा काजु रचाइग्रा ॥ खेलु देखि मनि ग्रनदु भइग्रा सहु वीग्राहण ग्राइग्रा ॥ १ ॥ गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ हमरै घरि ग्राइग्रा जगजीवनु भतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरूदुग्रारै हमरा वीग्राहु जि होग्रा जां सहु मिलिग्रा तां जानिग्रा ॥ तिहु लोका महि सबदु रविग्रा है ग्रापु गइग्रा मनु मानिग्रा ॥ २ ॥ ग्रापणा कारजु ग्रापि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ जितु कारजि सतु संतोखु दइग्रा धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥ ३ ॥ भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ग्रासा महला १ ॥ गृहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥

दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ॥ सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥ १ ॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥१॥ रहाउ ॥ अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥ २ ॥ सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ आपे करे आपे बखसिंदु ॥ तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥ ३ ॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाइ ॥ नानक असथिरु नामु रजाइ ॥४॥११॥ आसा महला १ ॥ एको सरवरु कमल अनूप ॥ सदा बिगासै परमल रूप ॥ ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ सरब कला जगदीसै अंस ॥ १ ॥ जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरला बूझै पावै भेदु ॥ साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ नाद बिंद की सुरति समाइ ॥ सतिगुरु सेवि परमपदु पाइ ॥ २ ॥ मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥ राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ बूडत पाहन तारहि तारि ॥ ३ ॥ त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥ उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥ नानकु तिन कै लागै पाइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमति साची हुजति दूरि ॥ बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ गुरपरसादि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै ॥ २ ॥ जो जनमे से रोगि विआपे ॥ हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ से जन बांचे जो प्रभि राखे ॥ सतिगुरु सेवि अंम्रित रसु चाखे ॥ ३ ॥ चलतउ मनु राखै अंम्रितु चाखै ॥ सतिगुर सेवि अंम्रित सबदु भाखै ॥ साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ नानक विचहु आपु गवाए ॥ ४ ॥ १३ ॥ आसा महला १ ॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ अंम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥ हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥ १ ॥ हरि जीउ राखहु अपनी

सरणाई ॥ गुरपरसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउनिधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम सचु साचा नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ जो हरि राते से जन परवाणु ॥ तिन की संगति परम निधानु ॥ २ ॥ हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ आपि तरै संगि कुल तारै ॥ सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥ ३ ॥ हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ करम धरम संजमु सत भाउ ॥ नानक बखसे पूछ न होइ ॥ दूजा मेटे एको सोइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ इकि हरि राते रहहि समाई ॥ इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ से करम हीण हरि नामु न धिआवहि ॥ १ ॥ गुर पूरे गति मिति पाई ॥ इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुरसबदी हरि पारि लंघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥ २ ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥ ३ ॥ सासत बेद सिम्रिति बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरिरसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥ ४ ॥ १५ ॥ आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥ १ ॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुरपरसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै को लेखै पाई ॥ २ ॥ हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥ ३ ॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥ ४ ॥ १६ ॥ आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ किसै पड़ावहि

पड़ि गुणि बूझै सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥ १ ॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु रहै निरारा ॥ २ ॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ आदि अपारु अपरंपरु हीरा ॥ लालि रता मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला १ तितुका ॥ कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ कोई राजा रहिआ समाइ ॥ किसही मानु किसै अपमानु ॥ ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ किसु वेखाली चंगा होइ ॥ १ ॥ मै तां नामु तेरा आधारु ॥ तूं दाता करणहारु करतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ दरगह बैसण नाही थाउ ॥ मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ खाण जीवण की बहुती आस ॥ लेखै तेरै सास गिरास ॥ २ ॥ अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ जां तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ दरगह बैसण होवै थाउ ॥ जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला १ पंचपदे ॥ दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥ १ ॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै ॥ चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥ २ ॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचति भाउ करेही ॥ सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥ ३ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥ ४ ॥ मति विचि मरणु जीवणु

होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥ ५ ॥ १९ ॥ आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरिनामा जसु जाचउ नाउ ॥ गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥ १ ॥ पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥ २ ॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ एको वेखहु अवरु न भालि ॥ चीन्है ततु गगन दसदुआर ॥ हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥ ३ ॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ ॥ पाहरूअराछबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥ ४ ॥ आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ असटदसी चहु भेदु न पाइआ ॥ नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ ५ ॥ २० ॥ आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ १ ॥ साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तखति बुलावै सोइ ॥ दे वडिआई करे सु होइ ॥ २ ॥ तेरा ताणु तू है दीबाणु ॥ गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ मंने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ३ ॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक एको दरु दीबाणु ॥ गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥ ५ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥ १ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूं है तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सखी साजनी

के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥ २ ॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥ ३ ॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥ तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥ ४ ॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥ ५ ॥ २२ ॥ आसा महला १ पंचपदे॰ ॥ मोहु कुटंबु मोहु सभ कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥ १ ॥ मोहु अरु भरम तजहु तुम बीर ॥ साचु नामु रिदै रवै सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नवनिधि पाई ॥ रोवै पूतु न कलपै माई ॥ २ ॥ एतु मोहि डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ ३ ॥ एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ ४ ॥ गुरदीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ न मोहु तूटै न थाइ पाहि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ ६ ॥ २३ ॥ आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख अपारु ॥ हउ पापी तूं बखसणहारु ॥ १ ॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ मन हठि कीचै अंति विगोवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥ २ ॥ दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥ ३ ॥ ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ गुर हरि मिलिआ भगति दृड़ाई ॥ ४ ॥ सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥ नानक राम नामु मनि भावै ॥ ५ ॥ २४ ॥ आसा महला १ चउपदे॰ ॥ विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥ १ ॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी ॥ जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥ २ ॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥ ३ ॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला १ ॥ एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥ १ ॥ इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

आस पिआसी सेजै आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥ २ ॥ किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥ ३ ॥ अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥ आसा महला १ ॥ पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ तिसु सह की मै सार न जाणी ॥ १ ॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ नदरि करे मेलावा होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥ २ ॥ गुरपरसादी ऐसी मति आवै ॥ तां कामणि कंतै मनि भावै ॥ ३ ॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ सद ही सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ २७ ॥ आसा महला १ ॥ न किस का पूतु न किस की माई ॥ झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥ १ ॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई ॥ जा तिसु भावै बखसे सोई ॥ २ ॥ गुरपरसादी दुरमति खोई ॥ जह देखा तह एको सोई ॥ ३ ॥ कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ तां को सचे सचि समावै ॥ ४ ॥ २८ ॥ आसा महला १ दुपदे ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ २९ ॥ आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ ३० ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ जां पति लेखैं ना पवै तां सभि निराफल काम ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥ २ ॥ लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥ ३ ॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥४॥१॥३१॥ आसा महला १ ॥ दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ ऐथै ओथै आगै पाछैं एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखुटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

आसा घरु ४ महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रतेदरवेस भए॥३॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

आसा घरु ५ महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥ १ ॥ मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥ २ ॥ पंच सखी हम एकु भतारो ॥ पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥ ३ ॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ६ महला १ ॥ मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ १ ॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ तेरे गुण होहि न अवरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥ २ ॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥ ३ ॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥४॥१॥३५॥ आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥ १ ॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥ ३ ॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥ ४ ॥ २ ॥ ३६ ॥ आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि

पावउ ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ अंम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ सिंडी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥ २ ॥ पतु बीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥ ३ ॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

आसा महला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥ १ ॥ बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ अंम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥३॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥ १ ॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥ २ ॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥ ३ ॥ ५ ॥ ३९ ॥

रागु आसा घरु २ महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ खटु दरसन वरतै

वरतारा ॥ गुर का दरसनु अगम अपारा ॥ १ ॥ गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥ साचा आपि वसै मनि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ जे को लाए भाउ पिआरा ॥ भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ निगुरे कउ गति काई नाही ॥ अवगणि मुठे चोटा खाही ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥ गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥ आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ सची बाणी पाए भागि कोइ ॥ १ ॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ अंम्रित सबदि नामु वखाणै ॥ साची बाणी सूचा होइ ॥ गुण ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥ सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥ ३ ॥ जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ नानक कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ चिरी विछुंने मेलि मिलाई ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ आपणी कीमति आपे पाए ॥ १ ॥ हरि की कीमति किन विधि होइ ॥ हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ विरले करमि परापति होइ ॥ ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥ ॥ २ ॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ पीवत रहै पीआए सोइ ॥ गुर किरपा ते हरिरसु पाए ॥ नानक नामि रते गति पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर ॥ सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥ सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ तिन कै

हम सद लागह पाइ ॥ १ ॥ जो मनि राते हरि रंग लाइ ॥ तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ २ ॥ आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥ हरिरंगि राते मोहु चुकाइ ॥ अति निरमलु गुरसबद वीचार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ३ ॥ दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ दूजै भाइ न लागै कोइ ॥ १ ॥ मूलि लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुरसबदी हरि एको जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ डाली लागै निहफलु जाइ ॥ अंधीं कंमी अंध सजाइ ॥ मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥ २ ॥ गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ संत संगति मिलि हरि गुण गाए ॥ नामे नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै कुल उधरणहारु ॥ ३ ॥ गुर की बाणी नामि वजाए ॥ नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ गुरमति सतसरि हरि जलि नाइआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ दूजै भाइ आतम संघारहि ॥ मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥ १ ॥ मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥ उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ नाम बिहूणी दुखि जल सबाई ॥ सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥ २ ॥ मनु चंचलु बहु चोटां खाइ ॥ एथहु छुड़किआ ठउर न पाई ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥ ३ ॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणी निज घरि वासा ॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ३ ॥ लालै आपणी जाति गवाई ॥ तनु मनु अरपे

सतिगुर सरणाई ॥ हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥ १ ॥ सो लाला जीवतु मरै ॥ सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ करणी कीरति नामु वसाई ॥ आपे देवै ढिल न पाई ॥ २ ॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ गुर पउड़ी सभदू ऊचा होइ ॥ नानक नामि वडाई होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ खसमै का महलु कदे न पावै ॥ दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ ममता बाधा आवै जावै ॥ १ ॥ दोहागणी कामन देखु सीगारु ॥ पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥ २ ॥ सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ अपणा पिरु राखै सदा उरधारि ॥ नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ आगै जाति रूपु न जाइ ॥ तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ नानक साचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥ आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ अंतरु निरमलु अंम्रितसरि नाए ॥ सदा सूचे साचि समाए ॥ २ ॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥ ३ ॥ गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ गुर परसादी देवणहारु ॥ नानक बखसे बखसणहारु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ३ ॥ गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥

सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ गुर परसादी सेव कराए ॥ १ ॥ गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ गुरपरसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहु गुमानु गुरसबदि जलाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ अंतरि महलु गुरसबदि पछाणै ॥ आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥ २ ॥ जंमणु मरणा है संसारु ॥ मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥ ३ ॥ सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ गुर का सबदु हरि भगति दृड़ाए ॥ भाणा मंने सदा सुखु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥ आसा महला ३ चउपदे₂ ॥ सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥ सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ पूरे गुर ते साचि समाइ ॥ १ ॥ जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥ पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपि ॥ एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ जे सउ घाले थाइ न पाए ॥ ३ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए ॥ सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ॥ गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥ ४ ॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ नानक नामि रते सुखु पाए ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ दीवा बलै न सोझी पाइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥ २ ॥ गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥ ३ ॥ एहा

भगति जनु जीवत मरै ॥ गुर परसादी भवजलु तरै ॥ गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ हरि कृपा करे सतिगुरू मिलाए॥ निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥ १ ॥ मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥ गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि निरभउ हरिनामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥ २ ॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥ ३ ॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

आसा महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरिगुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु २ महला ४ ॥ किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥ २ ॥ एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥ ३ ॥ कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥ ४ ॥ मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ पराइआ छिद्र, अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ जैसा बीजै तैसा खावै ॥ जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥ ५ ॥ २ ॥ ५४ ॥ आसा महला ४ ॥ हिरदै सुणि सुणि मनि अंम्रितु भाइआ ॥ गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अंम्रित बैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥ २ ॥ दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५५ ॥ आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ नामु जपी नामो सुख सारु ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥ २ ॥ नाम हीन कालख मुखि माइआ ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ

॥ ३ ॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥ आसा महला ४ ॥ गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥ १ ॥ जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥ २ ॥ गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ ३ ॥ सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥ आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥ १ ॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥ २ ॥ नाम हीण गए मूड़ नंगा ॥ पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥ ३ ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ नानक नामु देवै हरि आपे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ फल लागे हरि रसक रसाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जम कंकर भुइअंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥ २ ॥ हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥ जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥ ३ ॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मन भूख लगाई ॥ नामि सुनीऐ मनु तृपतै मेरे भाई ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥ २ ॥ नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥ हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि वेल ॥ २ ॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥ ३ ॥ जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥ आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥ १ ॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥ २ ॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥ ३ ॥ कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६२ ॥ आसा महला ४ ॥ सत संगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरिगुण गाइ ॥ गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ १ ॥ हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहु मनमेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥ २ ॥ आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥ ३ ॥ नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥

भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥रागु आसा घरु ८ के काफी₂ महला ४ ॥ आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥ १ ॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ लाहा नामु सु सारु सबदु समाणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥ २ ॥ बिरथा जनमु तिना जिनी नामु विसारिआ ॥ जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥ ३ ॥ जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ ॥ नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥ आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥ १ ॥ जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिनी नामु कमाइआ ॥ दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ अनदिनु नामु धिआइ हरिगुण गाईऐ ॥ २ ॥ अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥ ३ ॥ नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६५ ॥

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हउ अनदिनु हरिनामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥ १ ॥ किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥ आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥ १ ॥

रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥ जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनदु होत है दरसनु निमख दिखाई ॥ २ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ १५ ॥ ६७ ॥

रागु आसा घरु २ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत कुटंब देखि बिबादे ॥ हम आई वसगति गुर परसादे ॥ १ ॥ ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध सुर देव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥ हम हरि राखे लगि सतिगुर पावैं ॥ २ ॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥ ३ ॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥४॥१॥ आसा महला ५ ॥ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥ १ ॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥ २ ॥ सहजि गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ महा अनंदु गुरसबदु वीचारि ॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥ ३ ॥ जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनम न मरै न आवै न जाइ ॥ हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवंती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ जितु गृहि वसै सो गृहु सोभावंता

॥गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥१॥ सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥ जजि काजि परथाइ सुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ करि सेवा सतपुरखु मनाइआ ॥ गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥ २ ॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ सगल संतोखी देर जेठानी ॥ ३ ॥ सभ परवारै माहि सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥ धंनु सु गृहु जितु प्रगटी आइ ॥ जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई ॥ सील संजम कै निकटि खलोई ॥ वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ गृहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥ १ ॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ जतन करउ उरझाइ परेवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि ॥ नउखंड जीते सभि थान थनंतर ॥ तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ पड़ि थाके सिम्रिति बेद अभिआस ॥ २ ॥ जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥ ३ ॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु दृड़ाइआ ॥ निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥ प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥ ४ ॥ घरु तेरा इह नाइकि हमारी ॥ इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥ १ ॥ महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥ दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ तूं मेरी ओट तूं है दीबाणु ॥ २ ॥ तुध नो छोडि जाईऐ प्रभ कै धरि ॥ आन न बीआ तेरी समसरि ॥ तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥

नानक दास तेरी सरणाई ॥ प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बन्हि पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥ १ ॥ साह वापारी दुआरै आए ॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥ २ ॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि लै आइआ ॥ ३ ॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली खेप नानकु लै आइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥ १ ॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ॥ कंतुमिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥ २ ॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥ ३ ॥ सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ नउ निधि नामु गृह महि तृपताने ॥कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना ॥ लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥ जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ तितु दरि तूं ही है पछुताणा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ निरापराध चितवहि बुरिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ माइआ मूठा चेतै नाही ॥ भरमे भूला बहुती राही ॥ २ ॥ बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥ ३ ॥ मूरख बामण प्रभू समालि ॥ देखत सुनत तेरै है नालि ॥ कहु नानक जे होवी भागु ॥ मानु छोडि गुर

चरणी लागु ॥४॥८॥ आसा महला ५ ॥ दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कतही न जाइ ॥ १ ॥ तपति बुझी गुरसबदी माइ ॥ बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धावत रहे एकु इकु बुझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥ २ ॥ जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ आसा महला ५ ॥ अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥ १ ॥ परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥ २ ॥ १० ॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ मन महि चितवउ ऐसी आसाई प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥ १ ॥ माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥ पति सोभा अरु मानु महतु ॥ आगिआकारी सगल जगतु ॥ गृहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥ २ ॥ बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥ मनु नही धूपै तृसना न जाइसि ॥ बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ साध संगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ पूरी आसा मनु तृपताइआ ॥ प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ नानक लधा मन तन मंझा ॥ ४ ॥ ११ ॥

आसा महला ५ पंचपदे ३ ॥ प्रथमे तेरी नीकी जाति॥ दुतीआ तेरी मनीऐ पांति ॥ त्रितीआ तेरा सुंदर थानु ॥ बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥ १ ॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥ १ ॥ रहाउ॥ अति सूची तेरी पाकसाल॥ करि इसनानु पूजा तिलकु लाल॥ गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन॥ सभि बिधि खोई लोभि सुआन ॥ २ ॥ कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ आचार करहि सोभा महि लोग॥ चोआ चंदन सुगंध बिसथार॥ संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ अवर जोनि तेरी पनिहारी॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी॥ सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥ ४ ॥ जा कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ॥ सा बंदी ते लई छडाइ॥ साध संगि मिलि हरि रसु पाइआ॥ कहु नानक सफल ओह काइआ॥ ५ ॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा॥ १२ ॥ आसा महला ५ इक तुके २ ॥ जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥ जीवत मुए मुए से जीवे॥ हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुरसबदी रसु अंम्रितु पीवे॥ १ ॥ रहाउ॥ काची मटुकी बिनसि बिनासा॥ जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा॥ २ ॥ ऊचा चड़ै सु पवै पइआला॥ धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरे तिन कछू न पाइआ ॥ से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ॥ ४ ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का मालु॥ नानक गुर मिलि भए निहाल॥ ५॥ १३ ॥ आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी॥ जानु सति करि होइगी माटी॥ १ ॥ मूलु समालहु अचेत गवारा इतने कउ तुम्ह किआ गरबे॥ १ ॥ रहाउ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ अवर वसतु तुझ पाहि अमान॥ २ ॥ बिसटा असत रकतु परेटे चाम॥ इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ ३ ॥ एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक॥ बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥ ४ ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु॥ जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु॥ ५ ॥ १४ ॥ आसा महला ५ इक तुके चउपदे ॥ इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे॥ मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे॥ १ ॥ इकु पलु दिनसु

मो कउ कबहु न विहावै ॥ दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अंतु न जाने ॥ २ ॥ पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि अंमृत नामु ॥ १ ॥ हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥ २ ॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥ ३ ॥ गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ कृपालु त इहु मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥ १ ॥ मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अंमृतसरि सद ही भरपूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥ २ ॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥ ३ ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥ मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥ १ ॥ ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥ ३ ॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा म० ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ काची पाकी बाढि परानी ॥ १ ॥ जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति ॥ रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥ २ ॥ माइआ मोहि सोइ रहे

अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला जागे ॥ ३ ॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥४॥१६॥ आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥ जा तुधु भावै ता हरिगुण गाउ॥तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥ ३ ॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक लाइआ लागा सेव ॥ ४ ॥ २० ॥ आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥ १ ॥ करै है न झुरै न मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा राखै आणि ॥ २ ॥ जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥ ३ ॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर वाहु ॥ ४ ॥ २१ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥ १ ॥ सुनी न जाई सचु अंमृत काथा ॥ रारि करत झूठी लगि गाथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥ २ ॥ तिसु सिउ लूक जे सद ही संगी ॥ कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥ ४ ॥ २२ ॥ आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥ १ ॥ बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ तृपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ गावत सुनत कमावत निहाल ॥ २ ॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥ ३ ॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥ ४ ॥ २३ ॥ आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरे पुरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥ १ ॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ आपे करता अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभ सभ कै साथि

॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ नानक भगत मिली वडिआई ॥ ४ ॥ २४ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥ १ ॥ ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तृपति अघावनु साचै नाइ ॥ अठसठि मजनु संत धूराइ ॥ २ ॥ सभ महि जानउ करता एक ॥ साध संगति मिलि बुधि बिबेक ॥ ३ ॥ दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥ ४ ॥ २५ ॥ आसा महला ५ ॥ बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ ताते बिनसी दुरमति दूरी ॥ १ ॥ ऐसी गुरमति पाईअले ॥ बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अगाह अगनि का सागरु ॥ गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥ २ ॥ दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥ गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥ ३ ॥ जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ गुर नानक सरणागति तोरी ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरिरसु पीवत सद ही राता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥ आन रसा महि विआपै चिंद ॥ १ ॥ हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥ लाख करोरी मिलै न केह ॥ जिसहि परापति तिस ही देहि ॥ २ ॥ नानक चाखि भए बिसमादु ॥ नानक गुर ते आइआ सादु ॥ ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ नानक गीधा हरि रस माहि ॥ ३ ॥ २७ ॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥ १ ॥ सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥ २ ॥ इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥ जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु

पारि उतारी ॥ ३ ॥ २८ ॥ आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ २९ ॥ आसा महला ५ ॥ तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥ १ ॥ तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥ २ ॥ ३० ॥ आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥ २ ॥ ३१ ॥ आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥ १ ॥ तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा महला ५ ॥ बांछत नाही सु बेला आई ॥ बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥ १ ॥ ठंढी ताती मिटी खाई ॥ ओहु न बाला बूढा भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई ॥ गुरप्रसादि भउ पारि पराई ॥ २ ॥ ३३ ॥ आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु ॥ साध संगति हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ राम नाम निति जपि मनि मेरे ॥ सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम ॥ सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥ २ ॥ ३४ ॥ दूजे घर के चउतीस ॥ आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु

बेली ॥ पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन संगि मेली ॥ सूख सहज आनंद सुहेली ॥ १ ॥ साध संगि गुण गाइ अतोली ॥ हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ १ ॥ जनम मरन चूके सभि भारे ॥ मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥ २ ॥ एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ तुमरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥ ४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ५ ॥ तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥ किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥ अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥ २ ॥ पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥ ३ ॥ ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥ ४ ॥ ३७ ॥

आसा घरु ३ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जोआनी ॥ बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बैआनी ॥ आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥ १ ॥ काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि

जिते पवाड़े ॥ हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥ २ ॥ करम धरम जुगति बहु करता करणै हारु न जानै ॥ उपदेसु करे आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥ ३ ॥ संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥ गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

राग आसा घरु ५ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ कोऊ जागै हरि जनु ॥ १ ॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ कोऊ तिआगै विरला ॥ २ ॥ चरन कमल आनूप हरि संत मंत कोऊ लागै साधू ॥ ३ ॥ नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ वडभागे किरपा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥ १ ॥ तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंमृतु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥ तृपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥ २ ॥ जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥ ३ ॥ भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥४॥१॥४०॥ आसा महला ५ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥ १ ॥ निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥ जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥ ३ ॥ संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥ आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥ १ ॥ गोविंद भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥ २ ॥ उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥ अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥ ३ ॥ कूड़ि कपटि बंचि निंमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥ सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ पंच जना लै वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥ १ ॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ रबाबु पखावज ताल घुंगरू अनहद सबदु वजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥ २ ॥ कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥ ३ ॥ जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ आसा महला ५ ॥ अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥ १ ॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥ २ ॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु

नैन दिखालनु धाइआ रे ॥ ३ ॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥ ४ ॥ ५ ॥४४॥ आसा महला ५ ॥ बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥ १ ॥ गुर सिख राखे गुर गोपाल ॥ काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥ २ ॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साध संगि दुख नाठे ॥ छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमल गाठे ॥ ३ ॥ अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥ आसा महला ५ ॥ जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥ १ ॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥ ३ ॥ जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥ आसा महला ५ ॥ अंम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महारसु जनहि पीओ ॥ जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत मै जीओ ॥ सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साध संगु एहु काजु तुम आपि कीओ ॥ दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥ २ ॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ ॥ करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥ ३ ॥ धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ धंनु सु कलिजुगु साध संगि कीरतनु

गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥ आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अंमृतु मुखि नामु दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥ २ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥ ३ ॥ गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ सरणि पइआ नानक सोहेला ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४८ ॥ आसा महला ५ ॥ तूं विसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥ अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥ १ ॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥ १ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥ २ ॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥ ३ ॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥ आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी साध संगि हरि पाईऐ ॥ खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥ १ ॥ मिलउ परीतम सुआमी अपने सगले दूख हरउ रे ॥ पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अंमृतु हरि रसना ॥ २ ॥ तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ ॥ गुरपरसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५० ॥ आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा

आलसु कहा गइओ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥ सुरि नर देव असुर त्रैगुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥ १ ॥ दावा अगनि बहुतु तृण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥ २ ॥ काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥ ४ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥ लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥ १ ॥ कवन बनी री तेरी लाली ॥ कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥ २ ॥ तूं सतवंती तूं परधानि ॥ तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥ ३ ॥ प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥ कहु नानक सुभ द्रसटि निहाल ॥ ४ ॥ सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥ प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥ आसा महला ५ ॥ दूखु घनो जब होते दूरि ॥ अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥ १ ॥ चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ काणि कढन ते छूटि परी ॥ २ ॥ मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥ ३ ॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥ आसा महला ५ ॥ साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥ १ ॥ बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुख की बात सगल सिउ करता ॥ जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥ २ ॥ दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ सगल चरन की इहु मनु राला ॥ ३ ॥ नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि

बाहरि एकु दिखाइग्रा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ पावतु रलीग्रा जोबनि बलीग्रा ॥ नाम बिना माटी संगि रलीग्रा ॥ १ ॥ कान कुंडलीग्रा बसत्र ग्रोढलीग्रा ॥ सेज सुखलीग्रा मनि गरबलीग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीग्रा सिरि कनिक छतरीग्रा ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीग्रा ॥ २ ॥ रूप सुंदरीग्रा ग्रनिक इसतरीग्रा ॥ हरि रस बिनु सभि सुग्राद फिकरीग्रा ॥ ३ ॥ माइग्रा छलीग्रा बिकार बिखलीग्रा ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइग्रलीग्रा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ एकु बगीचा पेड घन करिग्रा ॥ ग्रंमृत नामु तहा महि फलिग्रा ॥ १ ॥ ऐसा करहु बीचारु गिग्रानी ॥ जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥ ग्रासि पासि बिखूग्रा के कुंटा बीचि ग्रंमृतु है भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंचन हारे एकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत डाली ॥ २ ॥ सगल बनसपति ग्राणि जड़ाई ॥ सगली फूली निफल न काई ॥ ३ ॥ ग्रंमृत फलु नामु जिनि गुर ते पाइग्रा ॥ नानक दास तरी तिनि माइग्रा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिग्रा तेरा कीरतनु गाई ॥ १ ॥ सरब सुखा बने तेरै ग्रोल्है ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥ २ ॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी ॥ परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥ ३ ॥ जा कउ मिलिग्रो नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ ता माइग्रा राते ॥ १ ॥ सो ग्रसथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुंन बीचार ॥ नरकि सुरगि फिरि फिरि ग्रउतार ॥ २ ॥ गिरसत महि चिंत उदास ग्रहंकार ॥ करम करत जीग्र कउ जंजार ॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि ग्राइग्रा ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइग्रा ॥ ४ ॥ साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ इहु ग्रसथानु गुरू ते पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥ १ ॥ सगल सूख जां तूं चिति ग्रावैं ॥

सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥ २ ॥ हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥ ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५९ ॥ आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाईं ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥ १ ॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाईं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्हउ खाईं ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥ २ ॥ मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥ तुम्हरै लवै न कोऊ लाईं ॥ ३ ॥ कहु नानक नित इवै धिआईं ॥ गति होवै संतह लगि पाईं ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥ आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १ ॥ स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा ॥ जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥ १ ॥ रहाउ कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥ २ ॥ दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥ आसा महला ५ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ भई कलिआण दूख होवत नासु ॥ १ ॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ २ ॥ पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ ३ ॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६२ ॥ आसा महला ५ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥ १ ॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥ २ ॥ जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥ ३ ॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥ आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरिनामु

सम्हारउ ॥ १ ॥ राम रामा रामा गुन गावउ ॥ संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सगग्री जा कै सूति परोई ॥ घट घट अंतरि रविआ सोई ॥ २ ॥ ओपति परलउ खिन महि करता ॥ आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥ ३ ॥ करन करावन अंतरजामी ॥ अनंद करै नानक का सुआमी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥ आसा महला ५ ॥ कोटि जनम के रहे भवारे ॥ दुलभ देह जीती नही हारे ॥ १ ॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ भए पुनीत संतन की धूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के संत उधारन जोग ॥ तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥ २ ॥ मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ तृसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥ आसा महला ५ ॥ मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥ १ ॥ सूख सहज आनंदु घना ॥ गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥ २ ॥ गुर पूरे के चरण गहे ॥ कोटि जनम के पाप लहे ॥ ३ ॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ६६ ॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ गुर के चरन केस संगि झारे ॥ १ ॥ जागु रे मन जागनहारे ॥ बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ २ ॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥ ३ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥ आठ पहर नानक गुर जापि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥ आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख ॥ अपनी खेती आपे राख ॥ १ ॥ जत कत पेखउ एकै ओही ॥ घट घट अंतरि आपे सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥ सोई गुपतु सोई आकारु ॥ २ ॥ सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥ अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ६८ ॥ आसा महला ५ ॥ उकति सिआनप किछू न जाना ॥

दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥ १ ॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ करन करावन हार प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥ २ ॥ जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥ ३ ॥ किछु न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥ ४ ॥ १८ ॥ ६९ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥ जपत जपत भए दीन दइआला ॥ १ ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै ॥ जनम मरण का दूखु निवारै ॥ २ ॥ हिरदै सम्हालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ ३ ॥ कहु नानक जो राचै नाइ ॥ हरि माला ता कै संगि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥ आसा महला ५ ॥ जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥ तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥ तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥ २ ॥ नामु निधानु जा के मन माहि ॥ तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥ आसा महला ५ ॥ जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा ॥ तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥ १ ॥ सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥ फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥ २ ॥ सोई सति सति है सोइ ॥ सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥ ३ ॥ कहु नानक कउन उह करमा ॥ जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२ ॥ आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥ हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥ १ ॥ सोइ रहे माइआ मद माते ॥ जागत भगत सिमरत हरि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥ २ ॥ बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा ॥ मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ ईहा सुखु

आगै गति पाई ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥ आसा महला ५ ॥ तूं मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥ १ ॥ तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥ २ ॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु मै तेरा ताणु ॥ ३ ॥ अनदिनु जपउ नाम गुण तासि ॥ नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥ आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥ को मूआ का कै घरि गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥ २ ॥ त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥ आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥ १ ॥ प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ प्रभ मिलबे की लालसा ताते आलसु कहा करउ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर महि अंम्रितु आणि निसारिओ ॥ खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥ २ ॥ सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥ ३ ॥ साध संगि मिटे भरम अंधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६ ॥ आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे ॥ जम कंकर नसि गए बिचारे ॥ १ ॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥ २ ॥ दरस तेरे की पिआस मन लागी ॥ सहज अनंद बसै बैरागी ॥ ३ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि दीजै ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥ आसा महला ५ ॥ मनु तृपतानो मिटे जंजाल ॥ प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥ १ ॥ संत प्रसादि भली बनी ॥ जा कै गृह सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु द्रिड़ाइआ साध कृपाल ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल ॥ २ ॥ ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई सांति ॥ ३ ॥ मिटि गई भाल

मनु सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ भोजन पूरन रहे अघाई ॥ १ ॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥ २ ॥ जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥ ३ ॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ कहु नानक नाही तिन कामी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७९ ॥ आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ मिटि गई गणत बिनासिओ संसा ॥ नामि रते जन भए भगवंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥ २ ॥ जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ तां पूरन होई मनसा मेरी ॥ ३ ॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा भरवासा ॥ ४ ॥ २९ ॥ ८० ॥ आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥ १ ॥ सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रुम की छाइआ निहचल गृहु बांधिआ ॥ काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥ २ ॥ बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥ ३ ॥ साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ८१ ॥ आसा महला ५ दुतुके ९ ॥ उन कै संगि तू करती केल ॥ उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥ १ ॥ ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन्ह कै संगि तू गृह महि माहरि ॥ उन्ह कै संगि तूं होई है जाहरि ॥ उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥ २ ॥ उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥ उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥ उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ ओसु बिना तूं होई है माटी ॥ ३ ॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥ आसा महला ५

॥ ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥ १ ॥ अवरु न कीऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ ओसु अनंदु त हम सद केला ॥ २ ॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न हम कउ तृसना ॥ जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥ ३ ॥ हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगै पाछै एको सोई ॥ नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३ ॥ आसा महला ५ ॥ अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥ २ ॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥ ३ ॥ निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥ भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ साध संगि नानक बखसिंद ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ८४ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥ १ ॥ सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट घट आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥ २ ॥ प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥ प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥ ३ ॥ आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु क्रिपाल तिसु साध संगि घूलै ॥ कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ॥ ८५ ॥ आसा महला ५ ॥ भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ करि करि अनरथ

विहाझी माइआ ॥ संचत संचत थैली कीन्ही ॥ प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥ १ ॥ काच गगरीआ अंभ मझरीआ ॥ गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥ चीति न आइओ करता संगा ॥ लसकर जोड़े कीआ संबाहा ॥ निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥ २ ॥ ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥ हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥ ३ ॥ जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ८६ ॥ आसा महला ५ ॥ इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥ १ ॥ जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ बाटि घाटि गृहि बनि बनि जोहै ॥ मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥ गुरप्रसादि मै खोटी डीठी ॥ २ ॥ अगरक उसके वडे ठगाऊ ॥ छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ मेली अपने उनि ले बांधे ॥ गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥ ३ ॥ अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥ भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥४॥३६॥८७॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै ॥ प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ एकु नामु संतन आधारु ॥ होइ रहे सभ की पग छारु ॥ १ ॥ संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ उआ की महिमा कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नाम ॥ अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ २ ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ सूरबीर बचन के बली ॥ कउला बपुरी संती छली ॥ ३ ॥ ता का संगु बाछहि सुर देव ॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ८८ ॥ आसा महला ५ ॥ सगल सूख जपि एकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र

साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥ १ ॥ गुरप्रसादि ओइ आनंद पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिम्रति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साध संगति जा कै हरि हरि नामु ॥ २ ॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥ ३ ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पए सरणाइ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥ आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाइ सु गिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥ १ ॥ सालगिरामु हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बंदन देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै ॥ २ ॥ घटि घटि संपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥ आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥ ३ ॥ जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन ओहु आइओ सरना ॥ हाथ चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥ आसा महला ५ पंचपदा[1] ॥ जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥ १ ॥ सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते बाट ॥ २ ॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥ ३ ॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता कै अनहद तूरा ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥ आसा महला ५ दुपदा ॥ १ ॥ साधू संगि सिखाइओ नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ बुझि गई तृसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥ १ ॥ करन करावन सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ लाल जवेहर भरे भंडार ॥ तोटि न ग्रावै जपि निरंकार ॥ ग्रंमृतु सबदु पीवै जनु कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ २ ॥ ४१ ॥ ९२ ॥ ग्रासा घरु ७ महला ५ ॥ हरि का नामु रिदै नित धिग्राई ॥ संगी साथी सगल तरांई ॥ १ ॥ गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीग्रा मीठा लागै ॥ हरिनामु पदारथु नानकु मांगै ॥ २ ॥ ४२ ॥ ९३ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ साधू संगति तरिग्रा संसारु ॥ हरि का नामु मनहि ग्रधारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुरदेव पिग्रारे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिग्रारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मसतकि लिखिग्रा भागु ॥ कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥ २ ॥ ४३ ॥ ९४ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ मीठी ग्रागिग्रा पिर की लागी ॥ सउकनि घर की कंति तिग्रागी ॥ प्रिग्र सोहागनि सीगारि करी ॥ मन मेरे की तपति हरी ॥ १ ॥ भलो भइग्रो प्रिग्र कहिग्रा मानिग्रा ॥ सूखु सहजु इसु घर का जानिग्रा ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी प्रिग्र खिजमतदार ॥ ग्रोहु ग्रबिनासी ग्रगम ग्रपार ॥ ले पखा प्रिग्र झलउ पाए ॥ भागि गए पंच दूत लावे ॥ २ ॥ ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ किग्रा जाना किउ भानी कंत ॥ मोहि ग्रनाथ गरीब निमानी ॥ कंत पकरि हम कीनी रानी ॥ ३ ॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ कहु नानक मोरी पूरन ग्रासा ॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ९५ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि ॥ बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥ १ ॥ ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ उनि सभु जगु खाइग्रा हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउली सभु जगु जोहिग्रा ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिग्रा ॥ गुरमुखि नामि लगे से सोहिग्रा ॥ २ ॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥ ३ ॥ माइग्रा मोहि सभो जगु बाधा ॥ हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९६ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ सरब दूख जब बिसरहि सुग्रामी ॥ ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥ १ ॥ संत तृपतासे हरि

हरि ध्याइ ॥ करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ कलमल दोख सगल परहरिआ ॥ १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परमगति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर ॥ मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥ ३ ॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ आसा महला ५ ॥ गावि लेहि तू गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥ १ ॥ सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति सभ सहजि समाही ॥ जा की बखस न मेटै कोई ॥ मनि वासाईऐ साचा सोई ॥ २ ॥ सगल समग्री गृह जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ सासि सासि सो गुननिधि गाईऐ ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ १९ ॥ आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ मन सगल कउ होआ सूखु ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ मन चिंतत सगले फल पाए ॥ अगनि बुझी सभ होई सांति ॥ करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ अंमृत बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि पाई

प्रभ सरना ॥ गुर नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ सो जनु होआ सदा निहाला ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥ आसा महला ५ ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे साहिब कै मनि भावै ॥ २ ॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥ आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥ १ ॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुर देव ॥ पूरन होई सेवक सेव ॥ २ ॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

आसा घरु ८ काफी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मै बंदा बैखरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥ ३ ॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥ आसा महला ५ ॥ सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागठु सचा सोइ

है जिसु हरि धनु अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥ २ ॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सतसरु ॥ ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥ ३ ॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥ आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥ १ ॥ हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी ॥ सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥ २ ॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥ ३ ॥ बेद कतेब संसार हभाहूं बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥ आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥ १ ॥ तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ तूं सभना के नाथ तेरी स्रिसटि सभ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम बिहूनड़िआ से मरनि विसूरि विसूरि ॥ २ ॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिन्हा गउणु ॥ विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥ ३ ॥ जैसे पसु हरिआउ तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १०६ ॥ आसा महला ५ ॥ हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥ १ ॥ आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥ २ ॥ जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥ ३ ॥ तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०७ ॥ आसा महला ५ ॥ जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ १ ॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिंन्हखे ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥ २ ॥

जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ ॥ प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥ ३ ॥ दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥ आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥ १ ॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥ ३ ॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०९ ॥ आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ कितीं इतु दरीआइ वंञनि वहदिआ ॥ १ ॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥ आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥ २ ॥ कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥ ३ ॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥४॥८॥११०॥ आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥ १ ॥ मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥ हरि कीरतन आधारु निहचलु एहु धनो ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥ ३ ॥ सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गंभीरे ॥ आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥४॥९॥१११॥ आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥ २ ॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि

॥ सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥ ३ ॥ सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥ आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥ होइ कृपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥ १ ॥ आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ मिथिआ मोहु संसारु झूठ विणसणा ॥ २ ॥ चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥ धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥ ४ ॥ ११ ॥ ११३ ॥ आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥ अंमृत नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥ १ ॥ ततु बीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥ २ ॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥ ३ ॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखलीपति कमली ॥ राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइआ आरंभु रचाइआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥ ३ ॥ नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥ आसा महला ५ ॥ जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नाही

अउरु को ना का भउ करीऐ ॥ गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥ २ ॥ द्रसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥ ४ ॥ १४ ॥ ११६ ॥ आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ताका कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥ १ ॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वे परवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥ २ ॥ सखी सहेरी संग की सुमति द्रड़ावउ ॥ सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥ ३ ॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि वसेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥ आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु आचारा सिखु री ॥ सगल गुणागुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ १ ॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरिनामि मजीठै रंगि री ॥ तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥ २ ॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥ ३ ॥ तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८ ॥ आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥ १ ॥ ओइ बिखादी दोखीआ ॥ ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥ २ ॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥ ३ ॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९ ॥ आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे आपणा नाउ ॥

१ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ ॥ गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥ २ ॥ पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥ ३ ॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥

आसा घरु ९ महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥ १ ॥ हउ मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥ २ ॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ ता की सरणि सतिपुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साध संगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥ आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥ १ ॥ अवर बिसारी बिसारी ॥ नामु दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥ नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥ २ ॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥ जिस नो

तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥ पुत्र कलत्र गृह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥ १ ॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ द्रसटि देखु जैसे हरि चंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतक धाईऐ अंति ओर को आहा ॥ २ ॥ जैसे अंभ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥ ३ ॥ रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥४॥१॥१२३॥
आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥ १ ॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख संपति हरिनाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥ २ ॥ आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥ एकु बोलु भी खवतो नाही साध संगति सीतलई ॥ ३ ॥ एक जीअ गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥४॥२॥१२४॥
आसा महला ५ ॥ रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ ससत वखरु तूं घिनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥ १ ॥ सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥ २ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२५ ॥ आसा महला ५ ॥ मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अहंबुधि भए आंधे ॥ १ ॥ मन बैरागी किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि

तूं बसता संगि सगल बिखै की बिग्राधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै ग्ररजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥ २ ॥ काम क्रोध ग्ररु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥ ३ ॥ जउ भइग्रो क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिग्रावउ मारि काढी सगल उपाधे ॥ ४ ॥ इउ जपिग्रो भाई पुरखु बिधाते ॥ भइग्रो क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२६ ॥ ग्रासा महला ५ ॥ निमख काम सुग्राद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥ १ ॥ ग्रंधे चेति हरि हरि राइग्रा ॥ तेरा सो दिनु नेड़ै ग्राइग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पलक द्रसटि देखि भूलो ग्राक नीम को तूंमरु ॥ जैसा संगु बिसीग्रर सिउ है रे तैसो ही इहु पर गृहु ॥ २ ॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही ग्रमाना ॥ छोडि जाहि तिनही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥ ३ ॥ सगल संसारु इहै बिधि बिग्रापिग्रो सो उबरिग्रो जिसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिग्रो भए पुनीत सरीरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥ ग्रासा महला ५ दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिग्रो मूड़ मुगध मुकरानी ॥ ग्राप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ प्रभ मेरे सभ बिधि ग्रागै जानी ॥ भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीग्र की मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु जितु लाए तितु तितु लागे किग्रा को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुग्रामी नानक सद कुरबानी ॥२॥ ६ ॥१२८॥ ग्रासा महला ५ ॥ ग्रपुने सेवक की ग्रापे राखै ग्रापे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ ग्रावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो ग्रपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिग्रा तिसु नानक परसणि ग्रावै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२९ ॥

ग्रासा घरु ११ महला ५

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ नटूग्रा भेख दिखावै बहु

विधि जैसा है ओहु तैसा रे॥ अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे॥ १ ॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे॥ साध संगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥ १ ॥ रहाउ॥ त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे॥ घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ २ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे॥ सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥ आसा महला ५ दुपदे॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे॥ नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥ १ ॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे॥ खिन महि थापि उथापन हारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रम भउ मेटि लिखावउ रे॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे॥ १ ॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे॥ जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥ १ ॥ रहाउ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे॥ कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साध संगति कै झली रे ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥ आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥ १ ॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साध संगि नानक पीकी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥ आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंम्रित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥ १ ॥ खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरिहारी रे॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥ आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥ चालत बैसत सोवत हरिजसु मनि तनि चरन खटानी

॥ २ ॥ हउं हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥

राग़ु आसा महला ५ घरु १२

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥ एक साचे नाम बाभहु सगल दीसै छारु ॥ १ ॥ सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥ गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ महा भउजलु लंघीऐ सदा हरिगुण गाउ ॥ २ ॥ जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जमपुरि होइ ॥ नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥ ३ ॥ एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ नानक जपीऐ मिलि साध संगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥ आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥ १ ॥ मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥ ३ ॥ चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥ आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥ खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥ २ ॥ मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥ चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥ सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥ आसा महला ५ ॥ उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥ १ ॥ मन महि राम नामा जापि ॥ करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ

सहाई आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥ २ ॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभू मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरिजन धूरि ॥ भाइ भगति भरम भाउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३९॥ आसा महला ५ ॥ अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरिनामु ॥ १ ॥ कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ सृसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥ २ ॥ सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ अहिकरु करे सु अहिकरु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥ ३ ॥ हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥४॥५॥१४०॥

रागु आसा महला ५ घरु १३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥ १ ॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥ २ ॥ कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरिदुआरे ॥ ३ ॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥ आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥ १ ॥ मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥ अंमृतु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥ ३ ॥ करि किरपा राखे सतिसंगे नानक सरणि आहे ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥ आसा महला ५ तिपदे ॥ ओहा प्रेम पिरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥ १ ॥ राजन भागन हुकमन सादन ॥ किछु किछु न चाही ॥ २ ॥

चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥ आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥ १ ॥ कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥ २ ॥ संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ ओहु सहजि सुहेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥ १ ॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥ २ ॥ अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥ ३ ॥ ५ ॥ १४५ ॥ आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइओ आहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥ १ ॥ एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥ २ ॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥ आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि संतन पावे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥ १ ॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥ २ ॥ दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥ आसा महला ५ ॥ एकु सिमरि मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥ १ ॥ प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥ २ ॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८ ॥ आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥ १ ॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ २ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥

आसा महला ५ घरु १४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ओहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो प्रभ

भावै जनमि न आवै ॥ हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥ १ ॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥ २ ॥ १ ॥ १५० ॥ आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम्ह बिनु धीरजु को न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुम्हरे दरस बिनु सुखु नाही ॥ १ ॥ वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥ २ ॥ २ ॥ १५१ ॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥ १ ॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥ २ ॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥ ३ ॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥ आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए ॥ साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर वजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविद सिउ ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥ १ ॥ गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम्ह बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥ आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥ १ ॥ संत संगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥ आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि गोबिंद

नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ मन संतना कै चरनि लागु ॥ १ ॥ प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ करि भगति नानक पूरन भागु ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥ आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन हूं भै निर भै खिन हूं खिन हूं उठि धाइओ ॥ खिन हूं रस भोगन खिन हूं खिन हूं तजि जाइओ ॥ १ ॥ खिन हूं जोग ताप बहु पूजा खिन हूं भरमाइओ ॥ खिन हू किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥ २ ॥ ५ ॥ १५६ ॥

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गोबिंद गोबिंद करि हां ॥ हरि हरि मनि पिआरि हां ॥ गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥ अन सिउ तोरि फेरि हां ॥ ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंकज मोह सरि हां ॥ पगु नही चलै हरि हां ॥ गहडिओ मूड़ नरि हां ॥ अनिन उपाव करि हां ॥ तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥ १ ॥ थिर थिर चित थिर हां ॥ बनु गृहु समसरि हां ॥ अंतरि एक पिर हां ॥ बाहरि अनेक धरि हां ॥ राजन जोगु करि हां ॥ कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥ २ ॥ १ ॥ १५७ ॥ आसावरी महला ५ ॥ मनसा एक मानि हां ॥ गुर सिउ नेत धिआनि हां ॥ दृड़ु संत मंत गिआनि हां ॥ सेवा गुर चरानि हां ॥ तउ मिलीऐ गुर कृपानि मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे अन भरानि हां ॥ रविओ सरब थानि हां ॥ लहिओ जम भइआनि हां ॥ पाइओ पेड थानि हां ॥ तउ चूकी सगल कानि ॥ १ ॥ लहनो जिसु मथानि हां ॥ भै पावक पारि परानि हां ॥ निज घरि तिसहि थानि हां ॥ हरि रस रसहि मानि हां ॥ लाथी तिस भुखानि हां ॥ नानक सहजि समाइओ रे मना ॥ २ ॥ २ ॥ १५८ ॥ आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हां ॥ जपीऐ सहज धुनी हां ॥ साधू रसन भनी हां ॥ छूटन बिधि सुनी हां ॥ पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हां ॥ सब का प्रभ धनी हां ॥ दुलभ कलि दुनी हां ॥ दूख बिनासनी हां ॥ प्रभ

पूरन आमनी मेरे मना ॥ १ ॥ मन सो सेवीऐ हां ॥ अलख अभेवीऐ हां ॥ तां सिउ प्रीति करि हां ॥ बिनसि न जाइ मरि हां ॥ गुर ते जानिआ हां ॥ नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५९॥ आसावरी महला ५ ॥ एका ओट गहु हां ॥ गुर का सबदु कहु हां ॥ आगिआ सति सहु हां ॥ मनहि निधानु लहु हां ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवत जो मरै हां ॥ दुतरु सो तरै हां ॥ सभ की रेनु होइ हां ॥ निरभउ कहउ सोइ हां ॥ मिटे अंदेसिआ हां ॥ संत उपदेसिआ मेरे मना ॥ १ ॥ जिसु जन नाम सुखु हां ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥ जो हरि हरि जसु सुने हां ॥ सभु को तिसु मंने हां ॥ सफलु सु आइआ हां ॥ नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥ २ ॥ ४ ॥ १६० ॥ आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥ परमपदु पाईऐ हां ॥ उआ रस जो बिधे हां ॥ ता कउ सगल सिधे हां ॥ अनदिनु जागिआ हां ॥ नानक बडभागिआ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत पग धोईऐ हां ॥ दुरमति खोईऐ हां ॥ दासह रेनु होइ हां ॥ बिआपै दुखु न कोइ हां ॥ भगतां सरनि परु हां ॥ जनमि न कदे मरु हां ॥ असथिरु से भए हां ॥ हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥ १ ॥ साजनु मीतु तूं हां ॥ नामु द्रिड़ाइ मूं हां ॥ तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ मनहि अराधि सोइ हां ॥ निमख न वीसरै हां ॥ तिसु बिनु किउ सरै हां ॥ गुर कउ कुरबानु जाउ हां ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१ ॥ आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हां ॥ अवरु न सूझै मूं हां ॥ करहि सु होईऐ हां ॥ सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ धीरज मनि भए हां ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हां ॥ पूरन संजमे हां ॥ जब ते छुटे आप हां ॥ तब ते मिटे ताप हां ॥ किरपा धारीआ हां ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुखु जानीऐ हां ॥ हरि करे सु मानीऐ हां ॥ मंदा नाहि कोइ हां ॥ संत की रेन होइ हां ॥ आपे जिसु रखै हां ॥ हरि अंम्रितु सो चखै मेरे मना ॥ २ ॥ जिस का नाहि कोइ हां ॥ तिस का प्रभू सोइ हां ॥ अंतरगति बुझै हां ॥ सभु किछु तिसु सुझै हां ॥ पतित उधारि लेहु हां ॥ नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥ आसावरी महला ५ इक तुका ॥

ओइ परदेसीआ हां ॥ सुनत संदेसिआ हां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि रहे हां ॥ सभ कउ तजि गए हां ॥ सुपना जिउ भए हां ॥ हरि नामु जिन्हि लए ॥ १ ॥ हरि तजि अन लगे हां ॥ जनमहि मरि भगे हां ॥ हरि हरि जनि लहे हां ॥ जीवत से रहे हां ॥ जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ नानक भगतु सोइ ॥ २ ॥ ७ ॥ १६३ ॥ २३२ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ९ ॥ बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ लोभि ग्रसिओ दसहू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेत बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनमु अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ बकै न बोलै हरिगुण गावै ॥ जलु आकासी सुंनि समावै ॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु व्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ पारसु परसि परम पदु पावै ॥ २ ॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥ सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ जै सिउ राता तैसो होवै ॥ आपे करता करे सु होवै ॥ ३ ॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥ ४ ॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥ ५ ॥ रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ तखत निवासी पंच समाइ ॥ कार कमाई खसम रजाइ ॥ अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥ ६ ॥ जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देखि

हदूरि ॥७॥ अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा आधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ उझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ नाम बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ गुरमती इकि भए उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ माइआ मोहु गुरसबदि जलाए ॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सिख संगति करमि मिलाए ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ नदरि करे संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥ ७ ॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ नानक धंनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुर सुखदाता अवरु न भालि ॥ हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥३॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछै बखसे आपि ॥४॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी

गहीरु ॥ सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिम्रानी विरला म्राचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै म्रहंकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीम्रा सुखीम्रा जनु कोइ ॥ जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलि भारि म्रफारु ॥ म्रटल म्रछलु गुरमती धारु ॥ भाइ मिलै भावै भइ कारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥ म्रासा महला १ ॥ एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥ १ ॥ कउणु मरै कउणु रोवै म्रोही ॥ करण कारण सभसै सिरि तोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ सो रोवै जिसु वेदन होइ ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ म्रापे करता करे सु होइ ॥ २ ॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परमगति सरणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥ ३ ॥ निरभउ म्रापि निरंतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किम्रा कहि रोति ॥ जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥ ४ ॥ मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजि सु चीत ॥ तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥ ५ ॥ भीतरि एकु म्रनेक म्रसंख ॥ करम धरम बहु संख म्रसंख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥ ६ ॥ म्रापि मरै मारे भी म्रापि ॥ म्रापि उपाए थापि उथापि ॥ सृसटि उपाई जोति तूं जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥ ७ ॥ सूतकु म्रगनि भखै जगु खाइ ॥ सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुरपरसादी हरि रसु पीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ रागु म्रासा महला १ ॥ म्रापु वीचारै सु परखे हीरा ॥ एक द्रसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥ १ ॥ ऐसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि एक लिव तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ निरमलु साचि रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥ २ ॥ म्रासा मनसा सबदि जलाए ॥ राम नराइणु कहै कहाए ॥ गुर ते

हदूरि ॥७॥ अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा आधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ उझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ नाम बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ गुरमती इकि भए उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ माइआ मोहु गुरसबदि जलाए ॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सिख संगति करमि मिलाए ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ नदरि करे संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥७॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ नानक धंनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुर सुखदाता अवरु न भालि ॥ हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥३॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछै बखसे आपि ॥४॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी

गहीरु ॥ सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी विरला आचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलि भारि अफारु ॥ अटल अछलु गुरमती धारु ॥ भाइ मिलै भावै भइ कारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥ आसा महला १ ॥ एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥ १ ॥ कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ करण कारण सभसै सिरि तोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ सो रोवै जिसु वेदन होइ ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ आपे करता करे सु होइ ॥ २ ॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परमगति सरणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥ ३ ॥ निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥ ४ ॥ मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजि सु चीत ॥ तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥ ५ ॥ भीतरि एकु अनेक असंख ॥ करम धरम बहु संख असंख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥ ६ ॥ आपि मरै मारे भी आपि ॥ आपि उपाए थापि उथापि ॥ सृसटि उपाई जोति तूं जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥ ७ ॥ सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुरपरसादी हरि रसु पीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ रागु आसा महला १ ॥ आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ एक द्रसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥ १ ॥ ऐसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि एक लिव तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ निरमलु साचि रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥ २ ॥ आसा मनसा सबदि जलाए ॥ राम नराइणु कहै कहाए ॥ गुर ते

वाट महलु घरु पाए ॥ ३ ॥ कंचन काइआ जोति अनूपु ॥ त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥ मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥ ४ ॥ पंच तीनि नव चारि समावै ॥ धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५ ॥ मूरखु होइ न आखी सूझै ॥ जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥ ६ ॥ ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥ ७ ॥ हीरा नामु जवेहर लालु ॥ मनु मोती है तिस का मालु ॥ नानक परखै नदरि निहालु ॥ ८ ॥ ५ ॥ आसा महला १ ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥ १ ॥ ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहिनिसि निरमलु थानि सु थानु ॥ तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥ २ ॥ साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ अंमृतु गिआनु महा रसु भोगु ॥ पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥ ३ ॥ सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ ४ ॥ ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥ ५ ॥ बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥ ६ ॥ जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ गलि फाही बउरा बउराना ॥ ७ ॥ बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥ ८ ॥ ६ ॥ आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते ॥ राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥ १ ॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥ २ ॥ अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥ ३ ॥ निरंकार महि आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥ ४ ॥ जहां नामु

मिले तह जाउ ॥ गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरिगुण गाउ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अंम्रित नामु वसिआ सुखदाता ॥ अनदिनु बाणी नामे राता ॥ ६ ॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ हउमै मारे सबदे जागै ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥ ७ ॥ मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥ ८ ॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइ निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरिनामु प्रगासु ॥ ९ ॥ करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी एको जाता ॥ नानक रामनामि मनु राता ॥ १० ॥ ७ ॥ आसा महला १ ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बनखंडि माइआ मोहि हैराना ॥ इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥ १ ॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥ इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥ गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥ इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥ ४ ॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥ दरि घरि महली हरि पति राखै ॥ ५ ॥ इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥ हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥ ६ ॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥ अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥ ७ ॥ इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ अहिनिसि हरि जसु गुरपरसादि ॥ घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥ ८ ॥ राम रसाइणि इहु मनु माता ॥ सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ भगति हेत गुर चरण निवासा ॥ नानक हरि जन के दासनि

दासा ॥ ६ ॥ ८ ॥ आसा महला १ ॥ तनु बिनस धनु का को कहीऐ ॥ बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ राम नाम धनु संगि सखाई ॥ अहिनिसि निरमलु हरि लिवलाई ॥ १ ॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥ २ ॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥ ३ ॥ अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥ ४ ॥ रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ आदि पुरख गुर दरसन देखहि ॥ विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥ ५ ॥ देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ तुम समसरि अवरु को नाही ॥ ६ ॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥ बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥ ७ ॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ जो जनु रामनामि लिव जागै ॥ भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ नानक मुकति भए हरि रंगि ॥ ८ ॥ ९ ॥ आसा महला १ इक तुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥ १ ॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता संसारि ॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥ २ ॥ बंधन करम धरम हउ कीआ ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥३॥ बंधन किरखी करहि किरसान ॥ हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥ ४ ॥ बंधन सउदा अणवीचारी ॥ तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥ ५ ॥ बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥ ६ ॥ बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ बंधनि बिनसै मोह विकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥ ८ ॥ १० ॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥ महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ जो तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥ अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥ साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥ इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥ ११ ॥

आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥ १ ॥ इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ थान मुकाम जले विज मंदर

मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥ ५ ॥ इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किसथै जाइ रूआईऐ ॥ हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥ कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घरबारा ॥ १ ॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥ पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥ २ ॥ ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥ तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउणु रोई ॥ ३ ॥ धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥ ओहु न सुणाई कतही तुम्ह लोक सुणावहु ॥ ४ ॥ जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥ ॥५॥ जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले ॥ ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥ ६ ॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥ ७ ॥ धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥ ८ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥ ९ ॥ जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥१०॥१३॥आसा महला १ ॥ चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥१॥ दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥ हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ मै इकु नामु न

वीसरै साचे गुर बुधि ॥ २ ॥ जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ गुर का सबदु न चीनही ततु सारु निरंतर ॥ ३ ॥ पंडितु पाधे जोइसी नित पड़हि पुराणा ॥ अंतरि वसतु न जाणनी घटि ब्रहमु लुकाणा ॥ ४ ॥ इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥ आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥ ५ ॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥ ६ ॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सुजागे ॥ ७ ॥ गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ ८ ॥ १४ ॥ आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥ १ ॥ तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥ २ ॥ इहु मनु राजा लोभीऐ लुभतउ लोभाई ॥ गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणिआई ॥ ३ ॥ कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥ ४ ॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥ ५ ॥ दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥ ६ ॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥ ७ ॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ नानक नामु न वीसरै मथि अंम्रितु पीआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥ २ ॥ मुइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥ ३ ॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥ ४ ॥

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ हुकमे ही सिरि मार वंदि रवाणीऐ ॥ ५ ॥ लाहा सचु निग्राउ मनि वसाईऐ॥ लिखिग्रा पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥ ६ ॥ मनमुखीग्रा सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ ठगि मुठी कूड़िग्रार बंन्हि चलाईऐ॥ ७॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥ ८॥ नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ॥ मै तुझ बिनु ग्रवरु न कोइ नदरि निहालीऐ॥ ६ ॥ १६ ॥ ग्रासा महला १ ॥ किग्रा जंगल ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीग्रावला॥ सचि टिकै घरि ग्राइ सबदि उतावला ॥ १ ॥ जह देखा तह सोइ ग्रवरु न जाणीऐ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रापि मिलावै सचु ता मनि भावई॥ चलै सदा रजाइ ग्रंकि समावई ॥ २ ॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिग्रा मनि सोई॥ ग्रापे दे वडिग्राईग्रा दे तोटि न होई॥ ३ ॥ ग्रबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै॥ पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै॥ ४ ॥ ग्रापनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले॥ गुरमुखि वसतु पछाणीऐ ग्रपना घरु भाले ॥ ५ ॥ जंमण मरणा ग्राखीऐ तिनि करतै कीग्रा॥ ग्रापु गवाइग्रा मरि रहे फिरि मरणु न थीग्रा॥ ६ ॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई॥ जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई॥ ७॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई॥ नानक साहिबु मनि वसै सची वडिग्राई ॥ ८॥ १७॥ ग्रासा महला १ ॥ जिनी नामु विसारिग्रा दूजै भरमि भुलाई॥ मूलु छोडि डाली लगे किग्रा पावहि छाई ॥ १ ॥ बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई॥ गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी एको सेविग्रा पूरी मति भाई ॥ ग्रादि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥ २ ॥ साहिबु मेरा एकु है ग्रवरु नही भाई ॥ किरपा ते सुखु पाइग्रा साचे परथाई ॥ ३ ॥ गुर बिनु किनै न पाइग्रो केती कहै कहाए ॥ ग्रापि दिखावै वाटड़ी सची भगति दृड़ाए ॥ ४ ॥ मनमुखु जे समझाईऐ भी उजड़ि जाए ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥ ५ ॥ जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ ताकी कीमति न पवै बिनु गुर की सेवै ॥ ६ ॥

जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥७॥ गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए॥ नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए॥ ८ ॥ १८ ॥ आसा महला १ ॥ रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ वडै भागि सतिगुरू मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥ १ ॥ मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥ २ ॥ साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई॥ जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई॥ ३ ॥ आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई॥ ४ ॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै॥ पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥ ५ ॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥ ६ ॥ ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥ गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥ ७ ॥ अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥ ८ ॥ १९ ॥ आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥ १ ॥ नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु॥ साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥ २ ॥ अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई॥ ३ ॥ हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥ ४ ॥ नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ॥ खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥ ५ ॥ जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ ६ ॥ अंम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ तिंना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥ ७ ॥ हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥ ८ ॥ २० ॥ आसा महला १

॥ मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥ लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥ १ ॥ जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥ हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥ २ ॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥ ३ ॥ दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥ ४ ॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥ मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥ ५ ॥ सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥ ६ ॥ सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥ तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥ ७ ॥ तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ ॥ नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥ १ ॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥ १ रहाउ ॥ आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥ २ ॥ संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥ आदि पुरखु अपरंपरा गुरमुखि हरि पाए ॥३॥ नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥ ४ ॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥५॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरिनामु हमारै ॥ राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥ ६ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥ ७ ॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥८॥२२॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सासतु बेदु सिम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥ १ ॥ ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ

॥ तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥ २ ॥ तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ करमु होवै ता परमपदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥ ३ ॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥ ४ ॥ नाम तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥ ५ ॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥ ६ ॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥ ७ ॥ तूं सचा तेरा किआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि तृसना बुझाई ॥ सहजे माता हरिगुण गाई ॥ २ ॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥ ३ ॥ गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै दीसै सचिआरु ॥ ४ ॥ गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी महलु परापति होइ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरिधारे ॥ साची सोभा साचि दुआरे ॥ ६ ॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए॥नामे उधरे कुल सबाए॥७॥नानकु साचु कहै वीचारु॥हरि का नामु रखहु उरधारि॥हरि भगती राते मोख दुआरु॥८॥२॥२४॥आसा महला३॥ आसा आस करे सभु कोई॥ हुकमै बूझै निरासा होई॥आसा विचि सुते कई लोई॥सोजागै जागावै सोई ॥१॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥ नामे तृसना

अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु ॥ एहा भगति चूकै अभिमानु ॥ सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥ जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥ २ ॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥ इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु पाए ॥ ३ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥ आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ सचै सबदि सचि समाए ॥ ४ ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥ ५ ॥ तीनि भवन महि एका माइआ ॥ मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ दृड़ाइआ ॥ बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ ६ ॥ अंमृतु मीठा सबदु वीचारि ॥ अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ नामि रते सदा सचि पिआरि ॥ ७ ॥ हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥ हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥ हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥ नानक नामु गुरमति उर धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ गुर ते सांति ऊपजै जिनि तृसना अगनि बुझाई ॥ गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥ १ ॥ एको नामु चेति मेरे भाई ॥ जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरते गिआनु ऊपजै महा ततु वीचारा ॥ गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥ २ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥ गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥ ३ ॥ गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥ ४ ॥ सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥ निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥ ५ ॥ पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु तां मिलै तां नदरि करेई ॥ किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥ ७ ॥

आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥८॥४॥२६॥ आसा महला ३ ॥ सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥१॥ एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ इसु भगती नो सुरिनर मुनिजन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥२॥ आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥ आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥३॥ जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ मंदा किसनो आखीऐ जे दूजा होई ॥४॥ इको हुकमु वरतदा एका सिरिकारा ॥ आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥५॥ इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ भगति भी ओना नो वखसीअनु अंतरि भंडारा ॥६॥ गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥७॥ घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥८॥५॥२७॥ आसा महला ३ ॥ घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ गुरपरसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥१॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥१॥ रहाउ ॥ हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥ अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥३॥ पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥५॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥६॥ जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥७॥ आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥८॥६॥१८॥ आसा महला ३ ॥

आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥ १ ॥ हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥ २ ॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥ ३ ॥ नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥ ४ ॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥ ५ ॥ बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ ७ ॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमति नामु बुझाई ॥ नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥ फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ १ ॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ गुरपरसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ २ ॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥ ३ ॥ गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥ ४ ॥ सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥ ५ ॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥ ६ ॥ भगति रते से ऊतमां जति पति सबदे होइ ॥ बिनु नावै सभ नीच जांति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ ७ ॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥ आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ ऐथै घरि घरि

जापदे ग्रागै जुगि जुगि परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन रूड़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मैले ग्रति ग्रभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति ग्रपार ॥ २ ॥ बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥ ३ ॥ भै बिनु लागि न लगई न मनु निरमलु होइ ॥ बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥ ४ ॥ जिसनो ग्रापे रंगे सु रपसी सत संगति मिलाइ ॥ पूरे गुर ते सत संगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥ ५ ॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥ ६ ॥ इकि गुण विहाझहि ग्रउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ गुर सेवा ते नाउ पाइग्रा वुठा ग्रंदरि ग्राइ ॥ ७ ॥ सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ॥ नानक नामे लाइ सवारिग्रनु सबदे लए मिलाइ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३१ ॥ ग्रासा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥ बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥ १ ॥ तूं बेग्रंतु दइग्रालु है तेरी सरणाई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिग्राई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रंतरि बाहरि एकु है बहुविधि सृसटि उपाई ॥ हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥ २ ॥ बुझणा ग्रबुझणा तुधु कीग्रा इह तेरी सिरिकार ॥ इकना बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िग्रार ॥ ३ ॥ इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥ ४ ॥ इकि कुचल कुचील विखलीपते नावहु ग्रापि खुग्राए ॥ ना ग्रोन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥ ५ ॥ नदरि करे जिसु ग्रापणी तिस नो भावनी लाए ॥ सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥ ६ ॥ लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै ग्रंतु न पाइ ॥ गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥ ७ ॥ इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति ग्रपारि ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥ ग्रासा महला ३ ॥ सांच रतीग्रा सोहागणी जिना

गुर कै सबदि सीगारि ॥ घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि बीचारि ॥ १ ॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥ २ ॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥ ३ ॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥ ४ ॥ सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥ ५ ॥ सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥ ६ ॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥ ७ ॥ सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिवलाइ ॥ नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥ आसा महला ३ ॥ अंमृतु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहिज सुभाइ ॥ सचा वेपरवाहु है तिसनो तिलु न तमाइ ॥ १ ॥ अंमृतु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा सोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सो कमाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥ ३ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उरधारि ॥ ४ ॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ सेज सुखाली पिरु रवै हउमै तृसना मारि ॥ ६ ॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ ७ ॥ सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥ ८ ॥ १२ ॥ ३४ ॥ आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥ सहजे नामु

धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥ ३ ॥ सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि न सुखु पाइ ॥ ४ ॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ हरिरस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥ १ ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥ ७ ॥ बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंना भरमाइ ॥ बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥ ८ ॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥९॥१३॥३५॥ आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥ २ ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥ ३ ॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥ धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥ ५ ॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥ ६ ॥ जिसनो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥ ८ ॥ भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जिउ

भावै तिउ कारजु सारि ॥ ८॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥ ९ ॥ १४ ॥ ३६ ॥ आसा महला ३ ॥ अनरस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥ १ ॥ ए मन मेरे बावले हरिरसु चखि सादु पाइ ॥ अनरसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिवलाइ ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥ २ ॥ आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥ ३ ॥ बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥ ४ ॥ दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥ ५ ॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥ ६ ॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जमदरि होहि खुआरु ॥ ७ ॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥८॥२२॥१५॥३७॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पंच मनाए पंच रुसाए ॥ पंच वसाए पंच गवाए ॥ १ ॥ इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि ॥ फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥ २ ॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥ ३ ॥ सांति सहज सुख के सभि हाट ॥ साह वापारी एकै थाट ॥४॥ जेजीआ डंनु को लए न जगाति ॥ सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥५॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥६॥ सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥ ७ ॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ अबिचल नगरी नानक देव॥८॥१॥

आसावरी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साध संगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥ १ ॥ मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥ ३ ॥ सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥ ४ ॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥ ५ ॥ चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥ ६ ॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥ ७ ॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥ कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ३६ ॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥ १ ॥ जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥ २ ॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ ३ ॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ ५ ॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥ ६ ॥ हरिरसु जिन्ही चाखिआ पिआरे तृपति रहे आघाइ ॥ ७ ॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरिराइ ॥ १ ॥ सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥ २ ॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥ ३ ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥ ४ ॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ

॥ ५ ॥ साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥ ६ ॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥ ७ ॥ नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥८॥२॥४॥ सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥ १ ॥ तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥ २ ॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥ ३ ॥ जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥ ४ ॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ ५ ॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥ ६ ॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥ ७ ॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ पटी लिखी ॥ ससै सोइ सृसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ सेवत रहे चितु जिन का लागा आइआ तिन का सफलु भइआ ॥ १ ॥ मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥ २ ॥ ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥ ३ ॥ ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥ ४ ॥ ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥ ५ ॥ खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥ ६ ॥ गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥ ७ ॥ घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥ ८ ॥ चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु

ग्रापि थीग्रा ॥ ९ ॥ छछै छाइग्रा वरती ग्रंतरि सभ तेरा कीग्रा भरमु होग्रा ॥ भरमु उपाइ भुलाईग्रनु ग्रापे तेरा करमु होग्रा तिन गुरू मिलिग्रा ॥ १० ॥ जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविग्रा ॥ एको लेवै एको देवै ग्रवरु न दूजा मै सुणिग्रा ॥ ११ ॥ झझै झूरि मरहु किग्रा प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिग्रा ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीग्रा का रिजकु पइग्रा ॥ १२ ॥ ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ एको रवि रहिग्रा सभ थाई एकु वसिग्रा मन माही ॥१३॥ टटै टंचु करहु किग्रा प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूऐ जनमु न हारहु ग्रपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥ १४ ॥ ठठै ठाढि वरती तिन ग्रंतरि हरि चरणी जिन का चितु लागा ॥ चितु लागा सोई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइग्रा ॥१५ ॥ डडै डंफु करहु किग्रा प्राणी जो किछु होग्रा सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिग्रा ॥ १६ ॥ ढढै ढाहि उसारै ग्रापे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥ १७ ॥ णाणै रवतु रहै घट ग्रंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ ग्रापे ग्रापि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥ १८ ॥ ततै तारू भवजलु होग्रा ता का ग्रंतु न पाइग्रा ॥ ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइग्रा ॥ १९ ॥ थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीग्रा सभु होग्रा ॥ किग्रा भरमु किग्रा माइग्रा कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥ २० ॥ ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा ग्रापणिग्रा ॥ जो मै कीग्रा सो मै पाइग्रा दोसु न दीजै ग्रवर जना ॥ २१ ॥ धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीग्रा ॥ तिस दा दीग्रा सभनी लीग्रा करमी करमी हुकमु पइग्रा ॥ २२ ॥ ननै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संम्हलिग्रा ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मैं मिलिग्रा ॥ २३ ॥ पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीग्रा ॥ देखै बूझै सभ किछु जाणै ग्रंतरि बाहरि रवि रहिग्रा ॥ २४ ॥ फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइग्रा ॥ गुरपरसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइग्रा ॥ २५ ॥ बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥

जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥ २६ ॥ भभै भालहि से फलु पावहि गुरपरसादी जिन कउ भउ पइआ ॥ मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥ २७ ॥ मंमै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥ ययै जनमु न होवी कदही जे करि सचु पछाणै ॥ गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥ २९ ॥ रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥ जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥ ३० ॥ ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥ ३१ ॥ ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ ३२ ॥ ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥ ३३ ॥ हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ हरिनामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरिनामु लीआ ॥ ३४ ॥ आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥ ३५ ॥ १ ॥

रागु आसा महला ३ पटी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ ॥ रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥ १ ॥ मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधं ङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥ २ ॥ बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥ ३ ॥ जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥ ४ ॥ तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु

पंडित अखरा नो न सिखालि बिखिआ ॥ पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥ ५ ॥ ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥ ६ ॥ मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥ अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ७ ॥ ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥ ८ ॥ ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥ ९ ॥ पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥ १० ॥ भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥ गुरपरसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥ ११ ॥ ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥ १२ ॥ झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥ १३ ॥ धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥१४॥ गगै गोबिंदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥ १५ ॥ हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥ १६ ॥ रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन कै रवि रहिआ ॥ गुर परसादी जिनी रामु पछाता ॥ निरगुण रामु तिनी बूझि लहिआ ॥ १७ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥१८॥२॥

रागु आसा महला १ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥ धन पिर नेहु घणा रसि

प्रीति दइआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अंमृत भरे ॥ करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ १ ॥ मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥ मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ प्रभ प्रेम राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥ २ ॥ सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ हरिनामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ नानक नदरी धन सोहगणि सबदु अभ साधारए ॥ ३ ॥ हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंमृत फलु पावए ॥ बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुण कारे राम ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुण कारे ॥ १ ॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु विधि जाईऐ राम ॥ सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ नानक सहजि मिले जग जीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ

॥ २ ॥ गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ निरमल जलि नाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥ कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥ नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥ ३ ॥ हउ बनु बनो देखि रही तृणु देखि सबाइआ राम ॥ त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥ माता पित भाई सुत चतुराई संगि न संपै नारे ॥ साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥ २ ॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ आवणु जावणु ठाकि रहाउ गुरमुखि ततु वीचारो ॥ साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसा गुरमति पाई ॥ ३ ॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहिआ जग जीवनो दाता राम ॥ जग जीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु आसा महला १ छंत घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जाका होवै ॥ कोटकोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥ हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जंमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उरधारि जीउ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ २ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥ ३ ॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ तिन जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छंत घरु ३ ॥ तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परता

पए ॥ ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकाए ॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ सचु कहै नानकु चेत रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥ १ ॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥ २ ॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ ॥ संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥ ३ ॥ नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरम भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु १ ॥ हम घरे साचा सोहिआ साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥ कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥ १ ॥ दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥ आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ नानक विणु नावै कामणि

भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ २ ॥ पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥ ३ ॥ साधन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ साधन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥ नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥ साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥ आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥ कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥ १ ॥ मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ हरि सोहिला तिन सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥ इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥ २ ॥ जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥ साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥ साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥ ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ

आए ॥ नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए॥ धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ तिथै अंम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ॥ तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ ४ ॥ मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ गुरपरसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥ मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥ ५ ॥ मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥ ६ ॥ मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥ ७ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ से जन परवाणु होए जिनी इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ इउ कहै नानकु धंनु सुवेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ ८ ॥ इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए॥ दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए॥ तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ तिनकी गति अवगति तूं है जाणहि जिनि इह

रचन रचाई ॥ हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥ ९ ॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५ ॥ २ ॥ ७ ॥

राגु आसा छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥ हरिनामो हरिनामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥ अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥ अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥ खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥ लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुंभ दिखाइआ ॥ खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हआरि भवाइआ ॥ दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥ वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरिनामु लै जाहे ॥ नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥ ३ ॥ रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥ बाणी गुरबाणी लागे तिन हथि चड़िआ राम ॥ गुरबाणी लागे तिन हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इकु वसतु अनूप दिखाई ॥ गुर गोविंदु गोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ आसा महला ४ ॥ झिमि

झिमे झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा राम ॥ गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ हलति पलति रामनामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥ १ ॥ रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ रविआ रामु हिरदै परमगति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ आपि कृपालु कृपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥ २ ॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ तृसना भूख गवाई ॥ मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥ ३ ॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥ ४ ॥ रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥ नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥ ५ ॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥ सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ दुरमति

कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥ सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु रामनामु परगासिआ ॥ नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥ ६ ॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ राम नाम धनु पूंजी संची न डूबै न जाई ॥ राम नामु इसु जुगि महि तुलहा जम कालु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥ ७ ॥ रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥ मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥ दीनानाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥ गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥ ८ ॥ २ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा छंत महला ४ घरु २ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ हरि सेवा भाई परमगति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ १ ॥ हरि नामु पदारथु कलजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरिनामु परम सुखु पाइआ ॥ सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु

जीउ ॥ हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥ आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥ जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुखु पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ ३ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरिनामु वडाई हरिनामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वड भागी हरि रसु पाइआ ॥ से धंनु वडे सतपुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥ आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरिनामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरम धिआनु जीउ ॥ १ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ २ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग पुंन आरंभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ किरिआ करम कमाइआ पगु दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥ महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ दीन दइआलि गुरु साधु

मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ ३ ॥ कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ ॥ हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूल गवाइआ ॥ जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ हरि कीरति मनि भाई परमगति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ २ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरिरसु होइ जीउ ॥ हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ अवरु न कोइ हरि अंमृतु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ सत संगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ ३ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ मोह चीकड़ि

फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभु पकराइ जीउ ॥ प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥ हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥ आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ जो जन मरि जीवे तिन अंम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ १ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ मनमुख करण पलाव करि भरमे सभ अउखध दारू लाइ जीउ ॥ जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ २ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरै हरि हरि धिआनि जीउ ॥ हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ हरि जन प्रभु रलि एको होए हरिजन प्रभु एक समानि जीउ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ ३ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ गुरु मंत्रु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अंम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ हरि अंम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ

जीउ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ एह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूं आपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ १ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ तिसु रूप न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ २ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूं है वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ ३ ॥ सभु तूं है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूं है करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ गुरमुखि

रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥ जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥ १ ॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सत संगा ॥ ३ ॥ दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥ आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥ १ ॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे॥ ३ ॥ गुर अंमृत भिनी देहुरी अंमृतु बुरके राम राजे॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंमृति छकि छके॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥ आसा महला ४ ॥ हरि अंमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥ १ ॥ सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु

हरि थारा॥जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आसा आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुख किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥ तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥ ३ ॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भांति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोगु हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुर सिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुर सिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि

पूज करावा ॥ २ ॥ गुर सिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुर सिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥ ३ ॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुर सिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुर सिख पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥ आसा महला ४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ॥ तिस की तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥ १ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिना सुखु सद होई ॥ जिना नानक सतिगुरु भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥ जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन हरि राखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि राखणहारा ॥ ३ ॥ हरिजुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआं प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥

आसा महला ४ छंत घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १ ॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि तृसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥

नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरिधारे ॥ २ ॥ पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥ ३ ॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥ ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥ ५ ॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ हरि दातड़े मेलि गुरूमुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखुसा ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥ अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥ गृहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ सीतल आघाणे अंम्रित बाणे साजन संत बसीठा ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥ १ ॥ सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥ २ ॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ गणत मिटाई

चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥ ३ ॥ सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा महला ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥ १ ॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ वडभागी वडभागी सत संगति पाई राम ॥ वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥ करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥२॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ बिनवंति नानक सरनि तेरी राखु किरपा धारे ॥ ३ ॥ बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ तेरे चरणातेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ हरि धूड़ी नाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा छंत महला ५ घरु ४   १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा

राम राजे ॥ मिलि संत संगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ हरि घटि घटे डीठा अंम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ प्रिअ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥ १ ॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥ हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥ प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥ २ ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ प्रभु पुरखु जग जीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥ ३ ॥ मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ ढाठी भीति भरंम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ हरि मिले नराइण नानका मानोरथु पूरा ॥४॥१॥३॥

आसा महला ५ छंत घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ छंतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नहीं मन ऐसी प्रीति हरे ॥ अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साध संगि न डरपीऐ ॥ करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछ्त दुख हरे ॥ कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ

नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥ १ ॥ जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥ जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ गुर सुप्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा ॥ कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥ २ ॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ अब किआ रंगु लाइओ मोह रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥ ३ ॥ निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ पिरु अपणा पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ आसा महला ५ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ छंत ॥ जाकउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साध संगति होइ गते ॥ १ ॥ कोटि बिसन अवतार संकर जटा धार ॥ चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥ कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥

ग्रनाथ नाथ दइग्राल नानक साध संगति मिलि उधार ॥ २ ॥ कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी ग्रनिक भाति ॥ गुपत प्रगट जा कउ ग्राराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिग्रत्र ससीग्रर सूर धिग्रावहि बसुध गगना गावए ॥ सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिग्रावए ॥ सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खट सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥ ३ ॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ ग्रनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ ग्रविगत ग्रगनत ग्रथाह ठाकुर सगल मंजे बाहरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ वसि भगत थीग्रा मिले जीग्रा ताकी उपमा कित गनी ॥ इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ग्रासा महला ५ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥ १ ॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह ग्रलसाईऐ ॥ भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ दूख दरद न भउ बिग्रापै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि ग्राराधि हरि हरि धिग्राइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ क्रिपाल दइग्राल रसाल गुण निधि करि दइग्रा सेवा लाईऐ ॥ नानकु पइग्रंपै चरण जंपै नामु जपत गोबिंद नह ग्रलसाईऐ ॥ १ ॥ पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ भरम ग्रंधेर बिनास गिग्रान गुर ग्रंजना ॥ गुर गिग्रान ग्रंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीग्रलि पूरिग्रा ॥ इक निमख जाकै रिदै वसिग्रा मिटे तिसहि विसूरिग्रा ॥ ग्रगाधि बोध समरथ सुग्रामी सरब का भउ भंजना ॥ नानकु पइग्रंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ २ ॥ ग्रोट गही गोपाल दइग्राल क्रिपानिधे ॥ मोहि ग्रासर तुग्र चरन तुमारी सरनि सिधे॥हरि चरन कारन करन सुग्रामी पतित उधरन हरि हरे ॥ सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ ग्रादि ग्रंति बेग्रंत खोजहि सुनी उधरन संत संग बिधे ॥ नानकु ग्रइग्रंपै चरन जंपै ग्रोट गही गोपाल दइग्राल क्रिपा निधे ॥ ३ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु ग्रापि बनाइग्रा ॥ जह जह संत ग्राराधहि तह तह प्रगटाइग्रा ॥ प्रभि ग्रापि

लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिश्रा ॥ श्रानंद हरि जस महा मंगल सरब दूख बिसारिश्रा ॥ चमतकार प्रगासु दहदिस एकु तह द्रिसटाइश्रा ॥ नानकु पइश्रंपै चरण जंपै भगति वछलु हरि बिरदु श्रापि बनाइश्रा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ श्रासा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ जाकै गृहि हरिनाहु सु सदही रावए ॥ श्रबिनासी श्रबिगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दहदिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति गति मति जा ते प्रिश्र प्रीति प्रीतमु भावए ॥ नानकु वखाणै गुरबचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ १ ॥ जा कउ राम भतारु ता कै श्रनदु घणा ॥ सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ माणु महतु कलिश्राणु हरिजसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ सरब सिधि नवनिधि तितु गृहि नही ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जाको रामु भतारु ताकै श्रनदु घणा ॥ २ ॥ श्राउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ पीसउ चरण पखारि श्रापु तिश्रागीऐ ॥ तजि श्रापु मिटै संतापु श्रापु नह जाणाईऐ ॥ सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै श्राउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ ३ ॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइश्रा ॥ ताकी पूरन श्रास जिन साध संगु पाइश्रा ॥ साध संगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिश्रा ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिश्रागिश्रा ॥ मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा श्रनद मंगल गुण गाइश्रा ॥ नानकु वखाणै गुरबचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइश्रा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ श्रासा महला ५ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिश्रा कछु न कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइ श्रंते मिलै गोपालु ॥ १ ॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिश्रागउ तुम्ह दइश्रा ॥ कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणामै प्रभ करि मइश्रा ॥ समरथ श्रगथ श्रपार निरमल

सुणहु सुत्रामी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥ १ ॥ अपराधी मति हीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ सठ कठोरु कुल हीनु बिआपत मोह कीचु ॥ मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥ बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥ २ ॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥ राखन हारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ सूख सहज आनंद नानक कृपा तेरी तरै भउन ॥ ३ ॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरन सरन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरनि गही ॥ निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥ मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥ १ ॥ अंम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए ॥ राम नामु उरहारु बिखु के दिवस गए ॥ गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ गोविंद गुपाल दइआल संम्रथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ नानक नामु धिआइ पूरन साध संगि पाई परम गते ॥ २ ॥ जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥ घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ आदि अंते मधि सोई गुरप्रसादी जानिआ ॥ ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि

रहिआ ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे ॥ चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ मिलि साध संगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल संबूहा सभि तरे ॥ दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरिहरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ १ ॥ छंत ॥ भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥ १ ॥ मेरी सेजड़ीऐ आडंबरु बणिआ ॥ मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥ २ ॥ मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥ ३ ॥ सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ हरि चरन लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ सुख दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरिजन तागे ॥४॥१॥१०॥ आसा महला ५ ॥ उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥ मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥ कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि

पाप अमितिआ ॥ तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥ मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥ नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ हरि चंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ नानक मृग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥ २ ॥ मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥ हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥ ३ ॥ हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ साध संगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥ नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ आसा महला ५ ॥ वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती ॥ बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥ १ ॥ नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साध संगि वखाणिआ ॥ आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुरप्रसादी जाणिआ ॥ मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥ २ ॥ नरक त डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ धरम धीरज सहज सुखीए साध संगति हरि भजे ॥ करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत

अघाइण ॥ बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥ ३ ॥ निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ साध संगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥४॥३॥१२॥ आसा महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥ जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ सुकृतु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ आठ पहर हरिनामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ भजु साध संगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥ १ ॥ वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ मिलु साध संगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥ २ ॥ खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥ तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥ ३ ॥ पेखु हरि चंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा महला ५ छंत घरु ८

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे गृह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥

दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणापते ॥ जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥ कुल रूप धूप गिआन हीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥ १ ॥ मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ सनमुख सहिबान सनमुख सहिबान हे मृग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बोधिओ सहज सरोत ॥ प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु धृगु तनु तिसु बिना ॥ पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥ २ ॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥ तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रसटि धारत मिटत पाप ॥ नानकु जंपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥ ३ ॥ चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मन लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥ प्रभ द्रसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे असराजै की धुनी ॥ सलोक म० १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सदवार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥

१॥महला २॥ जेसउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥ एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥ म० १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥ सलोकु म० १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचारि ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥ म० १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥ महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥ सलोक म० १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ विसमादु

पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १ ॥ म० १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ सलोक म० १ ॥ भै विचि पवणु वहै सद वाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥ १ ॥ म० १ ॥ नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि

छार ॥ गिश्रानु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलीऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ४ ॥ सलोक म० १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥ १ ॥ म० १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जाका कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥ सलोक म० १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगरवासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु

सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ देदे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जि आखहि सु तूं है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ॥ १ ॥ म० १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥ सलोक म० १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥ महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपनी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥

ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥ सलोक म० १ ॥ पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ नानक जंत उपाइकै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ म० १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥ सलोकु म० १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥ म० १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपे ताणा अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अंधै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु

भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ नानक नदरी करे सो पाए ॥ आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥ ६ ॥ सलोकु म० १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥ १ ॥ म० १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिना दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥ सलोकु म० १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि

बहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ उचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु॥ मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥ २ ॥ म० १ ॥ वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ॥ ३ ॥ पउड़ी॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥ सलोकु म० १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ तेरा अंतु न जाई लखिआ॥ १ ॥ रहाउ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ १ ॥ म० २॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराकृतह ॥ सरब सबदं एक सबदं जेको जाणै भेउ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥ २ ॥ म० २॥ एक कृसनं सरब देवा देव देवा त आतमा॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ॥ ३ ॥ म० १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि

चलै सु अगै मारीऐ ॥ १२ ॥ सलोकु म० १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै अथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥ १ ॥ म० १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे॥ सभु कोसचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥ सलोकु म० १ ॥ सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चंगा आपणा

आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥ सलोकु म० १ ॥ दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥ १ ॥ म० १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥ म० १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ म० १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिसनो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥ १५ ॥ सलोक म० १ ॥ गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥ म० १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्राहमण पूरहि नाद ॥ उना भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥

हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ देकै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ १६ ॥ सलोकु म० १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ जिउ जोरू सिर नावणी आवै वारोवार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हरि रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥ सलोकु म० १ ॥ जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा परतृअ परधन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक हंसा आदमी बधे जमपुरि जाहि ॥ २ ॥ म० १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥ नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ

तिन्हा सूतकु नाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥ १८ ॥ सलोकु म० १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही एतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥ १९ ॥ सलोकु म० १ ॥ नानक फिकै बोलीऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ तिन नेहु लगा रब सेती देखने वीचारि ॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि

कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ २१ ॥ सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिसनो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै अंमृतु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥ ३ ॥ महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ महला २ ॥ होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिसनो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिसदा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥ सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥ महला २ ॥ एह किनेही

चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥ सलोकु म० १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्हा दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिना सवारे नानका जिन कउ नदरि करे ॥ १ ॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भी रखै आपि ॥ तिसि विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ किसनो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ रागु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा स्री कबीर जीउ ॥ गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥ १ ॥ देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥ २ ॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥ ३ ॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना ॥ कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥४॥१॥ आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥

गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥ १ ॥ ऐसे संत न मोकउ भावहि ॥ डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥ २ ॥ ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ सदा सदा फिरहि अभिमानी सगलकुटंब डुबावहि ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अंमृतु दीन्हा ॥ तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ आगै गइआ न बाजी हारी॥१॥मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ पंच मारि पावा तलि दीने ॥ हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥ २ ॥ पिता हमारो वड गोसाई ॥ तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकटदे रानी ॥१॥ नकटी को ठनगनु बाडाडूं ॥ किनहि बिबेकी काटी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥ २ ॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥ ३ ॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥ ४ ॥ ४ ॥ आसा ॥ जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ लुंजित मुंजित मोनि जटा धर अंति तऊ मरना ॥ १ ॥ ता ते सेवीअले रामना ॥ रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ

मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिघासन बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥ ३ ॥ बेद पुरान सिम्रति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसा ॥ फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥ १ ॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ किनै बूझनहारै खाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥ २ ॥ बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ आसा ॥ बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी नउनिधि पावै ॥ तलका ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥ २ ॥ दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥४॥७॥ आसा ॥ हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥ १ ॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥ जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥ २ ॥ सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ताते हिंदू ही रहीऐ ॥ ३ ॥ छाडि कतेब राम भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी ॥ ४ ॥ ८ ॥ आसा ॥ जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥ १ ॥ रे बउरे तुहि घरी न

राखै कोई ॥ तूं राम नामु जपि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥ २ ॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीग्रा ले गए भाई ॥ लट छिटकाए तिरीग्रा रोवै हंसु इकेला जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ दुतुके

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ग्रासा स्री कबीर जीउ के चउपदे इक तुके ॥ सनक सनंद ग्रंतु नही पाइग्रा ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइग्रा ॥ १ ॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥ २ ॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ गुर प्रसादि पावै ग्रंमृत धारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ राम नाम लगि उतरे तीरा ॥४॥१॥१०॥ ग्रासा ॥ बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥ १ ॥ बुझि गई ग्रगनि न निकसिग्रो धूंग्रा ॥ रवि रहिग्रा एकु ग्रवरु नही दूग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ भूलि बिगारिग्रो ग्रपना काजु ॥२॥ कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिग्रो गावनु ॥३॥ कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परमपदु दूरे ॥४॥२॥११॥ ग्रासा ॥ सुतु ग्रपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न राखसि तेते ॥ १ ॥ रामईग्रा हउ बारिकु तेरा ॥ काहे न खंडसि ग्रवगनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे ग्रति क्रोप करे करि धाइग्रा ॥ ता भी चीति न राखसि माइग्रा ॥ २ ॥ चिंत भवनि मनु परिग्रो हमारा ॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥ ३ ॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥ ग्रासा ॥ हज हमारी गोमती तीर ॥ जहा बसहि पीतंबर पीर॥१॥वाहु वाहु किग्रा खूबु गावता है॥ हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवलादासी ॥ २ ॥ कंठे माला जिहवा रामु ॥ सहंस नामु

लै लै करउ सलामु ॥ ३ ॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे १ दुतुके ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥ १ ॥ भूली मालनी है एउ ॥ सतिगुरु जागता है देउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥ पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ जे एह मूरति साची है तउ गड़णहारे खाउ ॥३॥ भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥ ४ ॥ मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ कहु कबीर हम राम राखे कृपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥ आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥ २ ॥ चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥ ३ ॥ हरि जीउ कृपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ आई तलब गोपालराइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥ ५ ॥ २ ॥ १५ ॥ आसा ॥ काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा ॥ काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥ १ ॥ अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ सुकृतु करि करि लीजै रे मन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥ २ ॥ सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥ ३ ॥

हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥४॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥५॥३॥१६॥ आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुमरा जसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥ १ ॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥ २ ॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥ ३ ॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥ ४ ॥ माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥ कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥५॥४॥१७॥ आसा ॥ गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ पारब्रहम परमेसुर माधो परम हंस ले सिधाना ॥ १ ॥ बाबा बोलते ते कहा गए ॥ देही के संगि रहते ॥ सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीना ॥ साखी सबदु सुरति नही उपजै खिचि तेजु सभु लीना ॥ २ ॥ स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥ ३ ॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥ ४ ॥ मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥ आसा इक तुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥ १ ॥ मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥ २ ॥ स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ स्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥ ३ ॥ इह स्रपनी ता की कीती होई ॥ बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ ४ ॥ इह बसती

ता बसत सरीरा ॥ गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥८॥६॥१९॥ आसा ॥ कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ॥ कहा साकत पहि हरिगुन गाए ॥ १ ॥ राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥ साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥ २ ॥ सत संगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥ ३ ॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ ४ ॥ अंम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ॥ कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २० ॥ आसा ॥ लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ तिह रावन घरि खबरि न पाई ॥ १ ॥ किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ २ ॥ चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥ ३ ॥ गुरमति रामै नामि बसाई ॥ असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१ ॥ आसा ॥ पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ गुरु लागो चेले की पाई ॥ १ ॥ एकु अचंभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ देखत सिंघु चरावत गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥ २ ॥ तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥ ३ ॥ घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥४॥ कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥५॥९॥२२॥ बाईस चउपदे तथा पंचपदे ॥

आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥१॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ पूरबि जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥ २ ॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि

पासा ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥ आसा ॥ तनु रैनी मनु पुनरपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंग राती ॥ १ ॥ गाउ गाउरी दुलहनी मंगलचारा ॥ मेरे गृह आए राजा राम भतारा ॥ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचिले ब्रहमगिआन उचारा ॥ रामराइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥ २ ॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥ कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥ आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥ १ ॥ मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु कासउ कहउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥ २ ॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ २५ ॥ आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥ १ ॥ मेरी जिहवा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ जमदुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ कबहूं न पार उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥ २ ॥ तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥ आसा ॥ जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥ १ ॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनी लागि ॥ २ ॥ करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥ कहि कबीर जग जीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ २७ ॥ आसा ॥ जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तंतु साजु

सभु थाका राम नाम बसि होई ॥ १ ॥ अब माहि नाचनो न आवै ॥ मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माइआ लै जारी तृसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥ २ ॥ सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥ ३ ॥ ६ ॥ २८ ॥ आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥ १ ॥ काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ताते जनमु अलेखै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥ २ ॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥ ३ ॥ ७ ॥ २९ ॥ आसा ॥ तिपदा ॥ इक तुका ॥ कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ १ ॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥ २ ॥ धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥१॥ हरि की कथा अनाहद बानी ॥ हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥ अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥ १ ॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥

लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरियो ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥ आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले राखियो राम जनीआ नाउ ॥ १ ॥ इन मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु मेरी माई ॥ इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥ २ ॥३॥ ३३ ॥ आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ अंत की बार लहैगी न आढै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥ १ ॥ घूंघटु काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पांच बहू भले आई ॥ २ ॥ घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ हरिगुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥ ३ ॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरिगुन गावत जनमु बितीतै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥ आसा ॥ करवतु भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥ १ ॥ हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मोकउ काहे कउ मारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥ १ ॥ हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ तुमहि सुकंत नारि हम सोई ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥ आसा ॥ कोरी को काहू मरमु न जानां ॥ सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥ तब हम इतन कु पसरिओ तानां ॥ १ ॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥ २ ॥ पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥ जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै सूत मिलाए कोरी॥४॥३॥ ३६ ॥ आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥ १ ॥ पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ॥ हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी स्री नामदेउ जी की ॥ एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥ १ ॥ सभु गोबिंद है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन न होई ॥ इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ २ ॥ मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ सुकृत मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ आसा ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥ १ ॥ जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ महा अनंद करे सद केला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥ २ ॥ आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥ ३ ॥ ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ मपि मपि काटउ जम की फासी ॥ १ ॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ राम को नामु जपउ दिन राती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥ राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ २ ॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥ ३ ॥ सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ आसा ॥ सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥ १ ॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥ जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिघच भोजनु जो नरु जानै ॥ ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ २ ॥ नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥ राम रसाइन

पीउरे दगरा ॥३॥४॥ आसा ॥ पारब्रहमु जि चीनसी आसा ते न भावसी ॥ रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥ १ ॥ कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥ २ ॥ ५ ॥

आसा बाणी स्री रविदास जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मृग मीन भृंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥ १ ॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तृगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥ २ ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ ३ ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥ आसा ॥ संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव ॥ १ ॥ संत ची संगति संत कथा रसु संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु असंत पापीसणि ॥ ३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ ४ ॥ २ ॥ आसा ॥ तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ १ ॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ २ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥ ३ ॥ ३ ॥ आसा ॥ कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु

॥ २ ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥ आसा ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥ १ ॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥ २ ॥ जन रविदास राम रंगि राता ॥ इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥ माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ १ ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥ २ ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मुोहि प्रीति बनि आई ॥ ३ ॥ ६ ॥

आसा बाणी भगत धंने जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ लालच बिखु काम लुबध राता मन बिसरे प्रभ हीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥ २ ॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ तृपति अघाने मुकति भए ॥ ३ ॥ जोति समाइ समानी जाकै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥ बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥ १ ॥ रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ ॥ परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥ हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि

गनिश्रा ॥ ३ ॥ इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईश्रा धंना वडभागा ॥ ४ ॥ २ ॥ रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीश्रा दसदुश्रारा ॥ देइ श्रहारु श्रगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥ १ ॥ कुंमी जल महि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥ २ ॥ पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ताचो मारगु नाही ॥ कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीश्र डरांही ॥३॥३॥

श्रासा सेख फरीद जीउ की बाणी

१ श्रों सतिगुर प्रसादि ॥

॥ दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिश्रा ॥ जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिश्रा ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ विसरिश्रा जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ श्रापि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धंनु जणेदी माउ श्राए सफलु से ॥ २ ॥ परवदगार श्रपार श्रगम बेश्रंत तू ॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥ श्रासा ॥ बोलै सेख फरीदु पिश्रारे श्रलह लगे ॥ इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥ १ ॥ श्राजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीश्रा मनहु मचिंदड़ीश्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न श्राईऐ ॥ झूठी दुनीश्रा लगि न श्रापु वञाईऐ ॥ २ ॥ बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ ३ ॥ छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिश्रा ॥ कंचन वंने पासे कलवति चीरिश्रा ॥ ४ ॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिश्रा ॥ जिसु श्रासणि हम बैठे केते बैसि गइश्रा ॥ ५ ॥ कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीश्रां ॥ सीश्राले सोहंदीश्रां पिर गलि बाहड़ीश्रां ॥ ६ ॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ गंढेदिश्रां छिय माह तुड़ंदिश्रा हिकु खिनो ॥ ७ ॥ जिमी पुछै श्रसमान फरीदा खेवट किनि गए ॥ जालण गोरां नालि उलामे जीश्र सहे ॥ ८ ॥ २ ॥

रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १

॥ तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥ १ ॥ पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥ २ ॥ पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अंम्रितु देहि ॥ नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥ ३ ॥ नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥ जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥ १ ॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राणअधार ॥ जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥ २ ॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥ ३ ॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु गूजरी महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धृगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥ १ ॥ ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥ २ ॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥ ३ ॥ नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे कृपा करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥ १ ॥ हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ गुरप्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिमृति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु तृपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥ २ ॥ हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥ ३ ॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुलंभु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ सतिगुर मिलीऐ हरि मनि वसै सहज रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ २ ॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥ ३ नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥

इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥ १ ॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ तृसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥ २ ॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरमराइ तिसु देइ सजाइ ॥ ३ ॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिसका अभिमानु गवाए ॥ सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥ २ ॥ विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥ ३ ॥ नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥ इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥ २ ॥ मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछु न पाइ ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥ ३ ॥ इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ

॥५॥६॥८॥ गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥ १ ॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि त्रिसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥ २ ॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥ ३ ॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥ ४ ॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥ हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन्ह धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धंनु धंनु सत संगति जितु हरिरसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥४॥१॥ गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभ ओहै ॥ १ ॥ मेरे भाई जना मोकउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ जन कउ राम नामु

अधारा हरिनामु जपत हरिनामे सोहै ॥ २ ॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ कऊआ काग कउ अंमृत रसु पाईऐ तृपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥ ३ ॥ अंमृतसरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ नानक धनु धंनु वडे वड भागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥ ४ ॥ २ ॥ गूजरी महला ४ ॥ हरि जन ऊतम उतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥ १ ॥ राम मोकउ हरिजन मेलि पिआरे ॥ मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ हरि हरि अंमृतु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥ २ ॥ जिन दरसनु सतिगुर सतपुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥ ३ ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥ ४ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥ १ ॥ मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥ २ ॥ माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै धृगु धृगु बिरथा जाई ॥ नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥ ३ ॥ जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ४ ॥ गुरमुखि सखी सहेली मेरी मोकउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ हम होवह लाले गोले गुर सिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मोकउ

करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ वड भागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥ २ ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥ ३ ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मोकउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥ १ ॥ भाई रे मोकउ कोई आइ मिलै हरिनामु द्रिड़ावै ॥ मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरिनामै हरि सिउ चितु लावै ॥ अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै ॥ २ ॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥ ३ ॥ आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गूजरी महला ४

घरु ३ ॥ माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥ १ ॥ हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥ २ ॥ जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥ ३ ॥ जितु कारै कंमि हम हरि लाए ॥ सो हम करह जु आपि कराए ॥ ४ ॥ जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २ ॥ ७ ॥ ७ ॥ १६ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सत संगति मिले सि तरिआ ॥ गुरपरसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥ बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥ २ ॥ अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥ अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥३॥ धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरिदुआरी ॥ दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साध संगति महि पाइआ ॥ १ ॥ माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ हरिधनु चलते हरिधनु बैसे हरिधनु जागत सूता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिधनु इसनानु हरिधनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ हरिधनु तुलहा हरिधनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥ २ ॥ हरिधन मेरी चिंत विसारी हरिधनि लाहिआ

धोखा ॥ हरिधन ते मै नवनिधि पाई हाथि चरयो हरि थोका ॥ ३ ॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुर नानक कउ दीया इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सदही जापहु जाका अंतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न विसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संत संगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न विआपै चिंता ॥ ३ ॥ भवरु तुमारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चातृक मउला ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥ १ ॥ सिआनप काहू कामि न आत ॥ जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जमपुरि ऊठि सिधास ॥ २ ॥ होइ अनंनि मन हठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात ॥ जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥ ३ ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥ १ ॥ हरिजसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥ २ ॥ पूरन पूरि रहिओ सब थाई आन न कतहूं जाता ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ कलि कलेस मिटे खिन

भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥१॥ गुर हरि बिनु को न बृथा दुखु काटै ॥ प्रभ तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥ २ ॥ लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि तृसन न बूझी ॥ सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥ ३ ॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥ साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥४॥६॥७॥

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ चित्रसाल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥ १ ॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ गुरि पूरै दीओ हरिनामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥ २ ॥ करि करि अनरथ बिहाझी संपै सुइना रूपा दामा ॥ भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥ ३ ॥ हैवर गैवर रथ संबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥ ४ ॥ नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटंब सहाई ॥ नामु संपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ ८ ॥

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दुख बिनसे सुख कीआ निवासा तृसना जलनि बुझाई ॥ नामु निधानु सतिगुरू दृड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥ १ ॥ हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥ भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साध संगति मिलि छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥

हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥ २ ॥ जिस का सा तिनही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥ १ ॥ ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥ सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चमिआरो ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥ गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥ १ ॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ सुनीऐ अवर अवर विधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥ १ ॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ १२ ॥ गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥ १ ॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥ मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ २ ॥ ५ ॥ १३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥ १ ॥ बलवंति बिआपि रही

सभ मही ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥ गूजरी महला ५ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुर अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥ गूजरी महला ५ ॥ मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा धोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥ साध संगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥ २ ॥ ८ ॥ १६ ॥ गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥ १ ॥ साजन ऐसो संत सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥ २ ॥ ९ ॥ १७ ॥ गूजरी महला ५ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥ १ ॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥ अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥१०॥१८॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥ १ ॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुमही कउ प्रभ आही ॥

नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥ २ ॥ ११ ॥ १६ ॥
गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥ २ ॥ १२ ॥ २० ॥ गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ साध संगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥ १ ॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ गुहज पावको बहुतु प्रजारै मोकउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अरु जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ ॥ जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जाकै कोटि ऐसी दासाइ ॥ २ ॥ १३ ॥ २१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥ चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥ २ ॥ १४ ॥ २२ ॥ गूजरी महला ५ ॥ बिस्वंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥ १ ॥ मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ सगल जीअ जाकउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुमारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥ २ ॥ १५ ॥ २३ ॥ गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥ २ ॥ १६ ॥ २४ ॥

गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥ धंधा करत बिहानी अउधहि गुणनिधि नामु न गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥ १ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥२॥१७॥२५॥ गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु एकु अधारु भगत ईत आगै टेक ॥ करि क्रिपा गोबिद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ करण कारण सम्रथ स्रीधर सरणि ताकी गही ॥ मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१८॥२६॥

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे

१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥ छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥ १ ॥ रे चित चरण कमल अराधि ॥ सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ ईत उत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥ २ ॥ कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥ ३ ॥ अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥४॥१॥२७॥ गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सदही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥ १ ॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥ २ ॥ अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ताकी आउ ॥ चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥

गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादि प्रभु धिग्राइग्रा गई संका तूटि ॥ दुख ग्रनेरा भै बिनासे पाए गए निखूटि ॥ १ ॥ हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद धिग्राए महा निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप ग्रनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ करि ग्रनुग्रहु ग्रापि राखे भए पूरन काम ॥ २ ॥ सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥ गुण ग्रनिक रसना किग्रा बखानै ग्रगनत सदा ग्रकथ ॥ ३ ॥ दीन दरद निवारि तारण दइग्राल किरपा करण ॥ ग्रटल पदवी नाम सिमरण द्रिड़ु नानक हरि हरि सरण ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥ गूजरी महला ५ ॥ ग्रहंबुधि बहु सघन माइग्रा महा दीरघ रोगु ॥ हरि नामु ग्रउखधु गुरि नामु दीना करण कारण जोगु ॥ १ ॥ मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रादि ग्रंते मधि ग्रासा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिग्रान कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा ग्रावा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥ ३ ॥ मित्र पुत्र कलत्र सुररिद तीनि ताप जलंत ॥ जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥ ४ ॥ सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ हरि चरण सरण ग्रपार प्रभ के द्रिड़ु गही नानक ग्रोट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३० ॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ग्राराधि स्री धर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण स्रवण ग्रपार महिमा फिरि न होत विग्रोगु ॥ १ ॥ मन चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरिनाम कहन ग्रवर कछु न उपाउ ॥ करि ग्रनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुग्राउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥ गूजरी महला ५ ॥ तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥ १ ॥ गोविंद तुझ बिनु ग्रवरु न ठाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम

सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिवलागी ॥ कवल प्रगास भए साध संगे दुरमति बुधि तिआगी ॥ २ ॥ आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥ ३ ॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥ ४ ॥ ३२ ॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥ १ ॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिदै जपमाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥ २ ॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥ ३ ॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥ ४ ॥ सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥ ५ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥ ६ ॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥ ७ ॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंमृतु पीआइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दीते ता के अंत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥ १ ॥ ऐजी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरनि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥ २ ॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज

चंद न जोति अपार ॥ सरब द्रसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥ ३ ॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥ ४ ॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक दे दे तोटि नाही भंडार ॥ ऊंधै भांडै कछु न समावै सीधै अंमृतु परै निहार ॥ ५ ॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥ ६ ॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ ताकउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥ ७ ॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ नानक चात्रिक अंमृत जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥ ८ ॥ २ ॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥ १ ॥ भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥ २ ॥ ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥ ४ ॥ ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥ ५ ॥ ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुमारी मै अवरु न दूजी भाई ॥ अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥ ६ ॥ ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥ ७ ॥ ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥ ८ ॥ ३ ॥ गूजरी महला १ ॥ ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल वैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥ १ ॥

भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम वृथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफलमेक घरी ॥ २ ॥ ऐजी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥ ३ ॥ ऐजी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥ ४ ॥ ऐजी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ऐजी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥ ६ ॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥ ७ ॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥ ८ ॥ ४ ॥

गूजरी महला १ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥ २ ॥ चल चित वित भ्रमाभ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ थिरु नामु भगत दिड़ंमती गुर वाकि सबद रतं ॥ ३ ॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ असथानु हरि निहकेवलं सतिमती नाम तपं ॥ ४ ॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥ ५ ॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥ ६ ॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥ हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु

इहु सरीरु तउ मरणी ॥ ७ ॥ लब लोभ लहरि निवारणं हरिनाम रासि मनं ॥ मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥८॥१॥५॥

गूजरी महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ निरति करी इहु मनु नचाई ॥ गुर परसादी आपु गवाई ॥ चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥ १ ॥ नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥ आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥ २ ॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥ सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥ ३ ॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनिजन गिआन बीचारी ॥ सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि बीचारी ॥ ४ ॥ खंड ब्रहमंड त्रैगुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥ ५ ॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥ से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥ एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥ ७ ॥ माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ ८ ॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥ ९ ॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु बीचारी ॥ कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥ १० ॥ १ ॥

गूजरी महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥ १ ॥ मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ गुरमुखि

नामु अंम्रित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥ २ ॥ अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥ ३ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥ ४ ॥ मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥ ५ ॥ निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥ ६ ॥ एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥ ७ ॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥ १ ॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥ २ ॥ सूरन महि सूरा तू कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूं बडो गृहसती जोगन महि जोगी ॥ ३ ॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि तूं साचा साहा वपारन महि वापारी ॥ ४ ॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥ ५ ॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥ ६ ॥ सिधन महि तेरी प्रभ सिधा

करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥ ७ ॥ जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥

गूजरी महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नाथ नरहर दीनबंधव पतितपावन देव ॥ भै त्रास नास कृपाल गुणनिधि सफल सुआमी सेव ॥ १ ॥ हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ चरण सरण दइआल केसव तारि जग भवसिंध ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥ २ ॥ जलत अनिक तरंगा माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ छेदि अहंबुधि करुणामै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥ ३ ॥ सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ दीन दइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥ ४ ॥ मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ रखु धरमु भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥ ५ ॥ धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुणमति धीर ॥ ६ ॥ जीवन मुकत जगदीस जपि मनि धारि रिद परतीति ॥ जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परमहंसह रीति ॥ ७ ॥ देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० ३ ॥ इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥ ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ दूजै भाइ सुते

कबहि न जागहि माइग्रा मोह पिग्रार ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का ग्राचारु ॥ हरि नामु न पाइग्रा जनमु बिरथा गवाइग्रा नानक जमु मारि करे खुग्रार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ग्रापणा ग्रापु उपाइग्रोनु तदहु होरु न कोई ॥ मता मसूरति ग्रापि करे जो करे सु होई ॥ तदहु ग्राकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु ग्रापे ग्रापि निरंकारु है ना ग्रोपति होई ॥ जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु ग्रवरु न कोई ॥ १ ॥ सलोकु म० ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ ग्रोहु ग्रउहाणी कदे नाहि ना ग्रावै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ ग्रवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविग्रा जि खसमु न जाणहि ग्रापणा ग्रवरी कउ चितु लाइ ॥ नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सचा नामु धिग्राईऐ सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझि परवाणु होउ ता फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई ग्रंधा कचु निकचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइग्रोनु सृसटी का मूलु रचाइग्रा ॥ हुकमी सृसटि साजीग्रनु जोती जोति मिलाइग्रा ॥ जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइग्रा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइग्रा ॥ माइग्रा का मूलु रचाइग्रोनु तुरीग्रा सुखु पाइग्रा ॥ २ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिग्राई पावै ॥ नानक ग्रापु छोडि गुर माहि समावै ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिसु ग्रापि वडिग्राई देवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइग्रा मोहु ग्रगिग्रानु है बिखमु ग्रति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिग्रा किउ तरीऐ तारी ॥ ग्रनदिनु भगती रतिग्रा हरि पारि उतारी ॥ गुरसबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ हरि हरि नामु धिग्राईऐ हरि हरि निसतारी ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ कबीर मुकति दुग्रारा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिग्रा किउकरि जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुग्रारा मोकला सहजे ग्रावउ जाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नानक मुकति दुग्रारा ग्रति नीका नाना होइ सु जाइ ॥ हउमै मनु

असथूलु है किउकरि विछुड़ि जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥ इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥ ४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ जाइ ॥ माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन सुखु वसिआ मनि आइ ॥ हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरिनामि रहे लिव लाइ ॥ नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ इस की सेवा जो करे तिसही कउ फिरि खाइ ॥ गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलिदलि लाई पाइ ॥ नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥ ५ ॥ सलोक म० ३ ॥ सभना का सहु एकु है सदही रहै हजूरि ॥ नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ हुकमु भी तिना मनाइसी जिन कउ नदरि करेइ ॥ हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन पिआरा पुरखु हरि राउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ गुरसबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ अंदरहु त्रिसना अगनि बुझी हरि अंम्रितसरि नाता ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥ ६ ॥ सलोकु म० ३ ॥ काइआ हंस

किआ प्रीति है जि पइआ ही छुडि जाइ ॥ एसनो कूड़ू बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ धनु वापारी नानका जिना नाम धनु खटिआ आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा ॥ सभु जगु तिसकै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ किरपा ते हरि मनि वसै मेटै गुरु सूरा ॥ गुण वंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥ ७ ॥ सलोकु म० ३ ॥ ध्रिगु तिना दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन बूझ न काई पाइ ॥ हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥ गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ ओइ धरमि रलाए ना रलनि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥ सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥ आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ तृसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥ ८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जि सतिगुरु सेवे आपणा तिसनो पूजे सभु कोइ ॥ सभना उपावा सिरि उपाउ है हरिनामु परापति होइ ॥ अंतरि सीतलु साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंमृतु खाणा अंमृतु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥

ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ॥ हरि सुख दाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥ ९ ॥ सलोकु म० ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥ सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ इसु जुग महि को विरला ब्रहमगिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥ नानक तिसनो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरिनामु धिआए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ जिसनो कृपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ साहिबु सेवनि आपणा पूरै सबदि बीचारि ॥ हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ हरि का महलु तिनी पाइआ जिन हउमै विचहु मारि ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उरधारि ॥ १० ॥ सलोकु म० ३ ॥ गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ जिसनो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरिनामु धिआइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ कूड़ै लालचि

लगिआ ना उरवारु न पारु ॥ नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥ हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ सफलु जनमु जिनी गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥ ११ ॥ सलोकु म० ३ ॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ सतिगुर सेवि हरिनामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ विचे गृह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी माइआ ॥ ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मन हठि जनमु गवाइआ ॥ एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ जन नानक किसनो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ एह जम की सिरकार है एना उपरि जम का डंडु करारा ॥ मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन दूजा भाउ पिआरा ॥ जमपुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥ १२ ॥ सलोकु म० ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥ जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु

उपाइ ॥ जा हरि बखसे ता गुरु मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥ १३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन कउ परजा पूजण आई ॥ वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बजर कपाट काइआ गढ़ भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ उपाइ किते न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ गुरसबदी खोलाईअनि हरिनामु जपानी ॥ हरि जीउ अंमृत बिरखु है जिन पीआ ते तृपतानी ॥ १४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ माइआ मनसा मोहणी दहदिस फिराता ॥ अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ रसना हरिरसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ जिना गुरमुखि अंमृतु चाखिआ से जन तृपताता ॥ १५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि सचा गहिर गंभीरु ॥ वाहु वाहु तिसनो

आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ॥ वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ गुरमुखि अंमृतु पीवणा वाहु वाहु करहि लिवलाइ ॥ नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥ १६ ॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन कउ आपे देइ बुझाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन कै संगि मिलाइ ॥ वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन कउ देउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु सचु है अंमृतु जाका नाउ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिसनो देइ सु खाइ ॥ वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पुरे वाहु वाहु भावै ॥ नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥ १७ ॥ सलोकु म० ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ वाहु वाहु अंमृत नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ

करि देइ ॥ नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ विनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ जिना अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी तिसनो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उरधारि ॥ ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥ ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥ १८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥ गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ सा हुकमु पछाणै कंत का जिसनो क्रिपा कीती करतारि ॥ ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ नानक खसमै भावै सा भली जिसनो आपे बखसे करतारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिनी न लहीआ ॥ निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥ १९ ॥ सलोकु म० ३ ॥ एहु सभु किछु आवणजाणु है जेता है आकारु ॥ जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु अगै अरदासि जिनि उपाइआ

॥ सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ अंम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥ २० ॥ सलोक म० ३ ॥ खेति मिआला उचीआ घरु ऊचा निरणउ ॥ महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ नानक तिन बलिहारणै जिन गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥ तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥ २१ ॥ सलोक म० ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

रागु गूजरी वार महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० ५ ॥ अंतरि गुरु अराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिसनो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काजि सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि॥२॥पउड़ी ॥ अकुल निरंजन पुरखु अगम अपारीऐ ॥

सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥ १ ॥ सलोकु म० ५ ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान नउनिधि घर महि पाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ किती बैहनि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु धिआइनि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ ब्रहमे तुधु धिआइनि इंद्र इंद्रासणा ॥ संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥ ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥ कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥२॥ सलोकु म० ५ ॥ चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥१॥ म० ५ ॥ कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ नउनिधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ अंम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरमसालीऐ ॥ ३ ॥ सलोक म० ५ ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ जिसनो करे रहंम तिसु न विसारदा ॥ आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥ सभु

किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ जिसनो लाए सचि तिसहि उधारदा ॥ जिसदै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥ ४ ॥ सलोक म० ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥ जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥१॥ म० ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥ अंमृतु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥ मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीए ॥ जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ गुरपरसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥ ५ ॥ सलोक म० ५ ॥ मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥ १ ॥ म० ५ ॥ द्रसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन महि करे निहालु ऊणे सुभरभरि ॥ मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ सो लगा सतिगुर सेव जाकउ करमु धुरि ॥६॥ सलोक म० ५ ॥ लगड़ी सु थानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुधनो जपतिआ ॥ पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जीवा

सुणि सुणे ॥ ७ ॥ सलोक म० ५ ॥ प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥ म० ५ ॥ तैडे सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु को कोई ॥ जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ होवै सुखु घणा दयि धिआईऐ ॥ वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥ कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ तूं सभना का खसमु सभ मेरी छाइऐ ॥ ८ ॥ सलोक म० ५ ॥ नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुंभै मंझि मुहबति तेरी ॥ तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ मन की कटीऐ मैलु साध संगि वुठिआ ॥ जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ रैणि दिनसु करि जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥ ६ ॥ सलोक म० ५ ॥ बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही ॥ तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सची बैसक तिना संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रसटि समेटिआ ॥ सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥ १० ॥ सलोकु ॥ विछोहे जंबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ जे सो धणी मिलंनि नानक सुख सबूह सचु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जिमी

वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै माहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ जिसनो होइ दइआलु हरिनामु सेइ लेहि ॥ अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥११॥ सलोक म० ५ ॥ कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणनि सुञीआ ॥ सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ जपीऐ अंम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिसनो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअनि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥ १२ ॥ सलोक म० ५ ॥ लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ जीअ जंत मिहरवानु तिसनो सदा जापि ॥ दइआ धारी समरथि चुके बिलबिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाज थापि ॥ आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि ॥ वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥ १३ ॥ सलोक म० ५ ॥ जाकउ भए कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ म० ५ ॥ राम रमहु वडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ जिसनो होइ कृपालु

तिस का दूखु जाइ ॥ भगत तेरे दइग्राल ग्रोन्हा मिहर पाइ ॥ दूखु दरदु वडरोगु न पोहे तिसु माइ ॥ भगता इहु ग्रधारु गुण गोविंद गाइ ॥ सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिग्राइ ॥ पीवति ग्रंमृत नामु जन नामे रहे ग्रघाइ ॥ १४ ॥ सलोक म० ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिसनो विसरै नाउ ॥ नानक ग्रनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥ घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरबीर वरीग्राम किनै न होड़ीऐ ॥ फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥ दस नारी ग्रउधूत देन्हि चमोड़ीऐ ॥ जिणि जिणि लैनि रलाइ एहो एन्हा लोड़ीऐ ॥ त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥ भरमु कोटु माइग्रा खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥ गुरु पूरा ग्राराधि बिखमदलु फोड़ीऐ ॥ हउ तिसु ग्रगै दिन राति रहा कर जोड़ीऐ ॥ १५ ॥ सलोक म० ५ ॥ किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ हसंदिग्रा खेलंदिग्रा पैनंदिग्रा खावंदिग्रा विचे होवै मुकति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िग्रा ॥ सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िग्रा ॥ नामु निधानु ग्रखुटु गुरु देइ दारूग्रो ॥ महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूग्रो ॥ पाइग्रा नामु निधानु बहुतु खजानिग्रा ॥ जिता जनमु ग्रपारु ग्रापु पछानिग्रा ॥ महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥ गुर पारब्रहम परमेसुर ग्रपरंपर ग्रलख ग्रभेव ॥ १६ ॥ सलोकु म० ५ ॥ उदमु करेदिग्रा जीउ तूं कमावदिग्रा सुख भुंचु ॥ धिग्राइदिग्रा तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सुभ चिंतन गोविंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥ जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ ग्ररपीऐ ॥ ग्राइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ तिसनो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ तेरे दास धिग्राइनि तुधु

तूं रखण वालिआ ॥ सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥ १७ ॥ सलोक म० ५ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥ नानक धृगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ जिनी पछाता हुकमु तिन कदे न रोवणा ॥ नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥ १८ ॥ सलोक म० ५॥ जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥ नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥ १ ॥ म० ५ ॥ जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि॥ जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ जिन मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ गुर पूरे की टेक नानक संम्हालिआ ॥ १९ ॥ सलोक म० ५ ॥ आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ सतिगुरि दिता हरिनामु अंमृतु चखिआ ॥ साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥ १ ॥ म० ५ ॥ तिसनो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ जिसु होआ आपि कृपालु सु नह भरमाइआ ॥ जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दित ॥ प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते ॥ मथे

वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥ २० ॥ सलोक म० ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ नानक नामि धिआईऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिसनो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ ॥ पाइआ नामु निधानु जिसनो भालदा ॥ जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ गुरप्रसादि नानक सचि समाइआ ॥२१॥१॥२॥ सुधु

रागु गूजरी भगता की बाणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गई है ॥ ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन चूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पई है ॥ २ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहई है ॥ कहत कबीर रामनाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ १ ॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ २ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ४ ॥ २ ॥

गूजरी स्री नामदेव जी की पदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥ १ ॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ किसु हउ पुजउ दूजा नदरि त आई ॥ ३ ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पारमलो परमलीओ बैठो री आई ॥ आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥ १ ॥ कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥ २ ॥ जिउ आकासै घड़ुअलो मृग तृसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥ ३ ॥ २ ॥

गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ १ ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥ बिखु अंमृतु बसहि इक संगा ॥ १ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ ३ ॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥ ४ ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ ५ ॥ १ ॥

गूजरी स्री त्रिलोचन जीउ के पदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु

घटि ब्रहमु न चीना काहे भइग्रा संनिग्रासी ॥ १ ॥ भरमे भूली रे जै चंदा ॥ नही नही चीनिग्रा परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि खाइग्रा पिंडु बधाइग्रा खिथा मुंदा माइग्रा ॥ भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइग्रा ॥ २ ॥ काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ लख चउरासीह जिनि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥ ३ ॥ काइ कमंडलु कापड़ीग्रा रे ग्रठसठि काइ फिराही ॥ बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥ ४ ॥ १ ॥ गूजरी ॥ ग्रंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सरप जोनि वलि वलि ग्रउतरै ॥ १ ॥ ग्ररी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ ग्रंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बेसवा जोनि वलि वलि ग्रउतरै ॥ २ ॥ ग्रंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सूकर जोनि वलि वलि ग्रउतरै ॥ ३ ॥ ग्रंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ प्रेत जोनि वलि वलि ग्रउतरै ॥ ४ ॥ ग्रंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबर वाके रिदै बसै ॥५॥२॥

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ परमादि पुरखमनोपिमं सति ग्रादि भाव रतं ॥ परमदभुतं परक्रिति परं जदि चिंति सरब गतं ॥ १ ॥ केवल राम नाम मनोरमं ॥ बदि ग्रंमृत ततमइग्रं ॥ न दनोति ज समरणेन जनम जराधि मरण भइग्रं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित कृतं ॥ भव भूत भाव समब्यिग्रं परमं प्रसंनमिदं ॥ २ ॥ लोभादि द्रिसटि परग्रिहं जदि बिधि ग्राचरणं ॥ तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥ ३ ॥ हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ जोगे न किं जगे न किं दाने न किं तपसा ॥ ४ ॥ गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ जैदेव ग्राइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥ ५ ॥ १ ॥

रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥ सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥ १ ॥ सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी ॥ मेरो सुंदर कहहु मिलै कितु गली ॥ हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ १ ॥ एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥ १ ॥ सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अंम्रितु पी झोलीऐ ॥ गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगंधारी ॥ अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ जब हम सरणि प्रभू की आई

राखु प्रभू भावै मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥ १ ॥ जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ हरिगुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ देखि देखि जीवा साध गुरदरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउकरि मिलह जूठारी ॥ हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥ १ ॥ हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥ २ ॥ ५ ॥ देवगंधारी ॥ हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥१॥रहाउ॥ जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥ १ ॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥२॥६॥ छका १

देवगंधारी महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ प्रभु होइ कृपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥ घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥ १ ॥ उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ सुखदाते दुखभंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी ॥ माई होनहार सो होईऐ ॥ राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥ १ ॥ कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी

जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी ॥ माई सुनत सोच भै डरत ॥ मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कहै सोई भल मानउ नाहिन का बोल करत ॥ निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥ १ ॥ सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥ २ ॥ ३ ॥ देवगंधारी ॥ मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥ जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ॥ १ ॥ सुखु आइओ भै भरम बिनासे कृपाल हूए प्रभ जबहू ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साध संगि तजि लबहूं ॥ २ ॥ ४ ॥ देवगंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ नीचहु नीचु नीचु अति नाना होइ गरीब बुलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अडंबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥ १ ॥ दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥ २ ॥ ५ ॥ देवगंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ तुमरी कृपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥ १ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥ माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥ २ ॥ ६ ॥ देवगंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही ॥ करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥ १ ॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥ २ ॥ ७ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ गुर प्रसादि काहू जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ रंगि

तुमारे लाल भए है रामनाम रसि माते ॥ १ ॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रसटि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥ २ ॥ ८ ॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ सुखदाई जीअन को दाता अंमृतु जाकी बैणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि लीनो अपुना जल ते सीतल होणी ॥ १ ॥ करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥२॥९॥ देवगंधारी ५ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥ तिना परापति एहु निधाना जिन कै करमि लिखाहा ॥ १ ॥ से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन हरि हरि नामु विसाहा ॥ २ ॥ १० ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन कह अहंकारि अफारा ॥ दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥ १ ॥ अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ करन करावन हार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥२॥११॥ देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैणि साझ सवेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न मुहतु न चसा बिलंबहु कालु नितहि नित हेरै ॥ १ ॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ नामु अधारू दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २ ॥ देवगंधारी ५ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥ १ ॥ भइआ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर

अगम अगाधिओ ॥ २ ॥ १३ ॥ देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ सफल आइआ जीवन फलु ताको पारब्रहम लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥ १ ॥ पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥ २ ॥ १४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥ २ ॥ १५ ॥ देव गंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुरचरना ॥ कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥ १ ॥ सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥ २ ॥ १६ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥ १ ॥ कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ करुणामै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥ देव गंधारी ५ ॥ गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥ १ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥ २ ॥ १८ ॥ छके ३ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन निहारउ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते

कबहु न डारउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥ १ ॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ नामु निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरिधारउ ॥ २ ॥ १९ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा ॥ दीनानाथ प्रान पति पूरन भवजल उधरनहारा ॥ १ ॥ आदि जुगादि भगत जन सेवक ताकी बिखै अधारा ॥ तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥ २ ॥ २० ॥ देव गंधारी महला ५ ॥ तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ प्रेम रसा निधि जाकउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥ १ ॥ सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहम पछाता ॥ २ ॥ २१ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥ १ ॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥ २ ॥ २२ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ वरनारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥ २ ॥ २३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ भए कृपाल दइआल दुखभंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥ १ ॥ परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उरधरिआ ॥ २ ॥ २४ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाख राखु मुरारे ॥ आगै पाछै अंती वारे ॥ १ ॥ जब चितवउ तब तुहारे ॥ उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥ २ ॥ सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥ ३ ॥ मन महि राखउ एक असारे ॥ नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥४॥२५॥ देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ कृपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ प्रातहकाल लागउ जन चरनी निसबासुर दरसु पावउ ॥ तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥ १ ॥ सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संत संगि नित रहीऐ ॥ एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥ २ ॥ २६ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ छाडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥ १ ॥ मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ कहु नानक सदा रंगु माणे गृह प्रिअ थीते सद थाए ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥ देवगंधारी ५ ॥ दरसन नाम कउ मनु आछै भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥ साध

संगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥ १ ॥ जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइआछै ॥ आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥२॥२॥२८॥ देवगंधारी ५ ॥ अंमृता प्रिअ बचन तुहारे ॥ अति सुंदर मन मोहन पिआरे सभ हू मधि निरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥ १ ॥ दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥ कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥२९ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥ दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥ प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥ १ ॥ चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥ नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥४॥३०॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥ १ ॥ अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥ २ ॥ मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडेधार ॥ ३ ॥ कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥४॥१॥३१॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥ १ ॥ खोज असंखा अनिकत पंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ कहु नानक किरपा करी ठाकुर

मिलि साधू रस भूंचा ॥२॥१॥३२॥ देवगंधारी महला ५ ॥ मै बहुबिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन महिमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेव तोऊ ॥ १ ॥ गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ कहु नानक भवसागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥२॥२॥३३॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ एकै रे हरि एकै जान ॥ एकै रे गुरमुखि जान ॥१॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥ १ ॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि ॥ बिनु संजम नही कारज सारि ॥ बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ मिलि संगति तजि अभिमान ॥ कहु नानक पाए है परम निधान ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥ देवगंधारी ५ ॥ जानी न जाई ताकी गाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥ १ ॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ धिआए गाए करनैहार ॥ भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥ १ ॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ ताकी सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥ झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥ दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु

गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥ १ ॥ मागउ दानु कृपाल कृपानिधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासन बासन सहज केल करुणामै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥ १ ॥ रिधि सिधि निधि कर तल जग जीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु देवगंधारी महला ९ ॥ यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥ १ ॥ सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जाते काजु सरै ॥ २ ॥ १ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेत पुकारि ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घरि ते देत निकारि ॥ १ ॥ मृगतृसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥ देवगंधारी महला ९ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ १ ॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥ दूतन संगरीआ ॥ भुइअंगनि बसरीआ ॥ अनिक उपरीआ ॥ १ ॥ तउ मै हरि हरि करीआ ॥ तउ सुख सहजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथन मोहरीआ ॥ अनिक उमेरीआ ॥ बिचि घूमन घिरीआ ॥ २ ॥ सगल बटरीआ ॥ बिरख इकतरीआ ॥ बहु बंधहि परीआ ॥ ३ ॥ थिरु साध सफरीआ ॥ जह कीरतनु हरीआ ॥ नानक सरनरीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिहागड़ा महला ९ ॥ हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥ १ ॥ अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखन हारा ॥ नाना रूपु धरे बहुरंगी सभ ते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥ सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥

रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए

गुरमुखि नामु अमाले राम ॥ हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥ १ ॥ गुरमति मनि अंम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अंम्रित बैण अलाए राम ॥ अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥ चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥ २ ॥ सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥ हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥४॥१॥

रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥ हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥ मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥ हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥ १ ॥ हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चातृक जल बिनु टेरे राम ॥ सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥ २ ॥ मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख

सभि वसि काले राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥ जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवालेराम ॥३॥ हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥ हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवटु सबदि तराइआ राम ॥ हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥ करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥ ४ ॥ २ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥ सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामु उतारे राम ॥ वडपुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥ १ ॥ जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥ अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥ २ ॥ हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥ वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥ गुरि अंम्रितु हरि मुखि चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥ ३ ॥ अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥ पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रित हरिसरि नाते राम ॥ अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन हरि हरि नामु अधारो राम ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु

तारणहारो राम ॥ जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥ १ ॥ सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥ २ ॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरिनामु मनेसहि राम ॥ ३ ॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु तृणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहनि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥ १ ॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जम कंकरु नेड़ि न आवै राम ॥ २ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते

राम ॥ हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥ ३ ॥ सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभदू साहिबु वडा राम ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा महला ४ ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीअ कमाईऐ राम ॥ हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ मनमुखा नो करि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥ १ ॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥ २ ॥ हे रसना जपि गोविंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम ॥ जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि राम वसाए राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥ ३ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ सरब जीअ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि का एकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥

हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अंतु तेरा तूं है जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥ सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥ १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ हउमै ममता मोहु छूटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥ २ ॥ कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ जिसु होइ कृपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥ भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साध संगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥ ३ ॥ दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥ ४ ॥ १ ॥ रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥ १ ॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ चल

चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ ॥ खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥ आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥ नानकु पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥ २ ॥ सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥ अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥ निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपानिधे ॥ भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नवनिधे ॥ ग्रिहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥ नानकु पइअंपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥ ३ ॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥ सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुन भना ॥ भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ अंमृत बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह मना ॥ मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ बिनवंति नानक सरनि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥ १ ॥ साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ पतिता पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥ नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ रिधि सिधि नवनिधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥ २ ॥ जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥

बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥३॥ नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जाकी कल धारी राम ॥ गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

बिहागड़ा महला ५ घरु २

१ ओं सतिनामु गुरप्रसादि ॥ वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥ घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ गहि भुजा लीनी प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥ १ ॥ मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ बडपुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरिनामु नित नित नित जपह ॥ २ ॥ हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ रांड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥ नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते वडभागीआ सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ मिलि प्रेम रहणा हरिनामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥ बिनवंति नानक इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥ ३ ॥ तितु गृहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥ मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥ हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ प्रभि कृपा धारी हरि मुरारी भै सिधु सागर तारणो ॥ जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिहागड़ा महला ५

॥ हरि चरन सरोवर तह करहु निवासु मना ॥ करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ जनम मरणु न होइ तिस किउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साध संगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥ १ ॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिनीआ ॥ हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीने प्रभ एक अगम अपारो ॥ बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुणझुणकारो ॥ २ ॥ सुणि वडभागीआ हरि अंम्रित बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अंम्रित बाणी ॥ ३ ॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा दिसटाइआ ॥ बणि तृणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिहागड़ा महला ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ समरथ पूरन सदा निहचल उच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥ १ ॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥ अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण

करणा ॥ नानक चातृक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥ २ ॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥ अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जाको धामा ॥ बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥ ३ ॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ हरिनामु जपत सोहंत प्राणी ताकी महिमा कित गना ॥ हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ अनकाए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥ गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥ बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥ १ ॥ तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥ इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥ २ ॥ बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥ आए खरे कठिन जम कंकरि पकड़ि लइआ ॥ पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥ ३ ॥ तुझ बिनु को नाही प्रभ राखन हारा राम ॥ पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपानिधि दइआला ॥ अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा

॥ बिनवंति नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइग्रारा ॥ ४ ॥ सो दिनु सफलु गणिग्रा हरि प्रभू मिलाइग्रा राम ॥ सभि सुख परगटिग्रा दुख दूरि पराइग्रा राम ॥ सुख सहज ग्रनदबिनोद सदही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ गहि कंठि लाए सहजि सुभाए ग्रादि ग्रंकुरु ग्राइग्रा ॥ बिनवंत नानक ग्रापि मिलिग्रा बहुड़ि कतहू न जाइग्रा ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बिहागड़ा महला ५ खंत ॥ सुनहु बेनंतीग्रा सुग्रामी मेरे राम ॥ कोटि ग्रप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ दुखहरन किरपाकरन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरबमै निरंजना ॥ सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेर हू ते नेरे ॥ ग्ररदासि नानक सुनि सुग्रामी रखि लेहु घर के चेरे ॥ १ ॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ माइग्रा मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ लोभि मोहि बिकारि बाधिग्रो ग्रनिक दोख कमावने ॥ ग्रलिपत बंधन रहत करता कीग्रा ग्रपना पावने ॥ करि ग्रनुग्रहु पतितपावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीग्र प्रान ग्रधारी ॥ २ ॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ पालहि ग्रकिरतघना पूरन द्रसटि तेरी राम ॥ ग्रगाधि बोधि ग्रपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ रतनु तिग्रागि संग्रहन कउडी पसू नीच इग्राना ॥ तिग्रागि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ नानक सरणि समरथ सुग्रामी पैज राखहु मोरी ॥ ३ ॥ जा ते वीछुड़िग्रा तिनि ग्रापि मिलाइग्रा राम ॥ साधू संगमे हरि गुण गाइग्रा राम ॥ गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिग्राण मै परगट भए ॥ सेजा सुहावी संगि प्रभ कै ग्रापणे प्रभ करि लए ॥ छोडि चिंत ग्रचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइग्रा ॥ नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुणनिधि गाइग्रा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ बोलि सुधरमीड़िग्रा मोनि कत धारी राम ॥ तू नेत्री देखि चलिग्रा माइग्रा बिउहारी राम ॥ संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ बिनवंत नानक बिनु साध संगम सभ मिथिग्रा संसारी ॥ १ ॥

राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ बिनवंत नानक जिन साध संगमु से पति सेती घरि जाही ॥ २ ॥ नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ हउ हउ करत न तृसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥ बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥ साध संगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ महा धरम सु दान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ नानक जिसनो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥

बिहागड़े की वार महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होरथै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥ म० ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥ नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ तिसदी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥ १ ॥ सलोक म० ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइ

न सकै कोइ ॥ भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि तृसना बहुतु अज्ञानु अंधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ तिन भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ जिसदी तुधु भावै तिसदी तूं मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥२॥ सलोक म० ३ ॥ गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥ अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥१॥ म० ३ ॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तेरी वडिआई तू है जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिसदी रीस करे किआ कोई ॥ तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सब होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥ ३ ॥ सलोक म० ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥ मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै

अंकि समाए ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नवनिधि पाए ॥ जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए ॥ धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ गुर का सबदु समालि तू मूड़े गतिमति सबदे पाए ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसदै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥ ४ ॥ सलोक म० ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥ ५ ॥ सलोक म० ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥ आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइ पीसावै ॥ आपि पकावै

आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥६॥ सलोक म० ३ ॥ करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥ ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ ॥ फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अंम्रितु पीआ ॥ आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥ ७ ॥ सलोक म० ३ ॥ गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरिधारि ॥ अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥ आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥ ८ ॥ सलोक म० ३ ॥ सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ ॥ सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु

गिआनी जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपे तरे ॥ आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥ ६ ॥ सलोक म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफल है जो को करे चितु लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥ उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥ नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥ नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥ १० ॥ सलोकु म० ४ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ इकथै पड़ि बुझै सभु आपे इकथै आपे करे इआणे ॥ इकना अंदरि

महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥११॥ सलोकु मरदाना १ ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥१॥ मरदाना १ ॥ काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥२॥ कांयां लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ॥ ॥ सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥३॥ पउड़ी ॥ आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥ १२ ॥ सलोकु म० ३ ॥ एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइ खुआरु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलीऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥ आपे दसअठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥ आपि अभुलु न भुलै कबही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥ १३ ॥ सलोकु म० ५ ॥ हरिनामु न सिमरहि साध संगि तै तनि उडै खेह ॥ जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह

॥ १ ॥ म० ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपि करे इसनानु ॥ आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ आपि दइआलु होइ भउखंडनु आपि करै सभु दानु ॥ जिसनो गुरमुखि आपि बुझाए सो सदही दरगहि पाए मानु ॥ जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥ १४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥ सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥ गुरूदुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु ॥ साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटिकै अंतरि जोति धरेहु ॥ हरि का नामु अंमृतु है दारू एहु लाएहु ॥ सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिसनो तिलु न तमाए ॥ १५ ॥ सलोक म० ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ झूठा मदु मूलि न पीचई जेका पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इसनो सोझी होइ ॥ जा तिनि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुरप्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिसनो परवाह नाही किसै केरी ॥ हरि जीउ तेरा

दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ जि तुधनो सालाहे सु सभु किछु पावै जिसनो किरपा निरंजन केरी ॥ सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरिनामु धनु तेरी ॥ सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥ ॥ १६ ॥ सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ जेकरि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥ मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥ गुरपरसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥ नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥ आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ धरमराइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ १७ ॥ सलोक म० ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥ नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुख होइ॥तोटा मूलि न आवई लाहा सदही होइ ॥ खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥ सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि॥ जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि ॥ ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ बैठा ताड़ी लाइ आपि सभदू ही बाहरि ॥ आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥ १८ ॥ सलोक म० ३ ॥ हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥

जिचरु विचि दंमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाइ जाइ ॥१॥ म० ३ ॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ सतिगुरि मिलीऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिवलाइ ॥ दमि दमि सदा सम्हालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥ जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ नानक इहु मरतबा तिसनो देइ जिसनो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥ आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥ आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥ कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥ १९ ॥ सलोक म० १ ॥ कली अंदरि नानका जिनां दा अउतारु ॥ पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिना दा सिकदारु ॥ १ ॥ म० १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥ नारदि कहिआ सि पूज करांही ॥ अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ अंमृतु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥ २० ॥ सलोक म० ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ जेको मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिसनो किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिसनो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥ अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥ जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥ १ ॥ हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंमृतु जाका नाउ ॥ जिन पीआ ते तृपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥ तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥ ३ ॥ नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला १ ॥ गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥ १ ॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥ माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति पराेइ ॥ २ ॥ राहु दसाई न जुलां आखां अंबड़ीआसु ॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ चूड़ा

भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ मै रोवंदी सभु जगु रुना रुनड़े वणहु पंखेरू ॥ इकु न रुना मेरे तनका बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहंसु महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥ जपि मन मेरे तू एको नामु ॥ सतिगुरि दीआ मोकउ एहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥ २ ॥ इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥४॥१॥ वडहंसु महला ३ ॥ नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाए ॥ २ ॥ जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ अनरस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ ३ ॥ सभना नदरि

एक है आपे फरकु करेइ ॥ नानक सतगुर मिलीऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥ मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥ २ ॥ मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ सतगुरि मोकउ हरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥ १ ॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥ ३ ॥ सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ अंमृत नामु सद मीठा लागा गुरसबदी सादु आइआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥ १ ॥ हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥ पूरै सतगुरि हरिनामु धिआइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥ २ ॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥ ३ ॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोखदुआरा ॥ ४ ॥ एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करै प्रतिपाला ॥ नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥ ५ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु

गिआनु ॥ गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥ १ ॥ गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥ गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सो होइ ॥ गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ मनु तृपतिआ हरिनामु धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥ २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ गुर की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ सचै सबदि सचि समाइ ॥ १ ॥ ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥ आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भरमे भूला फिरै संसारु ॥ मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥ ३ ॥ नानक से वडभागी जिन हरिनामु धिआइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥ हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु विरथा जाइ ॥ १ ॥ हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥ २ ॥ हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥ हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ नानक सतगुरि मिलीऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥

वडहंसु महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥ १ ॥ मै प्रभ

मिलण प्रेम मनि आसा ॥ गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥ हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥ २ ॥ जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥ ३ ॥ हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ हउ हरि प्रभु छोडि दूजै लोभाणी ॥ १ ॥ हउ किउकरि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउकरि पिरु पावा ॥ तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥ २ ॥ जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥ ३ ॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ मै करमहीण कबही गलि लावै ॥ ४ ॥ तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥ ५ ॥ २ ॥

वडहंसु महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ भूला मनु समझै गुरसबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥ २ ॥ हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥ आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥ ३ ॥ जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां ॥ नित नित सेव

करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥ ४ ॥ गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां ॥ गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥ ५ ॥ हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ जिसनो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥

वडहंसु महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अति ऊचा ताका दरबारा ॥ अंतु नाही किछु पारावारा ॥ कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ इकु तिलु ताका महलु न पावै ॥ १ ॥ सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाख भगत जाकउ आराधहि ॥ लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ लाख जोगीसर करते जोगा ॥ लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥ २ ॥ घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ है कोई साजणु परदा तोरा ॥ करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ ताकउ देई जीउ कुरबाना ॥ ३ ॥ फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥ दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ महलि बुलाइआ प्रभ अंम्रितु भूंचा ॥ कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु मंत्रु तुमारा अंम्रित बाणी ॥ सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ॥ २ ॥ सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥३॥ तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ गुरप्रसादि को सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सेवक की

अरदासि पिआरे ॥ जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥ २ ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ इत उत देखउ ओट तुमारी ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ नानक साधू देखि मनु राता ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु म० ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ दानु देइ साधू की धूरा ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी ओट पूरन गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥ २ ॥ जिसनो नदरि करे सो धिआए ॥ आठ पहर हरि के गुण गाए ॥ ३ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ तूं वडदाता अंतरजामी ॥ सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥ १ ॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥ २ ॥ चरन कमल हिरदै उरिधारे ॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥ ३ ॥ करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ नानक नामु जपत सुखु पावा ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ साध संगि हरि अंम्रितु पीजै ॥ ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥ १ ॥ वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥ २ ॥ जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥ ३ ॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥ ४ ॥ ६ ॥ वडहंसु महला ५ ॥ विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥ १ ॥ तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥ २ ॥ आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥ ३ ॥ तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ वडहंसु म० ५ ॥ तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ तेरा दीआ नामु वखाणै ॥ १ ॥ तू अचरजु कुदरति

तेरी बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ हुकमे जंमणु हुकमे मरणा ॥ २ ॥ नामु तेरा मन तन आधारी ॥ नानक दासु बखसीस तुमारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

वडहंसु महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ मेरै अंतरि भुख न उतरै अंमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥ १ ॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चातृक जल कउ बिललाता ॥ हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥ २ ॥ हउ भई उडीणी कंत कउ अंमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥ ३ ॥ मै सभि सीगार बणाइआ अंमाली बिनु पिर कामि न आए ॥ जा सहि बात न पुछीआ अंमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ धनु धनु ते सोहागणी अंमाली जिन सहु रहिआ समाए ॥ हउ वारिआ तिन सोहागणी अंमाली तिन के धोवा सद पाए ॥ ४ ॥ जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ जन नानक हरि रंगु माणिआ अंमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥ ५ ॥ १ ॥ ९ ॥

वडहंसु महला ३ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥ १ ॥ मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा

नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥ २ ॥ सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥ ३ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरिनाउ ॥ जिसनो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥ ४ ॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥ ५ ॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥ ६ ॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥ ७ ॥ नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ मनूआ दहदिस धावदा ओहु कैसे हरि गुन गावै ॥ इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥ १ ॥ वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ रामनामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ गुरमती आपै आपु पछाणै ता निजघरि वासा पावै ॥ २ ॥ ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥ ३ ॥ हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥ ४ ॥ बिखु से अंमृत भए गुरमति बुधि पाई ॥ अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥ ५ ॥ माणस जनमु दुलंभु है जग महि खटिआ आइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरिनामु धिआइ ॥ ६ ॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥ हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥ ७ ॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ नानक जिनकै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहंसु महला १ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥

जब साच ग्रंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ ॥ लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ काइग्रा कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ १ ॥ ता मै कहिग्रा कहणु जा तुझै कहाइग्रा ॥ ग्रंमृतु हरि का नामु मेरै मनि भाइग्रा ॥ नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिग्रा ॥ सूखु मन महि ग्राइ वसिग्रा जामि तै फुरमाइग्रा ॥ नदरि तुधु ग्ररदासि मेरी जिनि ग्रापु उपाइग्रा ॥ तामै कहिग्रा कहणु जा तुझै कहाइग्रा ॥ २ ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ मंदा किसै न ग्राखि झगड़ा पावणा ॥ नह पाइ झगड़ा सुग्रामि सेती ग्रापि ग्रापु वञावणा ॥ जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किग्रा रूग्रावणा ॥ जो देइ सहणा मनहि कहणा ग्राखि नाही वावणा ॥ वारी खसमु कढाऐ किरतु कमावणा ॥ ३ ॥ सभ उपाईग्रनु ग्रापि ग्रापे नदरि करे ॥ कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ किछु पुंन दान ग्रनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ नानका जिन नामु मिलिग्रा करमु होग्रा धुरि कदे ॥ सभ उपाईग्रनु ग्रापि ग्रापे नदरि करे ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला १ ॥ करहु दइग्रा तेरा नामु वखाणा ॥ सभ उपाईऐ ग्रापि ग्रापे सरब समाणा ॥ सरबे समाणा ग्रापि तू है उपाइ धंधै लाईग्रा ॥ इकि तुझही कीए राजे इकना भिख भवाइग्रा ॥ लोभु मोहु तुझु कीग्रा मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ सदा दइग्रा करहु ग्रपणी तामि नामु वखाणा ॥ १ ॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ दूखु गइग्रा सुखु ग्राइ समाणा ॥ गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ माइग्रा मोहे चेतहि नाही ग्रहिला जनमु गवावहे ॥ इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो ग्राइग्रा तिसु जाणा ॥ नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥ २ ॥ तेरा वखतु सुहावा ग्रंमृतु तेरी बाणी ॥ सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ साउ प्राणी तिना लागा जिनी ग्रंमृतु पाइग्रा ॥ नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइग्रा ॥ इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥ वखतु सुहावा सदा तेरा ग्रंमृत तेरी बाणी ॥

३ ॥ हउ बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥ दुसमनु त दूखु द लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥ ४ ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ गुरपरसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ ५ ॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउकरि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥ बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥ ६ ॥ तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन लंमड़े वाला ॥ कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥ सोवंन ढाला कृसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बंके लोइण दंत रीसाला ॥ ७ ॥ तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ स्री रंग राती फिरै माती उदकु गंगावाणी ॥ बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ ८ ॥ २ ॥

वडहंसु महला ३ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ १ ॥ निरगुणवंतड़ीए

पिरु देखि हदूरे राम ॥ गुरमुखि जिनी राविया मुईए पिरु रवि रहिया भर पूरे राम ॥ पिरु रवि रहिया भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥ धन धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिया करम बिधाता ॥ जिनि हरि रसु चाखिया सबदि सुभाखिया हरि सरि रही भरपूरे ॥ नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥ २ ॥ सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ कामणि वडभागी अंतरि लिवलागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥ नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥ ३ ॥ हउमै मारि मुईऐ तू चलु गुर कै भाए ॥ हरिवरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ हरिवरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥ २ ॥ गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ आपणै घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ हरिनामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥ मनमुख खेती वणजु करि थाके तृसना भुख न जाए ॥ नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥ २ ॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे

हउमै मारी ॥ साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउभंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥ ३ ॥ खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बुझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुरते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउभंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोहि जमकालि ॥ कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥ १ ॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥ २ ॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइकै इकि सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउनिधि पाई ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ नानक माणस जनमु दुलंभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ नानक सहजे सेवहि गुरु आपणा से पूरे वडभागे ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरि

भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥ गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिसनो एतु वापारि लाए ॥ रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥ २ ॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरबारा राम ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिसदी वडिआई राम ॥ जिउ तिसदी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ गुरपरसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥ १ ॥ हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरिरसु पीजै राम ॥ रसना हरिरसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अंम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै

मैलु भरीजै ॥ २ ॥ पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ माइआ मोह अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा मांहि समाई ॥ जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥ ३ ॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए ॥ नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ ए मन मेरिआ आवागउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ जिनि सृसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥ २ ॥ इहु जगु जलता देखि कै भजि भए हरि सरणाई राम ॥ अरदासि करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको दाता ॥ जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ नानक तिसनो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥ ३ ॥ जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ दरि साचै सदा है साचा साचै

सबदि सुभाखिआ ॥ घर महि निजघरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥

वडहंसु महला ४ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूखविसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥ १ ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरिनामो हरिनामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवंनिधि पाई ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहज समाधि लगाई ॥ हरिनामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥ २ ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ३ ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुरचरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाना मै अवरु न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ जिसु कारणि हउ ढूंढि ढूढेदी

सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥ एक द्रसटि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥ १ ॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिनके जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु धिआइआ ॥ तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥ २ ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अंम्रितु पीवां ॥ हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥ ३ ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ गुरप्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥ गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परमपदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु

मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥ २ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु बृथा गवाइआ राम ॥ निहफलु जनमु तिन बृथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भाग हीण हरि दूरे ॥ हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥ ३ ॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥ गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हमारे ॥ कहु नानक गुरि नामु द्रिड़ाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेनंती ॥४॥३॥ वडहंसु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइ लगह नित करह बेनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥ १ ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जम कंकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि क्रिपा धारी सुख दाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥ २ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा ॥ जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन

परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥३॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ तू दुखभंजनु सरब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

वडहंसु महला ४ घोड़ीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नवरंगड़ीआ ॥ एह देह सु बांकी जितु हरिजापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥ १ ॥ देह पावहु जीनु बुझि चंगा राम ॥ चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ हरि बोहथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥२॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी गुरि बखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ महामारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥ ३ ॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु तुखाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़दा ॥ चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

वडहंसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नवरंगीग्रा राम ॥ गुर गिग्रानु गुरू हरि मंगीग्रा राम ॥ गिग्रान मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीग्रा ॥ सभु जनमु सफलिग्रो कीग्रा करतै हरि राम नामि वखाणीग्रा ॥ हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीग्रा ॥ जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीग्रा ॥ १ ॥ देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम ॥ जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइग्रा हरि मिले हरिगुण सुख घणे ॥ गुरसबदु पाइग्रा हरि नामु धिग्राइग्रा वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ हरि मिले सुग्रामी ग्रंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीग्रा ॥ नानकु वखाणै नामु जाणै हरिनामु हरि प्रभ मंगीग्रा ॥ २ ॥ कड़ीग्रालु मुखे गुरि ग्रंकसु पाइग्रा राम ॥ मनु मैगलु गुरसबदि वसि ग्राइग्रा राम ॥ मनु वसगति ग्राइग्रा परमपदु पाइग्रा सा धन कंति पिग्रारी ॥ ग्रंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ हरि रंगि राती सहजे माती हरिप्रभु हरि हरि पाइग्रा ॥ नानक जनु हरिदासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिग्राइग्रा ॥ ३ ॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइग्रा राम ॥ मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइग्रा राम ॥ हरि गाइ मंगलु रामनामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ प्रभ जाइ पावै रंग महली हरिरंगु माणे रंग की ॥ गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिग्राइग्रा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइग्रा ॥४॥२॥६॥

रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गुर मिलि लधा जी रामु पिग्रारा राम ॥ इहु तनु मनु दितड़ा वारोवारा राम ॥ तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी काणि जमाणी ॥ ग्रसथिरु थीग्रा ग्रंमृतु पीग्रा रहिग्रा ग्रावण जाणी ॥ सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु ग्रधारा ॥ कहु नानक सुखि माणे रलीग्रां गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥ १ ॥ सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ गुरिमंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥ सचु सबदु धिग्राइग्रा मंगलु गाइग्रा चूके मनहु ग्रदेसा ॥ सो प्रभु पाइग्रा कतहि न जाइग्रा सदा

सदा संगि बैसा ॥ प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥ २ ॥ तउ भाणा तां तृपति अघाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा सभ तृसन बुझाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा चूकी डंजा पाइआ बहुतु खजाना ॥ सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना ॥ निरभउ भए खसम रंगि राते जमकी त्रास बुझाए ॥ नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥ ३ ॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ नउनिधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥ ४ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लंघाए ॥ जिन कंउ कृपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बूझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ से साची दरगह भाणे राम ॥ ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥ २ ॥ सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ १ ॥ छंतु ॥ तिन खंनीऐ वंञा जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ जन चाखि अघाणे हरि हरि अंमृतु मीठा राम ॥ हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस

ईसह जैजए ॥ मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खंनीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥ नानक जाणे सति सांई संतन बाहरा ॥ १ ॥ छंतु ॥ मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ संमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥४॥२॥ वडहंसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपानिधि सुखदाता ॥ हउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥ १ ॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥ २ ॥ आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जमके त्रासा ॥ गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥ तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥ ३ ॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ गोविद गाजे सदा विराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ मुहलति पुनी

पाई भरी जानीग्रड़ा घति चलाइग्रा ॥ जानी घति चलाइग्रा लिखिग्रा ग्राइग्रा रुंने वीर सबाए ॥ कांइग्रा हंस थीग्रा वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥ जेहा लिखिग्रा तेहा पाइग्रा जेहा पुरबि कमाइग्रा ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइग्रा ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभणा एहु पइग्राणा ॥ एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा ग्रागै सरपर जाणा ॥ ग्रागै सरपर जाणा सिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ ग्रागै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किग्रा विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइग्राणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ जलि थलि महीग्रलि रवि रहिग्रा साचड़ा सिरजण हारो ॥ साचा सिरजणहारो ग्रलख ग्रपारो ता का ग्रंतु न पाइग्रा ॥ ग्राइग्रा तिनका सफलु भइग्रा है इक मनि जिनी धिग्राइग्रा ॥ ढाहे ढाहि उसारे ग्रापे हुकमि सवारणहारो ॥ जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिग्रारो ॥ वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइग्रा कारणि रोवै ॥ चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥ ऐथै ग्राइग्रा सभु को जासी कूड़ि करहु ग्रहंकारो ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिग्रारो ॥४॥१॥ वडहंसु महला १ ॥ ग्रावहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ रोवह बिरहा तनका ग्रापणा साहिबु संम्हालेहां ॥ साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह ग्रसा भि ग्रोथै जाणा ॥ जिस का कीग्रा तिन ही लीग्रा होग्रा तिसै का भाणा ॥ जो तिनि करि पाइग्रा सु ग्रागै ग्राइग्रा ग्रसी कि हुकमु करेहा ॥ ग्रावहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥ १ ॥ मरणु न मंदा लोका ग्राखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ सेविहु साहिबु संम्रथु ग्रापणा पंथु सुहेला ग्रागै होइ ॥ पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु ग्रागै मिलै वडाई ॥ भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥ महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीग्रा माणै ॥ मरणु न मंदा लोका ग्राखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥ २ ॥ मरणु मुणसा सूरिग्रा हकु है

जो होइ मरनि परवाणो ॥ सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ करि एकु धिआवहि ता फलु पावहि जितु सेवीऐ भउ भागै ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥ ३ ॥ नानक किसनो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक किसनो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ ४ ॥ २ ॥ वडहंसु महला १ दखणी ॥ सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥ जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥ २ ॥ आवागवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ जमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥ ३ ॥ सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरिकारो ॥ बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥ ४ ॥ नउ दरु ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥ सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दर बारे ॥ रोवहु कंत महेलिहो सचे के गुण सारे ॥ ५ ॥ जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अंबारे ॥ वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥ जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥ ६ ॥ तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे ॥ हउ

मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोड़िअड़ी विधणकारे ॥ घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥ ७ ॥ गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥ ८ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला १ ॥ जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥ जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥ १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा अधपंधै है संसारोवा ॥ सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥ आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो॥अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥ २ ॥ जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ भोजन भाउ न ठंडा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ न दीसै घर बारो ॥ इबके राहे जंमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥ ३ ॥ बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतर संसारो ॥ जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥ आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाए ॥ नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥४॥४॥ वडहंसु महला १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥ जंमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ लबि धंधै माइआ जगतु

भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥ १ ॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥ २ ॥ बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ लिखिअड़ा साहा न टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ बहि साचै लिखिआ अंम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ कामणिआरी कामण पाए बहुरंगी गलि तागा ॥ होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥ नामरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥ ३ ॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे ॥ पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ नानक जुगि जुगि जाण सि जाणा रोवहि सचु समाले ॥ ४ ॥ ५ ॥

वडहंसु महला ३ महला तीजा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ प्रभू सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ न कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंम्रित बाणी ॥ गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ॥ कामणि इछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥२॥ जिनी

आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥ पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ ३ ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥ १ ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ माइआ मोहु खुआइअनु मरि जंमै वारो वारा ॥ मरि जंमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ पिरु जगजीवनु किसनो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥२॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥ जम कालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥ ३ ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु नाले ॥ गुरपरसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि

न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥ वडहंसु म० ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरिधारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ १ ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभदू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उरधारे॥सदा उरिधारे नेहुनालि पिआरे सतिगुरु ते पिरु दिसै॥ माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभदू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥ २ ॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै तृसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ ३ ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ वडहंसु महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इसनो जरु पहुचै आए ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जावै ॥ होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ जमपुरि घोर अंधारु महा गुबारु न तिथै भैण न भाई ॥ इहु सरीरु जजरी है इसनो जरु पहुचै आई ॥

१ ॥ काइआ कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए ॥ भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥ सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥ जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥ कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥ २ ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥ तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ ३ ॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥ से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥ जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिनकै लागउ पाए ॥४॥४॥

वडहंस की वार महला ४

ललां बहलीमा की धुनि गावणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ३ ॥ सबदि रते वडहंस है सचु नामु उरिधारि ॥ सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ नानक हउ तिनकै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मै जानिआ वडहंसु है ता मै कीआ संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥ २ ॥ म० ३ ॥ हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥ १ ॥ सलोकु म० ३ ॥ भै

विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥ दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥ सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ सृस्टि सवारी ॥ नित जपिअहु संतहु रामनामु भउजल बिखु तारी ॥ गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥ २ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥ सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिसनो नदरि करै करतारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ होर विडाणी चाकरी धृगु जीवणु धृगु वासु ॥ अंमृतु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥ ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि ॥ जमपुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो सतिगुरु सेवहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु दृड़ाइआ ॥ सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ ॥ सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥ तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥ सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी

भुख न जाइ ॥ दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥ मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रितसरि तीरथि नाइ ॥ सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिवलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का नामु बिलोईऐ ॥ सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥ ४ ॥ सलोक म० ३ ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ मन ही ते मनु मानिआ गुरकै सबदि अपारि ॥ एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ तृसना भुख सभ जाइ नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिवलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिसु गुर

कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥ तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरिनामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥ ५ ॥ सलोक म० ३ ॥ तृसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥१॥ म० ३ ॥ भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ वरमी मारी सापु न मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ मनु तनु सीतलु सांति होइ तृसना अगनि बुझाइ ॥ सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिवलाइ ॥ चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ जिनी गुर कै बचनि अराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥ ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अंमृत फल हरि लागे मुखा ॥ ६ ॥ सलोक म० ३ ॥ कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ जमकालै वसि जगु बांधिआ तिसदा फरू न कोइ ॥ जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥१॥ म० ३ ॥ एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरिनामो मंनि वसाइ ॥ नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जग जीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरिनामु सुणाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु है

जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥७॥ सलोकु म० ३ ॥ भगति करहि मरिजीवडे गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ सबदै सार न जाणई बिखु भूला गवारु ॥ अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ नानक किसनो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥ ८ ॥ सलोक म० ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ मूरख आपु गणाइदे मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ सदा सदा नामु उचरै हरिनामो नित बिउहारु ॥ कृपा करे जे आपणी ता हरि रखा उरधारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥ नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमस्कारी ॥ जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरिनामु मुरारी ॥ सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बिचारी ॥ ९ ॥ सलोक म० ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥

बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥ १० ॥ सलोकु म० ३ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेवीऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरिनामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरिनामु लै जावहि ॥ गुर सिखां के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरिनाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवहि ॥ ११ ॥ सलोक म० ३ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी ॥ गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी ॥ बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि जंनी ॥

जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसट है तिनी सतिगुर की गल मंनी ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥ १२ ॥ सलोक म० ३ ॥ मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ नानक गुरमुखि हरिनामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरिनामि लिव लाई ॥ गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ बिनु गुर हरिनामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥ १३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥ १४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ ॥ विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ सभि घट

भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनकै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ हरिनामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥ हरिनावै नालि गला हरिनावै नालि मसलति हरिनामु हमारी करदा नित सारा ॥ हरिनामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरिनामु परवारा ॥ जन नानक कंउ हरिनामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥ १५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ अचिंतु हरि नामु तिनकै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥ कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ नानक गुरपरसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ हरि नामु हम स्रेवह हरिनामु हम पूजह हरिनामे ही मनु राता ॥ हरिनामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरिनामो अंति छडाता ॥ हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता ॥ हंउ सतिगुर अपणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरिनामु मै जाता ॥१६॥ सलोकु म० ३ ॥ गुरमुखि सेवि न कीनीआ हरिनामि न लगो पिआरु ॥ सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो

रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि ग्रंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक गुरमुखि तिनी नामु धिग्राइग्रा जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिग्रासि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरिनामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ तृपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ हरिनामु हमारा वणजु हरिनामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरिनामै का हम लेखा लिखिग्रा सभ जम की ग्रगली काणि गई ॥ हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिग्राइग्रा जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥ १७ ॥ सलोक म० ३ ॥ जगतु ग्रगिग्रानी ग्रंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ गुरपरसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ सची बाणी करम करे ग्रनदिनु नामु धिग्राइ ॥ नानक जितु ग्रापे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीग्र का सद जीवै देवणहारा ॥ ग्रनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि ग्रपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूग्रा सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ ग्रंतरि गुरगिग्रानु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिसनो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिग्रारा ॥२॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइग्रा ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरिनामा मुखि रामु कहिग्रा ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरिनामा सुणिऐ मनि ग्रनदु भइग्रा ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरिनामु लइग्रा ॥ तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिग्रा ॥ १८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ मनहठि किनै न पाइग्रो सभ थके करम कमाइ ॥ मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइग्रा दूजै भाइ ॥ रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि ग्राइ ॥ गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै ग्रगिग्रानु ग्रंधेरा जाइ ॥ नामु रतनु घरि परगटु होग्रा नानक सहजि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सबदै सादु

न ग्राइम्रो नामि न लगो पिम्रारु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुम्रारु ॥ नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु धनु सतपुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ सांति ग्राई ॥ धनु धनु सतपुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिसकी सेवा ते हम हरिनामि लिव लाई ॥ धनु धनु हरि गिम्रानी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ समदसटि दिखाई ॥ धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥ १६ ॥ सलोकु म० १ ॥ घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित भूरे संम्हाले ॥ मिलदिम्रा ढिल न होवई जे नीम्रति रासि करे ॥ १ ॥ म० १ ॥ नानक गाली कूड़ीम्रा बाझु परीति करेइ ॥ तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनि उपाए जीम्र तिनि हरि राखिम्रा ॥ ग्रंमृतु सचा नाउ भोजनु चाखिम्रा ॥ तिपति रहे ग्राघाइ मिटी भभाखिम्रा ॥ सभ ग्रंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिम्रा ॥ जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिम्रा ॥ २० ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिम्रारु ॥ इकि ग्रापे बखसि मिलाइग्रनु दुबिधा तजि विकार ॥ नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिम्रारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरू न सेविम्रो मूरख ग्रंध गवारि ॥ दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ जिन कारणि गुरू विसारिम्रा से न उपकरे ग्रंती वार ॥ नानक गुरमती सुखु पाइम्रा बखसे बखसणहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू ग्रापे ग्रापि ग्रापि सभु करता कोई दूजा होइ सु ग्रवरो कहीऐ ॥ हरि ग्रापे बोलै ग्रापि बुलावै हरि ग्रापे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ हरि ग्रापे मारै हरि ग्रापे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ उठदिम्रा बहदिम्रा सुतिम्रा सदा सदा हरि नामु धिम्राईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥ सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु कि नाह ॥ जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥ १ ॥ भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ जाकी नदरि सदा सुखु होइ ॥ रहाउ ॥ वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥ २ ॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥ ३ ॥ नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ अगै गए न मंनीअनि मारि कढहु वेपीर ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥ बाबा माइआ साथि न होइ ॥ इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिसनो रखु ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥ २ ॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि

महलु ॥ ३ ॥ लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥ बंनु बदीआ करि धावणी ताको आखै धंनु ॥ नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥४॥२॥ सोरठि म० १ चउतुके ॥ माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥ १ ॥ मनु मानिआ नामु सखाई ॥ पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जनसिउ वादु रचाई ॥ माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥ २ ॥ साध सभा महि सहजु ना चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥ ३ ॥ नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ कंनी सुणि सुणि सबदी सलाही अंमृतु रिदै वसाई ॥ निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥ १ ॥ मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ जलि थलि महीअलि भरपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किसही जेहा ॥ २ ॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥ ३ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ अंमृतु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥ ॥ १ ॥ करता तू मै माणु निमाणे ॥ माणु महतु नामु

धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मनरे॥ २॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे॥ अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे॥ ३॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनिदासा गुरमति जानिआ सोई ॥ ४॥ ५॥ सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥ १॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥ २ ॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥ ३ ॥ जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥ ४॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचा चारी॥ तंतै कउ परमतंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥ ५॥ ६ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥ १॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ॥ रहाउ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥ २ ॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु॥ तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥ ३॥ साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ सुखदुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥ ४॥ ७॥ सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥ १ ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी॥ जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुरसबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकास दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा

धारी जीउ ॥ सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥ २ ॥ जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंमृतु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥ १ ॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंमृतु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥ २ ॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥ ३ ॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुरबचनी फलु पाही जीउ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला १ पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न साकहि की परघरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥ १ ॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अनरस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥ २ ॥ हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो तृपतागा ॥ माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥ ३ ॥ मन का जीउ पवन पति देही देही महि देउ समागा ॥ जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु तृपतै हरि लिवलागा ॥ ४ ॥ साध संगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥ ५ ॥ १० ॥ सोरठि महला १ ॥ सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ आपि अलेखु कुदरति

करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ गुरमुखि एक द्रसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥ २ ॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलीऐ इह मति होई जीउ ॥ देखि अद्रसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥ ३ ॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥ ४ ॥ ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुर मिलिआ सोई जीउ ॥ ५ ॥ ११ ॥

सोरठि महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जा तिसु भावा तदही गावा ॥ ता गावे का फलु पावा ॥ गावे का फलु होई ॥ जा आपे देवै सोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुरबचनी निधि पाई ॥ ताते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चंचल मति तिआगी ॥ गुर साखी का उजीआरा ॥ ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥ २ ॥ गुरचरनी मनु लागा ॥ ता जम का मारगु भागा ॥ भै विचि निरभउ पाइआ ॥ ता सहजै कै घरि आइआ ॥ ३ ॥ भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ इसु जग महि करणी सारी ॥ करणी कीरति होई ॥ जा आपे मिलिआ सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत

वीचारी ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उरधारी ॥ २ ॥ इहु मनूआ दहदिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥ मनमुख मुगधु हरिनामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरिजन साचे साचु कमावहि गुरकै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उरधारी ॥ नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥ नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरसबदी हरि पाइआ जाइ ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ अंमृतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥ २ ॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरिनामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि म० ३ ॥ दासनिदासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो कृपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥ २ ॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥ पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए

गुर वीचारा ॥ हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधुनो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥ १ ॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सदही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥ २ ॥ सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जंमहि वारोवारा ॥ बिसटा के कीड़े विसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ ३ ॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥ १ ॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ अंतकालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥ २ ॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥ ३ ॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि

चोटा खावै ॥ बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥ १ ॥ हरि के दास सुहेले भाई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारोवारा ॥ २ ॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किसही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥ ३ ॥ सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥ १ ॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरिनामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ हिरदै जग जीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु तृपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रंगिराता अनहद सबदु वजाइआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥ ३ ॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि म० ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मन रे हरि हरि सेती

लिव लाइ ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥ २ ॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥ ३ ॥ आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन रे त्रैगुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ जग महि लाहा हरिनामु है भाई हिरदै रखिआ उरधारि ॥ ३ ॥ गुर सरणाई ऊबरे भाई रामनामि लिव लाइ ॥ नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सोरठि महला ३ घरु १ ॥ सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होरथै सुखु नाही ॥ हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥ १ ॥ प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ सतितुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिसनो आपि मिलाए ॥ हरि रसु पी जन सदा तृपतासे विचहु आपु गवाए ॥ ३ ॥ इहु जगु अंधा सभ अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥ ४ ॥ १० ॥ सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥ हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ कृपा करहु तुम पिआरे ॥ सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरिनामु देवहु

ग्राधारे ॥ रहाउ ॥ मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइग्रा नामु ग्रपारा ॥ हरि रसु चाखि मनु निरमलु होग्रा किलबिख काटणहारा ॥ २ ॥ सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ ग्रंमृतु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥ ३ ॥ दातै दाति रखी हथि ग्रपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ नानक नामि रते सुखु पाइग्रा दरगह जापहि सेई ॥ ४ ॥ ११ ॥ सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ हरि का नामु सचा मनि वसिग्रा नामे नामि समाए ॥ १ ॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ मनमुखि ग्रंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइग्रा भरमि भुलाइग्रा हउमै बंधन कमाए ॥ जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥ २ ॥ त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै रामनामि सुखु होई ॥ ३ ॥ त्रै गुण सभि तेरे तू ग्रापे करता जो तू करहि सु होई ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥ ४ ॥ १२ ॥

सोरठि महला ४ घरु १

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ ग्रापे ग्रापि वरतदा पिग्रारा ग्रापे ग्रापि ग्रपाहु ॥ वणजारा जगु ग्रापि है पिग्रारा ग्रापे साचा साहु ॥ ग्रापे वणजु वापारीग्रा पिग्रारा ग्रापे सचु वेसाहु ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ गुर किरपा ते पाईऐ पिग्रारा ग्रंमृतु ग्रगम ग्रथाह ॥ रहाउ ॥ ग्रापे सुणि सभ वेखदा पिग्रारा मुखि बोले ग्रापि मुहाहु ॥ ग्रापे उझड़ पाइदा पिग्रारा ग्रापि विखाले राहु ॥ ग्रापे ही सभु ग्रापि है पिग्रारा ग्रापे वेपरवाहु ॥ २ ॥ ग्रापे ग्रापि उपाइदा पिग्रारा सिरि ग्रापे धंधड़ै लाहु ॥ ग्रापि कराए साखती पिग्रारा ग्रापि मारे मरि जाहु ॥ ग्रापे पतणु पातणी पिग्रारा ग्रापे पारि लंघाहु ॥ ३ ॥ ग्रापे सागरु बोहिथा पिग्रारा गुरु खेवटु ग्रापि चलाहु ॥ ग्रापे ही चड़ि लंघदा पिग्रारा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ ग्रापे ग्रापि दइग्रालु है पिग्रारा जन नानक बखसि मिलाहु ॥ ४ ॥ १ ॥ सोरठि महला ४ चउथा ॥ ग्रापे ग्रंडज जेरज

सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥ आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥ आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥ १ ॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अंमृतु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ २ ॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥ ३ ॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ अंमृत नामु महा रसु मीठा गुरसबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥ २ ॥ आपे सिङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥ ३ ॥ आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अंमृतु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु

पिआरा आपे करे कराइआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥ २ ॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैंदे सभि लवाइदा ॥ ३ ॥ आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइदा ॥ जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सृसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ सत संगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ २ ॥ आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥ ३ ॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥ २ ॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ आपे ही बलु आपि

है पिआरा बलु भंनै मूरख मुगधाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥ गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि म० ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥ १ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥ तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बूझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥ २ ॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥ ३ ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥ १ ॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ अंतरि नामु मंगा दिन राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥ २ ॥ मनमुख भूखे दहदिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगह मिलै सजाई ॥ ३ ॥ क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥ १ ॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥ २ ॥ जिस की वथु

सोई प्रभु जाणै जिसनो देइ सु पाए ॥ वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥ ३ ॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥ ४ ॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिसनो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥५॥९॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नवनिधि देसी ॥ १ ॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कबही जाई ॥ अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ २ ॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ कृपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ ३ ॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥ सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥ १ ॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ आवणु जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥ २ ॥ सिम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ चारे

कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥ ३ ॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दुराई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥ १ ॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥ २ ॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥ ३ ॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥ १ ॥ रे नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥ २ ॥ अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूतु बापुरो फिरि पाछै पछुतोही ॥ ३ ॥ जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥४॥४॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥ १ ॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए गुरचरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥ २ ॥ सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥ ३ ॥ वडी

वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥ १ ॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ संत संगि जाका मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ॥ हउमै रोगि जाका मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥ २ ॥ गिआन अंजनु जाकी नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥ ३ ॥ सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥ ४ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥ १ ॥ संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥ ३ ॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह गृह अंधकूप महि नानक लेहु निबाही ॥ ४ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ५ घरु १ ॥ जाकै हिरदै वसिआ तू करते ताकी तैं आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरन धूरि मनि भाई ॥१॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच वडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥ २ ॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने जाकउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥ ३ ॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिसु भए दइआला ताकउ मन ते बिसरि न जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सगल

समग्री मोहि विग्रापी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईऐ काहू जतना ग्रोड़कि को न पहूचे ॥ १ ॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि ग्रावत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ ग्रोहु जु भरमु भुलावा कहीग्रत तिन महि उरझिग्रो सगल संसारा ॥ पूरन भगतु पुरख सुग्रामी का सरब थोक ते निग्रारा ॥ २ ॥ निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीग्रा ॥ जाकउ कृपा करी प्रभि मेरै मिलि साध संगति नाउ लीग्रा ॥ ३ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥९॥ सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिग्रो राम नामु ततु सारा ॥ किलबिख काटे निमख ग्रराधिग्रा गुरमुखि पारि उतारा ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिग्रानी ॥ सुणि सुणि महा तृपति मनु पावै साधू ग्रंमृत बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ ग्रपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥ २ ॥ स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिग्राईऐ सोई ॥ करण कारण समरथ सुग्रामी जा ते बृथा न कोई ॥ ३ ॥ वडै भागि रतन जनमु पाइग्रा करहु कृपा किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥४॥१०॥ सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु ग्रपना मन तन भए ग्ररोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिग्रा ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिग्रा ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु ग्रमिति वडाई भगति वछल दइग्राला ॥ संता की पैज रखदा ग्राइग्रा ग्रादि बिरदु प्रतिपाला ॥ २ ॥ हरि ग्रंमृत नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु नाठा गुणगोबिंद नित गावहु ॥ ३ ॥ सुणी ग्ररदासि सुग्रामी मेरै सरब कला बणि ग्राई ॥ प्रगट भई सगले जुग ग्रंतरि गुर नानक की वडिग्राई ॥ ४ ॥ ११ ॥

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ऐकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुरहाई ॥ सुणि मीता जीउ

हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥ १ ॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तैकू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥ २ ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरिनामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि बरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥४॥२॥१३॥ सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥ १ ॥ देखहु अचरजु भइआ ॥ जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥ २ ॥ जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ एकु रतनु मोकउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥ ३ ॥ एक बूंद गुरि अंमृतु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ भगति भंडार गुरिनानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥४॥३॥१४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जाका मनु लीना से जन तृपति अघाई ॥ गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर तृसन तृखाई ॥ १ ॥ हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ जिस नो विसरै मेरा राम सनेही

तिसु लाख वेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥ २ ॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥ जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥४॥४॥१५॥ सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥ १ ॥ हरि जन कउ इही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही तृपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥ २ ॥ बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरिजन हरि गुण गावहि ॥३॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥२॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥ १ ॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करणहारु तृणु जानै ॥ तू दाता मागउ कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥ २ ॥ खिन महि अवरु

खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूड़ो गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥ ३ ॥ साध संगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥ १ ॥ हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥ २ ॥ संतन मोकउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ धरमराइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥ ३ ॥ महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मन मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ सोरठि म० ५ ॥ जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥ १ ॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुमही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ घाल न भानै अंतर बिधि जानै ताकी करि मन सेवा ॥ करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥ ३ ॥ गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥ नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥ सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥ १ ॥ पूरे गुर की देखु वडाई ॥ ताकी कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥ २ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरिगुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ कहु नानक ताके पूर करंमा जाका गुरचरनी मनु लागा ॥

४ ॥ १० ॥ २१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी संगि लागै जाते कछू न पाईऐ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिग्राईऐ ॥ १ ॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ मृग तृसना अरु सुपन मनोरथ ताकी कछु न वडाई ॥ राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥ २ ॥ हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ धावत धावत नह तृपतासिआ राम नामु नही चीना ॥ ३ ॥ साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥४॥११॥ २२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥ भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ताकी पूरन घाला ॥ ३ ॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥४॥१२॥२३॥ सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥ सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई वडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥ २ ॥ जै जैकारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥ ३ ॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥ १ ॥ प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ करि

किरपा प्रभ दीन दइग्राला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइग्रा चिंता सगल बिनासी ॥ करि किरपा ग्रपुनो करि लीना मनि वसिग्रा ग्रबिनासी ॥ २ ॥ ताकउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि ग्रपुनै राखे ॥ चरन कमल बसे रिद ग्रंतरि ग्रंमृत हरि रसु चाखे ॥ ३ ॥ करि सेवा सेवक प्रभ ग्रपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ नानक दास ताकै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ माइग्रा मोह मगनु ग्रंधिग्रारै देवनहारु न जानै ॥ जीउ पिंडु साजि जिनि रचिग्रा बलु ग्रपुनो करि मानै ॥ १ ॥ मन मूड़े देखि रहिग्रो प्रभ सुग्रामी ॥ जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥ जिहवा सुग्राद लोभ मदि मातो उपजे ग्रनिक बिकारा ॥ बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइग्रा हउमै बंधन के भारा ॥ २ ॥ देइ किवाड़ ग्रनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥ ३ ॥ दीन दइग्राल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ग्रोट न काई ॥ काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमु होग्रा सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ गुर पूरे की बाणी जपि ग्रनदु करहु नित प्राणी ॥ १ ॥ हरि साचा सिमरहु भाई ॥ साध संगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ ग्रंमृत नामु परमेसुर तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ जिसनो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥ २ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ गुण गावत ग्रचुत ग्रबिनासी ग्रनदिनु हरि रंगि जागा ॥ ३ ॥ मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ ग्रादि ग्रंति मधि नानक कउ सो प्रभु होग्रा बेली ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥ सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा ग्ररु तेरा बिनसै ग्रपनी धारी ॥ १ ॥ संतहु इहा बतावहु कारी ॥ जितु हउमै गरबु निवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिग्रा होवां सगल रेनारी ॥ २ ॥ पेखिग्रो प्रभ जीउ ग्रपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥ ३ ॥ ग्रउखधु नामु निरमल जलु ग्रंमृतु पाईऐ गुरू दुग्रारी ॥

४ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

सोरठि महला ५ ॥ घरु २ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥ १ ॥ संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ २९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जाकै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ चारि पदारथ नवनिधि पावहि बहुरि न तृसना भुखी ॥ १ ॥ जा को नामु लैत तू सुखी ॥ सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ॥२॥२॥३०॥ सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥ १ ॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ हरि जन मंगल गावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ साध संगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥ १ ॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई॥ जाकी सरणि पइआं सुखुपाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥१॥

रहाउ ॥ वडभागी साध संगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानक दासु बाछै जिन हरिनामु रिदै परोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥ १ ॥ मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ अंतर की गति तुमही जानी तुझही पाहि निबेरो ॥ बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५ ॥ सोरठि म० ५ ॥ भए कृपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥१॥ भलो समूरतु पूरा ॥ सांति सहज आनंद नाम जपि वाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ भए कृपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१ ॥ मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥ १ ॥ हरि के चरण कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भए कृपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥ २ ॥ १० ॥ ३८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥

आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥ पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ २ ॥ ११ ॥ ३९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घरि महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥ २ ॥ १२ ॥ ४० ॥ सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिओ भाई ॥ १ ॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥ २ ॥ १३ ॥ ४१ ॥ सोरठि म० ५ ॥ गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥ ४२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥ १ ॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ जै जैकार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥ १५ ॥ ४३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब

कलिआणु ॥ रहाउ ॥ जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥२॥१६॥४४॥ सोरठि महला ५ ॥ दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥ १ ॥ होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥२॥१८॥ ४६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि ॥ अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥ १ ॥ हरि के चरण रिदै उरिधारि ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ १९ ॥ ४७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ सुख सागर प्रभु बिसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥ १ ॥ सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥

साध संगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥ १ ॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥२॥२१॥४९॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥ अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥ १ ॥ पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ उमरावहु आगै झेरा ॥ मिलि राजन राम निबेरा ॥ १ ॥ अब ढूढन कतहु न जाई ॥ गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइआ प्रभ दरबारा ॥ ता सगली मिटी पूकारा ॥ लबधि आपणी पाई ॥ ता कत आवै कत आई ॥ २ ॥ तह साच निआइ निबेरा ॥ ऊहा सम ठाकुर सम चेरा ॥ अंतरजामी जानै ॥ बिनु बोलत आपि पछानै ॥ ३ ॥ सरब थान को राजा ॥ तह अनहद सबद अगाजा ॥ तिसु पहि किआ चतुराई ॥ मिलु नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हिरदै नामु वसाइहु ॥ घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥ गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ सो सुखु साचा लहिआ ॥ १ ॥ अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ साची गुर वडिआई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ सिरि साहा पातिसाहा ॥ गुर भेटत मनि ओमाहा ॥ २ ॥ सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साध संगति कै साथे ॥ गुण निधान हरिनामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ ३ ॥ गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ सभ स्रिसटि करै जैकारा ॥ नानक प्रभु मेरै साथे ॥ जनम मरण भै लाथे ॥ ४ ॥ २ ॥ ५२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी ॥ प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ करि इसनानु ग्रिहि आए ॥

अनद मंगल सुख पाए ॥ १ ॥ संतहु रामि नामि निसतरीऐ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥ २ ॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥ ३ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ साहिबु गुनी गहेरा ॥ घरु लसकरु सभु तेरा ॥ रखवाले गुर गोपाला ॥ सभि जीअ भए दइआला ॥ १ ॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ भउ कतहि नहीं प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ बलु धनु तकीआ तेरा ॥ तू भारो ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ जिनि जिनि साध संगु पाइआ ॥ सो प्रभि आपि तराइआ ॥ करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ कुसल खेम सभ थीआ ॥ ३ ॥ होए प्रभू सहाई ॥ सभ उठि लागी पाई ॥ सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सूख सहज आनंदा ॥ प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥ पूरै गुरि किरपा धारी ॥ ता गति भई हमारी ॥ १ ॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ नित वाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ हरि चरण की ओट सताणी ॥ सभ चूकी काणि लोकाणी जग जीवनु दाता पाइआ ॥ हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥ २ ॥ प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ मन पूरन होई आसा ॥ जह पेखा तह सोई ॥ हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि राखे ॥ सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ निरभउ नामु धिआइआ ॥ अटल सुखु नानक पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ठाढि पाई करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥ १ ॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ तिनि सगला

रोगु बिदारू ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥ २ ॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ गुर का सबदु भइओ साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥ ३ ॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥ सोरठि महला ५ ॥ विचि करता पुरखु खलोआ ॥ वालु न विंगा होआ ॥ मजनु गुर आंदा रासे ॥ जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥ संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीका ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जैकारु जगु गावै ॥ मनि चिंदिअड़े फल पावै ॥ सही सलामति नाइ आए ॥ अपणा प्रभू धिआए ॥ २ ॥ संत सरोवर नावै ॥ सो जनु परमगति पावै ॥ मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥ ३ ॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ सभ चिंता गणत मिटाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ काई बात न रहिआ ऊरी ॥ गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ हरि हरि नामु सम्हारे ॥ १ ॥ अपने दास का सदा रखवाला ॥ करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ जपि जीवहि से वडभागा ॥ २ ॥ हरि अंमृत बाणी गावै ॥ साधा की धूरी नावै ॥ अपुना नामु आपे दीआ ॥ प्रभ करणहार रखि लीआ ॥ ३ ॥ हरि दरसन प्रान अधारा ॥ इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ करि किरपा अंतरजामी ॥ दास नानक सरणि सुआमी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ हरि संगि सहाई पाइआ ॥ जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ करि किरपा प्रभि मेले ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा ॥ हम संत जनां रेनारा ॥ पतित पुनीत करि लीने ॥ करि किरपा हरि जसु दीने ॥ २ ॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ सद जीअ संगि रखवाला ॥

हरि दिनु रैणि कीरतनु गाईऐ ॥ बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ हरि रसु तिन ही जाता ॥ जम कंकरु नेड़ि न आइआ ॥ सुखु नानक सरणी पाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥ प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥१॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित पुनीत सभ होए ॥ रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥ २ ॥ गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥ साध संगि मिलि धिआईऐ ॥ मन बांछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥ ३ ॥ गुर गोपाल आनंदा ॥ जपि जपि जीवै परमानंदा ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥ रागु सोरठि महला ५ ॥ दहदिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥ १ ॥ हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुख दाइओ ॥ मंदरि चरिकै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥ २ ॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥ ३ ॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुर सगरो दूखु मिटाइओ ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥ ४ ॥ सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥ जो चाहत सो गुरू मिलाइओ सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥ ११ ॥ ६१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु

ग्रागै मारगि पावै ॥ २ ॥ हरि ग्रंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि ग्राखि सुणाईऐ ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ ग्रवर ग्रोट मै सगली देखी इक तेरी ग्रोट रहाईऐ ॥ ३ ॥ होइ दइग्रालु किरपालु प्रभु ठाकुरु ग्रापे सुणै बेनंती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ हरि हरि नामु ग्रवखदु मुखि पाइग्रा जन नानक सुखि वसंती ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए ग्रनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ गुन गावत धिग्रावत प्रभु ग्रपना कारज सगले सांठे ॥ १ ॥ जग जीवन नामु तुमारा ॥ गुर पूरे दीग्रो उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तू है मंत्री सुनहि प्रभ तू है सभु किछु करणैहारा ॥ तू ग्रापे दाता ग्रापे भुगता किग्रा इहु जंतु विचारा ॥ २ ॥ किग्रा गुण तेरे ग्राखि वखाणी कीमति कहणु न जाई॥पेखि पेखि जीवै प्रभु ग्रपना ग्रचरजु तुमहि वडाई ॥ ३ ॥ धारि ग्रनुग्रहु ग्रापि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥४॥१३॥६३॥ सोरठि म० ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि ग्रपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥ १ ॥ ग्रपने दास को भइग्रो सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइग्रा ॥ पिछै लगि चली माइग्रा ॥ तोटि न कतहू ग्रावै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥ सिमरि सिमरि दइग्राला ॥ सभि जीग्र भए किरपाला ॥ जै जैकारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ ३ ॥ तू भारो सुग्रामी मोरा ॥ इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥ जन नानक एकु धिग्राइग्रा ॥ सरब फला पुंनु पाइग्रा ॥४॥१४॥६४॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु बीचारे ॥ रहाउ ॥ साध संगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइग्रो साथी ॥ नानक नामु

धिआइआ ॥ आदि पुरख सभु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥ सो घरु दयि वसाइआ ॥ सुखसागरु गुरु पाइआ ॥ ता सहसा सगल मिटाइआ ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ आठ पहर गुण गाई ॥ गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी ॥ जन बोलहि अंमृत बाणी ॥ नानक दास वखाणी ॥ गुर पूरे ते जाणी ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ ॥ पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ सरब निधान सुख पाइआ ॥ गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥ १ ॥ अपने सतिगुर की वडिआई ॥ मन इछे फल पाई ॥ संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरद हमारे ॥ राम नामि मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ताकी सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई आसा ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर अपुने बलिहारी ॥ जिनि पूरन पैज सवारी ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥ १ ॥ संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि अपनै वर दीने ॥ सगल जीअ वसि कीने ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ ता सगले दूख मिटाइआ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ वाजे अनहद तूरे ॥ सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ करि किरपा आपि दीने ॥ १ ॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मंगहि सो लेवहि ॥ प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ जन नानक साचु सुभाखिआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥ सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ हम बारिक तउ सरणाई ॥ प्रभि आपे पैज

रखाई ॥ १ ॥ मेरा मात पिता हरि राइग्रा ॥ करि किरपा प्रति पालण लागा करीं तेरा कराइग्रा ॥ रहाउ ॥ जीग्र जंत तेरे धारे ॥ प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥ जि करावै सो करणा ॥ नानक दास तेरी सरणा ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ हरिनामु रिदै परोइग्रा ॥ सभु काजु हमारा होइग्रा ॥ प्रभ चरणी मनु लागा ॥ पूरन जाके भागा ॥ १ ॥ मिलि साध संगि हरि धिग्राइग्रा ॥ ग्राठ पहर ग्राराधिग्रो हरि हरि मन चिंदिग्रा फलु पाइग्रा ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला ग्रंकुरु जागिग्रा ॥ राम नामि मनु लागिग्रा ॥ मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ नानक दास सचे गुण गावै ॥ २ ॥८॥७२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिग्रा ॥ कारज सभि सवारिग्रा ॥ मंदा को न ग्रलाए ॥ सभ जै जैकारु सुणाए ॥ १ ॥ संतहु साची सरणि सुग्रामी ॥ जीग्र जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु ग्रंतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभि सवारे ॥ प्रभि ग्रपना बिरदु समारे ॥ पतित पावन प्रभ नामा ॥ जन नानक सद कुरबाना ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिग्रा ॥ इहु लहुड़ा गुरू उबारिग्रा ॥ ग्रनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीग्र का दाता ॥ १ ॥ सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ राखहि पैज दास ग्रपुने की कारज ग्रापि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु परउपकारी ॥ पूरन कल जिनि धारी ॥ नानक सरणी ग्राइग्रा ॥ मन चिंदिग्रा फलु पाइग्रा ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे ॥ प्रभ बालक राखे ग्रापे ॥ सीतला ठाकि रहाई ॥ बिघन गए हरि नाई ॥ १ ॥ मेरा प्रभु होग्रा सदा दइग्राला ॥ ग्ररदासि सुणी भगत ग्रपुने की सभ जीग्र भइग्रा किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करणकारण समराथा ॥ हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ ग्रपणे दास की सुणी बेनंती ॥ सभ नानक सुखि सवंती ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ग्रपना गुरू धिग्राए ॥ मिलि कुसल सेती घरि ग्राए ॥ नामै की वडिग्राई ॥ तिसु कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ संतहु हरि हरि हरि ग्राराधहु ॥ हरि ग्राराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥

प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥ जन नानक नामु धिग्राइग्रा ॥ तिनि सरब सुखा फल पाइग्रा ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना ॥ ग्रनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ संतहु सुखु होग्रा सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिग्रा सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी ग्राई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइग्राल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ग्रोथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइग्राला ॥ दास ग्रपने ग्रापि राखे ॥ घटि घटि सबदु सुभाखे ॥ १ ॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ ग्रापि सहाई होग्रा ॥ सचे दा सचा ढोग्रा ॥ तेरी भगति वडिग्राई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिग्रा नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥ १ ॥ हरि के चरण सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी ग्रास न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ताका मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥ २ ॥ ग्राठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ संगि मिलाइ लीग्रा मेरै करतै संत साध भए साथी ॥ ३ ॥ करु गहि लीने सरब सु दीने ग्रापहि ग्रापु मिलाइग्रा ॥ कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइग्रा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी ॥ खंना सगल रेनु छारी ॥ इसु ग्रागै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे एह गल सारी ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन की ग्रोटा ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगि जसु गाइग्रा ॥ इहु पूरन हरि धनु पाइग्रा ॥ कहु नानक ग्रापु मिटाइग्रा ॥ सभु पारब्रहमु नदरी ग्राइग्रा ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ बखस ग्रपुनी करि दीनी ॥ नित ग्रानंद सुख पाइग्रा ॥ थाव सगले सुखी वसाइग्रा ॥ १ ॥ हरि की भगति

फलदाती ॥ गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ २ ॥ १७ ॥ ८१ ॥ सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा आराधे ॥ कारज सगले साधे ॥ सगल मनोरथ पूरे ॥ बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥ नानक दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥ २ ॥ १८ ॥ ८२ ॥ सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै ॥ तिउ हरिजनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥ २ ॥ जिउ माता बालि लपटावै ॥ तिउ गिआनी नामु कमावै ॥ ३ ॥ गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥ ४ ॥ १९ ॥ ८३ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सुख सांदि घरि आइआ ॥ निंदक कै मुखि छाइआ ॥ पूरै गुरि पहिराइआ ॥ बिनसे दुख सबाइआ ॥ १ ॥ संतहु साचे की वडिआई ॥ जिनि अचरज सोभ बणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ नानक प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥ सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ घरि सही सलामति आए ॥ संतोखु भइआ संसारे ॥ गुरि पूरै लै तारे ॥ १ ॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरिनामु रिदै उरिधारे ॥ तिनि सभे थोक सवारे ॥ गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥२॥२१॥८५॥ सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ जै जैकारु करे सभु कोई ॥ गुर पूरे की वडिआई ॥ ता की कीमति कही न जाई ॥ १ ॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ जिसनो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं भारो सुआमी मेरा ॥ संतां भरवासा तेरा ॥ नानक प्रभ

सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥ सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता ॥ पाछै आनदु प्रभि कीता ॥ परमेसुरि बणत बणाई ॥ फिरि डोलत कतहू नाही ॥ १ ॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जीअ तेरे दइआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥ सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणु मेरै ॥ जम दूतु न आवै नेरै ॥ कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥ १ ॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए ॥ सुखि सांदि फिरि आए ॥ नानक प्रभ सरणाए ॥ जिनि सगले रोग मिटाए ॥ २ ॥ २४ ॥ ८८ ॥ सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ताकी सरनी पाईऐ ॥ दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेनंती प्रभ जी नाम रहा लिवलाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥ सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥ १ ॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥ २ ॥ सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी मति जाकी पूरन प्रभ के कांमा ॥ गुर चरनी लागि तरिओ भवसागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥ सोरठि महला ५ ॥ भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥ १ ॥ मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥ सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत

जाके सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ साध संगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥२॥२७॥९१॥ सोरठि महला ५ ॥ सिमरउ अपुना सांई ॥ दिनसु रैनि सद धिआई ॥ हाथ देइ जिनि राखे ॥ हरि नाम महा रस चाखे ॥ १ ॥ अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ नानक जन सरनाई ॥ जिनि पूरन पैज रखाई ॥ सगले दूख मिटाई ॥ सुखु भु ंचहु मेरे भाई ॥ २ ॥२८॥९२॥ सोरठि महला ५ ॥ सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नामु अपुने की करनकरावन हारे ॥१॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२९॥९३॥ सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भवनिधि पारि उतारे ॥ १ ॥ संतन के कारज सगल सवारे ॥ दीन दइआल क्रिपाल कृपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥ २ ॥ ३० ॥ ९४ ॥

सोरठि महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि साध संगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥ १ ॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥ २ ॥ १ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन की मन ही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभु मही ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानहु भजनु रामु को सही ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक

कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥ २ ॥ २ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ परदारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥ अंति संगि काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥ १ ॥ ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥ घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥ २ ॥ बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥ मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥ ३ ॥ ३ ॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका सी उधरी ताको जसु उरधारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ ध्रूअ जाकै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ १ ॥ जब ही सरनि गही किरपा निधि गज ग्राह ते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ जाते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ कउनु नामु गुर जाकै सिमरै भवसागर कउ तरई ॥ १ ॥ कल मै एकु नामु किरपानिधि जाहि जपै गति पावै ॥ अउर धरम ताकै समि नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ २ ॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाई ॥ सो तुमही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥ ३ ॥ ४ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ बिखिआ सकत रहिओ निसबासुर नह छूटी अधमाई ॥ १ ॥ साध संगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥ २ ॥ ६ ॥ सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ निसबासुर बिखिअन कउ धावत किहि

बिधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान सिम्रिति के मति सुनि निमख न हीए बसावै ॥ परधन परदारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥ १ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ घट ही भीतरि बसत निरंजनु ताको मरमु न जाना ॥ २ ॥ जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥ ३ ॥ ७ ॥ सोरठि महला ९ ॥ रे नर इह साची जीअ धारि ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥ १ ॥ अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥ २ ॥ ८ ॥ सोरठि महला ९ ॥ इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ सगल जगतु अपनै सुख लागिओ दुख मै संगि न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥ कहंउ कहायिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ताको बिसराइओ ॥ २ ॥ सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधो बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥ सोरठि महला ९ ॥ मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ कहा भइओ जउ मूड मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचि छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ करि परपंच उदर निज पेखिओ पसु की निआई सोइओ ॥ १ ॥ राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥ रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥ सोरठि महला ९ ॥ जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ सुख सनेहु अरु भै नही जाकै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निंदिआ नह उसतति जाकै लोभु मोहु अभिमाना ॥ हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥ आसा मनसा सगल तिआगै जग ते

रहै निरासा ॥ कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥ सोरठि महला ९ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥ २ ॥ इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ तृसना राचि न पर घरि जावा तृसना नामि बुझाई ॥ घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥ १ ॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥ २ ॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ भिखिआ नामि रजे संतोखी अंमृतु सहजि पीआई ॥ ३ ॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥ सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु

सहामं ॥ करम सुकरम कराए आपे आपे भगति दृड़ामं ॥ मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥ ५ ॥ जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गूंगे मिठिआई ॥ अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ जिउ चलाए तिउ चालह भाई होरि किआ को करे चतुराई ॥ ६ ॥ इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा ॥ सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥ सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अंम्रित नामु अधारा ॥ ७ ॥ गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥ नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥ सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥ पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥ १ ॥ सुणि पंडित करमाकारी ॥ जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥ पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥ २ ॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥ ३ ॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥ ४ ॥ पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥ ५ ॥ इहु जगु तागो सूत को भाई दहदिस बाधो माइ ॥ बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥ ६ ॥ गुर मिलिऐ भउ

मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥ गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥६॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥ ८ ॥ २ ॥ सोरठि महला १ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन के साथ तरे ॥ तिना ठाक न पाईऐ पिआरे अंम्रित रसन हरे ॥ बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥ १ ॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥१॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥ २ ॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥३॥ हुकमै अंदरि निमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥ ४ ॥ हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ हुकमे बंनि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥ ५ ॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥ ६ ॥ आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ जिनी सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥ ७ ॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरिधारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ हम अपराधी निरगुणे भाई तुझही ते गुणु सोइ ॥ १ ॥ मेरे

प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥ चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥ २ ॥ रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥ ३ ॥ पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥ ४ ॥ जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥ गिआनि महारसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥ ५ ॥ देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥ ६ ॥ गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥ ७ ॥ बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि राइ ॥ ८ ॥ सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥ ९ ॥ ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥ खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥ १० ॥ ४ ॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥ २ ॥ मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरिनामि न लागा भाउ ॥ कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥ ३ ॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ माइआ

मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥ ४ ॥ अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरिप्रभु है रखवारा ॥ ५ ॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ गुरमुखि होवै सु अंमृतु पीवै सहजे साचि समाई ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुरु सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥ वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥ ७ ॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरिधारा ॥ ८ ॥ १ ॥ सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु अधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिनकै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई

तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥८॥२॥ सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥ १ ॥ हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥ गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ २ ॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ ३ ॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥ ४ ॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिसदी वडी है दाति ॥ ५ ॥ मनमुखि मैली डुंमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥ ६ ॥ एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥ किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥ ७ ॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीरि ॥ नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिसते जापै तथु ॥ १ ॥ मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥ जाकै घरि सभु किछु है भाई नउनिधि भरे भंडार ॥ तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥ २ ॥ सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै

परगासु ॥ गुरबचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥ ३ ॥ मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ करनकरावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥ ५ ॥ गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥ ६ ॥ बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ ओहु निरगुणिआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जाका नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥ ८ ॥ अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥ ९ ॥ १ ॥ सोरठि महला ५ ॥ मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ जिसनो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ सो अराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥ १ ॥ मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ जिन भेटै पूरा सतिगुरू

पिआरे से लागे साचै नाइ ॥ तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥ २ ॥ मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥ ३ ॥ माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥ ४ ॥ साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥ मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥ ५ ॥ संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥ सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥ ६ ॥ सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंम्रिति पूरे भरे ॥ दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥ ७ ॥ संम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥ ८ ॥ २ ॥

सोरठि महला ५ घरु २

असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥ पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ॥ १ ॥ पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ मोनि भइओ करपाती रहिओ

नगन फिरिओ बन माही ॥ तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए॥ मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥ ३ ॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा॥ ४ ॥ पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥ ५ ॥ जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥ ६ ॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा॥ ७ ॥ हरि कीरति साध संगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥ तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ भइओ कृपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि वार महले ४ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु म० १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥ जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥ म० ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुर सतिगुरि नामु दृड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ

वारिआ ॥ १ ॥ सलोकु म० ३ ॥ हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥ इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरिनामु धिआईऐ ॥ सत संगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥ हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥ हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥ २ ॥ सलोकु म० ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआस ॥ जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नामु निवासु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आपसुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइकै आपि खेलु रचाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥ जिना हरि आपि कृपा करे से गुरि समझाइआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥ ३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनि सचि नामि चितु लाइआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि

नदरी आइआ ॥ धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुख दाता मनि न वसाइआ ॥ नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥ गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥ निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥ ४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ जीउ वंञै चउखंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥ हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥ इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥ जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥ ५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफलु है जेको करे चितु लाइ ॥ मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख मंनु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ तिसनो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥ इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥ मन की

सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ गुरपरसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ एहु माइआ रंगु कसु‍ंभ खिन महि लहि जावणा ॥ चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥ ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥ ६ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि तै मरि जाहि ॥ सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥ ७ ॥ सलोकु म० ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंमृतु सारु ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरिधारि ॥ एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ आपि विछोड़েनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ हरिनामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ हउ बलिजावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥ ८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ विणु नावै सभि

भरमदे नित जगि तोटा संसारि ॥ मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ गुरमुखि अंमृतु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से हरिनामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥ हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥ ९ ॥ सलोक म० ३ ॥ अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ विखु विचि अंमृतु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ जेको बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई ॥ हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥ १० ॥ सलोकु म० ३ ॥ सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥ एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ सतिगुर कै भाणै भी चलहि तादरगह पावहि माणु ॥ नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥१॥ म० ३ ॥ हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥ जनु नानकु

कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥ ११ ॥ सलोकु म० ३ ॥ परथाइ साखी महापुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥ अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ॥ पंडित तिनकी बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई न धनु पलै पाइ ॥ पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ गुण साझी तिन सिउ करी हरिनामु धिआई ॥ हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥ १२ ॥ सलोकु म० ३ ॥ पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुगचारि ॥ त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ अंतरि तृसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि बीचारि ॥ अंदरहु तृसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरिधारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुख हरिनामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥ नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ जो गुरमुखि चखै सादु सा तृपतावणी ॥ गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥ १३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ हसती सिरि जिउ अंकसु है

अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु सृसटि का लेइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥ १४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥१॥ म० ३ ॥ नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धनु संपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हरि रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरिनाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥१५॥ सलोकु म० ३ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥ १६ ॥ सलोकु म० ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि

बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ तृसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥ १७ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ सभदू वडे भाग गुरसिखा के जो गुरचरणी सिख पड़तिआ ॥ १८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ ब्रहमु बिंदै तिसदा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिवलाइ ॥ नवनिधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख तृसना भुख न जाइ ॥ गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ अंदरि तृपति संतोखिआ फिरि भुख

न लगै ग्राइ ॥ नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ बलिहारी तिन कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ जो हरि नामु धिम्राइदे तिन दरसनु पिखा ॥ सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥ हरि नामु सालाही रंग सिउ सभि किलविख क्रखा ॥ धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥१९॥ सलोकु म० ३ ॥ गुर बिनु गिग्रानु न होवई ना सुखु वसै मनि ग्राइ ॥ नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइग्रो गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ सा सिधि सा करमाति है ग्रचिंतु करे जिसु दाति ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ हरि दाता सभु जगतु भिखारीग्रा मंगत जन जंता ॥ हरि देवहु दानु दइग्राल होइ विचि पाथर क्रम जंता ॥ जन नानक नामु धिग्राइग्रा गुरमुखि धनवंता ॥२०॥ सलोकु म० ३ ॥ पड़णा गुड़णा संसार की कार है ग्रंदरि तृसना विकारु ॥ हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुग्रारु ॥ सो पड़िग्रा सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ ग्रंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुग्रारु ॥ गुण निधानु हरि पाइग्रा सहजि करे वीचारु ॥ धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु ग्रधारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ भेख धारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिग्रा जाइ ॥ गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु दृड़ावहु इक किनका ॥ हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिग्रारा प्रिम का ॥ हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलविख काटै इक पलका ॥ हरि हरि

दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥ २१ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुरपरसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥ म० ३ ॥ चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक गुरपरसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥२२॥ सलोकु म० ३ ॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरिवरु पाइआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि जीउ तिन का दरसनु न करहु पापिसट हतिआरी ॥ ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥ २३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार

॥ पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥ २४ ॥ सलोकु म० ४ ॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥१॥ म० ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥ २५ ॥ सलोकु म० ४ ॥ अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥ १ ॥ म० ४ ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुरचरनी चितु लाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥ अंम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥ नानक भए पुनीत हरि

तीरथि नाइआ ॥ २६ ॥ सलोकु म० ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओसदा एहो जेहा पइआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ एहु ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ गुरि कृपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥ २७ ॥ सलोक म० १ ॥ ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥ हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥ १ ॥ म० २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥ आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥ दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥ २८ ॥ सलोकु म० ३ ॥ ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥ हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥ सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ तुधु आपे सिसटि सिरजीआ

ग्रापे फुनि गोई ॥ सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ वडिग्राई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ गुरमुखि नानक ग्राराधिग्रा सभि ग्राखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ बुत पूजि पूजि हिंदू मुए तुरक मूए सिरु नाई ॥ ग्रोइ ले जारे ग्रोइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ १ ॥ मन रे संसारु ग्रंध गहेरा ॥ चहुदिस पसरिग्रो है जम जेवरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥ २ ॥ दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥ ३ ॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥४॥१॥ जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ काची गागरि नीरु परतु है इग्रा तन की इहै बडाई ॥ १ ॥ काहे भईग्रा फिरतौ फूलिग्रा फूलिग्रा ॥ जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिग्रा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसे जोरि जोरि धनु कीग्रा ॥ मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीग्रा ॥ २ ॥ देहुरी लउ बरी नारि संग भई ग्रागै सजन सुहेला ॥ मरघट लउ सभु लोगु कुटंबु भइग्रो ग्रागै हंसु ग्रकेला ॥ ३ ॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूग्रा ॥ झूठी माइग्रा ग्रापु बंधाइग्रा जिउ नलनी भ्रमि सूग्रा ॥ ४ ॥ २ ॥ बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की ग्रासा ॥ काल ग्रसत सभ लोग सिग्राने उठि पंडित पै चले निरासा ॥ १ ॥ मन रे सरिग्रो न एकै काजा ॥ भजिग्रो न रघुपति राजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनखंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइग्रा ॥ नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइग्रा ॥ २ ॥ भगति नारदी रिदै न ग्राई काछि कूछि तनु दीना ॥ राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनि हरि पहि किग्रा लीना ॥ ३ ॥ परिग्रो कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिग्रानी ॥ कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ ४ ॥

३ ॥ घरु २ ॥ दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रंगु लाई ॥ अब बेगल कहनु न जाई ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई ॥ सभ खलक तमासे आई ॥ बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ अपने रंग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ जाकउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ताके हिरदै रहिआ समाई ॥ ३ ॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ कहि कबीर रंगि राता ॥ मिलिओ जगजीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥ जाके निगम दूध के ठाटा ॥ समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ ताकी होहु बिलोवन हारी ॥ किउ मेटैगो छाछि तुहारी ॥ १ ॥ चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ जगजीवन प्रान अधारा ॥ १ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ तू जमि बपुरी है हेरी ॥ २ ॥ प्रभ करन करावनहारी ॥ किआ चेरी हाथि बिचारी ॥ सोई सोई जागी ॥ जितु लाई तितु लागी ॥ ३ ॥ चेरी तै सुमति कहां ते पाई ॥ जाते भ्रम की लीक मिटाई ॥ सु रसु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुरप्रसादि मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ जिह बाझु न जीआ जाई ॥ जउ मिलै त घाल अघाई ॥ सद जीवनु भलो कहांही ॥ मूए बिनु जीवनु नाही ॥ १ ॥ अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ निज निरखत गत बिउहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ पूति पिता इकु जाइआ ॥ बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥ २ ॥ जाचक जन दाता पाइआ ॥ सो दीआ न जाई खाइआ ॥ छोडिआ जाइ न मूका ॥ अउरन पहि जाना चूका ॥ ३ ॥ जो जीवन मरना जानै ॥ सो पंच सैल सुख मानै ॥ कबीरै सो धनु पाइआ ॥ हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥ पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिओ सोई ॥ १ ॥ हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ किआ सोचहि बारंबारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥ इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥ बसतु अगोचर पाई ॥ घटि

दीपकु रहिया समाई ॥ २ ॥ कहि कबीर अब जानिआ ॥ जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ मन माने लोगु न पतीजै ॥ न पतीजै तउ किआ कीजै ॥ ३ ॥ ७ ॥ हृदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ १ ॥ कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥ जउ घट भीतरि है मलनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥ २ ॥ कहि कबीर बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

सोरठि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ बहु परपंच करि परधनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥ १ ॥ मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥ २ ॥ कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥ ३ ॥ ९ ॥ संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ मूंदि लीए दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥ १ ॥ कुंभ कमलु जलि भरिआ ॥ जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ कहु कबीर जन जानिआ ॥ जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ २ ॥ १० ॥ रागु सोरठि ॥ भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हउ मांगउ संतन रेना ॥ मै नाही किसी का देना ॥ १ ॥ माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥ अध सेरु मांगउ दाले ॥ मोकउ दोनउ वखत जिवाले ॥ २ ॥ खाट मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥ तेरी भगति करै जनु थींधा ॥ ३ ॥ मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥ ४ ॥ ११ ॥

रागु सोरठि बाणी भगत नाम दे जी की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जब देखा तब गावा ॥ तउ जन धीरजु पावा ॥ १ ॥ नादि समाइलो रे

सतिगुरु भेटिले देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ तह अनहद सबद बजंता ॥ जोती जोति समानी ॥ मै गुरपरसादी जानी ॥ २ ॥ रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल तही ॥ नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जह अनहत सूर उज्यारा ॥ तह दीपक जलै छंछारा ॥ गुरपरसादी जानिआ ॥ जनु नामां सहज समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछिले नामा कापहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मोकउ बेढी देहु बताई हो ॥ १ ॥ री बाई बेढी देनु न जाई ॥ देखु बेढी रहिओ समाई ॥ हमारै बेढी प्राण अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ २ ॥ ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥ गूंगै महा अंमृत रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ ३ ॥ बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि धू थापिओ हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥ ४ ॥ २ ॥ सोरठि घरु ३ ॥ अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ बादल बिनु बरखा होई ॥ जउ ततु बिचारै कोई ॥ १ ॥ मोकउ मिलिओ रामु सनेही ॥ जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ गुर पूछे मनु पतीआगा ॥ २ ॥ जल भीतरि कुंभ समानिआ ॥ सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ गुर चेले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही ॥ १ ॥ माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुखु

पाइआ सो गति भई हमारी ॥ २ ॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥ ३ ॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥ ४ ॥ १ ॥ जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ १ ॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥ २ ॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥ ३ ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह कासिउ कहीऐ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥ ४ ॥ २ ॥ दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि गृह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ १ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ २ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥ सुखसागरु सुरतरु चिंतामनि कामधेनु बसि जाके ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ ४ ॥ जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥ १ ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ तुम तीरथ

तउ हम जाती ॥ २ ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ ३ ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ ४ ॥ तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥ जल की भीति पवन का थंभा रकत बूंद का गारा ॥ हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥ १ ॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां ॥ साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ २ ॥ बंके बाल पाग सिर डेरी ॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥ ३ ॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ तुम सरनागति राजा रामचंद कहि रविदास चमारा ॥ ५ ॥ ६ ॥ चमरटा गांठि न जनई ॥ लोगु गठावै पनही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आर नही जिह तोपउ ॥ नही रांबी ठाउ रोपउ ॥ १ ॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥ २ ॥ रविदासु जपै राम नामा ॥ मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुधवानी ॥ रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ १ ॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने संतह लेहु उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वाका अउखधु नाही ॥ २ ॥ हरि का नामु अंमृत जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुरपरसादि कहै जनु भीखनु पावहु मोख दुआरा ॥ ३ ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥ १ ॥ हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥ २ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै नामि तेरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ताकी सेवा सो करे जाकउ नदरि करेइ ॥ ३ ॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु ताका दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जाके जीअ पराणा ॥ १ ॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगार ॥२॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥ ३ ॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ जम दुआरि

जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥ ४ ॥ जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥ ५ ॥ २ ॥

धनासरी महला १ घरु दूजा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥१॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ ना को चाखै ना को खाइ ॥ लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥ २ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जे को करे कीतै किआ होइ ॥ जिसनो बखसे साचा सोइ ॥ ३ ॥ हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विणु नदरी नानक नही कोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ धनासरी महला १ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ १ ॥ गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ ताते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ २ ॥ ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ साहिब भावै सो परवाणु ॥ सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ साचा साहिबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥ ४ ॥ भनति नानकु करे वीचारु ॥ साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥ धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी विललाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ जिनि जिहवा

दिती बोले तातु ॥ जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥२॥ जेता मोहु परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा दाग ॥ दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ दरगह बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥ करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥ जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ नानक साचा सरब दातार ॥४॥३॥५॥ धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ खोटे का मूलु एकु दुगाणा ॥ जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥ २ ॥ जैसा करे सु तैसा पावै आपि बीजि आपे ही खावै ॥ जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥ ३ ॥ जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवाणु ॥ नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥४॥४॥६॥ धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ खोटा कामि न आवै वेखु ॥ १ ॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ तीने ओजाड़े का बंधु ॥ २ ॥ सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ गुर परसादी एको जाणै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ३ ॥ दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

धनासरी महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥ १ ॥ कल महि राम नामु सारु ॥ अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥

१ ॥ रहाउ ॥ ग्रांट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोग्र ॥ मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु ग्रलोग्र ॥ २ ॥ खत्रीग्रा त धरमु छोडिग्रा मलेछ भाखिग्रा गही ॥ सृसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ ३ ॥ ग्रसट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद ग्रभिग्रासु ॥ बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥४॥१॥६॥८॥

धनासरी महला १ ग्रारती

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलग्रानलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी ग्रारती होइ भव खंडना तेरी ग्रारती ॥ ग्रनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु ग्रारती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो ग्रनदिनो मोहि ग्राही पिग्रासा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नामि वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ३ घरु १ चउपदे

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ इहु धनु ग्रखुटु न निखुटै न जाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीग्रा दिखाइ ॥ ग्रपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥ १ ॥ से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥ गुरि पूरै हरि धनु परगासिग्रा हरि किरपा ते वसै मनि ग्राइ ॥ रहाउ ॥ ग्रवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ पूरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ पूरे गुर की साची बाणी ॥ सुखमन ग्रंतरि सहजि समाणी ॥ ॥ २ ॥ एकु ग्रचरजु जन देखहु भाई ॥ दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ नामु ग्रमोलकु न पाइग्रा जाइ ॥ गुरपरसादि वसै मनि ग्राइ ॥ ३ ॥ सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ गुरमती घटि

परगटु होइ ॥ सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥ नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ३ ॥ हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥ तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥ साची भगति सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥ हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ सतिगुरु मिलै सभु तृसन बुझाइ ॥ नानक नामि सांति सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी महला ३ ॥ सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥ जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥ हरि कै नामि रते लिवलाए ॥१॥ गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥ सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ मूलहु भुला जनमु गवाए ॥ २ ॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ सेवा साची नामि समाणी ॥ सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ साच नामि वडिआई पाए ॥ ३ ॥ आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ नदरि करे मेलावा होइ ॥ गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥ नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥ मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥ १ ॥ गुर सेवा ते जनु निरमल होइ ॥ अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ राम नामि राते भगति दृड़ाई ॥ भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ साचि रते सुख सहजि समाए ॥ २ ॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ साची रासि साचा वापारु ॥ सो धंनु

पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥ ३ ॥ तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥ प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नाम सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ साचै सबदि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ सहजे हरिनामु मंनि वसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कुसतु तृसना अगनि बुझाए ॥ अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥ साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ किसनो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचा भावा ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइ ॥ बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिसनो बखसे हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अंध गवार ॥ बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ ना साथि जाइ न परापति होइ ॥ १ ॥ साचा धनु गुरमती पाए ॥ काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥ चहु जुग महि अंमृतु साची बाणी ॥ पूरै भागि हरनामि समाणी ॥ सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ पूरै भागि परापति होइ ॥ ३ ॥ सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥

उतम ब्रहमु पछाणै कोइ ॥ सचु साचा सचु आपि दृड़ाए ॥ नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥ ४ ॥ ७ ॥ धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ गुरमति साची साचा वीचारु ॥ आपे बखसे दे वीचारु ॥ १ ॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि ॥ हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ गुरपरसादी हंउमै जाइ ॥ आपे बखसे लए मिलाइ ॥ २ ॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥ आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ गुरमति सालाही सचु सोई ॥ ३ ॥ आपे साजे करता सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ नानक नामि सदा सुखु आगै ॥४॥८॥

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥ १ ॥ हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ २ ॥ भनति नानक भरम पट खूल्हे गुरपरसादी जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥ १ ॥ हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥ २ ॥ हरि हरि जपनु जपउ

दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरिधारी ॥ हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी ॥ जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥ १ ॥ हरि कै नामि रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥ किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम वडपुरख वडागी ॥ तुमरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ जो जो कहै सुणै सु मुकता हम तिसकै सद कुरबानी ॥१॥ हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिनकी धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥ हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से तृपतानी ॥ हरि हरि अंमृतु पी तृपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥ ३ ॥ जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥ धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधउ मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥ २ ॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ ३ ॥ हरि

हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चातृक बिलल बिललाती ॥ हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥१॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतुमाती ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥ २ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥ हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ४ ॥ कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥ १ ॥ हरि जी लाज रखहु हरि जनकी ॥ हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥ २ ॥ हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ दिनीअरु सूरु तृसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥ ३ ॥ तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥६॥

धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उरधारि बीचारि मुरारि रमो रमु मन मोहन नामु जपीने ॥ अदसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥ १ ॥ राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥२॥१॥७॥

धनासरी महला ४ ॥ गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ हरि क्रिपानिधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ बहु चिंत विसारी हरि नामु उरिधारी नानक हरि भए है सखाई ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ४ ॥ हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥ १ ॥ मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ४ ॥ चउरासीह सिउ बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥ १ ॥ जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥ १ ॥ बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥२॥५॥ ११ ॥ धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जाकै वसि है कामधेना ॥ सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े

ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥ १ ॥ जपि मन सतिनामु सदा सतिनामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वड भागी हरि जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥ धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥ १ ॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥ २ ॥ सभु को तुझही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ सभि जीअ तेरे तू सभसदा मेरे साहा सभि तुझही माहि समाहि ॥ ३ ॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभितुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥४॥७॥१३॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भवखंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जां गुरमुखि नामु समारे ॥ १ ॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ दीन दइआल करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥ २ ॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥ ३ ॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु वधाइओ ॥ कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥ १ ॥ अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥

मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फांकियो ओहु परवसि भइओ बिचारा ॥ नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उसही हेत बिदारा ॥ २ ॥ देखि कुटंबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥ अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥ ३ ॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥ कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥ ४ ॥ २ ॥ धनासरी म० ५ ॥ करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥ १ ॥ साध संगि चिंत बिरानी छाडी ॥ अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा दुसमनु रहिआ न हम किस के बैराई ॥ ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥ २ ॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥ ३ ॥ बिनसिओ ढीठा अंम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥ धनासरी म० ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥ १ ॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥ २ ॥ चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥ ३ ॥ गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ तिनही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥ जीअ की एकै ही पहिमानी ॥ अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ डिगै न डोलै दृड़ु करि रहिओ पूरन होइ तृपतानी ॥ २ ॥

ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥ अलंकार मिलि थैली होई है ताते कनिक वखानी ॥ ३ ॥ प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥ ४ ॥ ५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ताकी तृसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ १ ॥ बिखिआ महि किनही तृपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ताकी मिटै न भूखा ॥ उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥ २ ॥ कामवंत कामी बहु नारी परगृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंमृतु एकु निधाना ॥ सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥ धनासरी म० ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूऐ जाकउ फिरि इहु धावै ॥ जाकउ गुरि दीनो इहु अंमृतु तिसही कउ बनि आवै ॥ १ ॥ जाकउ आइओ एकु रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ताकै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥ बरनि न साकउ उसतति ताकी कीमति कहणु न जाई ॥ २ ॥ घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ ३ ॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीअ प्रतिपाला ॥ ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥ धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुरि अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रड़ाया ॥ महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥ १ ॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाकै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥ २ ॥ सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥ ३ ॥ सीतल सांति महा सुखु पाइआ संति संग रहिओ ओल्हा ॥ हरि धनु

संचनु हरिनामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥ ४ ॥ ८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ी बिपरीति ॥ १ ॥ माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरि चंदउरी बनहर पात रे इहै तुहारो बीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अंमृत संगि नाहि रूच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥ २ ॥ उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥३॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ साध संगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥ ४ ॥ ९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥ १ ॥ तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी कृपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥ २ ॥ तुम्ह दइआल किरपाल कृपानिधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥ ३ ॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत तृसना सभ बुझी है नानक तृपति अघाई ॥ ४ ॥ १० ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रैगुण भवण चतुर संसारा ॥ जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥ २ ॥ माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ किसही वाधि घाटि किसही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥ ५ ॥ ११ ॥

धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुमही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥ १ ॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ बे सुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किनही लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुमही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥ १२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥ कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥ १ ॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि ताकउ बिखमु न जाई लैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥ २ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥ साध संगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥ १३ ॥ बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥ १ ॥ है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परधन परतन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥ संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥ २ ॥ गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला ॥ मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥ ३ ॥ १४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि ॥ हरि के दास की चितवै बुरिआई तिसही कउ फिरि मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि गृहि न मंझारि ॥ १ ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ निंदक का मुख काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥ २ ॥ १५ ॥ धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु

लोभु मारिश्रा ॥ सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिश्रा ॥ १ ॥ अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिश्रा ॥ चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिश्रा ॥ २ ॥ १६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिश्रा केतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाथ देइ राखिश्रो अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ निंदक के मुख काले कीने जनका श्रापि सहाई ॥ १ ॥ साचा साहिबु होश्रा रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥ निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ १७ ॥ धनासिरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइश्राल ॥ मोहि श्रातुर तेरी गति नही जानी तूं श्रापि करहि प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुश्रामी मेरे दुतीश्रा भाउ निवारि ॥ बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न श्रावह हारि ॥ १ ॥ तेरी सरनि पइश्रा हउ जीवां तूं संम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ श्राठ पहर प्रभ कउ श्राराधी नानक सद कुरबानु ॥२॥१८॥

रागु धनासरी महला ५

१ श्रों सतिगुर प्रसादि ॥ हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुटंब सागर संसार ॥ भरम मोह अगिश्रान अंधार ॥ १ ॥ ऊच नीच सूख दूख ॥ ध्रापसि नाही तृसना भूख ॥ २ ॥ मनि बासना रचि बिखै बिश्राधि ॥ पंच दूत संगि महा असाध ॥ ३ ॥ जीश्र जहानु प्रान धनु तेरा ॥ नानक जानु सदा हरि नेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की श्रापि ॥ तरणतारण हरि निधि दूखु न सकै बिश्रापि ॥ १ ॥ साधू संगि भजहु गुपाल ॥ श्रान संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलिकाल ॥ रहाउ ॥ श्रादि अंति दइश्राल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥ जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुश्रामी सोइ ॥ २ ॥ बेद सिम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ मुकति पाईऐ साध संगति बिनसि जाइ अंधारु ॥ ३ ॥ चरन कमल अधारु जनका रासि पूंजी एक ॥ ताणु माणु

दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥ धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ ताते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइआल भूमंडल सगल बिआपे माइ ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥ २ ॥ नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥ ३ ॥ ३ ॥ २१ ॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ छोडि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जंजाल ॥ संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ जो बैराई सेई मीत ॥ १ ॥ ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु विचारा ॥ २ ॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करम धरम सगला ई खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥ ३ ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥१॥२२॥ धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ संचण कउ हरि एको नामु ॥ हलति पलति ताकै आवै काम ॥ १ ॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥ २ ॥ जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ चरन पखारि कहां गुणतास ॥ प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥४॥२॥२३॥

धनासरी म० ५ ॥ सो कत डरै जि खसमु सम्हारै ॥ डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ सफल मूरति जाकी निरमल सेव ॥ एकु निरंजनु जाकी रासि ॥ मिलि साध संगति होवत परगास ॥१॥ जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ गुरमुखि जाकै मनि तनि बासै ॥ २ ॥ जिसनो आपि लए लड़ि लाइ ॥ दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ सेई भगत जि साचे भाणे ॥ जम काल ते भए निकाणे ॥ ३ ॥ साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ नानकु जाचै संत रेणारु ॥४॥३॥२४॥

धनासरी महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥ १ ॥ जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥ २ ॥ १ ॥२५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥ संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥१॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनंदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥२॥२॥२६॥ धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥ रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ १ ॥ ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥ २ ॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जाका रूपु ॥ जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥ ३ ॥ सा मति

देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ १ ॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनैहारे नासन भाजन थाके ॥ घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥ २ ॥ असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ जै जैकारु सगल भूमंडल मुख ऊजल दरबार ॥ ३ ॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥ अचरजु कीआ करनै हारै नानक सचु वडिआई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २८ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मोकउ गुरि दीना जीउ ॥ १ ॥ तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जाको किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥ मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जाकै संगि तेरे बंधन छूटै ॥ २ ॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जाकउ किरपा कीजै ॥३॥१॥२९॥ धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥ १ ॥ जाको रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू

की संगना ॥ पाइयो रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

धनासरी महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ साध संग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥ १ ॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥ साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥२॥१॥३१॥

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥ १ ॥ गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥रहाउ ॥ निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी कृपा किरपाले ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ भए कृपाल दइआल गोबिंदा अंमृतु रिदै सिचाई ॥ नवनिधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥ १ ॥ संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ गृहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥ २ ॥ रहाउ ॥ ताकउ कोइ न पहुचनहारा जाकै अंगि गुसाई ॥ जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥ १ ॥ जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥ जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥ संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥ धनासरी महला ५ ॥

जाकउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीग्रत है सूरा ॥ ग्रातम जिणै सगल वसि ताकै जाका सतिगुरु पूरा ॥ १ ॥ ठाकुरु गाईऐ ग्रातम रंगि ॥ सरणी पावन नाम धिग्रावन सहजि समावन संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मेरै हीग्ररै संगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपानिधि नानक कै सुखु एही ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ धनासरी महला ५ ॥ जतन करै मानुख डहकावै ग्रोहु ग्रंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥ १ ॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै ग्रावै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ कहु नानक दइग्राल सुग्रामी संतु भगतु जनु सोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीग्रो है ग्रपुनै जाकै मसतकि करमा ॥ नामु द्रड़ावै नामु जपावै ताका जुग महि धरमा ॥ १ ॥ जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ नामो गति नामो पति जनकी मानै जो जो होग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक ग्राधारा नामु परापति लाहा ॥२॥६॥३७॥ धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे माथै परउ रवाल ॥ रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥ १ ॥ तुम तउ राखनहार दइग्राल ॥ सुंदर सुघर बेग्रंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा ग्रनंद मंगल रूप तुमरे बचन ग्रनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिग्रो पाल ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ ग्रपनी उकति खलावै भोजन ग्रपनी उकति खेलावै ॥ सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥ १ ॥ हमरे पिता गोपाल दइग्राल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत तत तुमही मिलै नानक संत सेवा ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ संत कृपाल दइग्राल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु मालु जोबनु तनु जीग्ररा इन ऊपरि लै बारे ॥ १ ॥ मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ सूख सहज ग्रानंद मंगल

सहित भवनिधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥ जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ४० ॥ धनासरी महला ५ ॥ छडाइ लीओ महाबली ते अपने चरन पराति ॥ एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥ १ ॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥२॥१०॥४१॥ धनासरी महला ५ ॥ परहरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥ मृगतृसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥ १ ॥ साकत की आवरदा जाइ बृथारी ॥ जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥ बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥ २ ॥ ११ ॥ ४२ ॥ धनासरी महला ५ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥ १ ॥ रसना राम रसाइनि माती ॥ रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥ २ ॥ १२ ॥ ४३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु तत काल तुम मारा ॥ १ ॥ निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥ मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥ २ ॥ १३ ॥ ४४ ॥ धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥ कृपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥ हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपने ते सोई सोई देवै ॥ नानक दासु मुखते जो

बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥ धनासरी महला ५ ॥
अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइ राखै अपने
कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥ १ ॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥
आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास
भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि
नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥ धनासरी महला ५ ॥
जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ चरन कमल
जाका मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥ १ ॥ तेरा जनु राम नाम
रंगि जागा ॥ आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा
॥ रहाउ ॥ जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥ नाम
उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥
धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होए काम ॥ कलीकाल महा बिखिआ
महि लजा राखी राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना
निकटि न आवै जाम ॥ मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि
का धाम ॥ १ ॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम
॥ गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥ २ ॥ १७ ॥
४८ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते इकु दानु ॥ सगल
मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ सोग अगनि
महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥ १ ॥ स्वसति बिवसथा
हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि
जनम न छापण ॥ २ ॥ १८ ॥ ४९ ॥ धनासरी महला ५ ॥ मांगउ
राम ते सभि थोक ॥ मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि
मोख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिम्रिति पुरानां बेद पुकारहि
घोख ॥ क्रिपासिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥ १ ॥ आन
अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ नानक जनम मरण
भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥ २ ॥ १९ ॥ ५० ॥ धनासरी
महला ५ ॥ तृसना बुझै हरि कै नामि ॥ महा संतोखु होवै गुरबचनी प्रभ

सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥ १ ॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥ धनासरी म० ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥ १ ॥ करनहारु रखवाला होआ जाका अंतु न पारावार ॥ नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥ ३ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि चरन सरन गोबिद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ द्रसटि प्रभ धारहु कृपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥ १ ॥ पतित उधारणा जीअजंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥ गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥ धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ मिटहि कमाणे पाप चिराणे साध संगति मिलि मुआ जीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै ॥ आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥ १ ॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥२॥२॥५४॥

धनासरी महला ५ घरु १२

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपालराइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि

भेटे गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥ १ ॥ चरण कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥ २ ॥ सागरु तरिआ साधू संगे ॥ निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥ ३ ॥ परधन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ जम जंदारु न आवै नेड़े ॥ ४ ॥ तृसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥५॥१॥५५॥ धनासरी महला ५ ॥ तृपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥ १ ॥ जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि जपि साध संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥ २ ॥ हसती रथ असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥ धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ दासीं हरि का नामु धिआइआ ॥ १ ॥ बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५७ ॥ धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बंधु हरि देवण हारा ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेनंती एह ॥ २ ॥ ४ ॥ ५८ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धनासरी महला ९ ॥ काहे रे बन खोजन जाई ॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥ जन नानक बिनु आपा चीन्है मिटै न भ्रम की काई ॥ २ ॥ १ ॥ धनासरी महला ९ ॥ साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥ राम नाम का

सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ताकै रस लपटाना ॥ जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीनदइआल सदा दुखभंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥ धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निंदा उसतति नह जाकै कंचन लोह समानो ॥ हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चंचल मनु दहदिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥ धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को संसा चूकै भउनिधि पार परउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरउ ॥ मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ५८ ॥ ४ ॥ ९३ ॥

धनासरी महला १ ॥ घरु २ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ अंमृतु संत चुगहि नही दूरे ॥ हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥ १ ॥ किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥ कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥ मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ आवण जाण रहे गुरि राखे ॥ २ ॥ सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥ प्रेम भगति करि सहज समाइ ॥ सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥ ३ ॥ सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥ नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ तृभवण जोति रहे लिव लाई ॥ सुरिनर नाथ सचे सरणाई ॥ ४ ॥ आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥ गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ भगति वछल भै काटण हारे ॥ हउमै मारि

मिले पगु धारे ॥ ५ ॥ अनिक जतन करि कालु संताए ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥ ६ ॥ कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ धीरज धरमु धरणी धर टेक ॥ जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥ चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥ ७ ॥ साचे निरमल मैलु न लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ नानकु जाचै साचु सरूपु ॥ ८ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ जह देखा तह अवरु न कोइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु दृड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥ २ ॥ तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ सो साचा मिलि साचे राचा ॥ सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ घड़ि भाडे जिनि अंमृतु पाइआ ॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥ ४ ॥ पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥ ५ ॥ पूजि सिला तीरथ बनवासा ॥ भरमत डोलत भए उदासा ॥ मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ साचि मिलै पावै पति सोइ ॥ ६ ॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥ ७ ॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥ नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥ ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥ १ ॥ अनिक जनम भ्रमि

थिति नही पाई ॥ करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥ २ ॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अंमृत नामु मेरै रिदै सिंचा ॥ ३ ॥ जेते रे तीरथ नाए अहंबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥ ४ ॥ सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेक हीन देही धोए ॥ कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥ ५ ॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुरपरसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥ ६ ॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ कोई ऐसो रे सुखहदाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥ ७ ॥ सु प्रसन गोपालराइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥८॥ सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

धनासरी महला १ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ गुरवाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥ १ ॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ गुणहि हारु परोइ किस कउ

रोईऐ ॥ वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥ आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥ आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥ २ ॥ संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ॥ पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सतसते ॥ आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥ गति संगि मीता संत संगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥ ३ ॥ कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ॥ हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥ साचु गुर की साखी अंम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासरी महला १ ॥ जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥ साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥ आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥ १ ॥ तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥ २ ॥ तूं सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥ नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ ॥ हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥ बोलहि अंम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥

पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ अमरापदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥ ४ ॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥ सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ दीनानाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ नानक नामु महारसु मीठा तृसना नामि निवारी ॥ ५ ॥ २ ॥ धनासरी छंत महला १ ॥ पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ मसतकि लिखिआ लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठी विछुंनिआ ॥ १ ॥ बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ साचा नाम धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ हरिनामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥ निज घरि जाउ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥ २ ॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥ ३ ॥ पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥ नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥ ४ ॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे

रंगि राती ॥ गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥५॥३॥

धनासरी छंत महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि जीउ कृपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ हरि जीउ कृपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ १ ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ स्रवणी सुणी त इहु मनु तृपतै गुरमुखि अंमृतु पीवा ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥ २ ॥ सत संगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ सत संगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ ३ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥ ४ ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥५॥१॥

धनासरी महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ अंम्रितु हरि का नामु साध संगि रावीऐ जीउ ॥ भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ भै भरम नाठे छूटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥ १ ॥ निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥ दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥ पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥ २ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापण हारिआ ॥ जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारिआ ॥ बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥ ३ ॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ सद सदा सिम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥४॥१॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सनक सनंद महेस समानां ॥ सेख नागि तेरो मरमु न जानां ॥ १ ॥ संत संगति रामु रिदै बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥२॥ चारि बेद अरु सिम्रिति पुरानां ॥ कमलापति कवला नही जानां ॥३॥ कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लगि राम रहै सरनांही ॥४॥१॥ दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥ कालु

ग्रहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ १ ॥ सो दिनु ग्रावन लागा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊहै का का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइग्रा महि बरतै ग्रापा पसू न बूझै ॥ लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरना ॥३॥२॥ जो जनु भाउ भगति कछु जानै ताकउ ग्रचरजु काहो ॥ जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिग्रो जुलाहो ॥ १ ॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ किग्रा कासी किग्रा ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥२॥३॥ इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ ग्रोछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥ १ ॥ किग्रा मांगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोभा राज बिभै वडिग्राई ॥ ग्रंति न काहू संग सहाई ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र लछमी माइग्रा ॥ इन ते कहु कवनै सुखु पाइग्रा ॥ ३ ॥ कहत कबीर ग्रवर नही कामा ॥ हमरै मन धन राम को नामा ॥ ४ ॥ ४ ॥ राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ राम नाम सिमरन बिनु बूडते ग्रधिकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई ॥ इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल ग्रवध ग्राई ॥ १ ॥ ग्रजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥ २ ॥ सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न ग्राई ॥ राम नाम छाडि ग्रंमृत काहे बिखु खाई ॥ ३ ॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥ मारकंडे ते को ग्रधिग्राई जिनि तृण धरि मूंड बलाए ॥ १ ॥ हमरो करता रामु सनेही ॥ काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह जोजन छत्रु चलै था देही

गिरभन खाई ॥ २ ॥ सरब सोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥ ३ ॥ दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ कृपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥ ४ ॥ १ ॥ दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोइ भरे अंमृतसरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥ १ ॥ पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ अंमृत बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ ॥ संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डर पावउ ॥ २ ॥ इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥ माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥ ३ ॥ इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥ ४ ॥ २ ॥ मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ १ ॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रमईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ २ ॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मानसरोवर हंसुला ॥ जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ३ ॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चातृक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ४ ॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ ५ ॥ ३ ॥ पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ ताचे हंसा सगले जना ॥ कृस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥ १ ॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचंती गोपी जंना ॥ नईआ ते बैरे कंना ॥ तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥ २ ॥ पिंधी उभ कले संसारा ॥ भ्रमि भ्रमि आए तुमचे दुआरा ॥ तू कुनु रे ॥ मै जी ॥

नामा ॥ हो जी ॥ आला ते निवारणा जम कारणा ॥ ३ ॥ ४ ॥ पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥ १ ॥ मेरै माथै लागीले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥

धनासरी भगत रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हमसरि दीनु दइआलु न तुमसरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥ १ ॥ चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ १ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ २ ॥ २ ॥ नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥ ३ ॥ दसअठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ दुक्रतु सुकृतु थारो करमु री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ कुलजन मधे मिल्हिो सारगपान रे ॥ करम करि कलंकु मफीटसि री ॥ १ ॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ताचे रे सुआरथी पंखीराइ गरुड़ ताचे बाधवा ॥ करम करि अरुण पिंगुला री ॥ २ ॥ अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥ ३ ॥ अंमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥ दाधीले लंकागड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥ ५ ॥ पूरबलो कृत करमु न मिटै री घर गेहणि ताचे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ बदति त्रिलोचन राम जी ॥ ६ ॥ १ ॥ स्री सैणु ॥ धूप दीप घृत साजि आरती ॥ वारने जाउ कमलापती ॥ १ ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुहीं निरंजनु कमलापाती ॥ २ ॥ रामा भगति रामानंदु जानै ॥ पूरन परमानंदु बखानै ॥ ३ ॥ मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ सैणु भणै भजु परमानंदे ॥ ४ ॥ १ ॥ पीपा ॥ कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ १ ॥ काइआ बहु खंड खोजते नवनिधि पाई ॥ ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥ २ ॥ १ ॥ धंना ॥ गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सीका ॥ १ ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

॥ मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥ २ ॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ मोकउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥ ३ ॥ हम अंधुले गिआन हीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥ ४ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥ १ ॥ मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥ दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥ २ ॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥ ३ ॥ जिहवा किआ गुण आखि

वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी म० ४ ॥ हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगधु इआना ॥ हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥ १ ॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥ २ ॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥ ३ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥ ४ ॥ ३ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुरबचनी बिसु हरि काढिबा ॥१॥ मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वड भाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥ २ ॥ तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥ ३ ॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥ जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥४॥४॥ जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥ तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥२॥ दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए

गवाभा ॥ सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साभा ॥ ३ ॥ जिन कउ कृपा करी जगजीवनि हरि उरिधारिओ मन माभा ॥ धरमराइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समभा ॥ ४ ॥ ५ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ सत संगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥ अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अंमृत धार रसि लीड़ा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ भपीड़ा ॥ रहाउ ॥ साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥ हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥ २ ॥ जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥ हलति पलति हरि सोभा पावहि हरिरंगु लगा मान गूड़ा ॥३॥ हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ जन नानक प्रीति लगो पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥ ४ ॥ ६ ॥

जैतसरी महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ हरि हरि नामु रखहु उरधारे ॥ हरि हरि अंमृत बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥ २ ॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ मेरै मनि तनि अंमृत मीठ लगाना ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होइ राम ॥४॥१॥७॥ जैतसरी म० ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ हरि हरि हरि हरि भगति दृड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥१॥ हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥ हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ २ ॥ आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ सुणि

हरि कथा नामु लै लाहा ॥ हरि हरि कृपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ मोकउ धारि कृपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ जैतसरी म० ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ २ ॥ नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ दीन दइआल कृपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ जपि जगदीसु जपउ मनि माहा ॥ हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा ॥ धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ जैतसरी महला ४ ॥ आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥ आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥१॥ आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥ आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥ २ ॥ सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ हरि हरि भगति दृड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ आपे वडदाणा वडसाहा ॥ गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ जैतसरी महला ४ ॥ मिलि सत संगति संगि गुराहा ॥ पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ हरि हरि कृपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥ २ ॥ सभि तीरथ वरत जग पुन तोलाहा ॥ हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥ किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु उमाहा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ जिसु होइ कृपालु सोई बिधि बूझै ताकी निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥ पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥ १ ॥ मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ हाहा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥ संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥ ३ ॥ हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ताकै हरि हरि गाईऐ ॥ नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥ १ ॥ सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ जैतसरी म० ५ ॥ धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥ १ ॥ बे सुमार बेअंत बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥ २ ॥ जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥ ३ ॥ गुरप्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ घरि घरि मंगलु गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥ १ ॥ थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ संत संगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अब मै सुखु पाइओ गुर आगि ॥ तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥ १ ॥ तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वडभागि ॥ जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ द्रिड़िओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥ १ ॥ नाव रूप भइओ साध संगु भवनिधि पारि परा ॥ अपिओ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ सूख सहज आनंद सगल सिउ वाकउ बिआधि न काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥ १ ॥ दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥२॥३॥७॥ जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चर्हावउ धूप ॥ १ ॥ हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिड़ु करि गही तुम्हारी लूक ॥ काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजै प्रान अकोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥ १ ॥ आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक

बंधन छोरि ॥२॥५॥६॥ जैतसरी महला ५ ॥ चातृक चितवत बरसत मेंह ॥ क्रिपासिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति की नेंह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥ १ ॥ हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी कृपा करेंह ॥ चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥२॥६॥१०॥ जैतसरी महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ ताकी कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हमारी ॥ १ ॥ लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥२॥७॥११॥ जैतसरी महला ५ ॥ आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥ साध संगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥ १ ॥ सुख संपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ हरि दरसन तृपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ जैतसरी महला ५ ॥ हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥ १ ॥ तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥

जैतसरी महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥ जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥ १ ॥ रतनु रामु घट ही के भीतरि ताको गिआनु न पाइओ ॥ जन

नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ जैतसरी महला ६ ॥ हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भइओ उरअंतरि सरन गही किरपानिधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहनि तिह चिंता तनु जारा ॥ १ ॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दहदिसि कउ उठि धाइआ ॥ घट ही भीतरि बसै निरंजनु ताको मरमु न पाइआ ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ नानक हारि परिओ सरणागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥ जैतसरी महला ६ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा ॥ राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाकउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥ १ ॥ पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥ नानक सरनि परिओ जगबंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥ २ ॥ ३ ॥

जैतसरी महला ५ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक ॥ दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥ १ ॥ छंत ॥ सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चातृक जिवै तिसंतीआ ॥ जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥ १ ॥ यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ यार वे हिकडूं हिकि चाड़ै हउ किसु चितेहीआ ॥ हिकदूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥२॥ यारवे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ यार वे तै राविआ

लालनु मू दसि दसंदा ॥ लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ बांह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंता ॥ ३ ॥ यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नवरंगीआ ॥ वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सत संगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥४॥१॥

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥ १ ॥ छंतु ॥ जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादि घूलीऐ ॥ लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ छंतु ॥ दूसर नाही ठाउ कापहि जाईऐ ॥ आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥ अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रे मन ताकउ धिआईऐ सभ बिधि जाकै हाथि ॥ राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥ ३ ॥ छंतु ॥ साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ताके किआ गनी ॥ भजु सरणि सुआमी सुखहगामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥

३ ॥ सलोकु ॥ चिति जि चितविग्रा सो मै पाइग्रा ॥ नानक नामु धिग्राइ सुख सबाइग्रा ॥ ४ ॥ छंतु ॥ ग्रब मनु छूटि गइग्रा साधू संगि मिले ॥ गुरमुखि नामु लइग्रा जोती जोति रले ॥ हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति ग्रघानिग्रा ॥ गहि भुजा लीने दइग्रा कीने ग्रापने करि मानिग्रा ॥ लै ग्रंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ बिनवंति नानक दइग्रा धारी मेलि लीने इक पले ॥ ४ ॥ २ ॥ जैतसरी छंत म० ५ ॥ पाधाणू संसारु गारबि ग्रटिग्रा ॥ करते पाप ग्रनेक माइग्रा रंग रटिग्रा ॥ लोभि मोहि ग्रभिमानि बूडे मरणु चीति न ग्रावए ॥ पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ पुजि दिवस ग्राए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिग्रा ॥ किरत करम न मिटै नानक हरिनामु धनु नही खटिग्रा ॥१॥ उदम करहि ग्रनेक हरिनामु न गावही ॥ भरमहि जोनि ग्रसंख मरि जनमहि ग्रावहीं ॥ पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न ग्रावए ॥ बीजु बोवसि भोग भोगहि कीग्रा ग्रपणा पावए ॥ रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू ग्रापि न भावही ॥ बिनवंति नानक भ्रमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥ २ ॥ जोबनु गइग्रा बितीति जरु मलि बैठीग्रा ॥ कर कंपहि सिरु डोल नैण न डीठिग्रा ॥ नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइग्रा चालिग्रा ॥ कहिग्रा न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिग्रा ॥ स्री राम रंग ग्रपार पूरन नह निमख मन महि वूठिग्रा ॥ बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न भूठिग्रा ॥ ३ ॥ चरन कमल सरणाइ नानकु ग्राइग्रा ॥ दुतरु भै संसारु प्रभि ग्रापि तराइग्रा ॥ मिलि साध संगे भजे स्री धर करि ग्रंगु प्रभ जी तारिग्रा ॥ हरि मानि लीए नाम दीए ग्रवरु कछु न बीचारिग्रा ॥ गुण निधान ग्रपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइग्रा ॥ बिनवंति नानकु सदा तृपते हरिनामु भोजनु खाइग्रा ॥४॥२॥३॥

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि

१ ग्रों सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक ॥ ग्रादि पूरन मधि पूरन ग्रंति पूरन परमेसुरह ॥ सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक ग्रघ नासन जगदीसुरह ॥ १ ॥ पेखन सुनत सुनावनो मन

महि दड़ीऐ साचु ॥ पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई॥ खिन महि थापिउथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥ १ ॥ सलोक ॥ रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥ १ ॥ मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥ नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिसदै नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ रकतु बिंदु करि निंमिआ अगनि उदर मझारि ॥ उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उरधारि ॥ बिखम थानहु जिनि राखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥ २ ॥ सलोक ॥ मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥ १ ॥ हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ गृह मंदर रथु असु दीए रचि भले संजोग ॥ सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥ हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ साध संगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥ ३ ॥ सलोक ॥ कुटंब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥ हरि भगति भावहीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥ १ ॥ तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ ॥ नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ खिनु गृह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥ ४ ॥ सलोक ॥ कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥ १ ॥ ईधणु कीतो मू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥ २ ॥

पउड़ी ॥ कोटि अघा सभि नास होहि सिमरति हरि नाउ ॥ मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥ ५ ॥ सलोक ॥ गृह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा कृमह ॥ १ ॥ मुचु अडंबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ गृह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥ मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥ ६ ॥ सलोक ॥ चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दहदिसह ॥ तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥ १ ॥ मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ नानक हभि अडंबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिंना ॥ जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिंना ॥ मित्र न इठ धन रूप हीण किछु साकु न सिंना ॥ राजा सगली सृसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥ तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सु प्रसंना ॥ ७ ॥ सलोक ॥ अनिल लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥ १ ॥ सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ नानक नामि विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥ आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥ पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥ किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥ ८ ॥ सलोक ॥ बसंति स्वरग लोकह जितते पृथवी नवखंडणह ॥ बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥ १ ॥ कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥

सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ ९ ॥ सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥ १ ॥ पेखंदड़ो की भुलु तुंमा दिसमु सोहणा ॥ अढु न लहदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ हरि बिसरिऐ किउ तृपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥ १० ॥ सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ मिसटं साध संगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥ १ ॥ लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥ विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥ २॥ पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥ ११ ॥ सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चातृक मेघ मंडलह ॥ बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥ १ ॥ मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ बूंद विहूणा चातृको किउकरि तृपतावै ॥ नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ तिउ संत जना हरिप्रीति है देखि दरसु अघावै ॥१२॥ सलोक ॥ चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥१॥ सीतड़ा मंनि मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी॥२॥पउड़ी ॥आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ ॥ होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ पारब्रहम गुर देव सदा

हजूरीऐ ॥ १३ ॥ सलोक ॥ रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अंम्रितह ॥ नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥ १ ॥ हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे ॥ नानक सेइ धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥२॥ पउड़ी ॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ १४ ॥ सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥ १ ॥ कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ वडै भागि सत संगु होइ निवि लागा पाई ॥ मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥ सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥ सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥ छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥ १६ ॥ सलोक ॥ संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥ १ ॥ चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम ॥ सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥ तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥ १७ ॥ सलोक ॥ दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥ १ ॥ भाहि बलंदड़ी बुझि गई

रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥ कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥ निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥ तरे कुटंब संगि लोग कुल सबाइआ ॥१८॥ सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ १ ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ नानक पूर करंम सतिगुर चरणी लगिआ ॥२॥ पउड़ी ॥ धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥ पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अपदसे ॥ गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥ १९ ॥ सलोक ॥ द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥ नामदानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥ १ ॥ हिकु सेवी हिकु संमला हरि इकसु पहि अरदासि ॥ नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥ सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥ २० ॥ १ ॥

जैतसरी बाणी भगता की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नाथ कछूअ न जानउ ॥ मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥ १ ॥ इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥ २ ॥ जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥ ३ ॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥ ४ ॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥ ५ ॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघूनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥

रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥ हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा ॥ सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥ १ ॥ हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥ २ ॥ लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ संतन अवर न काहू जानी ॥ बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जाको पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ ॥ १ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ ताकउ धोखा

कहा बिआपै जाकउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरब जैसे अरजारी ॥ नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जाकउ किरपा धारी ॥ सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे
१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धाइओ रे मन दहदिस धाइओ ॥ माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साध संगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ बिगसिओ पेखि रंगु कसु‌ंभ को पर गृह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सतपुरखु मनाइओ ॥ धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥ ३ ॥ परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥ ४ ॥ करउ बेनती साध संगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥५॥१॥३॥ टोडी महला ५ ॥ मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥ धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ दानु पुंनु नही संतन सेवा कितही काजि न आइआ ॥ १ ॥ करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु जाकउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ साध संगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥ टोडी महला ५ क्रिपानिधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभि संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा

मसतकि ले ले लावउ ॥ महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥ १ ॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥ जो तू देहि तही इहु तृपतै आन त कतहू धावउ ॥ २ ॥ सदही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥ ३ ॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै कृपा गुण गाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥ १ ॥ बिनु गोबिंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ नामु सखाई सदा मेरै संगि हरिनामु मोकउ निसतारै ॥ १ ॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥२॥२॥७॥ टोडी म० ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥ १ ॥ रहाउ॥ चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥ १ ॥ संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ ॥ मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥ १ ॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ टोडी महला ५ ॥ रसना गुण गोपाल निधि

गाइण ॥ सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ जनम मरण दुहहु ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥ १ ॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥२॥५॥१०॥ टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥ १ ॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥ आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥ टोडी म० ५ ॥ किरपन तन मन किलविख भरे ॥ साध संगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥ १ ॥ गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥ ताकउ बिघनु न कोऊ लागै जाकी प्रभ आगै अरदासि ॥ १ ॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसके से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥ १ ॥ जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भंजन जाका बड परताप ॥ २ ॥ ९ ॥ १४ ॥ टोडी महला ५ ॥ स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साध संगि परमगति पाईऐ माइआ

रचि बंधि हारे ॥ १ ॥ चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥ २ ॥ १० ॥ १५ ॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हां हां लपटिओ रे मूढ़े कछू न थोरी ॥ तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ जो पराई सु अपनी मनूआ ॥ १ ॥ नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥ छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥ २ ॥ सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ अंमृत नामु तोसा नही पाइओ ॥ ३ ॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥ टोडी महला ५ ॥ हमारै एकै हरी हरी ॥ आन अवर सिञाणि न करी ॥ राहउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ गुरि मोकउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ हरि हरि जाप ताप व्रत नेमा ॥ हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥ २ ॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ महा अनंद कीरतन हरि सुनीआ ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ सभु किछु तिसके ग्रिह महि आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ ढुढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥ १ ॥ इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु ॥ लिखिओ धुरि माथै ॥ इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥ टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥ हीओ महराज री माइओ ॥ डीहर निआई मुहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥ महराजरो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥ १ ॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥ जाको लहणो महराजरी गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १९ ॥

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ पंच दोख अरु अहंरोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंगि भीन ॥ १ ॥ पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ तिसही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिसही को धीन ॥२॥१॥२०॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन की प्रीति ॥ एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ ॥ बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥२॥२॥२१॥ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ कोटि राज नाम धनु मेरै अंम्रित द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥ १ ॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥ टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ दीन दइआल प्रीतम मन मोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ दहदिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥ १ ॥ धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥ टोडी म० ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस ॥ इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जाको जास ॥ १ ॥ संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणा तास

॥ सांति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥२॥५॥ २४ ॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि पतित पावन ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ निरमल रूप अनूप सुआमी करमभूमि बीजन सो खावन ॥ १ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥२॥६॥२५॥ टोडी महला ५ ॥ माई माइआ छलु ॥ तृण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥ १ ॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे ॥ वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥ १ ॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥२॥८॥ २७॥ टोडी महला ५ ॥ साध संगि हरि हरि नामु चितारा ॥ सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जाको अंतु न पारावारा ॥ करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥ १ ॥ जनम मरन काटे गुरबचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥२॥ ९ ॥ २८ ॥ टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धूखु ॥ २ ॥

१०॥ २१॥ टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उरधारे ॥ सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ गुन गावत अतुलु सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥ १ ॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

टोडी महला ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जग झूठे कउ साचु जानकै ता सिउ रुच उपजाई ॥ दीनबंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥ १ ॥ मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मनकी काई ॥ कहि नानक अबि नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

टोडी बाणी भगतां की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ जल की माछुली चरै खजूरि ॥ १ ॥ कांइ रे बकबादु लाइओ ॥ जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडितु होइकै बेदु बखानै ॥ मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥ २ ॥ १ ॥ कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥ पतित पवित भए रामु कहत ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जांई ॥१॥ भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥ गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥ २ ॥ २ ॥ तीनि छंदे खेलु आछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुंभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥ बासन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडीगो ॥ १ ॥ बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥ २ ॥ तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥ ३ ॥ संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे

॥ सुनि मन अकथ कथा हरिनाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥ १ ॥ सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ नानक कृपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥ २ ॥ १ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ मन मिलि संन जना जसु गाइओ ॥ हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ ॥ धनु माइआ संपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥ १ ॥ खिनु किंचत कृपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ ॥ जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥ २ ॥ २ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥

जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ हरि आपे ही मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ॥ १ ॥ हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥२॥३॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन राम नामु निसतारा ॥ कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥ १ ॥ हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ नानक जिसु कृपा करे सु हरिनामु विहाझै सो साहु सचा वणजारा ॥ २ ॥ ४ ॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जाका अंतु न पारावारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥ १ ॥ जाकै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥२॥५॥ बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥ १ ॥ तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥ १ ॥ सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ गुरप्रसादि नानक मति पाई ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥